TEXT PROBLEM WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_180221
UNIVERSAL
LIBRARY

ॐ

गीता और क़ुरान

[illegible] कृत की
आवा [illegible] "। गीता
हिन्दुस्तान का क़ुरान है और क़ुरान अरब
की गीता ।"

— ख़ूबुल्लाहशाह क़लन्दर

18022
H294.592
S95G

सुन्दरलाल

OUP—67—11-1-68—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H294.592 S95G Accession No. G. H36 H3673

Author सुन्दरलाल

Title गीता और कुरान 1946.

This book should be returned on or before the date last marked be

गीता और क़ुरान

सुन्दरलाल

सुन्दरलाल सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी ने
३२ बाई का बाग़ इलाहाबाद से निकाली

मोल ढाई रुपए

यह किताब—उर्दू और नागरी दोनो लिखावटों में
मिल सकती है

विश्वम्भरनाथ ने विश्ववाणी प्रेस इलाहाबद में छापी

अहसानमन्दी

'सोनु चांदी तोलवानो वेपारी मंडलनो धर्मनो कांटो
खारा कुवा, जावेरी बाज़ार, बम्बई
ने
"गीता और क़ुरान" की हिन्दी उर्दू एडीशन के लिए
हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद
को
रु० ५,०००)
दान दिया है
इसी रक़म से यह एडीशन छपी है
इसकी आमदनी इसी किताब के छापने और प्रचार करने
के नेक काम में ख़र्च की जावेगी जिससे
देश के हिन्दू मुसलमान भाई एक दूसरे के धर्म
को समझें और

प्रेम बढ़े

११ बाई का बाग़,
इलाहाबाद
५ अक्तूबर १६४६

सुन्दरलाल
सेक्रेटरी
हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

हिन्दू कहैं राम मोहि प्यारा,
तुरुक कहैं रहिमाना,
आपस में दोउ लरि लरि मूए,
मरम न काहू जाना.

—कबीर

गीता और क़ुरान

क्या-कहाँ

		सफ़ा
१—दुनिया के सब मज़हब एक हैं	....	१

गीता

२—गीता	....	६७
३—गीता धर्म	...	१११
४—गीता का सार	...	१५८

क़ुरान

५—क़ुरान	...	१६६
६—क़ुरान और उसकी तालीम	...	१८३
७—कुछ और—औरतों के बारे में, जिहाद, आक़बत, आख़ेरत, जन्नत और जहन्नम	...	२५३

दुनिया के सब मज़हब एक हैं

१

जब से दुनिया बनी है, या कम से कम जब से इस धरती पर आदमी का रहना शुरू हुआ है, तब से हर आदमी का दिल दो अलग अलग तरफ़ को खिंचता रहा है, कभी खुद ग़रज़ी की तरफ़ कभी दूसरों की भलाई की तरफ़, कभी स्वार्थ की तरफ़ कभी परोपकार की तरफ़। बुराई और भलाई, बदी और नेकी, पाप और पुण्य, गुनाह और सवाब इन दोनों रास्तों के ही अलग अलग नाम हैं। कोई आदमी ऐसा नहीं है जिसके दिल पर ये दोनों कभी कभी अपना असर न डालते हों। ये दोनों अपनी अपनी तरफ़ आदमी के दिल को बराबर खींचते रहते हैं, और यही खींचातानी, यही अन्दर की कशमकश दुनिया की सबसे बड़ी जंग या दुनिया का सबसे बड़ा संग्राम है। इस संग्राम में खुद ग़रज़ी या स्वार्थ, बदी या बुराई, को अपने अन्दर से न मिटा सकना आदमी की सबसे बड़ी हार, और उनसे अपने आपको पाक साफ़ कर सकना सबसे बड़ी जीत होती है। इसी तरह दूसरों की भलाई यानी परोपकार या

नेकी को अपनी ज़िन्दगी में जगह देना जीत है और जगह न दे सकना सबसे बड़ी हार। यह जीत इस लिये सबसे बड़ी जीत समझी जाती है कि इसमें हर आदमी की और तमाम इनसानी दुनिया की भलाई है। इसमें सारी दुनिया की तरक्क़ी और सुख चैन के रास्ते खुलते हैं। और यह हार इस लिये सब से बड़ी हार मानी जाती है क्यों कि इस में आदमी को ज़्यादह से ज़्यादह मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं, और यही इनसानी दुनिया के बड़े से बड़े दुखों का और बरबादी का असली सबब है।

इस जीत में दुनिया की भलाई और इस हार में दुनिया के दुखों और बरबादी की जड़ इसलिये है कि अगर हम आदमी की ज़िन्दगी पर गहरी नज़र डालें तो साफ़ दिखाई दे जाता है कि दुनिया के आदमी सब एक दूसरे से ऐसे ही बंधे और जकड़े हुए हैं, जैसे हमारे बदन के अलग अलग हिस्से, हाथ, पैर आँख, नाक और कान एक दूसरे से।

इसी तरह दुनिया की सब चीज़ें, और ख़ास कर आदमियों के सब गिरोह, आपस में एक दूसरे से ऐसे अटूट और गहरे रिश्तों में बंधे हुए हैं कि इनका असली फ़ायदा और नुक़सान अलग अलग नहीं किया जा सकता। हम सब मिलकर एक कुनबे या एक कुटुम्ब की तरह हैं जिसकी बुनियादें मेल मुहब्बत, एक दूसरे के साथ हमदर्दी, और एक दूसरे की सेवा पर क़ायम हैं, और जिसको सबसे बड़ा नुक़सान एक दूसरे से नफ़रत करने और लड़ने से पहुँचता है।

आदमी के अन्दर की जिस लड़ाई का हमने ऊपर ज़िकर किया है, उसमें जीत उसी दरजे तक होती है जिस दरजे तक आदमी इस सच्चाई को समझ लेता है। आदमी जितना जितना इस बात को समझता जाता है, उतना उतना ही उसे दिखाई देने लगता है कि दूसरों के भले में ही उसका अपना असली भला है, और दूसरों की बरबादी में उसकी अपनी बरबादी है।

इस तरह धीरे धीरे आदमी के अन्दर से अपने और पराये का भेद कम होता जाता है। या यूं कहिये कि उसके अपनेपन का दायरा बढ़ता और फैलता जाता है, और परायेपन का ख़याल घटता और सुकड़ता जाता है। उसके दिल में एक एक करके अपने गाँव, अपने शहर, अपने देश, और बढ़ते बढ़ते सारी धरती के आदमियों के साथ अपनापन बैठने और जमने लगता है। उसे दूसरों के भले में अपनी भलाई, दूसरों की बरबादी में अपनी बरबादी, दूसरों के सुख में अपना सुख और दूसरों के दुख में अपना दुख दिखाई देने लगता है। दुनिया के सब देशों में सब आदमियों के इस बात को समझ लेने पर ही दुनिया भर की सच्ची शान्ति सच्चे अमन और सच्चे सुख का दार मदार है।

आदमी के अन्दर इस समझ के पैदा होने में बहुत देर लगती है, ख़ासकर क़ौमों और मुल्कों में इस ख़याल का पैदा होना और बढ़ना बहुत ही मुशकिल होता है। इसलिये यह खींचातानी मिटने नहीं पाती और इसके जारी रहने से

दुनिया को बड़े बड़े नुक़सान पहुँचते रहते हैं। जब जब यह खींचातानी बढ़ जाती है, और दुनिया के लोगों में नासमझी .खुद ग़रज़ी और आपा धापी का ज़ोर होता है, तब तब बे-अमनी, बेचैनी और बरबादी बढ़ती है, और जब जब एक दूसरे से प्रेम मेल मिलाप और सबके भले की इच्छा ज़ोर पकड़ती है तब तब अमन, चैन और .खुशहाली चारों तरफ़ नज़र आने लगती हैं। जितना जितना दुनिया के अन्दर अपने और पराये का फ़रक़ बढ़ता जाता है, गिरोहबन्दी या गुटबंदी बढ़ती है, उतना उतना ही समाज की आत्मा टुकड़े टुकड़े होने लगती है, झगड़े बढ़ते हैं, और दुख, ग़रीबी और बरबादी फैलती है। दूसरे लफ़्ज़ों में यह कहा जा सकता है कि बाहर के सब लड़ाई झगड़े आदमी की इस नासमझी का ही नतीजा और अन्दर की इस खींचातानी की ही परछाईं होते हैं।

इस नासमझी की तरफ़ लोगों का ध्यान दिलाने और उन्हें इस खींचा तानी के दूर करने के रास्ते बताने का काम सब से .ज्यादह धर्मों या मज़हबों ने किया है। 'धर्म' शब्द संस्कृत 'धृ' से बना है जिसके मानी सँभाले रखना या मिलाए रखना है। जो चीज़ सब आदमियों को संभाले या मिलाये रक्खे और उन्हें टुकड़े टुकड़े होने से रोके. उसी का नाम धर्म है। संस्कृत की किताबों में जगह जगह धर्म शब्द का यही अर्थ बताया गया है। महाभारत में लिखा है—

"धर्म शब्द धारण करने से सम्बन्ध रखता, है जिसका अर्थ संभाले रखना या मिलाये रखना है। धर्म से सब लोग संभले और मिले

रहते हैं। इसलिये जिस काम से सब लोग मिले रहें वही सचमुच धर्म है। सब के भले के लिये धर्म का बयान किया गया है। जिस काम से सबका भला हो असल में वही धर्म है। किसी जानदार को दुख या नुक़सान न पहुंचे इसलिये धर्म का बयान किया गया है। जिस काम से किसीको नुक़सान न पहुंचे वही सचमुच धर्म है। जो आदमी हमेशा सब का भला चाहता है और जो सबके भले के कामों में तन, मन और वचन से पूरी तरह लगा रहता है, ऐ जाजले! वही धर्म का जानने वाला है।"

'मज़हब' लफ़्ज़ के मानी 'रास्ता' है। जो रास्ता सबकी भलाई का रास्ता है वही असली मज़हब है। क़ुरान में लिखा है—

"सचमुच तुम सब इनसानों की एक ही क़ौम है, और एक ही अल्लाह तुम सबका रब्ब है। इसलिए उसी एक की पूजा करो। लोगों ने काट काट कर अपने टुकड़े (अलग अलग गिरोह) बना रक्खे हैं, पर सबको एक ही अल्लाह के पास जाना है।" (अम्बिया: ९२, ९३)

एक बार मुहम्मद साहब से किसी ने पूछा कि—"ईमान क्या है?" उन्होंने जवाब दिया—"सब्र करना और दूसरों की भलाई करना।" (अहमद)

एक और जगह इसलाम के पैग़म्बर ने कहा है—

"अगर मोमिन (ईमान वाला) होना चाहता है तो अपने पड़ौसी का भला कर और अगर मुसलिम होना चाहता है तो जो कुछ अपने लिये अच्छा समझता है वही सबके लिये अच्छा समझ।" (तिरमिज़ी)

मुहम्मद साहब की एक और कहावत है कि—

"सब मख़लूक़ (सृष्टि) अल्लाह का कुनबा है। और उन सब में अल्लाह को सब से प्यारा वह है जो अल्लाह के इस कुनबे का भला करता है।" (बेहक़ी)

पंथ, पथ, मार्ग और जापानी और चीनी ज़बानों में तो या दो के भी वही माइने हैं जो मज़हब के। अंगरेज़ी लफ़्ज़ रिलीजन जिस लफ़्ज़ से निकला है उसके माइने बांधना हैं। जो चीज़ सब लोगों को एक दूसरे से बांधे या मिलाए रक्खे वही रिलीजन है।

इस तरह धर्म, मज़हब या रिलीजन की सबसे बड़ी ग़रज़ और इसका सबसे बड़ा काम यही है कि दुनिया के लोगों को आपस की फूट, लड़ाई झगड़े और फ़साद से बचाए, उन्हें एक कुनबेवालों की तरह मुहब्बत की डोर में बांधे और मिलाये रक्खे, और उन्हें एक दूसरे से बर्ताव करने, रहने सहने और जीने का वह ढंग, वह रास्ता, वह असूल और वह नियम बताये जिससे सबका भला हो। ये नियम या असूल नेकी, सदाचार या इख़लाक़ के वह जाने बूझे असूल हैं जिन पर दुनिया के सब मज़हबों और उनके क़ायम करने या चलाने वालों ने शुरू से आज तक एक सा ज़ोर दिया है।

लोगों को ज़िन्दगी के इन सीधे सादे बुनियादी असूलों पर चलाये रखने के लिए एक सबसे बड़ा तरीक़ा, जिससे दुनिया के मज़हबों ने काम लिया है, यह है कि एक ईश्वर, .खुदा या गाड में यक़ीन किया जाय जो सबका ईश्वर है। इस इतने बड़े

संसार, इस दुनिया का कोई न कोई चलाने वाला ज़रूर है। कोई न कोई सब से बड़ी ताक़त है जिस से हम सब का नाता है और जिसकी तरफ़ हम सब बढ़े चले जा रहे हैं। जिस तरह हमारी धरती की और इसके बाहर भी दूर दूर तक की सारी गरमी और रोशनी इस सूरज से आती है, उसी तरह हमारी जान, हमारी सब चेतन शक्तियों, हमारी रूह या आत्मा के अन्दर की सब अचरज भरी ताक़तों का भी कहीं न कहीं कोई ख़ज़ाना है जहाँ से इन सबका निकास है। हमारी अपनी आत्मा (रूह) का छोटापन, उसकी कमज़ोरी और उसकी बेबसी ही हमें उस परम-आत्मा, उस रूहे-कुल की भरपूर ताक़तों की ख़बर देती है। सब मज़हबों ने माना है कि ईश्वर अल्लाह आदमी की छोटी सी अक़ल और उसकी समझ से कहीं ऊपर और बाहर है। साथ ही हर मज़हब के योगियों, सूफ़ियों, संतों, वलियों, ऋषियों और नबियों ने इस मिट्टी के जिस्म और इस छोटी सी अक़ल की हदों को पार करके उस बेहद और बेअन्त की थोड़ी बहुत झलक पाने का दावा किया है। बौद्ध मज़हब, या ऐसे ही और मज़हब, जिनकी बाबत यह समझा जाता है कि वह इस दुनिया का कोई बनाने वाला नहीं मानते, वह भी सिद्ध (कामिल), अरहंत (क़ाबिल), या बुद्ध (रोशन या अक़ले कुल) किसी न किसी रूप में सब हदों और कमज़ोरियों से ऊपर पूर्ण आत्मा, परमआत्मा, सर्व आत्मा, या रूहे कुल को मानते हैं, उस पूरेपन या कमाल तक पहुँचने की कोशिश करना आदमी का धर्म और उसका फ़र्ज़ बताते हैं, और वहां तक

पहुंचने के लिये नेकी, सदाचार और सब आदमियों के साथ भाई चारा रखने को सबसे ज्यादह ज़रूरी बताते हैं।

नतीजा यह है कि हम चाहे उसे किसी नाम से पुकारें, भगवान, ईश्वर, परमात्मा, ख़ुदा, अल्लाह, या गाड उसी एक परमेश्वर को मानना, उसे सबका एक बराबर ईश्वर या रब्ब मानना, उसके बन्दों की हैसियत से सब आदमियों को अपना भाई मानना, और सबके साथ मेल मिलाप, मुहब्बत और नेकी का बरताव करना, यही दुनिया के सब धर्म और मज़हबों का निचोड़ है।

इसमें भी शक नहीं कि दुनिया के सब बड़े बड़े मज़हबों ने इस धरती के करोड़ों आदमियों को सैकड़ों और हज़ारों बरस तक ठीक रास्ते पर रक्खा है। आज तक करोड़ों आदमियों के दिलों और दिमाग़ों को, उनकी रूहों, उनकी आत्माओं को, धर्म और मज़हब से बढ़कर सुख, शान्ति, और सकून देने वाली कोई दूसरी चीज़ नहीं हुई। आदमी आदमी में प्रेम पैदा करने वाली भी आज तक धर्म या मज़हब से बढ़कर कोई ताक़त दिखाई नहीं देती।

इस वक़्त सारी दुनिया में सैकड़ों छोटे बड़े फ़िरक़े, धर्म, मज़हब, पन्थ और मत मौजूद हैं। इन सब में छै ख़ास माने जाते हैं—हिन्दू धर्म, यहूदी धर्म, ज़रतुश्ती यानी पारसी धर्म, बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म, और इसलाम। इनमें जहां तक पता चलता है हिन्दू धर्म सबसे पुराना और इसलाम सबसे हाल का है। हिन्दू धर्म के मानने वाले हिन्दुस्तान को छोड़कर बाक़ी दुनिया में

नहीं के बराबर है। दुनिया भर में सब से ज्यादा तादाद ईसाइयों और बौद्धों की है, और सबसे कम यहूदियों और पारसियों की। इसलाम को जन्म लिये हुए साढ़े तेरह सौ साल के क़रीब हुए। इसके मानने वालों की तादाद आज सारी दुनिया में क़रीब तीस करोड़ है। इन छै बड़े बड़े मज़हबों की छै ख़ास किताबें हैं। हिन्दुओं की ऋग्वेद, यहूदियों की तौरात, पारसियों की ज़िन्द अवस्ता, बौद्धों की त्रिपिटक, ईसाइयों की इंजील और मुसलमानों की क़ुरान।

इन छै पाक किताबों को अगर बराबर बराबर रखकर प्रेम से पढ़ा जावे तो इन सबकी बताइ बुनियादी बातें एक ही नज़र आती हैं। कहीं कहीं तो इनकी कथाएँ, कहानियाँ, रिवायतें और फ़िक़रे के फ़िक़रे मिलते चले जाते हैं। इन्हें इस तरह मिलाकर पढ़नेवाले को इस बात में ज़रा सा भी शक नहीं रह सकता कि यह सब मज़हब एक ही जड़ से निकले हैं, या यूँ कहिये कि एक ही बड़े पेड़ की दूर दूर तक फैली हुई टहनियां हैं, जिनमें से हर टहनी अपनी अपनी जगह और अपने अपने ज़माने में सचाई की खोज करनेवाली करोड़ों दुखी आत्माओं को शान्ति, साया और ठंडक देती रही है, और अब भी दे रही है। ऊपर की छै किताबों में ऋग्वेद सबसे पुरानी किताब है। और क़ुरान सबसे हाल की। फिर भी क़ुरान की सूरत 'अन्नूर' में ख़ुदा की क़ुदरत और उसकी हम्द (स्तुति) को पढ़कर फ़ौरन ऋग्वेद की कुछ ऋचाएँ याद आने लगतीं हैं जिनमें ईश्वर की स्तुति की गई है। क़ुरान में ईश्वर का सबसे बड़ा

नाम 'अल्लाह' है। ऋग्वेद में ईश्वर के नामों में से एक नाम 'इला' है जो संस्कृत में 'इल्' धातु से निकला है, जिसके माइने स्तुति करना या पूजा करना है। ऋग्वेद का एक पूरा सूक्त इला के नाम पर है। आज से कम से कम छै हज़ार बरस पहले की सुमेरी तहज़ीब, और वहाँ की बोली में भी ख़ुदा को 'ईल' कहते थे। उसी से पुराने शहर 'बाबिल' (बाब+ईल=अल्लाह का दरवाज़ा) का नाम पड़ा। यहूदियों की तौरात और पारसियों की ज़िन्द अवस्ता में भी यह नाम जगह जगह मिलता है। हज़रत ईसा जब सूली पर चढ़ाये गये तो कहा जाता है कि उनके मुँह से "इलोही! इलोही!" (ऐ मेरे ईश्वर! ऐ मेरे ईश्वर!) के शब्द निकले थे। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने अपनी किताब 'तरजुमानुल क़ुरान' में दिखलाया है कि कलदानी, सुरियानी, इबरानी और सब पुरानी ज़बानों में ईश्वर का नाम इससे मिलता जुलता ही लिया जाता था, जैसे कलदानी में 'इलाहिया', इबरानी में 'इलोह,' वग़ैरह। ज़ाहिर है कि अल्लाह नाम किसी न किसी शकल में ऋग्वेद के ज़माने से लेकर आज तक बहुत से मुलकों और ज़बानों में चला आ रहा है। ऐसे ही क़ुरान का 'रब्ब' ऋग्वेद का 'सारी दुनिया को पालने वाला' 'रै' है। क़ुरान की सबसे शुरू की दुआ 'एह देनस्सेरातल मुस्तक़ीम' (हमें सीधे रास्ते पर ले चल) और ऋग्वेद की ऋचा 'अग्नेनय सुपथा' दोनों एक दूसरे का लफ़्ज़ी तरजुमा हैं। वेदों का 'एकमेवाद्वितीयम्' और इसलाम का 'वहदहू लाशरीकलहू' दोनों के ठीक एक ही माइने हैं—वह एक है उसका कोई और

साझी नहीं है।

यही हाल दूसरे सब मज़हबों की किताबों का है। क़ुरान का 'ला इलाह इल्लाहू' या कलम-ए-तौहीद के लफ़्ज़ 'ला इलाह इल्लल्लाह' और ज़िन्द अवस्ता का, 'नेस्त एज़द मगर यज़दान' दोनों एक दूसरे के लफ़्ज़ी तरजुमे हैं। क़ुरान में 'बिसमिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम' ठीक एक सौ चौदह दफ़ा आया है, जिसका मतलब है—उस अल्लाह के नाम के साथ जो रहम करने वाला और दयावान है। ईरान के ज़रतुश्ती विद्वान अपनी किताबों को 'बनाम यज़दान बख़्शिश गिरदादार' से शुरू करते थे। दोनों का ठीक एक ही मतलब है।

अब हम यह दिखाना चाहते हैं कि इन बड़े बड़े मज़हबों के क़ायम करनेवाले अपने से पहले वाले और अपने से बाद आनेवाले मज़हबों के बारे में क्या ख़याल रखते थे। इन ख़यालों पर नज़र डालने से हमें यह अचरज होता है कि गो इन सब महापुरुषों और नबियों ने इतने साफ़ साफ़ लफ़्ज़ों में और इतने ज़ोर के साथ हर मज़हब की सच्चाई और ऊँचाई का ऐलान किया है फिर भी उनके पीछे चलनेवालों के कान तक उनकी आवाज़ें नहीं पहुँच पातीं। नीचे लिखी हुई मिसालें हमारे मतलब को पूरी तरह साफ़ कर देंगी।

श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है—

"जो जिस रास्ते से चल कर ईश्वर तक पहुंचने की कोशिश करते हैं ईश्वर उन्हें उसी रास्ते से मिलते हैं। लोग अलग अलग तरफ़ से चल कर भी उसी तरह एक ईश्वर तक पहुंचते हैं जिस तरह एक

गोल चक्कर के चारों तरफ़ खड़े आदमी अलग अलग तरफ़ को चलकर एक केन्द्र (मरकज़) तक पहुंचते हैं।" (४-११)

पारसी मज़हब के क़ायम करने वाले महात्मा ज़रतुश्त ने कहा है कि—

"हम दुनिया के अब से पहले के मज़हबों को मानते हैं। वह सब नेकी की तरफ़ ले जाने वाले थे।" (यसना, १६-३)

चीन के ज़्यादहतर लोग शुरू से हिन्दुस्तान के महात्मा बुद्ध, और चीन के महात्मा लाओतज़े और महात्मा किंग फ़ूतज़े तीनों को एक बराबर अपना गुरु पीर और रहबर मानते हैं। किंग फ़ूतज़े और ला ओतज़े दोनों चीन के दो बड़े बड़े मज़हबों के क़ायम करने वाले थे। किंग फ़ूतज़े ने कहा है कि—

"मैं सिर्फ़ पिछली बातों को आगे चला रहा हूँ, मैं कोई नई चीज़ नहीं गढ़ सकता।"

बुद्ध ने कहा है कि—

"बहुत से बुद्ध मुझसे पहले आए हैं, और बहुत से मेरे बाद आवेंगे। मैं पुरानी रोशनी को ही फिर से फैला रहा हूँ।"

बौद्ध मज़हब और जैन मज़हब दोनों के माननेवाले मानते हैं कि शुरू से अब तक बराबर बुद्ध और तीर्थंकर (हादी, रास्ता बताने वाले) होते रहे हैं जो दुनिया के लोगों को उसी एक सच्चाई, एक धर्म का रास्ता बताते रहे हैं, और ऐसे ही आगे भी होते रहेंगे।

इंजील में लिखा है—

"क्या कोई ऐसी बात है जिसके बारे में कहा जा सके कि देखो

यह नई बात है। यह सब हमसे पहले के पुराने ज़माने से चला आ रहा है···दुनिया में कोई चीज़ नई नहीं है।" (तौरात, किताबवाएज़)

हज़रत ईसा मसीह ने कहा है कि—

"मैं पुराने धर्म और पुराने नबियों के उपदेशों को नष्ट या बरबाद करने के लिये नहीं आया, बल्कि मैं उन्हें पूरा करने के लिये आया हूँ।"

क़ुरान में लिखा है कि—

"सच मुच हमने (अल्लाह ने) हर क़ौम में रसूल पैदा किये हैं, जिन्होंने लोगों को यही नसीहत की है कि अल्लाह की इबादत करो और बुराई से बचे रहो।" (नहल-३६) "सचमुच तुम्हारे यह सब अलग अलग मज़हब या फ़िरके, एक ही मज़हब और एक ही फ़िरक़ा हैं, और तुम सबका एक ही रब्ब है उसीका ध्यान रक्खो। लेकिन लोगों ने अपने दीन के आपस में टुकड़े टुकड़े कर डाले और हर गिरोह जो कुछ उसके अपने पास है उसी में फूला है। यह बड़ी नासमझी है।" (मोमेनून ३-५१-५४) "सचमुच जो लोग अल्लाह और उसके सब रसूलों को नहीं मानते और जो अल्लाह और उसके रसूलों में फ़रक़ करना चाहते हैं और कहते हैं कि हम कुछ रसूलों को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते, और उनके बीच से अपना ही एक अलग रास्ता बना लेना चाहते हैं, सचमुच ये ही लोग सच्चे काफ़िर (नाशुकरे) हैं। और अल्लाह ने उनके लिये ज़िल्लत की सज़ा तय कर रक्खी है।" (नेसाय १५०-१५१) "सचमुच जिन लोगों ने दीन यानी धर्म के टुकड़े टुकड़े कर डाले और जो अलग अलग

गिरोह बनाकर बैठ गये हैं उनसे तुम्हारा कोई सरोकार नहीं।" (ईनाम—१६०) "यह (.कुरान) वह हक़ (सचाई) है जो अपने से पहले की मज़हबी किताबों की तसदीक़ करता है (यानी उन सबको सच बताता है।)" (बक़रह-६१) "और तुम्हें (मुहम्मद साहब को) कोई ऐसी बात नहीं कही गई जो सचमुच तुमसे पहले के रसूलों को न कही गई हो।" (हा मीम-४३) "...अल्लाह ने सब के लिये अलग अलग शरअ और तरीक़े बना दिये हैं। अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही फ़िरक़ा (एक ही रीत रिवाज के माननेवाले) बना देता। लेकिन अल्लाह चाहता है कि जिसे जो तरीक़ा बता दिया है उसीमें उसे परखे। इसलिये इन फ़रक़ों में न पड़ो, और दूसरों की भलाई के कामों में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करो। सबको अल्लाह ही के पास लौट कर जाना है। तब जिन बातों में तुम में फ़रक़ है वह अल्लाह तुम्हें समझा देगा।" (मायदा, ४८)

इन मजहबों की किताबों में इसी तरह की अनगिनत चीज़ें भरी पड़ी हैं। हक़ीक़त यह है कि—

फ़क़त तफ़ावत है नाम ही का, दर अस्ल सब एक ही है यारो !
जो आबे साफ़ी कि मौज में है, उसी का जलवा हुबाब में है।

ऐ दोस्तो ! सिर्फ़ नाम का फ़रक़ है। असल में सब एक ही हैं। जो साफ़ पानी लहर में दिखाई देता है उसी की चमक बुलबुले में भी नज़र आती है।

२

ऊपर के हिस्से में हम दुनिया के बड़े बड़े मज़हबों की एकता का ज़िकर कर चुके हैं। इस हिस्से में हम हिन्दू धर्म और इसलाम की दो मशहूर और जानी बूझी किताबों गीता और क़ुरान, को ही लेना चाहते हैं। हमारे देस में इन ही दो मज़हबों के मानने वालों की तादाद सब से ज़्यादह है। गीता कब और कैसे लिखी गई, और हिन्दू धर्म की किताबों में गीता की क्या जगह है, यह हम गीता के बयान में बतावेंगे। ऐसे ही क़ुरान कहाँ, कब, कैसे और किन हालतों में उतरा और उसका लोगों पर क्या असर पड़ा, यह क़ुरान के बयान में बतावेंगे। ये सब जानते हैं कि गीता हिन्दू धर्म की ख़ास किताब और उस धर्म का निचोड़ मानी जाती है। ऐसे ही क़ुरान इसलाम की सबसे बड़ी किताब और उसकी जड़ है। दुनिया की इन दोनों पाक किताबों को मिलाकर प्रेम के साथ पढ़ा जाय, तो साफ़ पता चलता है कि इन दोनों की नसीहतें और उनके बुनियादी असूल बिलकुल एक हैं। कुछ मिसालें हम आगे देते हैं।

हिन्दुस्तान में गीता और अरब में क़ुरान की तालीम जिन हालतों में दी गई वह एक दूसरे से बहुत कुछ मिलती जुलती हैं। हिन्दुस्तान में महाभारत की लड़ाई कौरवों और पाण्डवों के बीच हुई थी, जो एक ही ख़ानदान के और एक ही दादा की औलाद थे। उस लड़ाई में दोनों तरफ़ की फ़ौजों में एक दूसरे के भाई, मामा, चाचा, साले बहनोई, ससुर, वग़ैरह मौजूद थे। इसी तरह क़ुरान में मुसलमानों और ग़ैर मुसलमानों की जिस

लड़ाई का ज़िकर आता है वह अरब के एक ही बड़े और मशहूर क़बीले के लोगों में, जिसे .कुरैश का क़बीला कहते थे, शुरू हुई थी। '.कुरैश' और 'कुरु' नामों में सिर्फ़ लफ़्ज़ी एकपन ही नहीं है, बल्कि तारीख़ी या इतिहासी एकपन भी मालूम होता है। कौरुश और कुरु दोनों नाम ईरानी किताबों में भी पाए जाते हैं। ईरान के एक बहुत बड़े बादशाह का नाम कौरुश था जिसे अँगरेज़ी में बिगाड़कर साइरस लिखा जाता है। ईरानी अपनी किताबों में उसे 'कौरुश' और 'कुरु' दोनों तरह से लिखते हैं। इबरानी ज़बान में उसका नाम कोरेश लिखा जाता है। कौरवों और पाण्डवों दोनों के एक पुरखे का नाम भी कुरु था। कौरव लफ़्ज़ कुरु ही से बना है। यह एक सच्ची तारीख़ी बात है कि महाभारत के कुरु और कौरव, ईरान के कौरुश या कुरु और अरब के .कुरेश तीनों नामों की जड़ एक ही है।

जिस तरह कौरवों ने पाण्डवों पर तरह तरह के .ज़ुल्म किये और उन्हें दुख पहुँचाए, उनकी जायदाद छीन ली, उन्हें उनके घरों और मुल्क से निकाल दिया, उनके रहने के मकान में आग लगा देने और उन्हें ज़हर देने तक की कोशिशें कीं, उसी तरह मक्के के .कुरेश ने क़रीब क़रीब यही सब बातें मुहम्मद साहब और उनके उन रिश्तेदारों और साथियों के साथ कीं थीं जिन्होंने मुहम्मद साहब के कहने पर अपने पुराने मज़हब को छोड़ कर इसलाम धर्म को अपना लिया था, यानी एक अल्लाह के सिवा और सब देवी देवताओं या काबे के पुराने बुतों की पूजा करना बन्द कर दिया था। मक्के में काबा हज़ारों बरस का

एक पुराना मन्दिर था। क़ुरैश उसके मुजाविर या पण्डे थे। तेरह साल तक मक्के के क़ुरैश ने मुहम्मद साहब के रिश्तेदारों और साथियों पर इतने ज़ुल्म ढाए कि उनका मक्के में रहना दूभर हो गया। आख़ीर में मुहम्मद साहब को ख़ुद भी मक्का छोड़कर मदीने चला जाना पड़ा। जो मुसलमान पहले से मक्का छोड़कर बाहर चले गये थे वह सब अब मदीने में आ गए, और मदीने के बहुत से लोगों ने भी इसलाम को अपना लिया। मक्के के क़ुरैश ने इनका पीछा यहां भी न छोड़ा। उन्होंने एक तरफ़ तो मुहम्मद साहब के उन थोड़े से साथियों और प्रेमियों को जो मक्के में बाक़ी रह गए थे और ज़्यादह सताना शुरू किया, और दूसरी तरफ़ एक बहुत बड़ी फ़ौज लेकर मुहम्मद साहब और उनके साथियों को मिटा देने के लिये मदीने पर चढ़ाई कर दी। उस वक़्त तक इसलाम में दुशमन के ख़िलाफ़ भी हथियार उठाने की इजाज़त नहीं थी। उन तेरह बरस के अन्दर की जितनी आयतें क़ुरान में इस बारे में हैं सबमें "दूसरों के ज़ुल्मों को सब्र के साथ बरदाश्त कर लेने' और 'बुराई का बदला भलाई से देने' का ही हुकुम दिया गया है (हा मीम—३४, ३६; अलमोमेनून—९६ वग़ैरह)। अब जब क़ुरैश की तरफ़ से मदीने पर चढ़ाई हुई तो क़ुरान में पहली बार इन लफ़्ज़ों में मुसलमानों को तलवार उठाने की इजाज़त दी गई--

"जिन लोगों पर जंग के लिये चढाई की जा रही है उन्हें जंग की इजाज़त दी जाती है, क्योंकि उन पर यह ज़ुल्म है, और इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह उनकी मदद के लिए काफ़ी है। यह

इजाज़त उन लोगों को है जिन्हें इनसाफ़ के ख़िलाफ़ उनके घरों से निकाल दिया गया है, सिर्फ़ इसलिये कि वह कहते हैं--एक अल्लाह ही हमारा रब्ब है... ।" (हज्ज ३९,४०)

गीता में कौरवों को धर्म से गिरे हुए और 'आततायी' कहा गया है (१—३६)। मनुस्मृति और दूसरी किताबों में आततायी उन लोगों को कहा गया है जो आग लगा देना, ज़हर दे देना, मार डालना, लूट लेना या इसी तरह के और .ज़ुल्म दूसरों पर करते हैं और ऐसे लोगों के लिए मौत की सज़ा बताई गई है। मनुस्मृति में लिखा है—

"आततायी अगर सामने से आ रहा हो तो बिना सोचे उसे मार डालना चाहिये।"

.कुरान में मक्के के उन .कुरैश के लिए, जो मुसलमानों पर तरह तरह के .ज़ुल्म करते थे, ख़ास तौर पर 'काफ़िर' का लफ़्ज़ बार बार आया है। इसके लफ़्ज़ी मानी 'ना शुकरा' हैं। मक्के के इन 'काफ़िरों' के ख़िलाफ़ लड़ाई की इजाज़त देते हुए .कुरान ने इस इजाज़त के तीन सबब बताए हैं—

(१) मक्के के उन लोगों को जो इसलाम से प्रेम रखते थे वह तरह तरह से सताते थे (नेसाय ७४)।

(२) उन्होंने मुसलमानों को इनसाफ़ के ख़िलाफ़ उनके घरों से निकाल दिया था, सिर्फ़ इसलिए कि वह एक ईश्वर के सिवा और किसी देवी देवता की पूजा करने से इनकार करते थे (हज्ज ४०)।

(३) उन्होंने मदीने पर बिला वजह चढ़ाई करके वहाँ से भी मुसलमानों को मिटा देना चाहा था (हज्ज ४६) ।

इस सिलसिले में एक और बात देखने के क़ाबिल है । जिस वक्त मक्के की फ़ौज और मदीने की फ़ौज दोनों एक दूसरे के आमने सामने हुईं, तो कौरवों और पाण्डवों की फ़ौजों की तरह उनमें भी दोनों तरफ़ एक दूसरे के भाई, चाचा, ताया, मामा, ससुर, और पास के और दूर के रिश्तेदार एक दूसरे से लड़ने के लिए तैयार दिखाई दिये ।

जिस तरह गीता में अर्जुन का दिल अपने रिश्तेदारों को लड़ने के लिए तैयार सामने खड़ा देख कर काँपने लगा था और उसने एक बार लड़ने से इनकार कर दिया था, उसी तरह कुरान में लड़ाई की इजाज़त आ जाने के बाद भी बहुत से मुसलमान लड़ाई से बचना चाहते थे । जिस तरह गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन को तरह तरह से समझाया कि —

"अपने दिल की इस कमज़ोरी को छोड़ कर खड़ा हो जा और लड़ । यह कमज़ोरी तुझे शोभा नहीं देती ।" (२--३)

उसी तरह क़ुरान में मुसलमानों की इस कमज़ोरी और हिचकिचाहट को देखकर हुक्म दिया गया—

"तुम्हें जंग की इजाज़त दे दी गई है और तुम्हें यह अच्छा नहीं लगता । मुमकिन है जो चीज़ तुम्हें अच्छी नहीं लगती वह तुम्हारे भले की हो, और जो चीज़ तुम्हें अच्छी लगती है वह तुम्हारे लिए बुरी हो ...और क्या बात है कि तुम अल्लाह की राह में उन कमज़ोर लोगों, औरतों और बच्चों की हिफ़ाज़त के लिए नहीं लड़ते जो यह कह रहे

हैं—ऐ हमारे रब्ब ! हमें इस शहर मक्के से निकाल जिसके लोग हम पर ज़ुल्म करते हैं, हमें कोई बचानेवाला और मदद करनेवाला भेज।" (बक़रह २१६, नेसाय ७५, ७६)

जिस तरह श्रीकृष्ण ने अर्जुन को यह कहकर समझाया था कि—

"अगर तू लड़ाई में मारा जायगा तो स्वर्ग (बहिश्त) जायगा और अगर जीतेगा तो धरती पर राज करेगा।" (२—३७)

उसी तरह क़ुरान में मुसलमानों से कहा गया कि—

"जो कोई अल्लाह की राह में लड़ता है वह चाहे मारा जाय और चाहे जीते, अल्लाह से उसे बहुत बड़ा फल मिलेगा।" (नेसाय ७४)

गीता में धर्म और न्याय के लिए लड़ाई को 'धर्म युद्ध' बताया गया है। क़ुरान में मज़हब के बचाव और इनसाफ़ के लिए जंग करने को 'क़िताल फ़ी सबीलल्लाह' यानी 'ईश्वर की राह में लड़ना' कहा गया है।

दोनों जगह आख़ीर में उसी की जीत रही जिसकी तरफ़ धर्म और इनसाफ़ था, और दोनों जगह इस तरह सच्चे धर्म और सच्चे दीन को क़ायम करने में इससे मदद मिली।

अब तक हमने यह दिखाया है कि गीता और क़ुरान दोनों की तालीम कितनी मिलती जुलती हालतों में दी गई। अब हम इन दोनों किताबों के असूलों की एकता पर नज़र डालना चाहते हैं। इसके लिए हम गीता और क़ुरान में से कुछ मिसालें नीचे देते हैं। साथ साथ हम हिन्दू धर्म और इसलाम की दूसरी

किताबों और इन मज़हबों के भक्तों और सूफ़ियों की चीज़ों में से भी इस तरह की बातें पेश करेंगे जिनसे दोनों मज़हबों का बुनियादी एकपन और अच्छी तरह समझ में आ सके।

सब से पहले हम ईश्वर या अल्लाह ही के ख़याल को लें। गीता और क़ुरान दोनों में ईश्वर को क़रीब क़रीब एक से लफ़्ज़ों में बयान किया गया है।

गीता में ईश्वर को कई जगह "ज्योतिषामपितज्ज्योतिः" (१३-१७) यानी 'रोशनियों की रोशनी' और "प्रभास्मिशशिसूर्ययोः" (७-८) यानी 'चांद और सूरज की रोशनी' कहा गया है। क़ुरान में अल्लाह को "नुरुनअलानूर" (नूर ३५) यानी 'रोशनी पर रोशनी' और नूरुस् समावाते वल अर्दे (नूर ३५) 'यानी आसमानों और ज़मीन की रोशनी' कहा गया है।

गीता में कई जगह ईश्वर की तारीफ़ में कहा गया है कि वह "लोगों को अँधेरे से रोशनी की तरफ़ ले जाता है।" (१०-११) क़ुरान में भी अल्लाह के बारे में लिखा है कि "वह लोगों को अँधेरे से रोशनी में ले जाता है।" (बक़रह २५७)

उपनिषदों में जगह जगह ईश्वर से प्रार्थना की गई है—"हमें अँधेरे से रोशनी में ले चल" (तमसोमा ज्योतिर्गमय)। मुहम्मद साहब की एक मशहूर दुआ है—"या अल्लाह! मुझे रोशनी दे।"

गीता में ईश्वर को "विश्वतोमुखम्" (१०-३३ और ११-६१) 'सब तरफ़ मुँहवाला' कहा गया है। क़ुरान में लिखा है—"जिधर को भी तुम मुड़ो उधर ही अल्लाह का मुँह है।" (बक़रह ११५)

गीता में ईश्वर को "सर्वलोकमहेश्वरम्" (५-२६) 'सब दुनियाओं का मालिक' बताया गया है। क़ुरान में भी उसे 'रब्बुल आलमीन' (फ़ातेहा-१) 'सब दुनियाओं का मालिक' कहा गया है।

गीता में ईश्वर को 'सत्य' कहा गया है (१७-२३)। क़ुरान में लिखा है–"अल्लाहोवल हक़्क़ो" (हज्ज, ६२) यानी 'अल्लाह हक़ (सत्य) है'।

गीता में ईश्वर की बाबत कहा गया है—"उस जैसा कोई दूसरा नहीं है।" (११-४३) क़ुरान में लिखा है–'और उस जैसा कोई दूसरा नहीं है।" (इख़लास,४) यजुर्वेद के श्वेताश्वतर उपनिषद में लिखा है—"न उसके बराबर कोई दूसरा है और न उससे बढ़ कर कोई है।"

गीता में लिखा है—"यह सारा जगत ईश्वर से घिरा हुआ है।" (६-४,११-३८) ठीक यही चीज़ ईशोपनिषद में कही गई है—"इस दुनिया के अन्दर जो कुछ है सब ईश्वर से घिरा हुआ है।" यानी वह सब में रमा हुआ है। क़ुरान में लिखा है 'इन्नहूबेकुल्ले शै इम्मुहीत" (हा मीम—५४) 'अल्लाह सब चीज़ों को घेरे हुए है।'

गीता में लिखा है "ईश्वर ही सब जानदारों का शुरू, सब का बीच और सब का आख़ीर है।" (१०-२०)

ईशोपनिषद में लिखा है—

"वह चलता है और वह नहीं चलता, वह दूर है और वह पास है। वही सब के अन्दर है और वही सबके बाहर है।"

कुरान में है कि "वह (अल्लाह) ही सब का शुरू है, वही सब का आखीर है, वही सबका ज़ाहिर है वही सबका बातिन (अंतर) है। वह सब चीज़ों का जानने वाला है।" (हुदैद ३)

गीता में एक ईश्वर को 'अक्षर' यानी न मिटनेवाला और बाक़ी सब चीज़ों को 'क्षर' यानी मिट जानेवाली कहा गया है (१५-१६)। कुरान में लिखा है—

' सब चीज़ें फ़ानी यानी मिट जाने वाली हैं, बाक़ी रहने वाली, यानी न मिटनेवाली, ज़ात सिर्फ़ उस बड़ाई और बुज़ुर्गी वाले अल्लाह की है।" (रहमान २६ और २७)

गीता में ईश्वर को "अचिन्त्य" (२-२५) 'बुद्धि से परे' (३-४२) और 'अनिर्वचनीय' यानी जिसे लफ़्ज़ों में बयान नहीं किया जा सकता, कहा गया है। कुरान में लिखा है कि "(आदमी की) निगाह उसे नहीं समझ सकती।" (अनआम--१०४)

ईश्वर के और बहुत से गुण जिन लफ़्ज़ों में गीता में बयान किये गए हैं क़रीब क़रीब उन्हीं लफ़्ज़ों में क़ुरान में कहे गए हैं।

ईश्वर के उन्हीं गुणों, यानी अल्लाह की उन्हीं सिफ़तों के बारे में अगर हम दूसरे हिन्दू और मुसलमान बुज़ुर्गों के बयानों को देखें तो यह एकता और भी ज़्यादह चमकने लगती है। गीता में लिखा है—

"अगर आसमान में एक हज़ार सूरजों की रोशनी एक साथ चमक उठे तब भी वह उस ईश्वर की ज्योति के शायद ही बराबर हो सके।" (११-१२)

"ऐ विष्णु ! तेरी जला डालनेवाली लपटों से सारी सृष्टि (मख़लूक़) जल रही है।" (११—३०)

ईरान का मशहूर सूफ़ी शम्सतबरेज़ अल्लाह से कहता है—

"ऐ ! मेरी आंख, मेरी अक़ल और मेरी जान तीनों की रोशनी ! मेरे दिल के तख़्त के ऊपर तू ही सुलतान है। तेरी रोशनी ऐसी है जिस तरह लाखों चाँद और सूरज बिना आसमान के चमक रहे हों। तू ही टिका हुआ है और तू ही हरकत में है। तू एक रस है और तू ही हज़ारों रूप वाला है। तू ही नीचे है और तू ही ऊपर है। तू ही तन है और तू ही जान है...हक़ (सत्य या अल्लाह) ने एक आग लगा रक्खी है। बातिल (असत्य) उसमें जल रहा है। वह आग दिल को जला डालती है। अल्लाह करे वह आग मेरे दिल को लग जावे !"

मुण्डक उपनिषद् में लिखा है—

"उसी की रोशनी से यह सब दुनिया रोशन है। उसी की चमक से यह सब चमक रहा है।"

जिस तरह गीता और .कुरान दोनों .खुदा को आदमी की अक़ल से बाहर की चीज़ कहते हैं उसी तरह एक मुसलमान सूफ़ी ने कहा है—

ख़ारिज अज़ अक़लो क़यासो फ़हम जुमला ख़ासो आम,

दूर अज़ हद्दे कि बाशद हीतये अज़कारे मा।

वह हम सब की अक़ल, हमारे अन्दाज़े और हमारी समझ से बाहर है, जहाँ तक हम बात चीत कर सकते हैं उस हद से वह परे है।

सामवेद के केनोपनिषद् में लिखा है—

"जिसने यह समझा कि ईश्वर नहीं जाना जा सकता वही जानता है। उसे जानने का दावा करने वाले असल में उसे नहीं जानते, उसे वे ही जानते हैं जो उसे जानने का दावा नहीं करते।"

'अल्लाह सब चीज़ों को घेरे हुए है' इस ख़याल को और साफ़ करते हुए एक मुसलमान सूफ़ी ने कहा है—

काबे में कलीसा में हमने तो जहां देखा,
ऐ क़स्रे वफ़ा ! तेरी तामीर नज़र आई।

गीता में यह ख़याल वार बार आता है कि—

"ईश्वर सब प्राणियों के दिल के अन्दर रहता है।" (१८—६१)

कहीं कहीं लिखा है कि—

"ईश्वर भक्तों के दिल के अन्दर बसता है।" (१०—११) "जो भक्ति के साथ मेरी पूजा करते हैं वह मुझमे रहते और मैं उनमें रहता हूं।" (६—२६)

मुहम्मद साहब ने कहा है कि—

"आदमी का दिल रहमान (ईश्वर) के रहने की जगह है।"

यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण में लिखा है—

ईश्वर दिल में रहता है इसी लिए दिल को 'हृदय' कहते हैं।"

मौलाना रूमी की मसनवी फ़ारसी ज़बान में क़ुरान कही जाती है।* मौलाना रूमी मसनवी में लिखते हैं—

"मुहम्मद साहब ने कहा है कि—अल्लाह कहता है कि मैं ऊपर या नीचे, ज़मीन में या आसमान में या अर्श पर कहीं नहीं समा

---

*मसनवीए मौलवीए मानवी, हस्त क़ुरान दरज़बाने पहलवी

सकता। पर मैं मोमिन (विश्वासी भक्त) के दिल में रहता हूं। जो मुझे ढूंढना चाहे वहीं ढूंढ ले।"

शिवस्तोत्र में लिखा है—

"न मैं कैलास में रहता हूँ न बैकुण्ठ में, मेरा वास भक्तों के दिल में है।"

एक मुसलमान सूफ़ी ने इसी ख़याल को इन सुन्दर शब्दों में जाहिर किया है—

ऊ दर दिले मनस्तो दिले मन बदस्तेऊ,
चूं आइना बदस्ते मनो मन दर आइना।

वह मेरे दिल में है और मेरा दिल उसके हाथ में है, जिस तरह आइना मेरे हाथ में है और मैं आइने में हूँ।

एक दूसरा सूफ़ी लिखता है—

ग़ाफ़िल तू किधर भटके है कुछ दिल की ख़बर ले,
शीशा जो बग़ल में है उसी में तो परी है।

गीता में ईश्वर की 'दिव्य विभूतियों' और उसके 'विराट रूप' को तरह तरह से बयान किया गया है। सातवें अध्याय में श्रीकृष्ण ने कहा है—

"ऐ कुन्ती के बेटे! मैं पानी जैसी चीज़ों में रस हूँ, सूरज और चाँद की रोशनी हूँ, वेदों में ओम हूँ, आकाश में आवाज़ हूँ, लोगों में उनकी हिम्मत हूँ, ज़मीन में ख़ुशबू हूँ, आग में उसकी दमक हूँ, तपस्वियों (रियाज़त करने वालों) का तप यानी रियाज़त हूँ, और सब जानदारों की जान हूँ" (७—८ और ९)

जिसे गीता में विभूतियाँ कहा गया है उसे सूफ़ी किताबों में अल्लाह के मज़ाहिर कहा जाता है। फ़ारसी की सूफ़ी किताब गुलशने राज़ में लिखा है।

"दुनिया की तमाम चीज़ें उसी एक अल्लाह के अलग अलग मज़ाहिर हैं।"

गीता में जिसे विश्व रूप या विराट रूप (अध्याय ११) कहा गया है इसलामी किताबों में उसे शकले मुहीत कहते हैं। अल्लाह के इस तरह के दीदार या दर्शन को सूफ़ी किताबों में 'मराक़बए अहातए कुल्ली' कहा जाता है—

मौलाना रूमी की मसनवी में लिखा है—

मन क़न्द हा रा लज़्ज़तम् बादामहा रा रोग़नम्

. . .

"मैं ही मिठाइयों का मिठास हूँ। मैं ही बादाम के अन्दर रोग़न हूँ...कभी मैं बादशाहों का ताज होता हूँ...कभी होशियारों की होशियारी और कभी मुफ़लिसों की मुफ़लिसी..." वग़ैरह।

गीता कहता है—

"हवन की सामग्री भी ब्रह्म (ख़ुदा) है। घी भी ब्रह्म है। आग भी ब्रह्म है। हवन करनेवाला भी ब्रह्म है। और जो आदमी इस ब्रह्म कर्म में लगा हुआ है वह ब्रह्म ही को पहुंचता है।" (४—२४)

एक मुसलमान सूफ़ी ने इसी ख़याल को इन लफ़्ज़ों में ज़ाहिर किया है—

ख़ुद कूज़ा ओ ख़ुद कूज़ा गरो ख़ुद गिले कूज़ा ख़ुद रिन्द सुबूकश,
ख़ुद बरसरे आंकूज़ा ख़रीदार बरआमद बेशिकस्तो रवाँ शुद।

वह आप ही प्याला है, आपही कुम्हार है, आपही प्याले की मिट्टी है, और आप ही उस प्याले से पीनेवाला है। वह .खुद आकर प्याला ख़रीदता है और .खुद ही प्याले को तोड़कर चल देता है।

ईश्वर और दुनिया का एक दूसरे से क्या नाता है, इसके बारे में गीता कहती है—

"जो मुझे (ईश्वर को) सब जगह और सब चीज़ों को मेरे अन्दर देखता है वह न कभी मुझसे अलग होता है न मैं उससे अलग होता हूं। जो आदमी एक दिल होकर सब जानदारों के अन्दर सबके घट में रहनेवाले ईश्वर की पूजा करता है वह योगी चाहे कहीं भी रहे ईश्वर के अन्दर है।" (६ – ३० और ३१)

बारहवीं सदी ईसवी के मशहूर मुसलिम सूफ़ी मुहीउद्दीन इब्न अरबी ने लिखा है—

फ़ला तनज़ुर इललहक़्के फ़त अरीहे अनिल ख़ल्के,
वलातनज़ुर इलल ख़ल्के वतक्सूहो सेवल हक़्के।

तू अल्लाह को मख़लूक़ यानी दुनिया से अलग मत देख और न मख़लूक़ (आदमियों, जानवरों और सब चीज़ों) को अल्लाह के सिवा किसी दूसरे का रूप समझ।

यहां तक हमने यह दिखाने की कोशिश की है कि गीता और .कुरान दोनों में ईश्वर और अल्लाह का ख़याल कितना मिलता जुलता है। इस तरह की और भी बहुत सी मिसालें दी जा सकती हैं। इन्हें बढ़ाने की ज़रूरत नहीं है।

ईश्वर के इसी खयाल में से, द्वैत और अद्वैत यानी वहदतुश्शुहूद और वहदतुलवजूद की बहसें पैदा होती हैं। हिन्दू

दर्शन में जिसे अद्वैत कहते हैं मुसलिम फ़लसफ़े में उसी को वहदतुलवजूद कहते हैं। ऐसे ही, द्वैत के असूल को इसलामी किताबों में, वहदतुश्शुहूद कहा जाता है।* अद्वैत या वहदतुल-वजूद का मतलब यह है कि दुनियाँ में जो कुछ दिखाइ देता है या जो कुछ है सब असल में अल्लाह ही अल्लाह है, सिवाय अल्लाह के और कोई चीज़ है ही नहीं। इसके खिलाफ़ जो कुछ हम देखते हैं वह धोका, माया यानी फ़रेब है। इसी ख़याल को हिन्दू विद्वान 'अहं ब्रह्म' यानी मैं ब्रह्म हूँ, और 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' यानी यह सब ब्रह्म ही ब्रह्म है और मुसलिम सूफ़ी 'अनल हक़' यानी मैं ख़ुदा हूँ और 'हमा ओस्त' यानी सब अल्लाह ही अल्लाह है—कह कर ज़ाहिर करते हैं। इसके खिलाफ़ द्वैत या वहद-तुश्शुहूद का मतलब यह है कि ईश्वर या अल्लाह का वजूद एक अलग चीज़ है और माद्दा या मख़लूक़ यानी जानदार वग़ैरह जो हम देखते हैं अलग वजूद रखते हैं। यह सब अल्लाह के बनाए हुए हैं, पर हैं उससे अलग। इस ख़याल को मुसलमान आलिम 'हमा अज़ ओस्त' सब चीजें अल्लाह ही से हैं, यानी अल्लाह ही ने बनाई हैं कह कर ज़ाहिर करते हैं। हिंदुओं और मुसलमानों दोनों के बड़े से बड़े आलिमों और विद्वानों में इन दोनों ख़याल के लोग मिलते हैं। और एक ख़ास बात यह है कि जिस तरह द्वैत ख़याल के माननेवाले हिन्दू गीता से अपने ख़याल को ठीक साबित करने की कोशिश करते हैं और अद्वैत ख़याल के मानने

---

*कुछ आलिम वहदतुश्शहूद को द्वैत से नहीं, बल्कि विशिष्टा द्वैत से मिलाते हैं।

वाले भी उसी गीता से अद्वैत को ठीक साबित करने की कोशिश करते हैं, ठीक उसी तरह वहदतुलवजूद के मानने वाले मुसलिम आलिम क़ुरान से अपने ख़याल को ठीक साबित करते हैं और उनके ख़िलाफ़ वहदतुश्शुहूद के माननेवाले भी, उसी क़ुरान मजीद से अपने ख़याल को सच्चा साबित करने की कोशिश करते हैं।

हम इस फ़लसफ़ी बहस में पड़ना नहीं चाहते। हमारे लिये यह दिखा देना काफ़ी है कि इस बारीक मामले में भी गीता और क़ुरान दोनों का बिलकुल एक हाल है। यानी दोनों के पढ़ने और माननेवाले अपनी समझ और बूझ की बात दोनों ही से निकाल लेते हैं।

गीता में लिखा है कि—

"जो आदमी सच्ची लगन के साथ ईश्वर की भक्ति करता है वह सब गुणों यानी हदों से पार होकर ईश्वर ही में लीन यानी फ़ना हो जाता है।" (१४-२६)

सूफ़ियों की ज़बान में इस ईश्वर में लीन हो जाने को फ़नाफ़िल्लाह* कहते हैं।

---

*मुफ़्ती सय्यद अब्दुल क़यूम जालंधरी ने अपनी किताब 'गीता और क़ुरान' में श्री कृष्ण के अपने को ईश्वर कहने के बारे में लिखा है—"कृष्ण जी हक़ीक़ते इनसानी (आदमी की असलीयत) से जुदा हो कर फनाफ़िल्लाह (ब्रह्मलीन) के मुक़ाम से बोल रहे हैं, जैसा कि उम्मते मुहम्मदिया (इसलाम) के बाज़ बुज़ुर्ग सुकर (तल्लीनता) की हालत में इस क़िस्म के कलमात शतहीया (ज़ाहिरा शरअ के ख़िलाफ़) ज़बान पर ला चुके हैं।"

अल्लाह के ख़याल के बाद इस तरह के ख़याल सामने आते हैं जैसे - दुनिया कैसे बनी, रूह क्या है, आवागमन यानी तनासुख़ होता है या नहीं, अवतार या रसूल किसे कहते हैं, वह दुनिया में क्यों आते हैं, मज़हब क्या है और अलग अलग मज़हब क्यों हैं, वग़ैरह। इस तरह के अनगिनत सवाल हो सकते हैं, जिनके जवाबों में गीता और क़ुरान की बुनियादी एकता दिखाई जा सकती है। हम यहां इनमें से सिर्फ़ ऊपर के चार या पांच सवालों को ही लेंगे।

दुनिया की पैदायश की बाबत गीता कहती है—

"जितने जानदार या प्राणी हैं वह सब शुरु में अव्यक्त थे यानी उनमें से कोई पैदा नहीं था, यानी उस वक़्त कोई रंग रूप नहीं था। बीच के ज़माने में ये सब चीज़ें व्यक्त यानी ज़ाहिर हुईं। आख़िर में जाकर फिर ये सब अव्यक्त होजायंगी यानी न रहेंगी। इसलिये फ़िकर करने की कोई बात नहीं।" (२-२८)

क़ुरान की मशहूर आयत है कि -

"हम सब अल्लाह ही के हैं और उसी की तरफ़ लौटनेवाले हैं।" (बक़रह-१५६)

सूफ़ियों ने इस ख़याल को और साफ़ तौर से ज़ाहिर किया है। इसलाम की ज़बान में अव्यक्त को बेनिशान या अदम कहते हैं। एक सूफ़ी का कहना है —

दर अदम बूदेमो आख़िर दर अदम ख़्वाहेम रफ़्त,

ईं तमाशाए जहां रा मुफ़्त मी बीनेम मा।

हम अदम (अव्यक्त) की हालत में थे और आख़िर में फिर

उसी हालत में होंगे। यह बीच का तमाशा हम मुफ़्त में देख रहे हैं।

मौलाना रूम ने क़ुरान की ऊपर वाली आयत के हवाले से लिखा है--

सूरत अज़ बे सूरती आमद बिरूं
बाज़ शुद इन्ना इलै हे राजेऊन।

सब सूरतें बे सूरती (निराकार या अव्यक्त) से निकली हैं और फिर सब उसी अल्लाह (निराकार) में जाकर मिल जाती हैं।

छान्दोग्य उपनिशद में लिखा है —

"यह सब जो कुछ है उसी अव्यक्त ईश्वर से पैदा होता है। उसी में रहता हुआ अपने सब रूपों को चलाता है और आख़िर उसी में लै (फ़ना) हो जाता है।"

आत्मा या रूह के बारे में गीता कहती है—

"न हथियार उसे काट सकते हैं, न आग उसे जला सकती हैं, न पानी उसे भिगो सकता है, न हवा उसे सुखा सकती है········"
(२-२३ और २४)

मौलाना रूम ने अपनी मसनवी में कहा है—

क़ाबिले तग़ईर औसाफ़े तन अस्त,
रूह बाक़ी आफ़ताबे रोशन अस्त।

• • •

अज़ मर्गचे अन्देशी चूँ जाने बक़ादारी।

जिस्म की हालतों में अदल बदल होता रहता है लेकिन रूह एक सी क़ायम रहती है···जब रूह यानी जान हमेशा रहनेवाली है तो आदमी को मौत से क्या डरना !

आवागमन पुनर्जन्म या तनासुख़ के लिये गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है—

"ऐ अर्जुन ! मेरे और तेरे दोनों के बहुत से जन्म हो चुके हैं। मैं उन सब को जानता हूँ पर तू नहीं जानता।" (४-५)

.कुरान में कहीं पर भी आवागमन के असूल के ख़िलाफ़ कोई साफ़ बात नहीं मिलती। दूसरी तरफ़ .कुरान में कुछ ऐसी आयतें हैं जो आवागमन या तनासुख़ को साबित करती मालूम होती हैं। उन्हीं आयतों की बिना पर तनासुख़ के मामले में मुसलमान विद्वानों में दो ख़याल पैदा हो गए हैं, एक तनासुख़ के हक़ में दूसरा इसके ख़िलाफ़। इन आयतों में से कुछ यह हैं—

"अल्लाह ही ने तुम्हें ज़िन्दगी दी है। वही तुम्हें मौत देगा। फिर वही तुम्हें फिर ज़िन्दा करेगा। सचमुच आदमी ना शुकरा है।" (हज-६६)

"अल्लाह दाने में से और गुठली में से अँखुआ फोड़ निकालता है। वह मुर्दा से ज़िन्दा और ज़िन्दा से मुर्दा करता है। यह अल्लाह ही के काम हैं। फिर तुम उससे क्यों फिरे हुए हो?" (अन-आम-६६)

"तुम अल्लाह से कैसे इनकार कर सकते हो? तुम मर चुके थे और उसने तुम्हें ज़िन्दा किया, वह फिर तुम्हें मुर्दा कर देगा और फिर ज़िन्दा कर देगा। और आख़िर में फिर तुम उसी के पास जाओगे।" (बक़रह—२८)

"हमने (अल्लाह ने) तुम में मौत ठहराई और हमारे लिए यह

नामुमकिन नहीं कि तुम्हारी तरह औरों को पैदा करें और तुमको फिर से ऐसी हालत में पैदा करें जिसका तुम्हें पता नहीं।" (वाक़े-६०)

इन ही आयतों को लेकर शिया मुसलमानों के कुल चौबीस फ़िर्क़ों में से तेरह* आवागमन को ठीक मानते हैं। शियों के इन फ़िर्क़ों के अलावा और भी बहुत से मुसलमान आलिमों और सूफ़ियों जैसे मौलाना रूम, इब्नुलतुफ़ैल, इब्नख़ालदून, इमाम ग़िज़ाली ने आवागमन के असूल को ठीक बताया है। हम इस मज़मून पर सिर्फ़ मौलाना रूम के कुछ शेर नीचे देते हैं। मौलाना रूम ने एक जगह लिखा है—

हम चो सबज़ा बारहा रोईदा अम
हफ़्त सदहफ़्ताद क़ालिब दीदाअम।

मैं सबज़ा यानी घास की तरह बार बार पैदा हुआ हूं। मैंने सात सौ सत्तर जिस्म देखे हैं।

मौलाना रूम आजकल के असूल एवोल्यूशन (इर्तक़ा यानी विकास) के भी एक बड़े दर्जे तक माननेवाले थे। उनके कुछ मशहूर शेर नीचे दिये जाते हैं। वह अपने लिये लिखते हैं—

अज़ जमादी मुर्दमो नामी शुदम
वज़ नुमा मुर्दम बहैवां सर ज़दम।

---

* रज़ामिया, कामलिया, मन्सूरिया, हमीरिया, बातिनिया, क़रामतिया, जनाहिया, ख़िताबिया, मामरिया, मैमूनिया, मक़्नया, खलफ़ीया, और जनाबिया, (उर्दू गीता और क़ुरान—मुफ़्ती मुहम्मद अब्दुल क़यूम जालंधरी)

मुर्दमज़ हैवानिओ आदम शुदम
पस चे तरसम के ज़मुर्दम कम शवम।
हम्लए दीगर बमीरम ऐ बशर
ता बरारम अज़ मलायक बालोपर।
बारे दीगर अज़ मलक क़ुरबां शवम
उंचे अन्दर वह्म नायद आं शवम।

मैं पहले जमादात यानी मिट्टी पत्थर वग़ैरह की हालत में था। वहाँ से मरा तो नबातात (बनस्पति) बना। नबातात से जब मैं निकला तो जानवर बना। जानवर की हालत से मरकर मैं आदमी बना। इसलिए मुझे मरने से क्या डर। मरने से मैं कभी कम नहीं होता। अबकी बार जब मैं आदमी से मरूँगा तो मुझमें फ़रिश्तों (देवताओं) के पर पंख निकल आवेंगे और फिर जब मैं फ़रिश्ते की हालत से मरकर आगे बढ़ूँगा तो उस ऊँची हालत को पहुँचूँगा जो इस वक्त गुमान से भी बाहर है।

जहाँ तक अवतारों या रसूलों का सवाल है सब मुल्कों सब ज़बानों और सब ज़मानों में लोगों को धर्म का रास्ता बतानेवाले पैदा होते रहे हैं। इस ख़याल को भी गीता और क़ुरान दोनों ने अपने अपने ढंग से ज़ाहिर किया है। श्री कृष्ण ने गीता में कहा है—

"जब जब धर्म गिरने लगता है और अधर्म बढ़ने लगता है तब तब मैं बरा र भले लोगों की हिफ़ाज़त करने, बुरे लोगों को मिटाने और धर्म को फिर से क़ायम करने के लिए पैदा होता रहता हूँ।" (४-७)

.कुरान में कहा गया है कि—

"हर क़ौम में रसूल और धर्म का रास्ता बताने वाले होते रहे हैं।" (यूनस-४७ और राद-७) "और जो रसूल जिस क़ौम में भेजा गया है वह उसी क़ौम की ज़बान में पैग़ाम (संदेशा) देकर भेजा गया है, ताकि उन्हें साफ़ साफ़ समझा सके।" (इब्राहीम-४) "और इसमें शक नहीं कि तुम (मुहम्मद) से पहले भी हम (अल्लाह) ने दुनिया में रसूल भेजे हैं···हर ज़माने के लिए अलग अलग किताबें हैं। अल्लाह जिसे चाहता मंसूख़ कर देता है और जिसे चाहता है क़ायम कर देता है। और इन मब मज़हवी किताबों की असली माँ (उम्मुलकिताब) अल्लाह ही से पास है।" (राद-३८-३६) "ऐ मुहम्मद ! सचमुच अल्लाह ने तुम्हें हक़ (सचाई) के साथ भेजा है ताकि तुम लोगों को अच्छे कामों के बदले में .खुशख़बरी दो और बुरे कामों के नतीजे से आगाह करो, और कोई क़ौम ऐसी नहीं है जिसमें इसी तरह बुरे कामों के नतीजों से आगाह करनेवाला कोई रसूल नहीं भेजा गया।" (मलायका-२४) "और अल्लाह ने जो भी रसूल भेजे हैं वह इसी लिए भेजे हैं कि लोगों को अच्छे कामों के बदले में अच्छे फल की .खुशख़बरी दें और बुरे कामों के बुरे नतीजों से आगाह करें। फिर जो कोई ात मान ले और नेक काम करे उसे न किसी बात का डर है और न कोई ग़म।" (अनआम—४८)

अब रहा अलग अलग मज़हबों का सवाल। इसके बारे में गीता में कहा गया है कि—

"जो लोग जिस तरह भी मुझे ढूँढ़ते हैं मैं उसी तरह उन्हें मिलता हूँ। लोग सब तरफ़ से चल कर मुझ तक ही पहुंचते हैं।" (४-११)

क़ुरान में कहा गया है कि—

"अल्लाह ने सबके लिए अलग अलग शरअ और मिनहाज (यानी रस्म रिवाज और पूजा के तरीक़े) बना दिये हैं। अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही फ़िर्क़ा (एक ही रस्म रिवाज के मानने वाले) बना देता। लेकिन अल्लाह चाहता था कि जिसको जो तरीक़ा बता दिया है उसीमें उसको परखे। इसलिए इन फ़र्क़ों में न पड़ो और दूसरों की भलाई के कामों में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करो। सब को अल्लाह ही के पास लौट कर जाना है।" (मायदा-४८)

"हर एक की अपनी दिशा (सिम्त) है जिस तरफ़ वह इबादत के वक्त अपना मुँह कर लेता है। इसलिए इस बहस में न पड़ो और भलाई के कामों में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करो। तुम कहीं भी होगे अल्लाह तुम सबको मिला देगा। सचमुच अल्लाह सब चीज़ों पर क़ादिर (समर्थ) है।" (बक़रह—१४८)

एक सूफ़ी कहता है कि —

हमा कस तालिबे यारन्द चे हुशियार चे मस्त

हमा जा ख़ानए इश्क़ अस्त चे मसजिद चे कुनिश्त।

सब लोग उसी प्रीतम को खोज रहे हैं, क्या होशियार और क्या मस्त। सब घर उसी के प्रेम के घर हैं, क्या मसजिद और क्या मन्दिर।

पुश्प दन्ताचार्य ने महिम्न स्तोत्र में लिखा है—

"लोगों की अलग अलग तबीयतों के मुताबिक़ ईश्वर की खोज और सेवा करनेवाले सीधे टेढ़े अलग अलग रास्तों से चलते हैं। पर

सब एक ही ईश्वर की तरफ़ जा रहे हैं। जैसे अलग अलग रास्तों से चल कर भी सब नदियाँ एक ही समुद्र में जाकर मिल जाती हैं।"

एक और सूफ़ी कहता है—

कुफ़्रो इसलाम दर रहत पोयां
वहदहू लाशरीक लह गोयां।

कुफ़् और इसलाम दोनों उसी एक अल्लाह की राह में दौड़ चले जा रहे हैं। दोनों यही कहते हैं कि वह अल्लाह एक है, उसका कोई साझी नहीं है।

अब तक हमने जो कुछ लिखा है उससे गीता और .कुरान की एकता पर रोशनी पड़ती है। पर यह कहा जा सकता है कि ढूंढा जाय तो इन दोनों किताबों में कुछ बातें एक दूसरे से अलग भी मिल सकती हैं। आगे हम वह बातें बताना चाहते हैं जिनमें दुनियां के मज़ाहबों में, या कम से कम गीता और .कुरान में, बिलकुल कोई फ़रक़ नहीं दिखाया जा सकता। बात यह है कि फ़लसफ़े की बातों और मज़हब की बारीकियों के बारे में जितना कोई चाहे बहस हो सकती है और इनमें .खूब बहस हुई भी है। लेकिन जहाँ तक यह सवाल है कि इस दुनिया में हमारा सबसे बड़ा फ़र्ज़ क्या है, वह फ़र्ज़ किस तरह पूरा किया जावे, उसके पूरा करने में हमारी सब से बड़ी कठिनाइयाँ क्या हैं, ये कठिनाइयाँ कैसे दूर हो सकती हैं और इनका दूर होना हमें दुनिया में फलने फूलने और नेक बनने में, अपनी दूसरी दुनिया को सुधारने में, ईश्वर के ज्यादह पास जाने में, मोक्ष (निजात) पाने में कैसे मदद दे सकता है, इस पर

दुनिया के सब मज़हब आमतौर से, और गीता और .कुरान ख़ास तौर से, एक ही से ख़याल और एक ही से तरीक़े बताते हैं। हम अब इन दोनों किताबों में से मिसाल दे दे कर दिखाएँगे कि इन सवालों का ये दोनों क्या जवाब देते हैं।

गीता के कुछ हिस्से जो हमें दुनियाँ में हमारा सबसे बड़ा फ़र्ज़ बताते हैं ये हैं—

"वही आदमी ईश्वर तक पहुंच सकता है जो किसी भी जानदार या प्राणी से बैर या दुश्मनी न रखता हो।" (११-५५)

"मोक्ष यानी निजात सिर्फ़ उन्हीं को मिल सकती है और उन्हीं के पाप धुल सकते हैं जिनकी दुविधा मिट गई है, जिन्होंने अपनी ख़ुदी को जीत लिया है और जो हमेशा सब की भलाई के कामों में लगे रहते हैं।" (५-२५)

"समझदार आदमी को चाहिये कि बिना अपने किसी तरह के लगाव के सब का भला चाहते हुए ही सब काम करे।" (३-२५)

"जो आदमी अपनी ही तरह सब को एक बराबर देखता है और सब के सुख और दुख को अपना ही सुख और दुख समझता है वही सब से बड़ा योगी है।" (६-३२)

"दुनिया के शुरू में ईश्वर ने यज्ञ यानी .कुरबानी के साथ सब जानदारों को बना कर उनसे यह कह दिया कि तुम सब इस यज्ञ (यानी एक दूसरे के भलाई के कामों) से ही फलो फूलो और ये एक दूसरे की भलाई के काम ही तुम्हें सब अच्छी अच्छी चीज़ों के देने वाले साबित हों।" (३-१०)

"वह भले आदमी जो दूसरों को दे कर बचा हुआ खाना खाते

हैं सब पापों से छूट जाते हैं। और जो पापी लोग सिर्फ़ अपने लिए ही खाना पकाते हैं वह पाप ही खाते हैं।" (३-१३)

दूसरों की सेवा और भलाई के कामों में लगा रहना ही आदमी का इस दुनिया में सब से बड़ा धर्म है। इस बात पर सिर्फ़ गीता ही नहीं बल्कि हिन्दू धर्म की दूसरी किताबों ने भी बार बार ज़ोर दिया है। पुराण में लिखा है—

"रुद्राक्ष या तुलसी की माला पहनना, माथे पर ख़ास तरह का तिलक लगाना, बदन पर राख मलना, तीर्थ यात्रा करना, तीर्थों में नहाना, हवन करना, जप करना, या मन्दिरों में ठाकुर जी के दर्शन करना, इनमें से कोई काम आदमी को उस तरह पाक नहीं करता जिस तरह दूसरों की भलाई में लगे रहना।"

एक और जगह लिखा है—

"अठारह पुराणों के अन्दर व्यास जी ने दो ही बातें कही हैं, वह ये हैं—दूसरों का भला करना पुण्य यानी सवाब है, और किसी दूसरे को तकलीफ़ देना पाप यानी गुनाह है।"

इसी ख़याल को हिन्दी में एक संत ने इस तरह ज़ाहिर किया है—

चार वेद छै शास्त्र में बात लिखी है दोय
दुख दीने दुख होत है सुख दीने सुख होय।

तुलसी दास जी ने कहा है—

परहित सरिस धर्म नहिं भाई
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।

ऐ भाई ! दूसरे का भला करने के बराबर कोई धर्म नहीं है, और दूसरे को तकलीफ़ देने के बराबर कोई पाप नहीं है।

क़ुरान में भी यह खयाल जगह जगह दुहराया गया है। क़ुरान में आयत "इन्नल्लाहयुहिब्बुलमुहसनीन" (यानी सचमुच अल्लाह उन्हीं को प्यार करता है जो दूसरों के साथ नेकी करते हैं) बार बार आती है। इसी मज़मून पर कुछ और आयतें ये हैं—

"लोगों से कहो कि आओ मैं तुम्हें बताऊँ कि अल्लाह ने तुम्हें किन किन बातों से रोका है। अल्लाह के साथ किसी दूसरे को साझी न बनाओ। अपने माँ बाप की सेवा करो। ग़रीबी के डर से अपनी औलाद को मत मारो। हम (अल्लाह) तुम्हें और उन्हें दोनों को रोज़ी देते हैं। बदचलनी के नज़दीक मत जाओ, चाहे वह खुली बदचलनी हो चाहे छिपी। सिवा इनसाफ़ की ज़रूरतों के किसी की जान मत लो। उस (अल्लाह) ने तुम्हे यह सब करने का हुकम दिया है, ताकि तुम समझो।

"और किसी अनाथ के माल को हाथ मत लगाओ सिवाय इसके कि तुम उसकी भलाई के लिए जब तक कि वह बालिग़ न हो उसके माल की देख भाल करना चाहते हो। जो चीज़ नापो पूरी नापो और जो तोलो ठीक ठीक तोलो। हम (अल्लाह) किसी आदमी को कोई ऐसा काम सिपुर्द नहीं करते जिसे वह न कर सके। और जब बोलो ठीक ठीक बात बोलो, चाहे वह बात तुम्हारे किसी नातेदार ही के ख़िलाफ़ क्यों न हो, और अल्लाह को तुमने जो बचन दिया है वह पूरा करो। उसने तुम्हें यह सब करने का हुकुम दिया है ताकि तुम

ख़ूब याद रक्खो।

"यही मेरा (अल्लाह का) रास्ता है, यही सीधा रास्ता (सेरात मुस्तक़ीम) है। इसी पर चलो। दूसरे दूसरे रास्तों पर मत चलो। क्योंकि वह तुम्हें अल्लाह के रास्ते से दूर ले जायेंगे। यही अल्लाह का हुकुम है ताकि तुम बुराई से बच सको।" (अनआम–१५२ से १५४)

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिए सीधे सच्चे और इनसाफ़ से गवाही देने वाले बनो। अगर किसी को तुमसे दुशमनी भी है तो उसकी वजह से किसी के साथ बेइनसाफ़ी न करो, इनसाफ़ किया करो, यही बात परहेज़गारी (तक़वा) से बहुत क़रीब है। और अल्लाह के हुकुम का हर वक़्त ख़याल रक्खो। सचमुच अल्लाह जानता है कि तुम क्या करते हो।" (मायदा–८)

"हम (अल्लाह) ने आदमी को दो साफ़ साफ़ रास्ते (भलाई और बुराई के) दिखा दिए हैं, मगर आदमी चढ़ाई के रास्ते से बचता है। तुम समझे कि यह पहाड़ की चढ़ाई का रास्ता क्या है? (वह रास्ता यह है—) किसी ग़ुलाम को आज़ाद करना और भूख के दिनों में किसी यतीम रिश्तेदार को या मिट्टी में लोटते हुए किसी भी ग़रीब आदमी को खाना देना, जो आदमी ऐसा करता है वही ईमान वालों में से है, जो एक दूसरे को सब्र करने और दूसरों पर दया करने की सलाह देते हैं यही लोग दाहिने हाथ के रास्ते पर चलने वाले हैं, इस के ख़िलाफ़ जो लोग यह बात नहीं मानते वह बाएँ हाथ वाले रास्ते पर चलते हैं। उनके ऊपर बन्द आग पड़ी है।" (बलद–१०-२०)

"तबाही है उनके लिए जो तोल वग़ैरह में कमी करते हैं, जो जब दूसरों से चीज़ लेते हैं तो पूरा नाप कर लेते हैं लेकिन जब दूसरों

को नाप या तोल कर देते हैं तो कम देते हैं।" (तवफ़ीफ़ १-३)

"अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी चीज़ को मत जोड़ो। अपने मा बाप के साथ, अपने रिश्तेदारों के साथ, यतीमों के साथ, ग़रीबों के साथ, अपने रिश्तेदार पड़ोसी के साथ, ग़ैर या अनजान पड़ौसी के साथ, सफ़र में जिस का भी साथ हो जाय उसके साथ, राह चलतों के साथ, और जो तुम्हारे मातहत हैं उनके साथ, सब के साथ नेकी करो। सच मुच अल्लाह 'घमंड' करने वालों और अपनी बड़ाई हाँकने वालों को पसन्द नहीं करता।" (नसाय-३६)

"क्या तुमने उसको देखा है जो दान को झूठा ठहराता है? वह (दीन को झूठा ठहराने वाला आदमी) वह है जो किसी यतीम को सताता है, और जो ग़रीबों को खाना देने पर ज़ोर नही देता, तबाही ऐसे नमाज़ियों के लिए जो अपनी नमाज़ (के असली मतलब) को भुला बैठते हैं, ख़ाली दिखावा करते हैं, और ख़ैरात से हाथ रोके रहते हैं।" (माऊन १-७)

"और अगर (तुम किसी से) बदला लेने लगो तो उतना ही बदला लो जितना तुम्हारे साथ बुरा बरताव किया गया है, लेकिन अगर तुम सब्र के साथ बरदाश्त करलो तो सचमुच सब्र करने वालों के लिए बहुत ही अच्छा होगा। और तुम सब्र ही करो, लेकिन तुम्हारा सब्र करना अल्लाह की मदद से ही हो सकता है, तुम दूसरों की फ़िक्र मत करो और इस फ़िक्र में मत पड़ो कि वह क्या तरकीबें करते हैं। सचमुच अल्लाह उन्ही के साथ है जो बुराई से बचते हैं और (दूसरों के साथ) भलाई करते हैं।" (नहल १२६ से १२८)

क़ुरान में उन लोगों की ज़िन्दगी को ही सचमुच सफल

(कामयाब) बताया गया है—

"जो .खुद तंग हाल में होते हुए भी दूसरों की ज़रूरतों को अपने से पहले पूरा करने की कोशिश करते हैं।" (हश्र ६)

जहाँ तक दुश्मन के साथ भी भलाई करने का सवाल है इसी तरह की और भी बहुत सी आयतें क़ुरान में मौजूद हैं, यहाँ तक कि अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिए जिन लोगों के ख़िलाफ़ तलवार उठाने की इजाज़त क़ुरान में दी गई थी उन्हीं से आम बरताव करने का असूल इन लफ़्ज़ों में बयान किया गया है--

"अगर कुछ लोगों ने तुम्हें (अल्लाह की) पाक मसजिद में जाने से रोका तो भी उस दुश्मनी की वजह से तुम हद से न बढ़ो। एक दूसरे को नेकी करने और परहेज़गारी से रहने में ही मदद दो। बुराई करने में और दूसरे को दुख देने में किसी को मदद न दो। और अल्लाह से डरो।" (मायदा—२)

जिस तरह हिन्दू सन्तों और महात्माओं ने अपनी धर्म की किताबों में से, और .खुद .कुरान ने, आदमी के इस सब से बड़े धर्म (फ़र्ज़) को बताया है उसी तरह मुसलमान आलिमों और सूफ़ियों ने भी बताया है। हम यहाँ सिर्फ़ दो तीन मिसालें देते हैं। एक मुसलमान सूफ़ी का कहना है—

तरीक़त बजुज़ ख़िदमते ख़ल्क़ नेस्त
बतस्बी हो सज्जाद ओ दुल्क़ नेस्त।

.खुदा के पाने का रास्ता सिवाय ख़ल्क़ की यानी दूसरों की ख़िदमत के और कोई नहीं है। माला लेकर-'अल्लाह-अल्लाह' रटने से,

चटाई बिछाकर नमाज़ पढ़ने से, या गुदड़ी ओढ़लेने से अल्लाह नहीं मिल सकता।

शेख़ सादी ने कहा है—

चूं अज़ दर्द आज़ाद कर दी कसे
बेहअज़ अलफ़ रकअत ब हर मंज़िले।

अगर तू किसी एक आदमी की तकलीफ़ को भी दूर कर दे तो यह ज़्यादा अच्छा काम है बजाय इसके कि तू हज को जाय और रास्ते के हर पड़ाव में एक एक हज़ार रकअत नमाज़ पढ़ता जाय।

एक और सूफ़ी का कहना है—

दिल बदस्त आवर कि हज्जे अकबरस्त
अज़ हज़ारां काबा यक दिल बेहतरस्त।

किसी का दिल उसकी सेवा करके अपने हाथ में ले। यही सब से बड़ा हज्ज है। हज़ारों काबों से एक दिल बढ़कर है।

इसी तरह की बेशुमार मिसालें हर मुल्क और हर मज़हब के संत महात्माओं के उपदेशों से दी जा सकती हैं।

अब सवाल यह है कि यह फ़र्ज़ किस तरह पूरा किया जाय, इसे पूरा करने में हमें किस बात का ख़याल रखना चाहिये।

गीता और क़ुरान दोनों में हुकुम है कि हर काम ईश्वर, अल्लाह, के नाम पर और उसी के लिए करना चाहिये।

गीता में बार बार सब काम "ईश्वरार्पण" यानी ईश्वर के लिए करने को कहा गया है। (३-३०) (५-१०) (९-२७)

क़ुरान में बार बार हर काम "फ़ी सबीलिल्लाह" (बक़रह-१५४ और २६१) (बराअत-६०) यानी अल्लाह की राह में या

अल्लाह के लिए करने का हुकुम है।

गीता में लिखा है—

"तू जो कुछ करे जो कुछ खावे जो यज्ञ (क़ुरबानी) करे, जो तप करे, सब ईश्वर के लिए ही कर।" (६-२७)

क़ुरान में लिखा है—

"(ऐ रसूल !) कह दो कि मेरी नमाज़, मेरी पूजा, मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत सब उस अल्लाह के लिए हैं जो सब दुनियाओं का पालने वाला है।" (अनआम-१६३)

मशहूर अरबी किताब 'अल क़ौलुल जमील' में लिखा है—

"अल्लाह की राह पर चलने वाला आदमी पढ़ते, बोलते, खाते, पीते, चलते, फिरते सब हालतों में दिल अल्लाह की तरफ़ ही लगाए रहे।"

गीता और क़ुरान दोनों में हुकुम है कि आदमी ख़ुशी ग़मी, सुख दुख, जीत हार, कामयाबी नाकामयाबी, और अपने कामों के नतीजे, सब की तरफ़ से बेलगाव होकर फ़र्ज़ को फ़र्ज़ समझ कर सब काम करे। गीता में इसे निष्काम कर्म और कुरान में इसी को इख़लास कहा गया है।

गीता कहती है—

"तुम्हें काम करने यानी अपना फ़र्ज़ अदा करने का ही अख़्तियार है। नतीजे पर तुम्हारा क़ाबू नहीं है। इस लिए अपने कामों के नतीजे की तरफ़ दिल मत लगाओ। अपना फ़र्ज़ पूरा करो। लगाव या मोह को छोड़कर कामयाबी और ना कामयाबी में एक बराबर रह कर काम करो। इस एक बराबर रहने का नाम ही योग है।" (२-४७ और ४८)

क़ुरान में लिखा है—

"अपने रब्ब का नाम याद रक्खो और सब (चीज़ों) से बेलगाव होकर उसीकी तरफ़ लगे रहो।" (मुज़्ज़म्मिल-८)

इमाम राज़ी ने अपनी किताब 'तफ़सीर कबीर' (क़ुरान का बड़ा भाष्य) में कुरान की इस आयत का मतलब बयान करते हुए लिखा है कि—

"जो आदमी भी अपने अच्छे कामों का इनाम चाहे या बुरे कामों के नतीजे से बचना चाहे वह बेलगाव नहीं हैं। और जो इबादत (पूजा पाठ) में लगा रहे या मार्फ़त (ज्ञान) की चाह रखे वह भी ख़ालिस अल्लाह की तरफ़ लगा हुआ नहीं कहा जा सकता। हाँ, जिस किसी की इबादत और उसके सब काम अपने लिए नहीं बल्कि सिर्फ़ अल्लाह के लिए हैं, वही इस आयत के मुताबिक़ ईश्वर में लौ लगाए हुए कहा जा सकता है।"

गीता में लिखा है—

"जो आदमी अपने कामों के नतीजे की परवाह न करते हुए अपना फ़र्ज़ अदा करता रहता है वही सन्यासी और वही योगी है। आग को हाथ न लगाने वाला या इसी तरह के दूसरे ऊपरी कामों से बचने वाला सन्यासी नहीं कहा सकता।" (६-१)

मुस्लिम विद्वान सूफ़ियान सौरी ने लिखा है कि—

"दुनिया में ज़ोहद (त्याग) यह नहीं है कि मोटे और सख़्त कपड़े पहिन लिए जायँ और सूखी रोटी खाई जाय। ज़ोहद तो यह है कि अपनी आरज़ू (इच्छा) और ख़्वाहिश को जीता जावे।" (शरहुल मिन्नत)

गीता में लिखा है कि—

"जो अपने सब कामों को ईश्वर के ऊपर छोड़ कर बेलगाव हो कर काम करता है उसे पाप नहीं लगता।" (५-१०)

.कुरान में लिखा है कि—

"जो अल्लाह पर तवक्कुल करता है (सब कुछ उसी पर छोड़ देता है) उसके लिए अल्लाह काफ़ी है।" (तलाक़-३)

गीता में लिखा है कि—

"जो आदमी अपनी ख़्वाहिशों के बस में होकर नतीजे की तरफ़ लगा रहता है वही कर्मों के बन्धन में फँसता है।" (५-१२)

शाह वली उल्लाह देहलवी ने कहा है—

हिजाबे वस्ल मतलूबस्त दिल बस्तन ब मतलब हा
कि मन गर तर्क मतलब हा नमी करदम चेमी करदम।

अल्लाह के सिवा किसी दूसरी चीज़ में दिल लगाना ही उस प्रीतम (अल्लाह) के और अपने बीच में परदा डालना है। हमने अगर इन सब चीज़ों से दिल को न मोड़ा तो कुछ न किया।

बेलगाव हो कर सिर्फ़ ईश्वरार्पण, यानी फ़ी सबीलिल्लाह, काम करने, यानी अपना फ़र्ज़ अदा करने में दिक़्क़त क्यों पड़ती है और वह दिक़्क़त किस रूप में हमारे सामने आती है, ये सवाल ज़रा गहरे हैं। इनका जवाब मौलाना रूम ने इस शेर में दिया है—

आफ़ते ईंदर हवाओ शहवत अस्त
वरना ईंजा शरबत अन्दर शरबत अस्त।

सारी आफ़त इच्छा और काम वासना में है, नहीं तो इस दुनियाँ में शरबत ही शरबत है।

श्री कृष्ण ने अर्जुन के इस सवाल का जवाब कि आदमी से उसकी मरज़ी के खिलाफ़ क्या चीज़ पाप कराती है (३-३६) यह दिया है—

"आदमी से उसकी इच्छा के ख़िलाफ़ पाप कराने वाली चीज़ काम (शहवत) और क्रोध (ग़ुस्सा) हैं। यह दोनों रजोगुण (हरकत) से पैदा होते हैं। यह सब को खा जाने वाले और पाप की सब से बड़ी जड़ हैं। यही इस दुनिया में आदमी के दुशमन हैं।" (३-३७)

शहवत और ग़ुस्से को क़ाबू में करने का तरीक़ा क्या है? यह तरीक़ा भी गीता और क़ुरान में एक ही बताया गया है। वह है अपनी इन्द्रियों (अपने हवास) या अपने नफ़्स पर क़ाबू पाना।

गीता में अपनी इन्द्रियों को जीतने यानी नफ़्स को क़ाबू में करने पर जगह जगह और बार बार ज़ोर दिया गया है। गीता कहती है कि—

"उसी की अक़ल ठीक या क़ायम रह सकती है जिसकी इन्द्रियाँ उसके क़ाबू में हैं।" (२-६१)

क़ुरान में लिखा है—

"अल्लाह चाहता है कि तुमपर दया करे, लेकिन जो लोग अपनी शहवतों (वासनाओं) के पीछे पड़े रहते हैं वह चाहते हैं कि तुम (अल्लाह के) रास्ते से बुरी तरह भटक जाओ।" (नसाय-२७)

"उस आदमी से बढ़कर रास्ते से भटका हुआ और कौन है जो अपनी ख़्वाहिश (वासना) के पीछे चलता है।" (क़ेसस-५०)।

इसी तरह .कुरान में उन लोगों को

"जो अपने .गुस्से को पी जाते हैं और लोगों को माफ़ कर देते हैं"

ख़ास तौर पर

".खुदा के प्यारे"

कहा गया है। (आल अमरान-१३३)

गीता में लिखा है कि—

"नरक यानी दोज़ख़ के तीन दरवाज़े हैं—काम, क्रोध और लोभ। इन तीनों से बचना चाहिये। ये तीनों आत्मा को बरबाद कर देने वाले हैं।" (१६-२१)

.कुरान में इच्छा, या काम वासना के लिये कई जगह 'हवा' लफ़्ज़ आया है और उससे बचने को बार बार कहा गया है। 'हाविया' कुरान में दोज़ख़ या नर्क के एक हिस्से का नाम है (अलक़ारिया-६)। यह उन लोगों की जगह बताई गई है जिनकी नेकियों का वज़न कम और बुराइयों का बोझ ज़्यादह हो (अलक़ारिया)।

बू अली शाह क़लन्दर ने लिखा है—

मर्द बायद ता निहद बर नफ़्स पा
बगुज़रद अज़ शहवतो हिर्सो हवा।

आदमी वह है जो अपने .गुस्से, अपनी शहवत (काम) और अपने लोभ को जीत ले।

मौलाना रूम कहते हैं—

ख़श्मो शहवत मर्द रा अहवल कुनद

ज़िस्तक़ामत मर्द रा अबवल कुनद।

ग़ुस्सा और शहवत आदमी को अन्धा कर देते हैं और उसे उस की ठीक हालत से भटका देते हैं।

इसलाम में ग़ुस्सा हराम है, और ग़ुस्से की हालत में कोई भी अच्छा या बुरा काम करना मना है। इसकी मिसाल के लिए हज़रत अली की ज़िन्दगी में एक बड़ा अच्छा मौक़ा आता है। एक लड़ाई में अपने किसी दुशमन पर उनका पल्ला भारी हो गया। वह उसकी छाती पर चढ़ बैठे और तलवार हाथ में लिए उसका काम तमाम करने को ही थे कि उस आदमी ने हज़रत अली के मुँह पर थूक दिया। हज़रत अली ने उसी दम तलवार हाथ से फेंक दी और कहा कि—"अब मैं तुझे नहीं मारूँगा।" यह कह कर वह उसके ऊपर से हट गये। वह आदमी हैरान रह गया, और उसने पूछा कि—"आप ने मुझे क्यों छोड़ दिया?" हज़रत अली ने जवाब दिया कि—"मैं अल्लाह के नाम पर लड़ रहा था, अपने लिए नहीं। जब तूने मुझ पर थूका, मुझे ग़ुस्सा आ गया, और ग़ुस्सा हराम है। ग़ुस्से में आ कर कोई भी काम करना पाप है।"

अपनी इन्द्रियों या अपने नफ़्स को क़ाबू में करने के लिए बहुत से तप यानी बहुत सी रियाज़तें बताई गई हैं। ये भी क़ुरान और गीता में लगभग एक ही हैं। मगर हम इन की तफ़सील में जाना नहीं चाहते। नफ़स के [illegible] अपने

LIB

ख़याल और अपनी अक़्ल पर क़ाबू पाना और उन्हें शान्त और क़ायम रखना भी इस राह की एक बड़ी और ऊँची मंज़िल है।

गीता कहती है कि—

"जो आदमी सब जगह बेलगाव है, जो न अच्छी चीज़ को पा कर ख़ुशी से फूलता है और न बुरी को पाकर दुखी होता है, जो अपनी सब इन्द्रियों को उनकी चाह की चीज़ों से इस तरह खींच कर क़ाबू में रखता है जिस तरह कछुआ अपने हाथ पैरों को सब तरफ़ से अपने अन्दर खींच लेता है, उसी आदमी की बुद्धि (अक़्ल) क़ायम है। वही 'स्थित प्रज्ञ' है।" (२-५७ और ५८)

गीता में जिसे स्थितप्रज्ञ (टिकी हुई बुद्धि वाला) कहा गया है .कुरान में और दूसरी मुसलिम किताबों में उसी को सलीम अक़्ल वाला, या सलीम क़ल्ब वाला, या क़ल्बे मुतमइन्ना या नफ़्से मुतमइन्ना कहा गया है। सलीम के माइने हैं साबित। मुतमइन्ना के माइने हैं टिका हुआ या स्थित, अक़्ल के माइने हैं प्रज्ञा या बुद्धि, क़ल्ब के माइने हैं दिल या मन, और नफ़्स के माइने हैं आपा।

.कुरान में जगह जगह उस आदमी की तारीफ़ की गई है जिसका क़ल्ब (मन) सलीम या टिका हुआ हो (राद–२८ और साफ़ात–८४) वग़ैरह।

मुहम्मद साहब ने एक जगह कहा है कि—

"उसी आदमी का असली भला होगा जिसके दिल को अल्लाह ने ईमान (विश्वास) के लिए ख़ालिस कर दिया हो और जिसके क़ल्ब को सलीम, ज़बान को सच्चा, नफ़्स को इतमीनान वाला, और

मिज़ाज को क़ायम, कान को सुनने वाला, और आँख को देखने वाला बनाया हो।" (शोबुल ईमान)

लफ़्ज़ सलीम के माइने बयान करते हुए एक मुसलिम विद्वान लिखता है—

"जब आदमी के दिल पर दुनिया की ख़्वाहिशों, सुखों या दुखों का असर नहीं होता तब वह सलीम बन जाता है।"

गीता में लिखा है कि—

"वही समझदार आदमी स्थित प्रज्ञ कहलाता है जिसका दिल दुखों से बेताब न हो और सुखों के लिए जिसमें चाह न हो, जो हर तरह के लगाव, डर और ग़ुस्से से ऊपर उठ चुका हो।" (२-५६)

मनुस्मृति में लिखा है कि—

"जो आदमी कुछ भी सुन कर, छू कर, देख कर, खाकर, पीकर और सूँघ कर न ख़ुश होता है और न दुखी होता है, उसी को जितेन्द्रिय (अपनी इन्द्रियों को जीतनेवाला) समझना चाहिये।"

गीता में लिखा है कि—

"आदमी न अपने मतलब की चीज़ को पाकर बहुत ख़ुश हो और न अपने ख़िलाफ़ चीज़ पाकर दुखी हो। अपनी बुद्धि को इस तरह क़ायम और ठीक रखते हुए ही ईश्वर को जान कर आदमी ईश्वर में मिल सकता है।" (५-२०)

क़ुरान में लिखा है कि—

"ताकि तुम उस चीज़ पर जो तुम्हारे हाथ से निकल गई रंज न करो और जो चीज़ अल्लाह ने तुम्हें दी है उस पर फूलो नहीं... ।" (अलहदीद-२३)

इराक़ के शहर बसरा में एक मशहूर अरब सूफ़ी औरत हुई हैं जिनका नाम राबेया था। जाफ़र बिन सुलेमान ने राबेया बसरी से पूछा—"खुदा बन्दे से कब राज़ी होता है?" राबेया बसरी ने जवाब दिया कि "जब आदमी दुख और सुख दोनों में एक सा ख़ुश रहता है।"

एक ईरानी सूफ़ी ने इसी मज़ामून पर कहा है कि—

न शादी दाद सामाने न ग़म आउर्द नुक़साने
ब पेशे हिम्मते मा हर चे आमद बूद मेहमाने।

न किसी ख़ुशी से हम बढ़े और न किसी ग़म से घटे। हमारी हिम्मत के सामने सुख या दुख जो भी आया मेहमान की तरह आया और चला गया।

आदमी ज्यों ज्यों अपनी इन्द्रियों पर क़ाबू पाता जाता है, जैसे जैसे उसका मन शान्त होता जाता है और उसकी बुद्धि क़ायम यानी स्थिर होती जाती है, वैसे वैसे ही वह अपने आप को (अपनी असलीयत को) जानने और पहचानने लगता है। इसके साथ साथ उसकी रूहानी ताक़त भी बढ़ती जाती है और वह अल्लाह के क़रीब आता जाता है।

गीता कहती है कि—

"ब्रह्म निर्वाण उन्हीं लोगों के लिये है जिन्होंने अपनी आत्मा को जान लिया है।" (५–२६)

मुहम्मद साहब ने कहा है कि—

"जिसने अपने आपको पहचान लिया उसने अपने रब को पहचान लिया।"

शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि याज्ञवल्क ने जनक को उपदेश देते हुए कहा है कि—

"अपनी आत्मा को खोजो, उसी से तुम्हें सब बातों का पता लग जावेगा। इस ज्ञान की गुत्थी को सुलझाने के लिये अपनी आत्मा को जान लेना ही सब से बड़ा साधन (ज़रिया) है।"

मौलाना रूम ने लिखा है कि—

हर के नफ़्से ख़्वेश रा दीदो शनाख़्त
अन्दर इस्तकमाले ख़ुद दो अस्पा ताख़्त।

जिस किसी ने अपने आपको देख और पहचान लिया वह फिर अपने कामिल (सिद्ध या पूर्ण) बनने की तरफ़ तेज़ी से दौड़ने लगता है।

ठीक यही बात योगिराज याज्ञवल्क ने वृहदारण्यक उपनिषद् में कही है।

हज़रत अली ने कहा है कि—

"ऐ आदमी ! तेरी दवा तुझमें है पर तुझे ख़बर नहीं और तेरी बीमारी भी तुझही में है पर तू देखता नहीं।"

गीता कहती है कि—

"आदमी का आपा ही उसका दोस्त है और उसका आपा ही उसका दुशमन है। उसी आदमी का आपा उसका दोस्त हो सकता है जिसने अपने आपे को जीत लिया है। और जिसने अपने आपे को नहीं जीता उसका आपा ही उसका दुशमन है।" (६—५ और ६)

क़ुरान में लिखा है कि—

"वही आदमी अपना भला करेगा जिसने अपने आपे को पाक

साफ़ किया। और वह आदमी अपना भला नहीं कर सकता जिसने अपने आपे को नीचे गिराया यानी अपने को नापाक किया।" (शम्स ६-१०)

मुहम्मद साहब की मशहूर हदीस है कि—

'तुम्हारा सब से बड़ा दुश्मन तुम्हारा आपा है।'

ज़ुन्नून मिस्र के एक बहुत बड़े सूफ़ी हुए हैं। उन्होंने किसी सूफ़ी औरत की बाबत सुना कि वह अल्लाह की बहुत बड़ी भक्त हैं। ज़ुन्नून ने उनके पास जाकर नसीहत मांगी। जवाब मिला कि—

"अपनी इन्द्रियां को क़ाबू में रक्खो और दिल को शीशे की तरह साफ़ करो।"

ज़ुन्नून ने पूछा—

"बहिन ! कुछ और कहिये।"

उन्होंने जवाब दिया कि—

"तुम अपने लिए अपने आपे ही से पूछो।"

दुनिया की मज़हबी किताबों में अपने दिल, इन्द्रियों और अक़ल को क़ाबू में करना जितना ज़रूरी बताया गया है, और इस बात के हासिल करने के लिए जितनी छान बीन की गई है, उतना ध्यान किसी दूसरी बात की तरफ़ नहीं दिया गया। यहाँ तक कि यह चीज़ एक अलग ही इल्म अलग ही विद्या या अलग साइन्स बन गई है। हिन्दुओं में इस साइन्स को 'योग' कहते हैं और इसलाम में 'सलूक'। जो बुनियादी असूल हमने ऊपर बयान किये हैं उन्हीं को मथ मथ कर साधू, संतो, सूफ़ियों

और फ़क़ीरों ने अमृत और मोती निकाले हैं, जो इन्हीं विद्याओं की हिन्दू और मुसलिम किताबों में भरे पड़े हैं। इन किताबों पर निगाह डालने से जो एक सी बातें दोनों जगह नज़र आती हैं उन्हें देख कर अचरज होता है और यह यक़ीन होने लगता है कि यह सब एक ही या एक ही से सोतों से सींची गई हैं। मिसाल के लिए हम कुछ मिलती जुलती बातें दिखा कर अपने इस हिस्से को ख़तम करेंगे।

इन दोनों तरीक़ों में गुरु या पीर की ज़रूरत पर बहुत ज़ोर दिया गया है। क़ुरान और गीता दोनों में इसका चर्चा मौजूद है। गीता कहती है कि—

"समझ ले कि जो असलियत को देखने समझने वाले ज्ञानी लोग हैं वह तुझे तब ज्ञान का उपदेश देंगे जब तू उनकी इज़्ज़त, उनका आदर मान करेगा, और उनसे बार बार पूछेगा और उनकी सेवा करेगा।" (४—३४)

क़ुरान में लिखा है कि—

"उस आदमी के बताए हुए रास्ते पर चलो जो मेरी (अल्लाह की) तरफ़ आता है।" (लुक़मान १५)

मौलाना रूम ने लिखा है—

हर के ख़्वाहद हम नशीनी बा ख़ुदा
ऊ नशीनद दर हुज़ूरे औलिया।

जो कोई ख़ुदा के पास बैठना चाहे उसे चाहिये कि ख़ुदा के वलियों, अल्लाह वालों, यानी ईश्वर भक्तों के सामने बैठे।

सूफ़ी किताबों में गुरु को मुरशिद या रहबर कहते हैं। इस

तरह की सब किताबों में गुरु की ज़रूरत और उसकी बात मानने पर ज़ोर दिया गया है। अकसर किताबों में इस तरह के गुरु की एक तारीफ़ यह भी है कि वह सलीम अक़्ल वाला यानी स्थित प्रज्ञ हो। मुहम्मद साहब ने कामिल रहबर की पहचान एक जगह यह बताई है कि—

"जब वह दिखाई दे तो ख़ुदा याद आ जाय।"

हिन्दुस्तान के कबीर और दूसरे संतों और महात्माओं की बानी में भी सच्चे गुरु की ज़रूरत, उसकी इज़्ज़त, और उसके कहने पर चलने का जगह जगह ज़िक्र आता है।

क़ुरान में एक जगह लिखा है कि हज़रत मूसा, जो ख़ुद पैग़म्बर थे, उन्हें भी एक कामिल रहबर यानी गुरु की ज़रूरत पड़ी। गुरु ने उन्हें तीन बार कसौटी पर कसा। तीनों बार हज़रत मूसा नाकाम रहे। आख़िर उसी गुरु से उन्हें हक़ीकत यानी सच्चाई की तालीम मिली। (कहफ़ ६५—८२)

हिन्दू धर्म की किताबें भी इस तरह की मिसालों से भरी पड़ी हैं जिनमें बिना गुरु के योग के रास्तों पर चलना ख़तरनाक बताया गया है।

गीता में योग का कई जगह ज़िकर आता है और योग के कुछ तरीक़े भी बयान किये गए हैं।

गीता कहती है कि—

"योगी को चाहिये कि एकान्त यानी तनहाई में बैठ कर, अकेला अपने दिल और अपने आपे को क़ाबू में किये हुए, बिना किसी इच्छा या ख्वाहिश के, और बिना किसी चीज़ से अपना लगाव

रक्खे, हमेशा योग में लगा रहे।" (६—१०)

इसके बाद के श्लोकों में बयान किया गया है कि किस तरह योगी साफ़ जगह में ख़ास तरह के आसन पर सीधा बैठ कर, अपने मन को यकसू कर के, गरदन और सर और बदन को अडोल रख कर, अपनी नाक की फुंगल पर ध्यान जमाए हुए, शान्त चित्त होकर ईश्वर में लौ लगावे। योग के लफ़्ज़ी माइने मिलने के हैं। योग ही आदमी को ईश्वर से मिलाने का सब से बड़ा ज़रिया समझा जाता है।

इसलाम में योग को सलूक और योगी को सालिक कहते हैं। योग और सलूक दोनों के एक ही माइने हैं। मुहम्मद साहब ने भी एक हदीस में उस आदमी की तारीफ़ की है—

"जो किसी पहाड़ के दर्रे में अकेला बैठकर अपने परवरदिगार की इबादत करता है।" (अबू सईद ख़ज़री)

सूफ़ियों में सलूक और मराक़बे (समाधि) के बहुत से तरीक़े रहे हैं। इन तरीक़ों को शग़ल (अभ्यास) कहा जाता है। इन पर अमल करने वाले सब अपने अमल को क़ुरान की किसी न किसी आयत से निकालते हैं। योग के इस तरह के पचास से ऊपर तरीक़े सूफ़ी किताबों में पाए जाते हैं जो क़रीब क़रीब सब हिन्दू योग के तरीक़ों से मिलते हैं। सूफ़ी सलूक के इन तरीक़ों में से एक का नाम 'सुलतान मुबीन' या 'सुलतान महमूद' है। इस ख़ास तरीक़े में ठीक उसी तरह बैठ कर नाक की फुंगल पर ध्यान जमाया जाता है जिस तरह गीता के श्लोक में बताया गया है। कुछ और तरीक़ों में दोनों भवों के बीच उस जगह

ध्यान जमाया जाता है जिसे हिन्दू किताबों में ब्रह्मरन्ध्र कहते हैं। एक और तरीक़ा हृदयचक्र, यानी दिल के मरकज़ पर ध्यान जमाने का है। इस तरीक़े की बाबत अरब के एक सूफ़ी का शेर है कि—

अखा बैज़ा क़ल्बका कुन कनक तायर
फ़मन ज़ालि कल अहवाल फ़ीका तवल्लुद।

अपने दिल के ऊपर इस तरह बैठ जिस तरह चिड़िया अंडे पर बैठती है। इससे तुझमें अजीब अजीब हालतें पैदा होंगी।

योग ही की एक शाख़ प्राणायाम है जिसका गीता में कई बार ज़िकर आता है। (८—१२) (४—२६ और ३०) मुसलमान सूफ़ी प्राणायाम को हब्से दम कहते हैं। इन दोनों लफ़्ज़ों के एक ही माइने हैं। कहीं कहीं इसका नाम हब्से नफ़्स भी मिलता है। शाह वली उल्लाह ने अपनी अरबी किताब अल क़ौलुल जमील में हब्से दम के उन तरीक़ों को तफ़सील के साथ बयान किया है जिन्हें वह .कुरान के मुताबिक़ ठीक बताते हैं। जिस तरह से हिन्दू प्राणायाम करते वक़्त कभी कभी ओ३म शब्द पर चित्त को जमाते हैं उसी तरह मुसलमान सूफ़ी हब्से दम में अकसर अल्लाह नाम पर दिल को टिकाते हैं। इस किताब में जो बहुत से तरीक़े शग़ल के दिये हैं उनमें से एक को 'शग़ले बिसात' कहते हैं, इस तरीक़े में आँखे बन्द करके ज़बान के सिरे को उसी तरह तालू में लगाया जाता है जिस तरह हठ योग की खेचरी मुद्रा में, और सांस को दिमाग़ की जड़ में बन्द करने की कोशिश की जाती है। इस तरीक़े को और उस पर अमल

करने से जो नतीजे धीरे धीरे पैदा होते हैं उन्हें अलक़ौलुल जमील में पूरी तरह बयान किया गया है। एक दूसरी सूफ़ी किताब ज़ियाउल क़ुलूब (दिलों की रोशनी) में भी हब्स दम के बहुत से तरीक़े बताए गए हैं। इनमें से एक में सांस को रोक कर निगाह को दोनों भवों के बीच में रक्खा जाता है, और दूसरे में निगाह को हवा में जमाया जाता है, वग़ैरह।

योग या सलूक की एक ख़ास चीज़ चित्त यानी मन को वाहर से रोक कर अन्दर की तरफ़ लगाना है (योग सूत्र)। गीता में कहा है कि—

"सब इन्द्रियों के दरवाज़ों को बन्द करके मनको अपने अन्दर रोक कर ही आदमी···ईश्वर में लौ लगाए हुए··· परमगति (निजात) को हासिल कर सकता है।" (८—१२ और १३)

मौलाना रूमी की मसनवी में लिखा है—

चश्म बन्दो लब बे बन्दो गोश बन्द
गर नबीनी सिरे हक़ बर मन बेख़न्द।

अपनी आंखों, होठों, और कानों सबको बन्द कर ले फिर अगर तुझे अल्लाह का भेद दिखाई न दे तो हमपर हंसना।

योग या सलूक के ऊपर हिन्दू और मुसलिम किताबें देखने से पता चलता है कि ये दोनों एक ही सी बातों और एक ही तरह के अभ्यासों (शग़लों) से भरी पड़ी हैं। शायद ही कोई अभ्यास या शग़ल ऐसा हो जो एक में हो और दूसरे में किसी न किसी शक्ल में मौजूद न हो।

३

हम ऊपर दिखा चुके हैं कि सब मज़हबों की, और इन्हीं के साथ साथ गीता और .कुरान की, बताई हुई बुनियादी बातों और तौर तरीक़ों में कितनी गहरी एकता है। इसके माइने यह नहीं हैं कि सब मज़हबों के लोगों में या हिन्दू और मुसलमानों में जो गीता और .कुरान को अपने अपने मज़हब की ख़ास किताबें बताते हैं एकता और मुहब्बत है। इसके ख़िलाफ़ हम यह देख रहे हैं कि दुनिया में मज़हब आदमी को एक ख़ानदान के सांचे में ढालने के बजाय उसे छोटे छोटे टुकड़ों में तोड़ने और उन टुकड़ों के एक दूसरे से टकराने में मदद दे रहा है। यह बड़े अचरज की और दुख की बात है। पर आज तक दुनिया इस बीमारी का ठीक ठीक और पूरा पूरा इलाज नहीं कर सकी।

इसकी वजह क्या है? इसकी वजह यह है कि मज़हबों के क़ायम करने वाले अवतार, नबी या तीर्थंकर इस तरह के सवालों का हल—जैसे यह कि आदमी के स्वभाव उसकी तबीयत में कौन कौन सी चीज़ें उसे उसके भले की तरफ़ ले जाने वाली हैं और कौन कौन सी उसे नुक़सान पहुंचाने वाली हैं, उसे अपने अन्दर के किन किन रुजहानों को दबाना चाहिये और किन किन को बढ़ाना चाहिये, इनसानी समाज की हक़ीक़त क्या है, उसकी असली ज़रूरतें क्या हैं, और किन किन बातों में हर आदमी का और सारे समाज का असली और टिकाऊ भला है?—इन और इस तरह के और सब सवालों का हल

ऐसी गहराइयों में बैठकर निकालते हैं कि जिन गहराइयों तक मामूली आदमी नहीं पहुंच पाते। इन सच्चे और क़ीमती हलों को अपनी ज़िन्दगी में जगह देने के लिये यह बड़े लोग इतने ऊँचे और कठिन रास्ते दिखाते हैं कि जिन पर मामूली आदमी नहीं चल पाते। लेकिन इनके बताए हुए रास्ते या हल को छोड़ कर और कोई हल या कोई दूसरा रास्ता ऐसा नहीं है जिस पर चल कर आदमी अपने असली भले, सच्ची शान्ति और टिकाऊ सुख चैन तक पहुँच सके। रही रूह या आत्मा की तरक़्क़ी की बात, सो इसके लिये तो मज़हब के हलों और तरीक़ों को छोड़ कर और कोई दूसरे हल या तरीक़े अभी तक दुनिया के सामने आए ही नहीं।

यह हल क्या हैं ? सोचने समझने के लिये यह हल थोड़े से सीधे सादे साफ़ सुथरे असूलों में बन्द हैं। इनमें सब से बुनियादी खयाल एक ईश्वर या एक खुदा का होना है। गीता और कुरान दोनों इस वजूद की जीती और जागती तसवीरें अपने पढ़ने वालों के सामने पेश करती हैं। जब दुनिया का पैदा करने वाला और चलाने वाला एक है और उसके सिवाय कोई दूसरी ताक़त है ही नहीं, तो उस की पैदा की हुई मखलूक़ उसके पैदा किये हुए प्राणियों में नफ़रतों, गुस्सों, लड़ाई दङ्गों के ये बड़े बड़े तूफ़ान कैसे पैदा होते हैं ? क्या इन तूफ़ानों का पैदा होना यह साबित नहीं करता कि जो लोग अपने आप को एक ख़ुदा का मानने वाला बताते हैं वह सचमुच पूरे दिल और पूरे ईमान के साथ उसमें यक़ीन नहीं रखते, और फिर भी वह अपने को एक

ईश्वर का मानने वाला और एक .खुदा का परस्तार कहते हैं, और उसकी राह पर चलने का दावा करते हैं ? हर मुल्क और हर ज़माने में जो थोड़े से लोग सचमुच अपने अन्दर रूहानी रोशनी और रूहानी ताक़त रखते हैं, जिन्हें साधू. संत, सूफ़ी और फ़क़ीर कहा जाता है, उनका दिल लोगों की इस हालत को बरदाश्त नहीं कर सकता। उनसे देखा नहीं जाता कि एक ईश्वर के मानने वाले इस तरह अपनी ज़िन्दगी में ईश्वर की इच्छा और उसके हुक्म के ठीक खिलाफ़ अमल करें और दुख भोगें। इसी लिये हर समाज में और हर देस में मज़हब के अन्दर के इस राज रोग को दूर करने के लिये अवतारों, नबियों और तीर्थंकरों की तरह, और उन्हीं से मिलती जुलती, बड़ी बड़ी महान आत्माएं, बड़ी बड़ी रूहानी हस्तियाँ, पैदा होती रही हैं, जो लोगों को .खुदा और सच्चे मज़हब की तरफ़ ले जाने की अनथक कोशिश करती रही हैं। यह कोशिशें इस बीमारी को पूरी तरह मिटा सकें या न मिटा सकें, पर ये आदमी के सच्चे सुधार और समाज की सच्ची तरक़्क़ी में बराबर नई जान डालती हैं।

ये महान आत्माएं, ये शानदार रूहानी हस्तियां दो बड़े काम करती हैं। एक तरफ़ तो वह ईश्वर के सच्चे रूप, खुदा के सच्चे वजूद, के इलहामी नक़्शे, उसके दीदार की झलक के अन्दर के तजरुबे लोगों के सामने पेश करते हैं जिससे लोग सचमुच एक ईश्वर के भक्त, एक .खुदा की परसतिश करने वाले बनें, दूसरी तरफ़ वह उन झूठे रीत रिवाजों, पूजा पाठ के

तरीक़ा, बेइनसाफ़ियों और ख़ुदग़रज़ी से पैदा हुए सैकड़ों गोरख धन्धों को अपनी आध्यात्मिक (रूहानी) आग में जला कर ख़ाक कर देने की कोशिश करते हैं जो आपस में ग़ैरियत और नफ़रत पैदा करते हैं, ता कि नफ़रतें, ग़ुस्से और लड़ाई झगड़े दूर हों और इनसानी समाज एक दूसरे से मुहब्बत करने वाले भाई बहनों का एक प्यारा कुटुम्ब या ख़ानदान बन सके और वह छोटी बड़ी आपस की टक्करें जड़ से मिट जायं जो इसे तबाह और बरबाद करती रहती हैं।

हमारे देश में भी ऐसे बड़े बड़े अल्लाह वालों और ईश्वर भक्तों का एक बहुत बड़ा सिलसिला मिलता है। कबीर, दादू, तुकाराम, नानक, चैतन्य, मुईनुद्दीन चिश्ती, बाबा फ़रीद, मीरा, निज़ामुद्दीन औलिया, रैदास, बुल्ले शाह, सब इस सिल-सिले के बड़े और अनमोल रतन हैं। इन्होंने ईश्वर के एक होने के गहरे से गहरे पहलुओं पर ज़्यादह से ज़्यादह रोशनी डाली है। इन्होंने उन सब बुराइयों और बे इनसाफ़ियों का खुले तौर पर, और कड़े से कड़े लफ़्ज़ों में, मुक़ाबला किया है जो मज़हब के नाम पर की जाती हैं। इन लोगों का कलाम, इनकी वाणी, पढ़कर आदमी सिर्फ़ ऊंचे अमूलों को ही नहीं जान जाता, बल्कि सच्ची और नेक ज़िन्दगी की तरफ़, दूसरों की सेवा और ख़िदमत की तरफ़ और सच्ची रूहानियत की तरफ़ भी ध्यान देने लगता है। हम नीचे इन संतों में से दो चार के कलामों की कुछ मिसालें देते हैं, जिनसे आदमी और समाज के साथ मज़हब के असली नाते पर रोशनी पड़ेगी। इनमे यह

पता चलेगा कि एक खुदा में सच्चा यक़ीन आदमी को आदमी बनाने और समाज को सुख और शान्ति की तरफ़ ले जाने का कितना बड़ा ज़रिया है। ऊपर के रीत रिवाज किस तरह आदमी को लोहे की जञ्जीरों में जकड़े रखते हैं, और किस तरह यह छोटे मोटे रीत रिवाज ही समाज में बेइनसाफ़ी पैदा करने, फ़िसाद खड़े करने और समाज की तरक़्क़ी के रास्तों को रोक देने का सब से बड़ा कारण बन जाते हैं। अब हम कुछ मिसालें देते हैं।

कबीर साहब ने नीचे लिखे हुए वचनों में सिर्फ़ गीता और क़ुरान ही की नहीं, बल्कि तमाम हिन्दू और मुसलमान ज़िन्दगी की एकता की तसवीर बड़ी .खूबसूरती से खींची है। आदमी आदमी में कोई ऐसा फ़रक़ करना जो उन्हें एक दूसरे से अलग करे, फिर वह फ़रक चाहे खाने पीने का हो, चाहे ऊंच नीच का हो, शादी ब्याह का हो, चाहे पूजा पाठ का हो, कबीर साहब के रूहानी दिल को हिला देता है। वह ऐसे लफ़्ज़ों में जो तीर की तरह सुनने वाले के दिल के पार हो जाते हैं इन भेद भावों पर अपना दुख तरह तरह से ज़ाहिर करते हैं। अपने ज़माने के हिन्दू और मुसलमानों को सामने रख कर उन्होंने कहा है—

भाइ रे ! दुइ जगदीश कहां ते आया, कहो कौने भरमाया,
अल्लह, राम, करीमा, केशो, हरि हजरत, नाम धराया,
गहना एक कनक ते गहना इनि मंह भाव न दूजा,
कहन सुनन को दोउ कर थापिन, इक नमाज एक पूजा।

वही महादेव वही मुहम्मद, ब्रह्मा आदम कहिये,
को हिन्दू को तुरुक कहावे, एक जिमीं पर रहिये ।
वेद कतेब पढ़ैं वे कुतबा, वे मुलना वे पाण्डे,
बेगर बेगर नाम धराए, एक मिटिया के भांडे ।
कहहिं कबीर वे दूनों भूले, रामहिं किनहु न पाया
वे खस्सी वे गाय कटावें, बादहिं जनम गंवाया ।

ऐ भाई ! इस दुनिया के दो मालिक, दो ख़ुदा, कैसे हो सकते हैं ? कहो तुम्हें किसने बहका दिया ? अल्लाह और राम, करीम और केशो, हरि और हज़रत, ये सब सिर्फ़ अलग अलग नाम रख लिये गए हैं, जैसे एक सोने से तरह तरह के गहने गढ़ लिये जावें । ये दो अलग अलग चीज़ें नहीं हैं । कहने सुनने के लिए एक नमाज़ कहता है, दूसरा उसी को पूजा कहता है । जो महादेव है वही मुहम्मद है, जो ब्रह्मा है वही आदम है । कौन हिन्दू है और कौन मुसलमान ? दोनों एक ही ज़मीन पर रहते हैं । कोई वेद पढ़ता है । कोई ख़ुतबा पढ़ता है । कोई मौलाना कहलाता है, कोई पंडित । नाम अलग अलग हैं । असल में सब एक ही मिट्टी के बरतन हैं । कबीर कहता है इस झूठे भेद भाव में पड़ कर ये दोनों असली रास्ते से भटके हुए हैं । इनमें से किसी को ईश्वर नहीं मिला । एक बकरा काटता है दूसरा गाय । इसी बहस में इन दोनों ने अपनी ज़िन्दगी बरबाद करदी ।

मन्दिर और मसजिद, पूरब और पच्छिम के फ़रक़ को बयान करते हुए कबीर साहब ने कहा है—

जो खुदाय महजीद बसतु है, अवर मुलुक केहि केरा,
तीरथ मूरत राम निवासी, दुइ मंह किनहु न हेरा ।

पूरब दिसा हरी को बासा, पच्छिम अलह मुकामा,
दिल महं खोज दिलहि महं खोजो, इहै करीमा रामा।
वेद कतेब कहो किन झूठा, झूठा जो न बिचारै
सब घट एक एक कर जानै, वै दूजा केहि मारै।
जेते औरत मर्द उपाने, सो सब रूप तुम्हारा,
कबीर पंगरा अलह राम का, सो गुरु पीर हमारा।

अगर ख़ुदा मसजिद ही में रहता है तो बाक़ी मुल्क किसका है? हिन्दू समझते हैं राम तीरथ मूरत में रहता है, पर इन दोनों में किसी को भी राम नहीं मिला। जो समझते है ईश्वर पूरब में है या अल्लाह पच्छिम में है, वह दोनों धोके में हैं। उसे ढूंढना है तो अपने दिल के अन्दर ढूंढो, वह वहीं मिलेगा। वही करीम है और वही राम है। वेद और क़ुरान झूटे नहीं है, झूटा वह है जो उनका नाम लेता है पर सोचता विचारता नहीं। जो आदमी सब के अन्दर एक ही अल्लाह को देखता है और सबको अपनी ही तरह समझता है वह किसी को तकलीफ़ नहीं दे सकता। दुनिया में जितने औरत और मर्द हैं सब तुम्हारे ही रूप हैं। कबीर कहता है कि जो आदमी अल्लाह और राम का पंगरा है यानी दोनों को एक समझता है वही हमारा गुरु और पीर है।

सारे आदमी सब एक हैं— इसे दिखाते हुए कबीर साहब कहते है—

ऐसो भरम बिगुरचन भारी,
वेद कतेब दीन औ दोजक को पुरुषा को नारी,

माटी के घट साज बनाया नान्दे बिन्दु समाना,
घट बिनसे का नाम धरहुगे अहमक खोज भुलाना।
एकै तुचा हाड़ मल मूत्रा एक रुधिर एक गूदा,
एक बून्द सों सिस्टि कियो है को ब्राह्मन को सूद्रा।
रजगुन ब्रह्मा तमगुन सङ्कर सत्त गुना हरि सोई,
कहहि कबीर राम रमि रहिये हिन्दू तुरुक न कोई।

सारी दुनिया एक बहुत बड़े धोखे में पड़ी हुई है जो उसे बरबाद कर रहा है। कोई वेद की दुहाई देता है, कोई कुरान की, कोई दीन की बात करता है, कोई दोज़ख़ की। इन अलग अलग रास्तों में कोई फ़रक़ नहीं है। आत्मा या रूह के लिये मर्द और औरत दोनों बराबर हैं। सब के बदन एक ही मिट्टी के बने हुए हैं। सब में एक ही सी जान है। इस जिस्म के मिट जाने पर ऊपर की शक्लों का भी फ़रक़ नहीं रह जाता। नासमझ आदमी असली रास्ते से भटके हुए हैं। आदमी आदमी सब बराबर हैं। सबके एक ही सी खाल है, एक ही सी हड्डियाँ, एक ही सा मल मूत्र (पाख़ाना पेशाब), एक ही सा ख़ून और एक ही सा गोश्त। एक बूंद से सब पैदा हुए हैं। न कोई ब्राह्मण है और न कोई शूद्र। ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों आत्मा की इन तीन हालतों के नाम हैं—रजोगुण यानी हरकत, सतो गुण यानी सकून और तमो गुण यानी काहली। कबीर कहता है सबको एक ही ईश्वर ख़ुदा से लौ लगानी चाहिये। न कोई हिन्दू है न कोई मुसलमान। यह सब फ़रक़ झूटे हैं।

ऊपरी रीत रिवाजों के हल्केपन को दिखाते हुए कबीर साहब कहते हैं—

मरि हो रे तन का ले करि हो, प्रान छुटे बाहर ले डरिहो,
काया बिगुरचनि अनिबनि भांति, कोइ जारै कोइ गाड़ै माटि।
हिन्दू जारैं, तुरुक लै गाड़ैं, यहि बिधि अन्त दुनों घर छाड़ैं।

ऐ लोगो! जब आदमी मर जायगा तो उसके जिस्म को क्या करोगे? जान निकल जाने पर बाहर डाल दोगे। जिस्म के बेजान हो जाने पर लोग तरह तरह से बरताव करते हैं। कोई जला देता है और कोई मिट्टी में गाड़ देता है। हिन्दू जलाते हैं और मुसलमान गाड़ते हैं। बात एक ही है। आख़िर दोनों इस जिस्म को छोड़ कर चल देते हैं।

हिन्दु कहें मोहे राम पियारा तुरुक कहें रहिमाना,
आपस में दोउ लरि लरि मूए, मरम काहु नहीं जाना।

हिन्दू कहते हैं हमारे प्यारे का नाम राम है, मुसलमान कहते हैं हमारे प्रीतम का नाम रहिमान है। दोनों आपस में लड़ लड़ कर मरे जाते हैं। उसकी असलीयत से दोनों नावाक़िफ़ हैं।

जात पात और छुआ छूत को ग़लत बताते हुए कबीर साहब ने कहा है—

गुपत प्रगट है एकै मुद्रा, का को कहिये बाम्हन सूद्रा,
झूठे गर्व भुलो मत कोई, हिन्दु तुरुक झूठ कुल दोई।

सबके अन्दर और बाहर एक ही सा बनाव है। न कोई बाम्हन है न कोई शूद्र। जात पात का यह सब घमंड झूठा है, इसमें किसी को नहीं पड़ना चाहिये। यह बात भी झूठी है कि हिन्दू और मुसलमान दो अलग अलग ख़ानदान हैं। आद मी आदमी सब बराबर हैं।

दादू का कलाम भी ऐसी ऐसी ही तसवीरों और इसी तरह

की चीज़ों से भरा पड़ा है। कुछ मिसालें यहां दी जाती हैं। दादू ने कहा है—

एकै अलह राम है समरथ साईं सोइ,
मैदे के पकवान सब खातौं होइ सो होइ।
दादू सिरजनहार के केते नांव अनन्त,
चित आवै सो लीजिये यों साधू सुमिरैं सन्त।*

वही अल्लाह है वही राम है। वही समर्थ (समद) है। वही सबका मालिक है। ये सब अलग अलग नाम ऐसे ही हैं जैसे एक मैदे के अलग अलग पकवान। जिसे जो अच्छा लगे खावे। ऐ दादू! उस सिरजनहार के अनगिनत नाम हैं, जिस नाम से चाहो उसे पुकारो। भले लोग इन नामों में कोई फ़रक़ नहीं करते।

हिन्दू मारग कहैं हमारा तुरुक कहैं रह मेरी,
कहां पन्थ है कहो अलह का तुम तो ऐसी हेरी।
दुई दरोग लोग कूं भावै साईं सांच पियारा,
कौन पन्थ हम चलैं कहो धों साधो करो बिचारा।
खण्ड खण्ड करि ब्रह्म कूं पखि पखि लीया बांट,
दादू पूरन ब्रह्म तजि बंधे भरम की गांठ।

हिन्दु कहते हैं कि हमारा रास्ता ठीक है, मुसलमान कहते हैं हमारा रास्ता ठीक है। इनसे पूछो कि बताओ अल्लाह का रास्ता कौन सा है? यह दोनों असली रास्ते से भटके हुए हैं। लोगों को यह दुई, यह अलग अलग रास्ते पसन्द आते हैं; पर यह दुई

---

* "उसे अल्लाह कहके पुकारो या रहिमान पुकारो, सब अच्छे नाम उसी के हैं।" (क़ुरान—इसराईल, ११०)

झूठी है। उस मालिक को सच ही प्यारा है। ऐ भले लोगो! सोचो कि हम किस रास्ते पर चलें और कब तक? इन लोगों ने ईश्वर के भी टुकड़े टुकड़े कर डाले, और उन अलग अलग टुकड़ों को आपस में बांट लिया। ऐ दादू! यह सब लोग उस पूर्ण ब्रह्म, उस एक अल्लाह से भटक कर धोके में फंसे हुए हैं।

दादू एकै आत्मा साहिब है सब मांह,
साहेब के नाते मिलै, भेख पन्थ के नांह।
दादू दून्यों भरम हैं हिन्दू तुरुक गंवार,
जे दुहवां थें रहित है सो गहि तत्त बिचार।
अपना अपना करि लिया भंजन माहें बांह,
दादू एकै कूप जल मन का भरम उठाय।

ऐ दादू! एक ही जान सब के अन्दर है। सब में वही ईश्वर मौजूद है। उस एक ईश्वर के नाते ही से हमें एक दूसरे से मिलना चाहिये, अलग अलग भेसों और पंथों के फ़रक़ में नहीं पड़ना चाहिये। ऐ दादू! हिन्दू और मुसलमान दोनों धोके में पड़े हुए हैं, दोनों ना समझ हैं। सोच समझ कर उस असली रास्ते को पकड़ना चाहिये जिसमें कोई ग़ैर नहीं रह जाता। इन लोगों ने एक कुएं के पानी को अलग अलग बरतनों में डाल कर अपना अपना अलग अलग कर लिया है। दुई का यह धोका अपने मन से हटा देना चाहिये।

आगे चल कर दादू कहता है—

अलह राम छूटा भ्रम मोरा
हिन्दू तुरुक भेद कछु नाहीं, देखौं दरसन तोरा,

सोई प्रान प्यंड पुनि सोई, सोई लोही मासा,
सोई नैन नासिका सोई, सहजैं कीन तमासा,
स्रवनों सबद बाजता सुनिये, जिह्वा मीठा लागै,
सोई भूक सबन कूं व्यापै, एक जुगति सोई जागै,
सोई सन्ध बन्ध पुनि सोई, सोई सुख सोई पीरा,
सोई हस्त पांव पुनि सोई, सोई एक सरीरा,
यहु सब खेल खालिक हरि तेरा, तैंहि एक करि लीना,
दादू जुगत जान कर ऐसी, तब यहु प्रान पतीना।

मेरे दिल से यह धोका जाता रहा कि अल्लाह और राम दो हैं, हिन्दू और मुसलमान में मुझे कोई फ़रक़ दिखाई नहीं देता, ऐ ईश्वर ! मैं सबके अन्दर तेरा ही दर्शन करता हूं, सबको एक ही सा साँस आता है, सबके एक ही सा जिस्म, एक सा ख़ून, एक सा गोश्त, एक सी आँख नाक है, सब में एक ही जान खेल रही है, सब के कान एक ही सी आवाज़ें सुनते हैं, सबकी ज़बानों को मीठा मीठा लगता है, सबको एक सी भूक लगती है, एक ही तरह सबकी भूक मिटती है, सबके एक से हड्डी और जोड़ हैं, सबको एक ही तरह दुख सुख होता है, एकही तरह दर्द होता है, सबके एक ही से हाथ पाँव, एक ही सा बदन है, ये सब खेल उसी एक ख़ालिक़ का है। वही ख़ालिक है, वही हरि है। उसी ने सब के अन्दर मुझे अपने और इस एकता के दर्शन कराये हैं, इस तरह देख और समझ कर ही दादू की आत्मा को यक़ीन हुआ है।

धर्म या मज़हब के असल जौहर को बयान करते हुए दादू ने कहा है—

आपा मेटै हरि भजै, तनमन तजै बिकार,
निर बैरी सब जीव सों, दादू यहु मत सार ।
निरबैरी सब जीव सों, सन्त जन सोई,
दादू एकै आत्मा, बैरी नहिं कोई,
सब हम देख्या सोधि करि, दूजा नाहीं आन,
सब घट एकै आत्मा, क्या हिन्दू मुसलमान ।
नारि पुरूख का नांव धरि, इह संसै भरम भुलान,
सब घट एकै आत्मा, क्या हिन्दू मुसलमान ।
दोनों भाई हाथ पग, दोनों भाई कान,
दोनों भाई नैन हैं, हिन्दू मुसलमान ।
दादू संसा आरसी, देखत दूजा होइ,
भरम गया दुबिधा मिटी, तब दूसर नाहीं कोइ ।
किससों बैरी होय रहा, दूजा कोई नाहिं,
जिसके अंग थैं ऊपजा, सोई है सब माहिं ।

अपनी ख़ुदी यानी अहंकार को मिटाना, एक ईश्वर की पूजा करना, अपने तन को बुरे कामों से और मन को बुरे ख़यालों से बचाना, और किसी जानदार का बुरा न चाहना, ऐ दादू ! यही मज़हब का निचोड़ है । वही आदमी संत है जो किसी जानदार से भी दुशमनी न करे । ऐ दादू ! सब के अन्दर एक ही आत्मा है । कोई हमारा दुशमन नहीं है । हमने सब अच्छी तरह खोज कर देख लिया है, कोई ग़ैर नहीं है । क्या हिन्दू और क्या मुसलमान सब के अन्दर एक ही आत्मा काम कर रही है । मर्द और औरत के अलग अलग नाम रख कर लोग धोके में पड़ गए हैं । मर्द और औरत हिन्दू और

मुसलमान सब के अन्दर एक ही आत्मा काम कर रही है। हिन्दू और मुसलमान दोनों एक दूसरे के भाई भाई हैं। दोनों एक ही जिस्म के दो हाथ, दो पैर, दो कान और दो आँखों की तरह हैं। शक की आरसी में हमें दो दिखाई देते हैं, इसी से हम धोके में पड़ जाते हैं। जब यह धोका जाता रहता है, और शक मिट जाता है तब फिर कोई दूसरा नहीं रह जाता। ऐ दादू! तू किससे दुशमनी कर रहा है? कोई ग़ैर है ही नहीं, वही अल्लाह जिसने तुझे अपने मे पैदा किया वही सब के अन्दर मौजूद है।

मन्दिर और मस्जिद के फ़रक़ का ज़िक्र करते हुए दादू कहता है—

हिन्दू लागै देहुरे, मुसलमान मसीत,
हम लागैं इक अलेख सों, सदा निरंतर प्रीत,
न तहां हिन्दू देहुरा, न तहां तुरुक मसीत,
दादू आपै आप है, नहीं तहां रह रीत,
यहु मसीत यहु देहुरा, सतगुरु दिया दिखाइ,
भीतर सेवा बन्दगी, बाहर काहे जाइ।
दून्यों हाथी ह्वै रहे, मिलि रस पिया न जाइ,
दादू आपा मेटि कर दून्यों रहे समाइ।
दादू द्वै पख दूर कर, निरपख निरमल नांव,
आपा मेटै हरि भजै, ताके मैं बलि जाउं।
दादू पंथों परि गए, बपुरे बारह बाट,
इनके संग न जाइये, उलटा औघट घाट।

हिन्दू मन्दिर से चिपटा हुआ है मुसलमान मसजिद से, हम उसी

एक अल्लाह से लौ लगाए हैं जो बे-निशान है। हमारी हर वक्त उससे लौ लगी हुई है। न वहाँ मन्दिर की ज़रूरत है, न मसजिद की। वहाँ वह आप ही आप मौजूद है। उसकी पूजा के लिये किसी ख़ास रीत रिवाज की भी ज़रूरत नहीं है। सच्चे गुरु ने हमें दिखा दिया है कि आदमी का यह जिस्म ही मसजिद है और यही मन्दिर है। इसके अन्दर ही आदमी .खुदा की सेवा बन्दगी कर सकता है, बाहर जाने की ज़रूरत नहीं है। हिन्दू और मुसलमान दोनों दो पागल हाथियों की तरह हो रहे हैं, इसी लिये दोनों मिल कर पानी नहीं पी सकते, यानी दोनों मिल कर ज़िन्दगी का लुत्फ़ नहीं उठा सकते। अपनी .खुदी को मिटा कर दोनों आनन्द के साथ एक जगह समा सकते हैं। ऐ दादू! इन दोनों के मेरे तेरे से हट कर तू उस मालिक का पाक नाम ले जो इस सब मेरे तेरे से ऊपर है। मैं उसी आदमी पर .कुरबान हूँ जो अपनी खुदी को मिटा कर ईश्वर का भजन करता है। ऐ दादू! ये लोग अपने अपने पंथों में पड़ गये, इसी लिये टुकड़े टुकड़े हो गये। इन का साथ छोड़, इनका रास्ता उलटा और बरबादी का है।

.खुदा सब के अन्दर किस तरह मौजूद है इसे बयान करते हुए दादू ने कहा है—

जीयें तेल तिलन्नि में, जीयें गन्ध फुलन्नि,
जीयें माखन शीर में, ईयें रब्ब रुहन्नि,
ईयें रब्ब रुहन्नि में, जीयें रूह रगन्नि,
जीयें जेरो सूर में, ठण्डो चन्द्र बसन्नि,
जिन यह दिल मन्दिर किया, दिल मन्दिर में सोइ,
दिल माहें दिलदार है, और न दूजा कोई।

जिस तरह तिलों में तेल, फूलों में खुशबू और दूध में मक्खन है, उसी तरह सब रूहों में ख़ुदा है। ख़ुदा सब रूहों में उसी तरह मौजूद है जिस तरह रगों के अन्दर रूह मौजूद है, जिस तरह सूरज में रोशनी और चाँद में ठंडक मौजूद है। जिस ख़ुदा ने हमारे इस दिल के मन्दिर को बनाया है वही इस दिल के मन्दिर में बैठा हुआ है। हर दिल में दिलदार मौजूद है, कोई ग़ैर नहीं है।

अल्लाह के नामों का ज़िक्र करते हुए दादू ने कहा है—

बाबा नाहीं दूजा कोइ
एक अनेक नांव तुम्हारे, मोपैं और न होइ,
अलख इलाही एक तूं, तूं ही राम रहीम,
तूं ही मालिक मोहना, केशो नांव करीम,
साईं सिरजनहार तूं, तूं पावन तूं पाक,
तूं क़ायम करतार तूं, तूं हरि हाज़िर आप,
रमता राज़िक़ एक तूं, तूं सारंग सुबहान,
क़ादिर करता एक तूं, तूं साहिब सुलतान,
अविगत अल्लाह एक तूं, ग़नी गुसाईं एक,
अजब अनूपम आप है, दादू नांव अनेक।

इस सब के माइने साफ़ हैं।

इस सवाल पर गुरु नानक और गुरु गोविन्द सिंह के शब्द भी देखने के क़ाबिल हैं। सिख मज़हब के चलाने वाले गुरु नानक कबीर साहब ही के आख़िरी दिनों में हुए हैं। कबीर और दादू ही की तरह गुरु नानक के चेलों में भी हिन्दू और मुसलमान दोनों शामिल थे। गुरु नानक ख़ुद कबीर साहब के

बहुत बड़े प्रेमी थे। सिखों की मज़हबी किताब आदि ग्रन्थ में सिख गुरुओं की वाणी के साथ साथ कबीर साहब और कई दूसरे मुसलमान संतों और फ़क़ीरों की वाणी भरी हुई है। सिख मज़हब जिस तरह शुरू हुआ, वह हिन्दू मुसलमानों के मेल का मज़हब था। गुरु अर्जुन को जब अमृतसर के गुरुद्वारे की नींव रखने के लिये किसी ईश्वर भक्त की ज़रूरत हुई तो उन्होंने मशहूर मुसलमान फ़क़ीर साईं मियांमीर को इस काम के लिए चुना। गुरुद्वारे की नींव साईं मियांमीर ही के हाथ की रक्खी हुई है। गुरु नानक ने अपने ज़माने के हिन्दू और मुसलमानों की नासमझी पर दुखी होकर कहा है–

न हम हिन्दू न मूसलमान, दोनों बीच बसे शैतान,
तग्गा न हिन्दू पाइया, तग्गा न मूसलमान।
दावा राम रहीम कर, लड़दे बेईमान।

हम न हिन्दू हैं न मुसलमान, इन दोनों को ग़ैरियत के शैतान ने बहका रक्खा है, इसी लिये न हिन्दू को रास्ता मिलता है न मुसलमान को। ये दोनों राम और रहीम को दो समझ कर लड़ते हैं। इन्हें किसी को एक .खुदा पर ईमान नहीं है।

गुरु गोविन्द सिंह ने कहा है—

कोऊ भयो मुंडिया सन्यासी कोऊ योगी भयो,
कोऊ ब्रह्मचारी, कोऊ जतियन मान बो,
हिन्दू तुरुक कोऊ, राफ़ज़ी, इमाम शाफ़ी,
मानस की जाति सबै इक्कै पहचान बो।

करता करीम सोई राज़िक़ रहीम ओई,
दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो।
एक ही की सेव सब ही को गुरुदेव एक,
एक ही सरूप, सबै एकै जोत जान बो।
देहुरा मसीत सोई पूजा और नमाज ओई,
मानस सबै एक पै अनेक को भ्रमाव है।
देवता अदेव जच्छ गंधर्व तुरुक हिन्दू,
न्यारे न्यारे देसन के भेसन को प्रभाव है।
एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बानि,
ख़ाक बाद आतिश औ आब को रलाव है,
अल्लह अभेद सोई पुरान औ क़ुरान ओई,
एक ही सरूप सबै एक ही बनाव है।

कोई अपने को मुंडिया कहता है, कोई सन्यासी, कोई योगी कोई ब्रह्मचारी और कोई जति, कोई हिन्दू, कोई मुसलमान, कोई राफ़ज़ी और कोई सुन्नी। ये सब फ़रक़ झूठे हैं। आदमी आदमी सब की एक ही जात है, सब बराबर हैं। सब का एक ही ख़ुदा है। वही सब का कर्ता (बनाने वाला) है, वही करीम (सबका भला करने वाला), वही राज़िक़ (सबको रोज़ी देने वाला) है। वही रहीम (सब पर दया करने वाला) है। किसी का कोई अलग ख़ुदा नहीं है। ये सब फ़रक़ भूल और धोका हैं। सबको उसी एक ख़ुदा की सेवा बन्दगी करनी चाहिये। वही सबका गुरुदेव है। सब आदमियों की एक ही सी शकल है। सबके अन्दर एक ही अल्लाह की जोति काम कर रही है। जो मंदिर में है वही मसजिद में है, जो पूजा है वही

ई गुन गरब करो अधिकाई, अधिके गरब न होइ भलाई,
जासु नाम है गरब प्रहारी, सो कस गरबहि सके सहारी ।
कुल मरजादा खोय के खोजिनि पद निरबान,
अंकुर बीज नसाय के, भये विदेही थान ।

ऐ पंडित ! तुम वेद पढ़ पढ़ा कर भी भूल गये। तुमने अपने आपको न पहचाना । संध्या तर्पण और तरह तरह के कर्म कारण्ड तुम करते हो, गायत्री भी जपते जपाते हो, यही करते कराते तुम्हें युग बीत गये, पर इस सबके करने से तुम्हे मुक्ति (निजात) नहीं मिली क्योंकि दूसरे आदमी के छू जाने से तुम अपने ऊपर पाक होने के लिये पानी छिड़कते हो । बताओ तुमसे ज़्यादह नीच और कौन हो सकता है जो आदमी के छूने से परहेज़ करते हो ? तुम अपने को ऊंचा समझते हो, और इसका तुम्हें घमण्ड है । इससे तुम्हारा भला नहीं हो सकता । जिस ईश्वर का नाम गर्व प्रहारी (घमण्ड को चूर करने वाला) है वह तुम्हारे इस झूठे घमण्ड को कैसे सह सकता है मोक्ष (निजात) उसी को मिल सकती है जो जात पात ख़ानदान ऊंच नीचके सब घमण्डों को उसी तरह अपने अन्दर से मिटा दे जिस तरह बीज अपने आपको मिट्टी में मिला कर ख़तम कर देता है । तब ही उसमें से मुक्ति का अंखुआ फूट सकता है ।

ख़ुद मांस खाने वाले और दूसरों से परहेज़ करने वाले ब्राह्मणों से कबीर साहब कहते हैं—

पंडित ! अचरज एक बड़ होई,
एक मरे मुवले अन्न नहि खाई, एक मरे सिझे रसोई.
करि सनान देवन की पूजा, नव गुनि कांध जनेऊ,

हंडिया हाड़ हाड़ थरिया मुख अब षट करम बनेऊ,
धरम कथै जहां जीव बधै तहां, अकरम करे मोरे भाई,
जो तोहरा को ब्राह्मन कहिये, काको कहिये कसाई ?
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो ! भरम भूलि दुनियाई
अपरमपार पार परसोतम, या गति बिरले पाई।

ऐ पंडित ! मुझे बड़ा अचरज हो रहा है कि जब कोई घर का या मुहल्ले का आदमी मर जाता है तब तो तुम नापाकी मान कर खाना नहीं खाते, और बकरा मरा हुआ लेकर उसकी रसोई पकाते हो ! और फिर नहा कर पूजा करके कंधे पर जनेऊ डाल कर उसे खाने बैठते हो ! तुम्हारी हंडिया में भी हड्डियां होती हैं और सामने थाली में भी मुरदे की हड्डियां रहती हैं, कहो यह कैसा धर्म कर्म है ? जहाँ तुम धर्म की बात करते हो वहीं दूसरे की जान लेते हो। ऐ भाई ! यह ठीक काम नहीं है। अगर तुम्हें ब्राह्मन कहा जावे तो क़साई किसको कहा जावे ? कबीर कहते हैं, ऐ संतो ! सुनो यह सब दुनिया धोके में पड़ी हुई है। इस बात को बहुत कम लोग समझते हैं कि एक ही परमात्मा सब के घट में मौजूद है।

हिन्दू और मुसलमान दोनों अपने अपने धर्मों के बहाने से ज़बान के सवाद में पड़े हुए हैं, इसे बयान करते हुए कबीर साहब कहते हैं—

सन्तो ! राह दुनो हम दीठा !
हिन्दू तुरुक हटा नहि मानें, स्वाद सभनि को मीठा,
हिन्दू बरत एकादसि साधें दूध सिंघारा सेती,
अन्न को त्यागैं मन को न हटकैं, पारन करैं सगोती,

तुरुक रोजा निमाज गुजारैं, बिसमिल बांग पुकारैं,
इनकूं भिस्त कहां ते होई, सांझे मुरगी मारैं,
हिन्दु की दया मेहर तुरकन की, दोनों घट सों त्यागी,
वै हलाल वै झटका मारैं आगि दुनों घर लागी ।
हिन्दु तुरुक की एक राह है, सतगुरु इहै बताई,
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो ! राम न कहु खुदाई ।

ऐ संतो ! हमने इन दोनों रास्तों को अच्छी तरह देख लिया है। हिन्दू और मुसलमान दोनों अपनी अपनी ज़िद में पड़े हुए हैं। दोनों ज़बान के सवाद में फंसे हुए हैं। हिन्दू एकादशी का व्रत करते हैं, और अपने सब सगों को साथ बिठा कर दूध और सिंघाड़े उड़ाते हैं, अनाज से परहेज़ करते हैं, पर अपने मन को मज़ेदार चीज़ों से नहीं रोकते। मुसलमान रोज़ा रखते हैं शाम को नमाज़ पढ़ते हैं अज़ान देते हैं और उसी शाम को ज़बान के सवाद के लिये मुरग़ी मारते हैं। बहिश्त में जाने का यह रास्ता नहीं है। हिन्दुओं ने अपने दिल से दया को मिटा दिया। मुसलमानों ने अपने अन्दर से मेहर को छोड़ दिया। एक हलाल खाते हैं दूसरे झटका खाते हैं। चटोरपन की आग दोनों घरों में लगी हुई है। सच्चे गुरु ने हमें बताया है कि हक़ीक़त में हिन्दू और मुसलमान दोनों के लिये रास्ता एक ही है। कबीर कहते हैं ऐ सन्तो ! सुनो, राम और .खुदा में फ़रक़ नहीं है, पर हिन्दू और मुसलमान दोनों उसके रास्ते से भटके हुए हैं।

झूठे मज़हबी गुरुओं की हालत बयान करते हुए कबीर साहब कहते हैं—

सन्तो ! देखत जग बौराना,
सांच कहौं तो मारन धावै झूठे जग पतियाना।
नेमी देखा, धरमी देखा प्रात करहिं अस्नाना,
आतम मारि पखानहिं पूजैं उनि मंह कछुउ न ज्ञाना।
बहुतक देखा पीर औलिया पढ़ें कतेब कुराना,
कै मुरीद तदबीर बतावैं उनि महं उहै जो ज्ञाना।
आसन मारि डिंभ धरि बैठे मन महं बहुत गुमाना,
पीतर पाथर पूजन लागे तीरथ गरब भुलाना,
माला पहिरैं टोपी पहिरैं छाप तिलक अनुमाना,
साखी शब्दै गावत भूले आतम खबरि न जाना।
हिन्दु कहैं मोहिं राम पियारा तुरुक कहैं रहिमाना,
आपस महं दोउ लरि लरि मूए मरम काहु नहिं जाना।
घर घर मन्तर देत फिरत हैं महिमा के अभिमाना,
गुरू सहित सीस सब बूड़े अन्त काल पछताना,
कहहिं कबीर सुनहु हो सन्तो ! ई सब भरम भुलाना,
केती कहूँ कहा नहिं मानें सहजै सहज समाना।

. . .

काजी सो जो काज बनावे नहिं अकाज से राजी,
जो अकाज की बात चलावे सो काजी नहिं पाजी।
कबीर सोई पीर है जो जाने पर पीर,
जो पर पीर न जानई सो काफ़िर बे पीर।

ऐ सन्तो ! देखते देखते दुनिया पागल हो रही है। सच्ची बात कहो तो मारने को दौड़ते हैं, झूठ में सब को यक़ीन है। बहुत से

नेमी और धर्मी देखे। सुबह उठकर नहाते हैं, ज़िंदा जानवर को मार कर खा जाते हैं, और पत्थर के देवता की पूजा करते हैं। इन लोगों को कुछ भी समझ नहीं है। ऐसे ही बहुत से पीर और औलिया देखे जो .कुरान पढ़ते हैं, ये अपने मुरीदों को क्या तदबीर बतावेंगे, उन्हें .खुद कुछ पता नहीं है! इस तरह के झूठे गुरू आसन लगा कर ढोंग के साथ बैठ जाते हैं। दिल में अपने को बहुत बड़ा समझते हैं। पीतल और पत्थर की मूर्तियों को पूजते हैं। तीर्थों के घमंड में भूले हुए हैं। माला पहनते हैं टोपी पहनते हैं, बड़े बड़े तिलक लगाते हैं, साखी शब्द गाते हैं, पर इन्हें अपने अन्दर की ख़बर नहीं है। हिन्दू कहते हैं हमारा .खुदा राम है। मुसलमान कहते हैं हमारा .खुदा रहमान है। दोनों आपस में लड़ लड़ कर मरे जाते हैं। असलीयत की किसी को ख़बर नहीं है। अपने बड़प्पन के घमण्ड में घर घर चेले मूंड़ते और मंत्र देते फिरते हैं। गुरू और चेले ये दोनों डूबेंगे। आख़िर में दोनों को पछताना पड़ेगा। कबीर कहते हैं, ऐ सन्तो! यह सब धोके की चीज़ें हैं। कहाँ तक कहा जावे, लोग कहना नहीं मानते। वह ईश्वर सब के अन्दर और सब में एक बराबर मौजूद है। असली क़ाज़ी वह है जो दूसरों का काम संवारे, और जो किसी बुरे काम से राज़ी न हो। जो कोई बुरा काम करने को कहे उसे क़ाज़ी नहीं पाजी कहना चाहिये। ऐ कबीर, सच्चा पीर वही है जो दूसरों की पीर यानी तकलीफ़ को समझे, जो दूसरों की तकलीफ़ को तकलीफ़ न समझे वह पीर नहीं, काफ़िर और बे पीर है।

मन्दिर और मसजिद के झगड़े के बारे में दादू ने कहा है—

आप चिणावे देहुरा तिसका करहि जतन,
परतखि परमेसुर किया सो भानै जीव रतन ।
मसीत संवारी मानसों तिसकूं करै सलाम,
ऐन आप पैदा किया सो ढावै मुसलमान ।
यहु मसीत यहु देहुरा सत गुरु दिया दिखाइ,
भीतर सेवा बन्दगी बाहर काहे जाइ ।
हौद हजूरी दिल ही भीतर गुस्ल हमारा सारं,
उजू साज अलह के आगे तहां निमाज गुजारं ।
काया मसीत करि पंच जमाती. मन ही मुला इमामं,
आप अलेख इलाही आगे सिजदा करै सलामं ।

जिस मन्दिर को हिन्दू अपने हाथों से चुनते हैं उसकी तो बड़ी देख रेख करते हैं, पर आदमी या जानवर का जिस्म जो ख़ुद ईश्वर का बनाया हुआ मंदिर है उसे तोड़ डालते हैं यानी मार डालते हैं। इसी तरह मुसलमान आदमी की बनाई हुई मसजिद की तो इज्ज़त करते हैं, और ख़ुद खुदा की बनाई हुई इमारत (यानी जानदार के जिस्म) को ढा देते हैं। सच्चे गुरु ने हमें दिखा दिया है कि आदमी का यह जिस्म ही मसजिद है, और यही मन्दिर है। इसी के अन्दर बैठ कर हम अल्लाह की सेवा बन्दगी कर सकते हैं, कहीं बाहर जाने की ज़रूरत नहीं है। दिलके अन्दर ही ईश्वर के वजूद का हौज़ भरा हुआ है। उसमें हम अच्छी तरह नहा सकते हैं, और वज़ू करके वहीं पर अल्लाह के सामने नमाज़ पढ़ सकते हैं। हमारा यह जिस्म ही मसजिद है। हमारे पाँचो हवास (इन्द्रियाँ) जमाअत (साथ साथ नमाज़ पढ़ने वाले) हैं।

अपना मन ही मुल्ला और इमाम है। उस इमाम को सामने करके हमें उसी अलेख अल्लाह के सामने सिजदा करना चाहिये और उसी को सलाम करना चाहिए।

मूर्ति पूजा का ज़िक्र करते हुए दादू ने कहा है—

मूरत गढ़ी पखान की कीया सिरजनहार,
दादू सांच सूझै नहीं यूँ डूबा संसार।
आतम माहीं राम है पूजा ताकी होइ,
सेवा बन्दन आरती साध करें सब कोइ।
माहें निरंजन देव है माहें सेवा होइ,
माहें उतारें आरती, दादू सेवक सोइ।

पत्थर की मूरत बनाकर लोग उसे ईश्वर मानने लगते हैं। ऐ दादू! इन लोगों को सच्चा ईश्वर दिखाई नहीं देता, इसी लिए दुनिया डूब रही है। राम अपनी आत्मा के अन्दर ही मौजूद हैं, वहीं उनकी पूजा करनी चाहिये। सच्चे भक्त अपने अन्दर के राम की ही सेवा बन्दगी करते हैं। ऐ दादू! सच्चा सेवक वही है जो अपने अन्दर के निरंजन देव की आरती करे।

ऊपर के रीत रिवाजों पूजा पाठों पर दादू ने कहा है—

दादू! बांधे वेद बिधि धरम करम उरझाइ,
मरजादा माहीं रहे सुमिरन किया न जाइ।
इसकलि केते ह्वै गए हिन्दू मूसलमान,
दादू साची बन्दगी झूठा सब अभिमान,
पोथी अपना पिंड करि हरि जसमाहें लेख,
पंडित अपना प्रान करि दादू कथहु अलेख,

काया कतेब बोलिये लिख राखौं रहमान,

मनुवां मुल्ला बोलिये सुरता है सुबहान।

ऐ दादू ! लोगों को वेद शास्त्रों के रीति रिवाजों ने जकड़ रक्खा है। इसी से धोके में पड़े हुए हैं। लोग ऊपर के रीत रिवाजों में फंसे हुए हैं, इसीलिए उस मालिक का सच्चा सुमिरन यानी उसकी दिल से याद नहीं कर पाते।

इस कलजुग में कितने ही हिन्दू और मुसलमान हो गए। ऐ दादू ! उस ईश्वर की बन्दगी ही सच्ची है बाक़ी सब घमंड झूठा है। अपने जिस्म ही को किताब बनाना चाहिए, उस किताब के अन्दर ईश्वर का नाम लिखा हुआ मौजूद है। अपनी जान ही को पण्डित मानना चाहिए। और उसी पण्डित से उस अलेख ईश्वर का नाम इस जिस्म की किताब में पढ़ना चाहिये। इसी किताब में रहमान लिखकर अपने मन को मुल्ला बना कर उस सुबहान (ईश्वर) के सामने दुआ माँगनी चाहिये।

दादू ! पाती प्रेम की, बिरला बांचे कोय,

वेद पुराण पुस्तक पढ़ें, प्रेम बिना का होय।

इसका मतलब साफ़ है।

ऊपरी रीत रिवाज को फ़ज़ूल बताते हुए दादू ने कहा है—

सांचा राम न जाने रे, सब झूठ बखाने रे,

झूठे देवा झूठी सेवा झूटा करे पसारा,

झूठी पूजा झूठी पाती, झूठा पूजन हारा,

झूठा पाक करे रे प्राणी, झूठा भोग लगावे,

झूठा आड़ा पड़दा देवे, झूठा थाल बजावे,

झूठे बकता झूटे सुरता, झूठी कथा सुनावे,
झूठा कलयुग सबको माने, झूठा भरम दिढ़ावे,
थावर जंगम जल थल महियल, घट घट तेज समाना,
दादू आतम राम हमारा आदि पुरुष पहचाना ।

लोग सच्चे राम को नहीं पहचानते, सब झूठी बातें करते हैं। झूठे देवता, झूठी सेवा, झूठा फैलाव, झूठी पूजा, झूटा चढ़ावा, झूटा पूजने वाला, झूठा खाना और झूठ मूठ का भोग, झूटा परदा, झूटा थाल बजाना, झूठा कहने वाला, झूटा सुनने वाला, और झूठी कथा, कलजुग के आदमी इन सब झूठी चीज़ों को मानते हैं और झूठी बातों में लोगों का यक़ीन जमाते हैं। सच्ची बात यह है कि जानदार और बेजान सबके अन्दर जल और थल सब में, सबके घट के अन्दर उसी एक ईश्वर का तेज (नूर) समाया हुआ है। ऐ दादू! जो सबकी आत्माओं के अन्दर रहने वाला है वही हमारा राम है, वही एक हमेशा से है और हमेशा रहेगा।

असली दीन या धर्म क्या है इसे बयान करते हुए दादू ने कहा है—

सोई साध सिरोमणी गोविन्द गुन गावे,
राम भजे विषया तजे आपा न जनावे,
मिथ्या मुख बोले नहीं, पर निन्द्या नाहीं,
अवगुन छाड़े गुन गहे, मन हरिपद माहीं,
निरबैरी सब आत्मा पर आतम जानै,
सुखदाई समिता गहै आपा नहिं आनै ।
आपा पर अन्तर नहीं निर्मल निज सारा,

सतबादी साचा कहे लैलीन बिचारा,
निरभै भज न्यारा रहे काहू लिपत न होइ,
दादू सब संसार में ऐसा जन कोइ ।

वही भक्त सबसे अच्छा है जो उस एक ईश्वर के गुण गावे, उसी का भजन करे, अपने नफ़्स पर क़ाबू रक्खे, किसी से घमंड न करे, मुंह से झूठ न बोले, किसी दूसरे की बुराई न करे, बुरे कामों से बचे, नेक काम करे, जिसका दिल ख़ुदा के क़दमों में लगा रहे, जो किसी के साथ दुशमनी न करे, दूसरों को अपनी ही तरह समझे, सबको सुख पहुंचावे, सबको बराबर समझे, अपनी ख़ुदी को बीच में न लावे, अपने और पराए का कोई फ़रक़ न करे, सबमें एक ही पाक परवरदिगार का नूर देखे, हमेशा सच बोले, अपने अन्दर ही डूबा रहे, निडर होकर ख़ुदा की बन्दगी करे, किसी से मोह या लगाव न रक्खे । ऐ दादू ! इस सारे संसार में ऐसे आदमी बहुत ही कम हैं ।

४

दुनिया में हज़ारों बरस से "वसुधैव कुटुम्बकम्" की आवाज़ें उठ रही हैं यानी यह कि इस वसुधा, इस ज़मीन के सब रहने वाले एक छोटा सा कुटुम्ब एक खानदान हैं । हमने अभी देखा है कि कोई मज़हब ऐसा नहीं जिसने अपने मानने वालों के सामने यह मक़सद, यह लक्ष, न रक्खा हो । हमने यह भी देख लिया कि कोई संत या महात्मा, सूफ़ी या फ़क़ीर, ऐसा नहीं हुआ जिसके दिल की सब से बड़ी उमंग यह न रही हो कि इनसानी दुनिया के बीच में जो दीवारें आदमी को एक दूसरे से

अलग करने वाली रह गई है, और जो इन्हें एक नहीं होने देतीं, वह किसी तरह टूट जावें। .कुदरत का झुकाव भी इसी तरफ़ है। वह भी इनसानी समाज को इसी तरफ़ लिए जा रही है। वेद में आया है कि—

समानी व आकूतिः, समाना हृदयानि वः, समानमस्तु वो मनो, यथा वः सुसहासति, समानी प्रपा, सह वो अन्न भागः, समाने योक्ते, सहवो युनज्मि, सम्यञ्चो अग्निम् सपर्यत, अरानामिमिवामितः संगच्छध्वं, संवदध्वं, संवो मनान्सि जानताम्।

तुम सबकी ग़रज़ एक हो, सब के दिल मिले हुए हों, सबके मन मिले हुए हों, इसी मे सबका भला है। तुम सब मिलकर काम करो, मिलकर खाओ पियो, ईश्वर ने तुम सबको एक ही बड़े काम में लगा रक्खा है। आत्मा की आग तुम्हें उसी तरह एक तरफ़ ले जा रही है जिस तरह पहिये के सब आरे नेह को एक ही तरफ़ चलाते रहते हैं। तुम सब मिलकर चलो, एक आवाज़ से बोलो, सबके दिमाग़ एक तरह काम करें और एक सचाई को समझें।

जिस दुनिया की तसवीर इस वेद मंत्र में खींची गई है, उसी दुनिया के आने की नवेद यानी .खुशख़बरी हर मज़हब हमें देता रहा है, और हर मज़हब ने दुनिया को ऐसा ही बनाने की कोशिश की है। जैसे, दुनिया के सब मुल्कों और सब ज़मानों के रसूलों को सामने रख .कुरान कहता है कि—

"ऐ रसूलो! सच मुच तुम्हारी ये सब अलग अलग उम्मतें (मज़हब या फ़िरक़े) एक ही उम्मत हैं और मैं तुम सबका रब्ब हूँ, सो तुम मुझसे डरते रहो। लेकिन लोगों ने अपने दीन के आपस में

टुकड़े टुकड़े कर डाले और हर गिरोह के पास जो कुछ है वह उसी में फूला हुआ है।" (मोमिनून, ५१-५४)

इञ्जील में लिखा है कि—

"तुम सब के दिमाग़ मिलकर चलें। सबको एक दूसरे से हमदरदी हो। सब भाई भाई की तरह एक दूसरे से प्यार करें। सबके दिल में दया हो। सब में दीनता हो। कोई बुराई का बदला बुराई से न दे, न गाली के बदले में गाली दे। सब एक दूसरे का भला चाहें। सबके दिल मिले हों। सब एक दूसरे के साथ अमन से रहें।" (कुरिंथियों के नाम ख़त) "ईश्वर आदमी आदमी में कोई फ़रक नहीं करता, कोई किसी भी क़ौम का हो जो कोई ईश्वर से डरता है और नेक काम करता है ईश्वर उसे अपनाता है।" (रसूलों के एमाल) "न कोई यहूदी है न कोई यूनानी न कोई ग़ुलाम है न कोई आज़ाद, न कोई मर्द है न कोई औरत, ईसामसीह के लिए तुम सब एक हो।" (गिलितियों के नाम ख़त)।

चीन के महात्मा किंग फ़ूत्ज़े का कहना है कि—

"अपने सब पड़ोसियों के साथ मेल मिलाप से रहना सीखो। सब भाइयों के साथ मिलकर प्रेम से रहो।" (शोकिंग)

महात्मा बुद्ध ने कहा है कि—

"और ये सब चलते फिरते आदमी क्या हैं ? ये सब एक जिस्म के हिस्से, हाथ पैर हैं। इसलिए हर हिस्से को हर दूसरे हिस्से की फ़िक्र रखनी चाहिये।"

हिन्दू धर्म का मशहूर उपदेश है—

अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतसाम्

उदार चरितानांतु, वसुधैव कुटुम्बकम् ।

"यह मेरा अपना है और यह ग़ैर है, इस तरह की गिनती वे लोग करते हैं जो छोटे दिल के हैं। लेकिन जो लोग बड़े दिल के हैं, वह इस ज़मीन के सब रहने वालों को अपना ही कुटुम्ब (ख़ानदान) समझते हैं।"

ग़रज यह कि मज़हबी किताबों में इस तरह की तालीम भरी पड़ी है! फिर भी इन्सानी दुनिया अपनी इस मंज़िल से अभी दूर दिखाई देती है। इसका सबब क्या है? इसके दो ही सबब हैं। एक तो यह कि कुछ लोग इस सच्चाई को समझ नहीं पाते। दूसरे यह कि जो लोग समझ लेते हैं वह भी इस पर अमल नहीं करते। मंज़िल तक पहुँचने में देर लगने की ज़िम्मेदारी उनपर नहीं है जो समझ नहीं पाते, इसकी सारी ज़िम्मेदारी उन लोगों पर है जो समझते हैं और फिर भी इस पर अमल नहीं करते। सच यह है कि दुनिया में इनक़लाब करने वाली, दुनिया को बदलने या उसे सुधारने वाली सब से बड़ी ताक़त अमल है। हमारी बातों, हमारे उपदेशों, और हमारी लफ़्ज़ी बहसों से हमारे कामों का दूसरों पर बहुत ज़्यादह असर पड़ता है।

गीता और क़ुरान अपने पढ़ने वालों के सामने रखने से हमारी ग़रज़ लोगों को सिर्फ़ एक तरह का दिमाग़ी भोजन कराना नहीं है, बल्कि हमारी ग़रज़ यह है कि इससे हममें अमल करने की ताक़त पैदा हो। हम यह चाहते हैं कि ये दोनों पाक किताबें अमल की निगाह से पढ़ी जायं। हम चाहते

हैं कि इनके पढ़ने से ईश्वर .ख़ुदा, हममें वह ताक़त पैदा कर दे कि हम अपने अलग अलग मज़हब, अपनी क़ौम, अपने मुल्क, अपने गांव अपने .खानदान के उन अलग अलग और .खुद गरज़ी भरे शिकंजों को चकना चूर कर दें जो हमें एक दूसरे से तोड़ तोड़ कर अलग किये हुए हैं और एक दूसरे में लड़ाते हैं। हमारा सिर्फ़ इतना महसूस कर लेना या समझ जाना ही काफ़ी नहीं है कि हम सब एक हैं। ज़रूरत इस बात की है कि हम अपनी निजी और समाजी दोनों तरह की ज़िन्दगी में से वह सब बातें मिटा दें जो हमें आदमी आदमी में फ़रक़ करने पर मजबूर करती हैं, चाहे वे बातें रीत रिवाज की सूरत में हों और चाहे क़ानूनी और मज़हबी पाबन्दियां (बन्धन) हों।

हमें किसी नये मज़हब की ज़रूरत नहीं है। वह मानव धर्म, वह इन्सानियत का मज़हब जिस पर सारे धर्मों और मज़हबों की बुनियादें क़ायम हैं, हमारे लिए काफ़ी है। अब हमें ज़रूरत है एक नये समाज, नई कलचर, की जिसमें मेरी और तेरी, इस गिरोह की या उस गिरोह की, नहीं, बल्कि इनसानियत की रूह फुंकी हुई हो, जिसके रहन सहन और रीत रिवाजों में हर आदमी को बराबर की जगह दीजाय, और जिसके क़ायदे क़ानून हमारी दल बंदियों और हमारी फूट को टिकाऊ और अमिट बना देने का साधन न बनें। हमें इस तरह के जीवन की ज़रूरत है जिसकी इमारत आपस की मुहब्बत और एक दूसरे की मदद की गहरी और मज़बूत बुनियादों पर खड़ी हो। हमें उस मज़हबी सांचे की ज़रूरत है जो हमें एक

बिरादरी, एक क़ौम, एक खानदान, के जीते जागते सांचे में ढाल दे। हमारा यह नया धर्म, हमारी यह नई मिल्लत आज कल के मजहबों की तरह एक दूसरे से ग़ैरीयत और नफ़रत करने और घिन बरतने का मजहब न हो। हम सबका ख़ुदा ईश्वर इस खुली लामजहबी को इस अधर्म को हमारे दिलों और हमारे कामों से हमेशा के लिए निकाल दे। हमारा मजहब इन्सानीयत का मजहब, मुहब्बत का मजहब, त्याग यानी ईसार का मजहब, इश्क़ का मजहब, प्रेम का मजहब हो! यही वह सच्चा मजहब है जिसे दुनिया के सब अवतारों और नबियों, संतों और वलियों, साधुओं और फ़क़ीरों ने हक़ीक़ी मजहब, सच्चा धर्म, मानव धर्म या अद्दीन बतलाया है!

हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि गीता और क़ुरान अपने पढ़ने वालों में वह साफ़ समझ, वह हिम्मत और वह शक्ति पैदा करदें जिससे वह इन पाक किताबों की सच्ची तालीम पर अमल कर सकें यानी आज कल की हमें बरबाद करने वाली रिवाजी और समाजी जकड़बंदियों को तोड़ कर अपने को आजाद कर सकें और नये सिरे से एक मिली जुली जिन्दगी, मिली जुली कलचर और सच्चे मानव धर्म (मजहबे इन्सानीयत) के सांचे में अपने को ढाल कर इस मुल्क में फिर एक बार प्रेम के सोते बहा सकें। इसके सिवा हमारे लिए इन्सानी क़ौम की सेवा या अपनी निजात का कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

गीता

जिन किताबों को हिन्दू अपनी धर्म की किताबें मानते हैं उनकी तादाद हज़ारों नहीं तो सैकड़ों आसानी से गिनाई जा सकती है। दुनिया में जितने 'धर्म' चल रहे हैं उनमें शायद ही किसी दूसरे 'धर्म' की इतनी किताबें हों। यह बात क़ुदरती भी है। यूं तो दुनिया के सब 'धर्म' एक दूसरे से मिलते चले आते हैं, सब एक ही सनातन परम्परा के हिस्से यानी एक पुराने सिलसिले की कड़ियां, या एक ही पुराने बड़े पेड़ की चारों तरफ़ फैली हुई डालियों के अलग अलग फूल हैं। फिर भी जहाँ तक अलग अलग धर्मों मज़हबों के अलग अलग सिलसिलों का सवाल है, हिन्दू धर्म का सिलसिला दुनिया में शायद सबसे पुराना है। यहूदी धर्म का सिलसिला इसके बहुत बाद का है। चीनी धर्म परम्परा भी जहाँ तक मालूम है इससे ज्यादा पुरानी नहीं। इसके अलावा आज से दो ढाई हज़ार साल पहले चीन के धर्म ने जिस ज़ोर का पलटा खाया, हिन्दू धर्म ने वैसा कभी नहीं खाया, या यूं कहना चाहिये कि खाते खाते रह गया।

आदमी का इतिहास यानी इनसानी क़ौम की तारीख़ हिन्दुस्तान और चीन से कहीं ज्यादह पुरानी है। हिन्दुस्तान

और चीन की पुरानी तहज़ीबों (सभ्यताओं) से हज़ारों साल पहले और भी बड़ी बड़ी नामवर क़ौमें हो चुकी हैं और तरक्क़ी की चोटी तक पहुंच चुकी हैं। दुनिया के लिखे और बेलिखे इतिहास से साफ़ पता चलता है कि एक तरफ़ ईरान के पहाड़ों से लेकर अरब सागर और हिन्द महासागर तक और दूसरी तरफ़ अफ़रीक़ा की नील नदी के किनारे किनारे बहुत पुराने ज़माने में कम से कम दो बहुत बड़ी क़ौमें जन्म लेकर हिन्दुस्तान और चीन से कहीं पहले हज़ारों बरस तक आदमी को ज़िन्दगी का रास्ता दिखा चुकी थीं। पर अब उनकी ज़मीन में गड़ी हुई जड़ें या सूखी हुई शाख़ें ही कहीं कहीं ढूंढ़ने से मिलती हैं। क़िस्मत के अचूक और अटल चक्कर में ठीक वक़्त पर अपना रहा सहा ख़ून बाद में आने वाली क़ौमों को देकर और अपने सड़े गले हाड़ माँस से उनके लिए खाद तय्यार करके वे क़ौमें और उनकी शानदार तहज़ीब दुनिया से मिट गईं। जिस तरह इस दुनिया का बनाने वाला बेअन्त है उसी तरह उसकी बनाई हुई दुनिया भी बेअन्त है। हमें इधर या उधर इस दुनिया का ओर या छोर देखने का हौसला नहीं करना चाहिये। हमारी छोटी सी समझ के लिये यह नामुमकिन भी है। लेकिन इतनी बात में कोई शक नहीं कि दुनिया में जो किताबें आज मिलती हैं उनमें ऋग्वेद सबसे पुरानी किताब है, और दुनिया के बचे हुए मज़हबी सिलसिलों में हिन्दू सिलसिला सबसे पुराना है। ऋग्वेद की आजकल की १०,५८० ऋचाओं (आयतों) में कितनी शुरू की हैं और कौन सी कब कब शामिल की गईं इस बहस में

पढ़ने की ज़रूरत नहीं। आजकल के तमाम धर्मों और उनकी किताबों को मिलाकर देखने से इसमें कोई शक नहीं रह जाता कि सब धर्मों का असली निकास एक ही ईश्वर अल्लाह से है, सब धर्म पुस्तकों की असली मां जिसे क़ुरान में 'उम्मुल किताब' कहा गया है उसी ईश्वर के पास है, साथ ही इन सब धर्मों के ज़्यादहतर रस्मरिवाजों, नाम रूपों, और शब्दों तक का निकास ऋग्वेद और ख़ास कर उसकी शुरू की ऋचाओं से है। इसलिए बहुत से यूरोप के विद्वानों ने ऋग्वेद को 'सब धर्मों की मां' (मदर आफ़ आल रिलिजन्स) कहा है।

हिन्दू धर्म की किताबों में वेदों का और ख़ासकर ऋग्वेद का सब सबसे ज़्यादह मान है। लेकिन वेद इतनी बड़ी चीज़ हैं, उनकी ज़बान इतनी पुरानी और अजीब है और एक एक मन्त्र के इतने इतने तरह से अर्थ लगाए जा सकते हैं कि बेपढ़े लोगों के लिए ही नहीं विद्वानों के लिए भी हज़ारों बरस से वेद एक पहेली रहे हैं और हमेशा पहेली ही रहेंगे। वेदों का निचोड़ उपनिषदों को माना जाता है जो बहुत करके वेदों के ही हिस्से हैं। इसमें शक नहीं उपनिषदों या ख़ास ख़ास बारह उपनिषदों को, जिनके सब असली मन्त्रों को मिलाकर दो फ़ार्मों की एक किताब भी नहीं बनती, भलाई बुराई नेकी बदी और पाप पुण्य के ऊंचे से ऊंचे असूलों (मारल आइडियलिज़्म). बारीक से बारीक फ़िलसफ़े या दर्शन (ट्रान्सेंण्डेण्टल मैटाफ़िज़िक्स), ब्रह्म और जीव अल्लाह और रूह की गहरी से गहरी सचाइयों (डीप स्पिरिचुएलिटी) और गहरे अध्यात्म (मारफ़त) की वजह से

दुनिया की ऊंची से ऊंची किताबों में एक ऊंची जगह हासिल है। हज़ारों पढ़े लिखे हिन्दू ऐसे हैं जिनसे अगर किसी बहुत बड़े तूफ़ान या भोंचाल के वक्त पूछा जावे कि तुम अपने सब ग्रन्थों में से किन खास जवाहरात को आगे की दुनिया के लिए सबसे ज्यादह बचा कर रखना चाहते हो तो वे कहेंगे—'उपनिषद'। हज़ारों .गैर हिन्दू विद्वान भी इस बात में उनकी राय को ठीक बतावेंगे।

लेकिन उपनिषद भी आमफ़हम नहीं हैं। उन्हें समझ सकना या उनका रस ले सकना बिरलों को ही बदा है। उपनिषदों के बाद हिन्दुओं में किसी एक पुस्तक का सबसे ज्यादा मान है तो वह श्री मद्भगवद्गीता का। गीता की भाषा और उसके कहने का ढंग इतना आसान है कि उसके पढ़ने पढ़ाने वालों की गिनती भी उपनिषदों के पढ़ने पढ़ाने वालों से हज़ारों गुना है। गीता माहात्म्य में "सब उपनिषदों" को मिलाकर उनकी बराबरी एक "गाय" के साथ की गई है और गीता को "उस गाय से दुहा हुआ दूध" और "महान अमृत" कहा गया है। मिसाल बहुत दर्जे तक ठीक है। उसी 'माहात्म्य' में लिखा है कि जिस आदमी ने गीता को "अच्छी तरह याद कर लिया" उसे फिर "दूसरे शास्त्रों के जमा करने" की कोई ज़रूरत नहीं। सचमुच गीता अपने ज़माने के तमाम हिन्दू शास्त्रों का निचोड़ है। संस्कृत किताबों में जितना गीता का प्रचार है उतना किसी दूसरी किताब का नहीं है। पिछले हज़ारों बरस में जितनी टीकाएं या तफ़सीरें गीता पर लिखी जा चुकी हैं उतनी एक

क़ुरान को छोड़कर शायद ही दुनिया की किसी दूसरी किताब पर लिखी गई हों। इसमें शक नहीं कम से कम अपने ज़माने तक की हिन्दुस्तानी कल्चर का गीता सबसे बढ़िया और सबसे सुन्दर चोटी का फूल है। बल्कि गीता उन इनी गिनी किताबों में से है जो देश और काल की चौहद्दी से ऊपर उठकर दुनिया के हर मुल्क और हर ज़माने के लोगों की एक सी बपौती हैं, जो सबके लिये फ़ायदे और बरकत की चीज़ें हैं और जिनका सबको एक सा फ़ख़्र यानी अभिमान होना चाहिये। गीता दुनिया की उन किताबों में से एक है जो हमेशा ज़िन्दा रहेंगी।

आदमी की ख़ास ख़ास कठिनाइयें यानी मुशकिलें क़रीब क़रीब हर देश और हर ज़माने में एक ही सी रही हैं। इन मुशकिलों या सवालों के बाहरी रूप और उनके नाम बदलते रहे हैं। कभी कोई सवाल ज्यादह सामने रहा है और कभी कोई। लेकिन इनकी असलीयत नहीं बदली। हर आदमी की आत्मा के अन्दर, और सारे इनसानी समाज में, वही स्वार्थ और परमार्थ ख़ुदी और ख़ुदा के बीच लगातार लड़ाई जारी है। यह लड़ाई नये नये रूप बदलती रहती है। ख़ुदी, छोटी छोटी ख़ुद ग़रज़ियों की शकल में, आदमी की आँखों पर परदा डाल कर, उसे अपने और पराये का फ़रक़ सिखाकर, ख़ुद अपनी असली और टिकाऊ भलाई की तरफ़ से उसे अन्धा कर देती है। यही वजह है कि दुनिया की सब ख़ास ख़ास मज़हबी किताबें इनसानी क़ौम के लिए सच्चे उपदेशों

और सच्ची नसीहतों का एक ऐसा सरचश्मा है जो कभी सूख नहीं सकता।

महाभारत के भीष्म पर्व के २५ वें अध्याय (बाब) से ४२ वें अध्याय तक का नाम गीता है। इन १८ अध्यायों में वह बात चीत लिखी है जो महाभारत की लड़ाई के शुरू में श्रीकृष्ण और अर्जुन में हुई थी। लड़ाई के दसवें दिन संजय ने यह बात चीत धृतराष्ट्र को सुनाई थी। संजय कहता है कि—"मैंने यह बात चीत व्यास की कृपा से ख़ुद योग के मालिक कृष्ण के मुंह से सुनी थी" (१८-७५)। भीष्म पर्व के दूसरे अध्याय में लिखा है कि व्यास ने संजय को वह "दिव्य दृष्टि" (रूहानी आंख) दे दी थी जिससे वह दूर बैठा हुआ लड़ाई का सब हाल देखता और सुनता रहा। बहुत से टीका करने वालों ने यह शक ज़ाहिर किया है कि ठीक लड़ाई के मैदान में जब दोनों फ़ौजें तय्यार खड़ी थीं, इस तरह के कठिन मामलों पर श्रीकृष्ण और अर्जुन का श्लोकों में इतनी लम्बी बात चीत करना और फिर संजय का उन श्लोकों को किसी करामात से दूर बैठे हुए सुनकर याद रखना एक अनहोनी सी बात है और मुमकिन नहीं है। यह बहस यहां तक चली कि गीता के सात सौ श्लोकों में से एक टीका करने वाले ने १००, दूसरे ने ३६, तीसरे ने २८ और चौथे ने ७ असली श्लोक खोज निकाले। इन विद्वानों की राय है कि इन असली श्लोकों में जो बात कही गई है वही वह असली बात है जो श्रीकृष्ण ने अर्जुन को समझाई थी, और बाद में उसे बढ़ाकर और श्लोकों की शकल देकर व्यास ने

७०० श्लोकों की गीता तय्यार कर दी। इसी मुशकिल को हल करने के लिए कई विद्वान गीता के अन्दर के लड़ाई के बयान को सिर्फ़ एक अलंकार (तशबीह या allegory) मानते हैं और कहते हैं कि यह सब आदमी की आत्मा के अन्दर होने वाली नेकी और बदी की लड़ाई का ही बयान है। इस बारे में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की यह राय ठीक मालूम होती है कि—"परन्तु जिनको ग्रन्थ का ही रहस्य (राज़) जानना है उनके लिए इस बहिरंग परीक्षा (बाहरी इम्तहान) के झगड़े में पड़ना आवश्यक नहीं है।" (गीता-रहस्य, विषय-प्रवेश) महाभारत की लड़ाई कभी हुई हो या न हुई हो, उसमें लड़ाई से पहले श्रीकृष्ण और अर्जुन ने इस तरह की बात चीत की हो या न की हो, संजय को अन्दर की आंख मिली हो या न मिली हो, यह ज़ाहिर है कि गीता के श्लोक न श्रीकृष्ण और अर्जुन के बनाए हुए हैं और न संजय के। ये श्लोक व्यास के बनाए हैं। गीता के श्लोकों को इसी शकल में श्रीकृष्ण या अर्जुन के मुंह से निकला हुआ समझना, या गीता की बात चीत को इतिहास की कसौटी पर कसना गीता का ठीक आदर मान करना नहीं है। वह "भगवत्गीता" जो "तमाम उपनिषदों को दुहकर" तैयार की गई है, जिसे पढ़ने के बाद फिर किसी दूसरे शास्त्र को पढ़ने की ज़रूरत नहीं रह जाती, अपने खास शानदार ढङ्ग से, अपने ज़माने की धार्मिक हालत की तसवीर, और साफ़ रूप में हर मुल्क और हर ज़माने की धर्म संकट में पड़ी हुई आत्माओं के लिए (१८-७८)

एक सुन्दर, क़ीमती और अमर सन्देश (पैग़ाम) है।

गीता में जगह जगह उस ज़माने के धर्मों की हालत, अलग अलग पंथों, फ़िरक़ों, मज़हबी ख़यालों, पूजा के तरीक़ों, रस्म रिवाजों, झूठे वहमों, दार्शनिक यानी फ़लसफ़ी असूलों वग़ैरह का ज़िक्र किया गया है, उनके ठीक होने या ग़लत होने या एक दूसरे के ख़िलाफ़ होने या न होने पर बहस की गई है: अलग अलग मानताओं और एक ईश्वर की पूजा के अलग अलग तरीक़ों में बुनियादी एकता दिखाकर उनमें मेल और समन्वय (इत्तहाद) करने की कोशिश की गई है; आत्मसंयम यानी अपने ऊपर क़ाबू हासिल करने को और सदाचार या नेकी को सब मज़हबों की जड़ और आत्मा की तरक़्क़ी की पहली सीढ़ी बताया गया है; अपने पराये के फ़रक़ को यानी ग़ैरियत या दुई के परदे को हटाकर "अपनी तरह सबको", "अपने अन्दर सबको" और "सब में अपने को" देख सकना मुक्ति (निजात) के लिए ज़रूरी बताया गया है; "जड़, चेतन" (ग़ैर जानदार, जानदार) सारी दुनिया में और "सब प्राणियों के दिल में" एक परमेश्वर के दर्शन का उपदेश दिया गया है; और आख़िर में इन सब रास्तों को तय करते हुए अपनी आत्मा को पूरी तरह पाक करने और उस पर पूरा क़ाबू हासिल करने के बाद आत्मा की आगे की तरक़्क़ी के रास्ते, उसके तरीक़ों और मंज़िलों की तरफ़ इशारा किया गया है। यही श्रीमद्‌भगवत् गीता का मज़मून है।

अब हमें यह देखना है कि इनमें से हरेक बात पर अलग

अलग गीता से हमें क्या पता चलता है और क्या उपदेश मिलता है।

सबसे पहले गीता को समझने के लिए ज़रूरी है कि हम उस ज़माने की हालत, विचारों और रीत रिवाजों को, जहां तक उनका गीता से पता चलता है, जान लें।

गीता के शुरू ही में अर्जुन ने अपनी जो सबसे पहली और सबसे बड़ी कठिनाई श्रीकृष्ण के सामने रक्खी है वह यह है—

"मैं अगर इस लड़ाई में हिस्सा लूँगा तो हमारा सारा ख़ानदान मिट जायगा, और जब कोई ख़ानदान या कुल मिट जाता है तो उसके सब पुराने रीत रिवाज भी (कुल धर्माः सनातनाः—१-४०) उसके साथ साथ मिट जाते हैं, उनके मिट जाने पर कुल (ख़ानदान) के रहे सहे लोगों और ख़ासकर स्त्रियों को रोककर ठीक रास्ते पर रखने वाली कोई चीज़ नहीं रह जाती, अधर्म फैलता है, उससे स्त्रियों का चलन बिगड़ता है (१-४१), स्त्रियों का चलन बिगड़ जाने से 'वर्ण संकर' (नसलों का मिल जाना) होने लगता है, यानी फिर जन्म से वर्ण या जाति का फ़रक़ नहीं रह जाता, जब इस तरह का वर्ण संकर हो जाता है तो वे लोग जिन्होंने अपने ख़ानदान वालों की हत्या की, और उनके साथ साथ ख़ानदान के और सब लोग भी, यहाँ तक कि उस कुल के मरे हुए 'पितर' भी, ज़रूर सबके सब 'नरक' को जाते हैं, क्योंकि उन पितरों को 'पिण्ड' और 'पानी' देने वाली यानी उनका क्रिया कर्म करने वाली उनकी कोई ठीक ठीक औलाद नहीं रह जाती (१-४२), नतीजा यह होता है कि 'कुलों' के अपने अपने 'धर्म' यानी रिवाज और 'जातियों' के अलग अलग परम्परा से चले

आए हुए 'पुराने 'धर्म' यानी रीत रिवाज भी (१-४३) मिट जाते हैं, और हम यह हमेशा से सुनते चले आये हैं कि जिन लोगों के इस तरह के 'कुल धर्म' मिट जाते हैं, उन सब को ज़रूर नरक में रहना पड़ता है (१-४४)। इसलिए इस लड़ाई में हिस्सा लेना हमारे लिए 'महापाप' है (१-४५)।"

अर्जुन ने इस अध्याय में तीन जगह 'पाप' लफ़्ज़ इस्तेमाल किया है (१-३६,३६,४५)। जिस पाप की तरफ़ अर्जुन की निगाह जा रही है वह मामूली हिंसा या आदमी को मार डालना नहीं है, बल्कि अपने खानदान के लोगों को मारने, यानी अपने कुल के मिटाने का पाप है (कुलक्षयकृतं दोषं—१-३८-३६)। हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि गीता में 'जाति' (१-४३) का मतलब वर्ण यानी ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र नहीं है। वर्ण का फ़रक़ एक अलग चीज़ थी, जाति का फ़रक़ अलग था। दोनों जन्म से माने जाते थे, और 'कुल' या ख़ानदान अलग अलग थे ही। महाभारत से यह भी पता चलता है कि अलग अलग 'जातियों' में जिन्हें 'ज्ञातियां' भी कहते थे और अलग अलग वर्णों में उन दिनों शादी ब्याह का रिवाज था। 'जन्म' से मतलब सिर्फ़ पितृपरम्परा यानी बाप की नसल से होता था।

दूसरे अध्याय में हमें उस ज़माने के कुछ और विचारों का पता चलता है। इनमें एक ख़ास विचार 'वेदों का मानना' है। लोग वेदों के चरचों में मगन थे (२-४२), उसका उनके दिलों पर और .खुद अर्जुन के दिल पर गहरा असर था (२-५३)।

वेदों की बातें उन्हें कहने और सुनने में बड़ी प्यारी लगती थीं (२-४२)। वे कहते थे कि इससे बढ़कर और कोई चीज़ है ही नहीं (२-४२)। लेकिन वेदों से जो चीज़ उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में ले रक्खी थी, वह सिर्फ़ इस तरह के ऊपरी कर्म-काण्ड या रीति रिवाज थे (२-४३) जैसे यज्ञ, हवन, जप, तप, पूजा, पाठ, दान वग़ैरह (६-२०,२१;११-४८,५३)। इनसे उनका मक़सद या लक्ष्य सिर्फ़ "भोग ऐश्वर्य" यानी ऐश आराम, अपनी दुनयवी "कामनाओं (ख़्वाहिशों) को पूरा करना" और बहुत से बहुत "स्वर्ग" या "इन्द्रलोक" हासिल करके वहां के "दिव्य भोगों" का ऐश भोगना होता था (२-४३,४४ ६-२०,२१)। उनका नरक (दोज़ख) तकलीफ़ों की जगह थी और स्वर्ग (बहिश्त) भोगों और ऐश की। यज्ञ कई तरह के होते थे (४-३२)। तीनों वेदों ऋक्, साम और यजुर के अलावा (६-१७,२०) बहुत से लोग अलग अलग स्मृतियों के मानने वाले थे और वैदिक यज्ञों के अलावा स्मृति-यज्ञ भी होते थे (६-१६)। वैदिक और स्मृति दोनों तरह के यज्ञों में मंत्र पढ़ पढ़कर घी और तरह तरह की खाने की और दूसरी चीज़ों की अग्नि कुण्ड में आहुतियां दी जाती थीं (४-२४;६-१६), और सोमरस पिया जाता था (६-२०)। गीता के दूसरे, छठे और नवें अध्यायों में और उसके बाद भी कहीं कहीं जिस तरह वेदों का ज़िक्र आया है, उससे ज़ाहिर है कि लोग उन दिनों वेदों के सिर्फ़ ऊपरी कर्म काण्ड से ही वास्ता रखते थे, वेदों के ज्ञान काण्ड यानी उन ऊंचे और व्यापक (आलमगीर) उसूलों से

उनका कोई नाता वास्ता न रह गया था, जो सब मुल्कों और सब क़ौमों के आदमियों के लिए एक बराबर फ़ायदे की चीज़ें है।

एक परमेश्वर के अलावा बहुत से लोग अलग अलग देवताओं की भी पूजा करते थे। इन देवताओं से तरह तरह का मुरादें और मन्नतें मांगी जाती थीं और दुनिया के सुखों की प्रार्थनाए का जाती थीं। उन्हें .खुश करने की तरह तरह से कोशिशें की जाती थीं। उनके नाम पर यज्ञ किये जाते और इन यज्ञों में देवताओं के नाम ले लेकर आहुतियां दी जाती थीं। (३-११,१२;४-१२,२५;७-२०,२३) । 'फ़ूल, पत्ती, फल और जल वग़ैरह' भी चढ़ाए जाते थे (९-२६)। देवताओं के अलावा 'पितरों' और 'भूतों' की पूजा का भी रिवाज था। सबके नाम पर अलग अलग यज्ञ होते थे, और सबके सामने तरह तरह के चढ़ावे चढ़ाए जाते थे (९-२५,२६)।

शगुन वग़ैरह के वहमों में भी लोग फंसे हुए थे (१-३१)।

चार वर्णों ब्राह्मण, क्षत्री वैश्य शूद्र की तरह आश्रमों (गृहस्थ, सन्यासी वग़ैरह) की भी रीति थी। उसमें भी दिल की हालत या नियत पर निगाह रखने की जगह दिखावट, भेस और ऊपरी नियमों पर ज़्यादह ज़ोर दिया जाता था, जैसे यह कि 'सन्यासी' आग को हाथ न लगावे, यह यह काम न करे, वग़ैरह (६-१)।

जो लोग सिर्फ़ एक परमेश्वर को मानते थे, वे भी कई अलग अलग रास्तों से उसे जानने या हासिल करने की कोशिश

करते थे (४-११)। गरज़, देश में उस वक्त तरह तरह के पन्थ, फ़िर्के (सम्प्रदाय) और 'धर्म' (१८-६६) जारी थे। कुछ लोग 'सिद्धियों' (करामातों) के पीछे भी दौड़ते थे, और उन्हें हासिल करने के दो रास्ते माने जाते थे। एक यज्ञ वग़ैरह कर्म काण्ड और दूसरा दुनिया से अलग रहकर रूखा ज्ञान।

इन हालतों में कुदरती तौर पर दर्शनशास्त्र या फ़लसफ़े की निगाह से दो अलग अलग ख़याल एक दूसरे के ख़िलाफ़ देश में मौजूद थे। इन दोनों का गीता में बार बार ज़िक्र आता है (२-३९;३-३;५-२;१३-२४)। एक सांख्य या ज्ञान वाले, जो यज्ञ वग़ैरह कामों की जगह ज्ञान पर ज़ोर देते थे और ज्ञान को ही निजात यानी मुक्ति का ज़रिया मानते थे, वे सब तरह के ही कामों को बुरा और 'त्याज्य' (छोड़ देने के क़ाबिल) मानते थे (१८-३), और मामूली घरबार की ज़िन्दगी से अलहदगी (सन्यास) को मुक्ति के लिए ज़रूरी बताते थे। दूसरे कर्म वाले जो ऊपरी रस्मो जैसे यज्ञ वग़ैरह पर ज़ोर देते थे और उन्हीं के ज़रिये मुक्ति मानते थे। गीता में ज्ञान और कर्म दोनों को 'योग' बताया गया है (३-३)। ध्यान, प्राणायाम (हब्सदम) वग़ैरह के भी कई तरीक़े उन दिनों जारी थे (१३-२४;४-२९)।

गीता में साफ़ लिखा है कि वह ज़माना, इस देश में, महज़ पाण्डवों के ऊपर कौरवों के ज़ुल्मों का ही ज़माना नहीं था, बल्कि चारों तरफ़ "धर्म की ग्लानि और अधर्म के अभ्युत्थान" यानी धर्म के घटने और अधर्म के बढ़ने का ज़माना था। ठीक

वह ज़माना था, जब कि ईश्वर की तरफ़ से अवतारों या महान आत्माओं के जन्म लेने, गीता जैसे अमर उपदेशों के दिये जाने, और सच्चे "धर्म के फिर से क़ायम किए जाने" की ज़रूरत होती है (४-७,८)।

इन्हीं धर्मों, पन्थों और सम्प्रदायों के गोरखधन्धे में पड़ कर, अपने लिये साफ़ साफ़ रास्ता न देख, अर्जुन ने अपने को "धर्म सम्मूढ़ चेत:" (यानी जिसकी अक़्ल यह नहीं समझ पा रही है कि असली धर्म क्या है) (२-७) कहकर श्रीकृष्ण से राह दिखाने की प्रार्थना की है। अर्जुन की इस प्रार्थना का जवाब ही गीता का उपदेश है।

अब हम गीता के एक एक अध्याय पर अलग अलग एक सरसरी निगाह डालेंगे। इन अध्यायों में कहीं कहीं अलग अलग पहलुओं से वही बात दुहराई गई है। मज़हबी हिदायत की किताबों में ऐसा होना मामूली बात है।

गीता धर्म

पहला अध्याय

पहले अध्याय में अर्जुन ने अपनी जिन कठिनाइयों को श्रीकृष्ण के सामने रखा उनका ज़िक्र हम ऊपर कर चुके हैं। वे ये थीं कि—इस लड़ाई से हमारे ख़ानदान, जाति और बिरादरी के पुराने रीति रिवाज मिट जावेंगे, वर्णसंकर हो जावेगा, मरे हुए पितरों को पिण्ड और पानी न पहुंच सकेगा, यह सब धर्म मिट जावेगा और इस सब 'धर्म' के मिट जाने से हमारा ख़ानदान नरक (दोज़ख़) में पड़ेगा। अर्जुन ने यह बात साफ़ कही है कि इन पुराने 'धर्मों' के मिट जाने से सब लोग नरक को जाते हैं, यह हम अपने पुरखों से सुनते आए हैं।

दूसरा अध्याय

श्रीकृष्ण का जवाब गीता के दूसरे अध्याय से शुरू होता है। इन सब बातों को श्रीकृष्ण ने पहले अर्जुन का सिर्फ़ "मोह" (बेजा लगाव) (२-२), उसकी "शान के ख़िलाफ़" और उसके "दिल की कमज़ोरी" (२-३) बताकर टालना चाहा।

जब इससे अर्जुन की तसल्ली न हुई तो श्रीकृष्ण ने "हंसते हुए" कहा—

अर्जुन ! तू एक तरफ़ तो अक़्लमन्दों की सी बातें करता है और दूसरी तरफ़ उन बातों की फ़िक्र करता है जिनकी कोई फ़िक्र नहीं करनी चाहिये। "पंडित" यानी समझदार आदमी का यह काम नहीं है कि कौन और क्या मिट गया और क्या अभी नहीं मिटा इसकी चिन्ता करे (२-११)।

इस तरह शुरू में गीता ने अर्जुन के इन सब शकों को "अशोच्य" यानी ऐसी चीज़ें "जिनकी फ़िक्र ही नहीं करनी चाहिये" कहकर ख़त्म कर देना चाहा।

यहां पर यह बात ध्यान देने के क़ाबिल है कि लफ़्ज़ 'धर्म' को अर्जुन ने रीत रिवाज के माइने में इस्तेमाल किया है (१-४३), लेकिन श्रीकृष्ण ने शुरू से 'धर्म' शब्द का इस्तेमाल दूसरों की तरफ़ अपने 'कर्त्तव्य' यानी फ़र्ज़ (२-३१) के माइने में किया है।

दूसरे अध्याय के ग्यारह से तीस तक के श्लोकों में श्रीकृष्ण ने ज़िन्दगी और मौत, सुख और दुःख का फ़लसफ़ा बयान किया है, और कहा है कि आत्मा (रूह) नित्य यानी हमेशा रहने वाली और अमर है, और यह जिस्म और दुनिया की सब चीज़ें, यहां के सब नाम रूप, अनित्य यानी थोड़ी देर रहनेवाले और फ़ानी (मिट जाने वाले) हैं। गीता का कहना है—

ज़िन्दगी के इस सारे रहस्य यानी राज़ को कोई हैरान होकर देखता है, कोई हैरान होकर उसका ज़िक्र करता है, और कोई दांतों

तले उंगली दबाकर सुनता है, लेकिन सुनकर भी जानता या समझता कोई नहीं (२-२६)।

गीता के इस फ़लसफ़े का जहाँ तक अमल के साथ सम्बन्ध है उसका निचोड़ गीता के ही शब्दों में यह है—

जो काम अपनी ख़ुदी को बिलकुल अलग रखकर, अपने निजी सुख दुःख नफ़े नुक़सान और जीत हार का बिलकुल ख़याल न करते हुए, सिर्फ़ फ़र्ज़ समझ कर किया जावे, उससे करने वाले को पाप नहीं लगता (२-३८)।

यानी पाप की सारी जड़ ख़ुदी में है।

इसके बाद श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि अब तक मैं तुझे ज्ञान के रास्ते से समझा रहा था। अब यही बात मैं कर्म के रास्ते से समझाना चाहता हूँ। इसे तू समझ लेगा तो अपने फ़र्ज़ को पूरी तरह जान लेगा। (२-३६)

इसी जगह गीता के इस अध्याय में वेदों और उनकी तालीम का वह बयान है, जिसका ऊपर ज़िक्र आ चुका है। अर्जुन ने ख़ुद वेदों का हवाला नहीं दिया। श्रीकृष्ण ने उस ज़माने की हालत को देखते हुए और अर्जुन के ऊपर क्या क्या असर पड़े हुए हैं यह जानकर वेदों और उनकी तालीम का ज़िक्र किया है। अर्जुन को समझाने में श्रीकृष्ण को सबसे बड़ी दिक़्क़त यही पड़ी कि वेदों की उस ज़माने की तालीम का अर्जुन पर गहरा असर था। उन्होंने अर्जुन से कहा—

वेदों की तालीम से तेरी मति मारी गई है और अक़्ल गुम हो गई है (श्रुति विप्रतिपन्ना ते...बुद्धिः)। जब तक तेरी यह अक़्ल फिर

से स्थिर यानी क़ायम न होगी तब तक तू कर्मयोग के रास्ते को नहीं समझ सकता (२-५३)। जो लोग वेदों की तालीम में ही मगन हैं और कहते हैं कि इससे बढ़कर और कुछ है ही नहीं, वे बेसमझ (अविपश्चितः) हैं, वे अपनी दुनयावी ख़्वाहिशों के पीछे पड़े हुए हैं, वे स्वर्ग (बहिश्त) के ऐश भोगना चाहते हैं, वे भोग और ऐश्वर्य यानी ऐश आराम के लिए तरह तरह के कर्म काण्डों (रीतरिवाजों) की मीठी मीठी बातें करते हैं, जिनसे उन्हें दुनिया के ऐश आराम मिल सकें। इनका जी ऐश आराम में ही फँसा हुआ है। इन्हीं ख़्वाहिशों ने उनकी बुद्धि को नष्ट कर रक्खा है (तयापहृत चेतसाम्)। इसीलिए इनकी बुद्धि टिककर और एकसू होकर एक तरफ़ नहीं लग सकती (२-४२,४३,४४)। इस तरह के लोगों की बुद्धि बजाय एक तरफ़ लगने के—यानी अपनी .खुदग़रज़ी और ख़्वाहिश को अलग रखकर फ़र्ज़ को फ़र्ज़ समझ कर पूरा करने की तरफ़ लगने के—उन ख़्वाहिशों को पूरा करने की तरफ़ लगी हुई है जिनका कोई अन्त नहीं। इसीलिए उनकी बुद्धि बहकी रहती है (२-४१)। वेदों की तालीम आदमी को सत्त्व (सकून), रजस (हरकत), तमस (काहिली), इन्हीं तीनों गुणों (सिफ़तों) में फँसाये रखती है। तू इन तीनों गुणों से ऊपर उठ जा। सुख, दुःख या अपने पराये के फ़रक़ से ऊपर हो जा। तू हमेशा सत्त्व में क़ायम रह। अपने लिए न किसी चीज़ को पाने की ख़्वाहिश कर और न किसी चीज़ को अपनाए रखने की। तू अपनी आत्मा के अन्दर क़ायम हो (२-४५)। जो 'ब्राह्मण' यानी ज्ञानी आदमी हक़ीक़त को जान गया है, उसके लिए तमाम वेद वैसे ही बेकार हैं, जैसे उस जगह जहाँ पानी ही पानी भरा हो, एक छोटा

सा कुँवा (२-४६)।

वेदों से यहां मतलब वेदों में बताए हुए ऊपरी रीत रिवाजों यज्ञों और पूजा पाठ वग़ैरह से है (६-२०,२१)।

इसके बाद श्रीकृष्ण ने अर्जुन को फिर अपनी ख़ुदी को अलग रखकर, अपने लिए किसी तरह की इच्छा न करते हुए, कामयाबी और नाकामयाबी दोनों में अपने मन को एक सा रखते हुए, फ़र्ज़ को फ़र्ज़ समझकर पूरा करने का उपदेश दिया है, फ़र्ज़ से हट कर बैठ जाने को बुरा कहा है, और दूसरों की तरफ़ अपने फ़र्ज़ के इस तरह ठीक ठीक पूरा करने को ही 'योग' बताया है (योगः कर्मसु कौशलम् २-५०)।

श्रीकृष्ण के यह कहने पर कि वेदों के बताए रीत रिवाजों में भटकी हुई बुद्धि को एक जगह स्थिर करने यानी क़ायम करने की ज़रूरत है, अर्जुन ने पूछा कि 'स्थिर बुद्धि' या 'स्थितप्रज्ञ' आदमी की क्या पहचान है ? प्रज्ञा लफ़्ज़ के माइने भी बुद्धि या अक़्ल के हैं। इस सवाल के जवाब में दूसरे अध्याय के आख़ीर के वे अठारह श्लोक कहे गये हैं जो एक तरह गीता के उपदेशों का सार या निचोड़ माने जाते हैं। श्रीकृष्ण ने जवाब दिया कि—

ऐ अर्जुन ! जिसने अपने मन के अन्दर पैदा होने वाली तमाम ख़्वाहिशों को जीत लिया, जो न दुःख से डरता है और न सुख की इच्छा करता है, जिसे न किसी से राग, लगाव या मोह है, न किसी से डर और न किसी पर क्रोध, जिसकी इन्द्रियां (हवास) उसके क़ाबू में हैं, उसी को 'स्थितप्रज्ञ' (टिकी हुई या सलीम अक़्ल वाला)

समझना चाहिये। इसलिये अपनी इन्द्रियों को इस तरह इन्द्रियों की ख्वाहिश की चीज़ो से खीच कर अपने क़ाबू में रखना चाहिये, जिस तरह कछुआ अपने हाथ पैरो को अपने अन्दर खींच लेता है। फिर भी तबियत उधर को बहकती रहेगी। इसका इलाज धीरे धीरे ख़याल को उधर से हटाना और ईश्वर की तरफ़ लगाना है। जिसे किसी से राग या द्वेष यानी मोह या दुशमनी नहीं है और जिसकी इन्द्रियाँ उसके क़ाबू में हैं, वह दुनिया के सब काम करता हुआ भी भीतर शान्त रहता है। अपने नफ़्स पर क़ाबू रखने वाला आदमी दुनिया के सुख भोगों की तरफ़ से अपने को हटा कर अपने अन्दर की सफ़ाई और आत्मा की तरक़्क़ी की तरफ़ मनको लगाए रखता है। असली काम अपने 'अहंकार' (.खुदी) को मिटाना है। यही सच्ची शान्ति और सच्चे सुख को हासिल करने का तरीक़ा है। यही ईश्वर को पाना और निजात हासिल करना है। (२-५५ से ७२)

तीसरा अध्याय

अर्जुन के दिल में फिर यह सवाल पैदा हुआ कि अगर मुक्ति के लिए अपनी इन्द्रियों को जीतना और .खुदी को मारना ही ज़रूरी है तो फिर दुनिया के कामों में क्यों फंसा जावे। इसके जवाब में तीसरे अध्याय में बताया गया है कि—

इस तरह के 'सन्यास' से जिसमें अपने दुनियावी फ़र्ज़ को छोड़ दिया जावे आदमी सिद्धि यानी कमाल को नहीं पहुंच सकता (३-४)। वे काम ही आदमी को बन्धन में डालते हैं जो "यज्ञ" के तौर पर नहीं यानी दूसरों की सेवा या दूसरों के फ़ायदे के लिये नहीं बल्कि अपनी .खुदग़रज़ी के लिए किए जावें। इसलिये आदमी को

बिना मोह के निस्वार्थ (बेग़रज़) होकर काम करना चाहिये (३-६)। ऐसे कामों के सहारे ही शुरू से दुनिया संभली हुई है । जो आदमी "सिर्फ़ अपने लिए खाना पकाता है" वह पापी है, वह "पाप" ही खाता है, जो दूसरों का ख़याल नहीं रखता वह 'चोर' है(३-१२,१३)। यही "यज्ञ" का असली मतलब है। इसके ख़िलाफ़ जो अपनी इन्द्रियों के सुख में लगा रहता है उसका जीना निकम्मा और पाप है (३-१६)। आदमी को किसी भी दूसरे से अपनी ग़रज़ पूरी कराने की इच्छा नहीं रखनी चाहिये (३-१८)। आदमी "असक्त" यानी बेलाग और निस्वार्थ काम करते हुए ही ईश्वर को पा सकता है (३-१९)। इस तरह दूसरों की तरफ़ अपने फ़र्ज़ों को पूरा करते हुए ही जनक जैसे लोग कमाल को पहुंचे थे। इसी में सब का भला (लोक संग्रह) है (३-२०)। जिस तरह नासमझ आदमी अपने अपने स्वार्थ के कामों में लगे रहते हैं, उसी तरह समझदार आदमी को निस्वार्थ होकर दूसरों का यानी सबका भला चाहते हुए उनकी तरफ़ अपना फ़र्ज़ पूरा करने में लगा रहना चाहिये (३-२५)। अध्यात्म यानी रूहानियत में दिल को लगाये हुए, आशा और ममता से ऊपर उठकर, आदमी 'ईश्वर के लिए' अपने सब फ़र्ज़ों को पूरा करे (३-३०)। आदमी की इन्द्रियाँ कुछ चीज़ों की तरफ़ तो चाह से लपकती हैं और कुछ चीज़ों से भागती हैं, उनके इस चाहने या भागने में नहीं आना चाहिये, यह चाह और नफ़रत ही आदमी की दुश्मन हैं (३-३४)। हर मौक़े और हर हालत में जो अपना फ़र्ज़ दिखाई दे उसी को अपना "धर्म" समझ कर पूरा करना चाहिए,

दूसरे किसी "धर्म" की तरफ़ नहीं जाना चाहिए। जैसा भी अपने से बन पड़े अपना यह कर्त्तव्य या फ़र्ज़ पूरा करते हुए ही मरना ठीक है (३-३५)। आदमी से पाप कराने वाली दो ही चीज़ें हैं। ये दो ही इस दुनिया में आदमी की दुश्मन हैं—एक 'काम' यानी शहवत और दूसरा 'क्रोध' यानी .गुस्सा। जिस तरह धुआँ आग को ढक लेता है और गर्द शीशे को अन्धा कर देती है इसी तरह ये दोनों आदमी की अक़्ल पर पर्दा डाल देते हैं (३-३७,३८)। इसलिए सबसे पहले अपनी इन्द्रियों को क़ाबू में करके, ज्ञान और विज्ञान का नाश करने वाले इन दोनों पापी दुश्मनों को मारना चाहिये (३-४१)। इन्द्रियाँ यानी हवास काफ़ी सूक्ष्म (लतीफ़) चीज़ हैं, इन्द्रियों से ज़्यादह सूक्ष्म मन है, मन से ज़्यादह सूक्ष्म बुद्धि है, बुद्धि से कहीं ज़्यादह सूक्ष्म आत्मा (रूह) है। वह आत्मा ही सब कुछ है। वही वह है (३-४२)। इसे समझते हुए अपने हवास को जीतते हुए और अपनी ख़्वाहिशों को मारते हुए आत्मा की तरफ़ बढ़े चलो (३-४२,४३)। यही सच्चा धर्म है, यही वह "योग" है जो पुराने ज़माने से चला आ रहा है और जिसे भूल जाने की वजह से आज लोग ग़लत धर्मों यानी रीति रिवाजों में फँस गये हैं (४-१ से ३)।

चौथा अध्याय

चौथे अध्याय में कहा गया है कि जब जब दुनिया के लोग इस सच्चे धर्म को भूल कर ग़लत चीज़ों को धर्म समझने लगते हैं, और असली धर्म से फिर जाते हैं तब तब वह बड़ी बड़ी आत्माएं जन्म लेती हैं जो दुनिया को फिर से धर्म का

रास्ता बताती है (४-७,८)।

जिन लोगों के दिलों से मोह, ग़ुस्सा और डर बिल्कुल जाते रहे, जिन्होंने एक परमेश्वर का सहारा लिया और उसी से अपना मन लगाया, उन्हें सच्चा ज्ञान मिलता है और आख़ीर में वे उसी परमेश्वर में लय (फ़ना) हो जाते हैं (४-१०)। मुक्ति (निजात) के लिए किसी रीति रिवाज की ज़रूरत नहीं, ज़रूरत अपने दिल से मोह, डर और ग़ुस्से को निकाल कर उसे एक परमेश्वर की तरफ़ लगाने की है।

जहां तक धर्म के ऊपरी हिस्से का सवाल है, जिसे 'शरअ' या कर्मकाण्ड कहते हैं, और जिससे अलग अलग धर्मों या मजहबों में फ़र्क़ दिखाई देता है, वहां तक भगवद्गीता सब तरीक़ों को एक निगाह से देखती है और कहती है --

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम
ममवर्तमानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः। (४-११)

परमेश्वर कहता है कि जो जिस रास्ते से चलकर मेरे पास आते हैं मैं उसी रास्ते से उन्हें मिलता हूँ। जिस तरह किसी गोल चक्कर के चारों तरफ़ खड़े हुए लोग उसके बीच तक पहुंचने के लिए अलग अलग तरफ़ से चलकर भी एक ही जगह पहुंचते हैं, इसी तरह अलग अलग पन्थों और रास्तों से चलकर भी लोग उसी एक परमेश्वर तक पहुंचते हैं।

इसी लिए गीता की राय में—

समझदार आदमी को चाहिये कि जो कमसमझ लोग किसी भी 'रास्ते' पर चलकर नेक कामों में लगे हुए हैं, उनकी समझ को

डाँवाडोल न करे, बल्कि उन्हें उसी तरह नेक कामों में लगाए रक्खे (३-२६ से २६)।

ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र इन चारों वर्णों के लिए गीता का कहना है कि न आदमी इस तरह का कोई फ़रक़ बना सकता है और न जन्म से इसका कोई वास्ता है। परमेश्वर ने सारी दुनिया के अन्दर चार तरह की तबीयतों वाले और वैसे ही चार तरह के काम करने वाले आदमी पैदा किये हैं। यह फ़रक़ एक .कुदरती फ़रक़ है, और हर आदमी के गुणों (औसाफ़) और कामों के मुताबिक़—"गुण कर्म विभागशः", ही उसे ब्राह्मण, क्षत्री वग़ैरह मानना चाहिये (४-१२)।

आगे जाकर अठारहवें अध्याय में चारों वर्णों के अलग अलग गुण और काम बयान कर दिये गये हैं (१८-४१ से ४४); यानी यह कि किन गुणों वाला और किस तरह के काम करने वाला आदमी ब्राह्मण समझा जाना चाहिये, किन गुणों वाला क्षत्री, किन गुणों वाला वैश्य और किन गुणों वाला शूद्र, और कहा है कि हर आदमी .खुद अपने 'स्वभाव' को देखकर वह काम करे जो उसके स्वभाव के मुताबिक़ (स्वभावज) हो, यानी जिसकी तरफ़ उसमें झुकाव और क़ाबलीयत हो।

इस तरह अपने अपने स्वभाव के मुताबिक़ (स्वभाव नियतं कर्म) सच्चे दिल से और ईश्वर के लिए (ईश्वरार्पण) काम करता हुआ हर आदमी अपने ही रास्ते से सिद्धि या कमाल हासिल कर सकता है। यही हर आदमी का "स्वधर्म" है (१८-४५,४६,४७)।

जो आदमी अपने कामों से .खुद अपने लिये सुख हासिल करने

का इरादा नहीं रखता वही "पंडित" है। जिसका मन उसके बस में है, जो दुई से ऊपर है (द्वन्द्वातीतो), जो किसी से डाह नहीं करता (विमत्सरः), जो हर काम क़ुर्बानी (यज्ञ) के तौर पर यानी दूसरों के भले के लिए और ईश्वर के लिए करता है, वह अपने कामों से बन्धन में नहीं फँसता (४-१९ से २३)। आदमी को यह समझ कर सब काम करने चाहियें कि जो कुछ वह देख रहा है सब ईश्वर की ही लीला, उसी का ज़हूर है। ईश्वर सत्य यानी हक़ और नित्य यानी लाज़वाल है और बाक़ी सब असत्य और अनित्य यानी बातिल और फ़ानी है, और आख़ीर में सब को ईश्वर की ही तरफ़ जाना और उसी में लीन होना है। यह समझते हुए अपने सब फ़र्ज़ों को पूरा करना ही असली "यज्ञ" है (४-२३,२४)। लोग और भी तरह तरह के यज्ञ जैसे तप (रियाज़त), प्राणायाम (हब्सदम) वग़ैरह करते हैं जिनका वेदों में ज़िक्र है, लेकिन इन सब से बढ़कर असली यज्ञ वह "ज्ञान" है जिसे एक बार हासिल करने के बाद फिर आदमी इस तरह के धोखे में नहीं पड़ सकता। वह ज्ञान यही है कि आदमी तमाम जानदारों को अपने अन्दर और सबको ईश्वर के अन्दर और सब के अन्दर ईश्वर को देखे (येन भूतान्य शेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि) (४-२५ से ३५)।

सब को अपनी तरह समझना और सबके अन्दर एक ईश्वर के दर्शन करना, यही गीता के अन्दर बार बार ज्ञान की आख़िरी हद बताई गई है।

इस ज्ञान से बढ़कर आदमी को पाक करने वाली दूसरी चीज़ इस दुनिया में नहीं है। योगी धीरे धीरे ख़ुद अपने अन्दर इसे साफ़

साफ़ देख लेता है (४-३८)। इसके लिये महज़ श्रद्धा (यक़ीन) की और अपनी इन्द्रियों को क़ाबू में रखने की ज़रूरत है (४-३१)।

पांचवां अध्याय

पांचवें अध्याय में अर्जुन ने फिर वही सवाल किया कि 'सांख्य मार्ग' और 'कर्म मार्ग' इन दोनों में कौन अच्छा है ? यानी सब कामों से अलग होकर 'सन्यास' और 'ज्ञान' का सहारा लेना, या दुनिया में रहते हुए दुनिया के सब काम करते हुए आत्मा की भलाई की कोशिश करना। इस सवाल के जवाब में गीता ने इन दोनों रास्तों को असलीयत में एक बताते हुए दोनों का एक सुन्दर मेल या समन्वय करने की कोशिश की है। श्रीकृष्ण ने जवाब दिया—

जो लोग यह कहते हैं कि साँख्य मार्ग और कर्म मार्ग दोनों दो अलग अलग रास्ते हैं, वे बच्चे हैं। पंडित यानी समझदार लोग इन्हें अलग अलग नहीं मानते। हर आदमी इन दोनों में से किसी एक रास्ते पर भी ठीक ठीक चलकर दोनों का फल पा सकता है। साँख्य मार्ग से चलकर लोग जिस स्थान (मुक़ाम) तक पहुंचते हैं, कर्म योग के रास्ते से चलकर भी उसी स्थान तक पहुंचते हैं। जो आदमी साँख्य मार्ग और कर्म मार्ग दोनों को एक समझता है वही ठीक ठीक समझता है। (५-४,५)

इसके बाद कहा है—

वह आदमी सच्चा सन्यासी है जो न किसी से नफ़रत करता है और न कुछ चाहता है, जो दुई से ऊपर है, जो अपने फ़र्ज़ के पूरा

करने में लगा रहता है, जिसका दिल साफ़ है, जिसने अपने ऊपर क़ाबू हासिल कर लिया है, जिसकी इन्द्रियाँ (हवास) उसके वस में हैं, जो सब किसी की आत्मा को अपनी ही आत्मा की तरह समझता है (सर्व भूतात्म भूतात्मा), और जो सब कामों को, मोह छोड़कर, ईश्वर के लिए (ब्रह्मण्याधाय) करता है। इस तरह वह अपनी आत्मा को शुद्ध करता है (५-३ से ११)।

जो लोग इस तरह समझ बूझ कर अपने फ़र्ज़ को पूरा करते हैं उनके अन्दर अपने आप सूरज की तरह उस ज्ञान की रोशनी फूटती है जिसमें उन्हें अपने अन्दर ही परमेश्वर के दर्शन होते हैं। फिर उसी से लौ लगाए हुए वे मुक्ति (निजात) हासिल करते हैं। उनके सब पाप धुल जाते हैं (५-१५ से १७)।

विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि,

शुनि चैव श्वपाकेच पण्डिताः सम दर्शिनः।

सच्चा पण्डित वही है जो विद्या (इल्म) और विनय (इनकसार) वाले ब्राह्मण को, गाय को और हाथी को, कुत्ते को और चाँडाल को, सब को एक निगाह से देखता है (५-१८)।

जिन्होंने इस तरह की समता (मसावात) में अपने मन को क़ायम कर लिया उन्होंने इसी दुनिया में सब कुछ जीत लिया, क्योंकि परमेश्वर सब में 'सम' (बराबर) है और समता ही परमेश्वर है (५-१९)।

इन्द्रियों के सब सुख आख़ीर में दुख ही पैदा करते हैं। समझदार आदमी उनमें नहीं फंसता। जो कोई मरने से पहले इसी ज़िन्दगी में काम और क्रोध यानी अपने नफ़्स और ग़ुस्से के ज़ोर को रोक सकता

है वही योगी है, वही सुखी है। जो कोई अपनी आत्मा के अन्दर ही सुख, आनन्द और रोशनी पाता है वही परमेश्वर में लीन (फ़ना) होकर मुक्ति हासिल करता है। यह बात उन्हीं को हासिल होगी जिनकी दुई मिट गई, जिन्होंने अपने आपको जीत लिया, और जो हमेशा सब की भलाई के कामों में लगे रहते हैं (सर्वभूत हितेरताः)। मुक्ति सिर्फ़ ऐसों ही के लिए है। (५-२२ से २६)

इसके बाद के तीन श्लोकों में आत्मा की आगे की तरक़्क़ी के रास्ते यानी योगाभ्यास (सलूक) का ज़िक्र है। लिखा है—

आदमी अपनी इन्द्रियों के सम्बन्ध को बाहर की तमाम चीज़ों को बाहर रखकर, दोनों आँखों को भवों के बीच में लाकर, अन्दर जाने वाले और बाहर आने वाले सांसों को बराबर करके, इन्द्रियों, मन और बुद्धि को इधर उधर जाने से रोक कर, इच्छा, डर और ग़ुस्से को दूर करके, और यह जानकर कि परमेश्वर सब दुनियाओं का मालिक, सब की पूजा बन्दगी लेने वाला और सब प्राणियों का भला चाहने वाला है, उसका ध्यान करे। उसे ऐसा जानकर ही आदमी सच्ची शान्ति हासिल कर सकता है (५-२७ से २६)।

छठा अध्याय

फिर सांख्य और कर्म दोनों रास्तों को एक बताते हुए कहा गया है—

जो आदमी नतीजे की परवाह न कर जिसे अपना फ़र्ज़ समझता है उसे पूरा करता है, वही सन्यासी है, और वही योगी है। सन्यास के ऊपरी नियमों पर अमल करने वाला, जैसे आग को न छूने वाला

या यह काम और वह काम न करने वाला, सन्यासी नहीं है। (६-१,२)

यानी सन्यास दिल की एक हालत का नाम है, किसी ऊपरी नियम या लिबास वगैरह का नहीं।

जो आदमी योग को हासिल करना चाहता है उसके लिए दुनिया की तरफ़ अपने फ़र्ज़ों को पूरा करना ही योग का रास्ता है, और एक बार योग हासिल हो जाने के बाद उसके अन्दर की शान्ति और समता ख़ुद अपने आप उससे उसके सारे फ़र्ज़ पूरे कराती रहती है (६—३)।

आदमी आप ही अपना दोस्त है और आप ही अपना दुश्मन। जिस किसी ने अपने आपे (ख़ुदी) को जीत लिया वह अपना दोस्त है और जिसका आपा उस पर सवार है वह आप अपना दुश्मन है। (६-५,६)

जिसने अपनी ख़ुदी को जीत लिया, जो शांत है और जो सरदी गरमी, सुख दुःख, मान अपमान में यकसाँ रहता है उसकी आत्मा ही परमात्मा है (६-७)। जो दोस्त और दुश्मन, अपने और पराये, धर्मात्मा और पापी सब को एक निगाह से देखता है वही ठीक है। (६-६)

इसके बाद फिर अन्दर की साधना या योग का ज़िक्र है। लिखा है—

इस तरह का आदमी किसी साफ़ सुथरी जगह में चुपचाप निडर और अकेला बैठकर अपने मनको रोककर, अपने दिल से सब तरह की ख़्वाहिशों और सब चीज़ों के मोह को निकालकर आत्मा को

एक तरफ़ लगा कर…सिर, गर्दन और जिस्म को बिल्कुल सीधा और इन्द्रियों को अडोल रखते हुए, अपनी नाक के सिरे को एकटिक देखता हुआ, इधर उधर निगाह न डालता हुआ…अपनी आत्मा को शान्त रखते हुए, आत्मा की शुद्धि के लिए परमात्मा में ध्यान जमाए, तो धीरे धीरे उसे परम शान्ति और वह सबसे बढ़कर हालत हासिल होगी जिससे फिर बड़े से बड़ा सुख दुःख भी उसे डिगा नहीं सकता, उसी हालत का नाम मुक्ति यानी निजात है। (६—१० से १५ और २२)

फिर बताया गया है कि यह योग न दुनिया में फंसे हुए लोगों के लिए है और न दुनिया के फ़र्ज़ों से भाग कर दुनिया से अलग बैठने वालों के लिए है—

यह उसी के दुःखों को मिटा सकता है जो अपने आहार और विहार में यानी खाने पीने और रहन सहनमें, न कोई ज़्यादती करता है और न बिलकुल कमी, जो ठीक बीच के रास्ते पर चलता है, जो अपने सब फ़र्जों को पूरा करने और कामों को करने में एक बीच का रास्ता पकड़ता है, ठीक सोता भी है और ठीक जागता भी है। (६-१६,१७)

अठारहवें से अट्ठाईसवें श्लोक तक इस रास्ते को कुछ और खोलकर बयान किया गया है। और इसका आख़िरी नतीजा आत्मा का परमात्मा में लीन (फ़ना) हो जाना (ब्रह्म भूतं) बताया गया है। इसी हालत को सूफ़ियों के शब्दों में 'फ़ना फ़िल्लाह' हो जाना कहते हैं। फिर कहागया है—

जिस आदमी का दिल योग में लगा हुआ है वह सब प्राणियों के

अन्दर अपने को और अपने अन्दर सब प्राणियों को देखता है। वह सब को एक निगाह से और एक बराबर देखता है। जो सब के अन्दर परमेश्वर को और परमेश्वर के अन्दर सबको देखता है उसका फिर परमेश्वर से नाता नहीं टूटता। जो दुई से ऊपर उठकर सब प्राणियों के अन्दर परमेश्वर का भजन करता है, वह कहीं भी रहे उसका नाता परमेश्वर से जुड़ा हुआ है। जो सब के सुख दुःख को अपना ही सुख दुःख समझता है और अपनी ही तरह सब को एक बराबर देखता है वही परमेश्वर का सब से बढ़कर प्यारा है। (६-२६ से ३२)

अर्जुन ने सवाल किया कि चंचल मन को इस तरह क़ाबू में करना बहुत मुश्किल है। जवाब मिला कि—

इसके लिए 'अभ्यास' यानी मश्क़ की और 'वैराग्य' यानी दुनिया के भोगों की तरफ़ से तबियत को हटाने की ज़रूरत है (६-३५)। जिसे अपने ऊपर क़ाबू नहीं है वह इस योग को हासिल नहीं कर सकता (६-३६)। ऊपर के रीतरिवाज इसमें मदद नहीं दे सकते, क्योंकि इस योग की ख़्वाहिश भी जिसके अन्दर पैदा हो गई है, उसे वेदों और उनके रस्मरिवाजों की कोई ज़रूरत नहीं रह जाती, वह उनसे ऊपर उठ जाता है (६-४४)।

और जो इस तरफ़ थोड़ी सी भी सच्ची कोशिश कर लेता है, फिर चाहे उसका मन डिग जाय और उसे पूरी कामयाबी न मिलसके, तब भी उसकी कोशिश फ़ज़ूल नहीं जाती और न उसकी आगे की गति ख़राब होती है। आगे की ज़िन्दगी में उसकी तरक़्क़ी बराबर जारी रहती है। तप (रियाज़त), ज्ञान (मार्फ़त) और कर्म काण्ड

(शरीअत) सब से यह रास्ता कहीं बढ़कर है। (६-३७ से ४६)

सातवां अध्याय

जो लोग परमेश्वर को जानना चाहते हैं उनके लिए सातवें अध्याय में यह बताने की कोशिश की गई है कि परमेश्वर हर जगह और हरचीज़ में मौजूद है, एक परमेश्वर और बहुत से देवताओं का फ़रक़ बताया गया है, और सिर्फ़ एक परमेश्वर अल्लाह ताला की ही पूजा बन्दगी करने पर ज़ोर दिया गया है—

परमेश्वर की प्रकृति (क़ुदरत) के दो पहलू हैं। इन्हीं दोनों से सारी दुनिया और सब जानदार पैदा हुए हैं। मिट्टी, पानी, आग, हवा, आकाश (ईथर), मन, बुद्धि और अहंकार (ख़ुदी), ये आठों परमेश्वर की "अपरा" यानी स्थूल (जली) प्रकृति हैं, और जो चीज़ जान की शकल में इस सारी दुनिया को संभाले हुए है और इसे चला रही है वह ईश्वर की "परा" यानी सूक्ष्म (ख़फ़ी) प्रकृति है। ईश्वर ही सारी दुनिया का पैदा करने वाला और उसे ख़त्म करने वाला है। उसके अन्दर यह सब दुनिया इस तरह पिरोई हुई है जिस तरह एक डोरे के अन्दर माला के दाने। वह ईश्वर ही पानी के अन्दर रस, चाँद सूरज के अन्दर रोशनी, वेदों में ओ३म्, आकाश में आवाज़, आदमियों में मर्दानगी, मिट्टी में ख़ुशबू, आग में दमक, तपस्वियों में तप, और सब जानदारों की जान है। वही सबका असली बीज है। वही बुद्धिमानों की बुद्धि और तेजस्वियों का तेज (जलाल वालों का जलाल) है। वही उन

बलवानों का बल है जो काम (शहवत) और मोह ममता से आज़ाद हैं। वही जानदारों के अन्दर की जायज़ ख़्वाहिश है। सत्व (सकून), रजस (हरकत) और तमस (काहिली) सब हालतें ईश्वर से ही पैदा हुई हैं, लेकिन वह ख़ुद इन तीनों से परे है। इन तीनों के जाल में पड़कर ही दुनिया उसे नहीं पहचानती। वह नित्य (ग़ैरफ़ानी) और सब से अलग है। (७-४ से १३)

कुछ लोग अपनी छोटी छोटी ख़्वाहिशों के पीछे पड़कर ना समझी से दूसरे देवताओं की पूजा बन्दगी करते हैं। जो जिसकी पूजा श्रद्धा (एतक़ाद) से करना चाहता है परमेश्वर उसे उसी में श्रद्धा देते हैं। जो फल उन लोगों को हासिल होते हैं वह भी परमेश्वर ही के ठहराए हुए हैं। लेकिन उन नासमझों के यह फल नाश होने वाले यानी फ़ानी हैं। देवताओं की पूजा करने वाले देवताओं को पहुंचते हैं और एक परमेश्वर की पूजा करने वाले परमेश्वर को। बात यह है कि कम समझ लोग परमेश्वर की असलीयत को नहीं समझ पाते। वे उसकी पूजा किसी न किसी ऊपरी शकल में ही करना चाहते हैं। एक तरह सब देवताओं के रूप परमेश्वर के ही रूप हैं। लेकिन परमेश्वर निर्गुण यानी बिना किसी रूप का, कभी पैदा न होने वाला, घटने बढ़ने और ज़िन्दगी मौत से अलग यानी लाज़वाल और सब से ऊपर है। कम समझ आदमी उसे नहीं समझ पाते, पर परमेश्वर पिछली अगली और इस वक़्त की सब बातों को जानता है। जो आदमी राग और द्वेष, मुहब्बत और नफ़रत, से हटकर, दुई से ऊपर उठकर, सब तरह के पापों से बचता हुआ, नेक काम करता हुआ सिर्फ़ एक परमेश्वर की पूजा करता है, वही हक़ीक़त को जान सकता

है और वही निजात हासिल कर सकता है। (७-२० से ३०)

आठवां अध्याय

आठवें अध्याय में फिर कहा गया है कि—

आदमी को मरते वक़्त एक परमेश्वर को याद करते हुए ही यह तन छोड़ना चाहिए। तब ही आदमी परमेश्वर को पहुंच सकता है। जो लोग दूसरे देवताओं या दूसरी चीज़ों का ध्यान करते हैं वह अपने उन्हीं छोटे छोटे ख़याली में फँसे रहते हैं। दुनिया में अपने सब फ़र्ज़ों को पूरा करते हुए भी हमेशा एक परमेश्वर की ही याद करते रहना चाहिए। वह परमेश्वर, सब कुछ और सब को जानने वाला, हमेशा से हमेशा तक रहने वाला, सब का चलाने वाला, सब का पालने वाला, बारीक से बारीक यानी आँख कान वग़ैरह कोई जिसे देख या सुन न सकें, ख़याल की पहुँच से परे, अन्धेरे से दूर और ज्योति ही ज्योति यानी नूर ही नूर है। वेद के जानने वाले उसी को अक्षर (लाज़वाल) कहते हैं। न उसका शुरू है न आख़ीर। ये सब जानदार उसी के अन्दर हैं। वह इन सब में रमा हुआ है। इसी रूप में सब के अन्दर उसकी पूजा बन्दगी करना चाहिये। वेदों के रास्ते से यानी हवन, तप, दान वग़ैरह तमाम ऊपरी रीत रिवाजों से यह रास्ता कहीं बढ़कर और ऊंचा है। (८-५,६,७,६,१०, ११,२२,२८)

बीच बीच के श्लोकों में यह बताया गया है कि मरते वक़्त आदमी को किस तरह परमेश्वर में ध्यान लगाना चाहिए और अपने दिल में क्या क्या ख़याल रखना

चाहिये। कुछ श्लोकों में बताया गया है कि कब कब और किन किन हालतों में मरने से आदमी अंधेरे रास्तों से जाकर स्वर्ग और नरक (जन्नत और दोज़ख) वग़ैरह में फँसता है और कब कब और किन किन हालतों में मर कर रोशनी के रास्तों से होकर असली मुक्ति (निजात) की तरफ़ बढ़ता है। गीता के ये श्लोक (इस अध्याय के २४ से २७ तक) सारी किताब के सब से मुश्किल श्लोक माने जाते हैं। टीका करने वालों ने इन पर तरह तरह अपनी विद्या और बुद्धि को आज़माया है। लोकमान्य तिलक ने अपनी किताब 'गीता रहस्य' में कुछ और पहले के टीकाकारों की राय को ठीक मानते हुए इन श्लोकों का यह मतलब बताया है कि जो आदमी आख़ीर तक ऊपरी रूढ़ियों यानी रीत रिवाजों और कर्म काण्ड (शरीअत) में फंसा रहता है वह मरने के बाद अन्धेरे रास्ते से जाकर स्वर्ग और नरक के चक्कर में पड़ता है, और जो इन सब चीज़ों से ऊपर उठकर सब जानदारों को एक निगाह से देखता हुआ दुनिया की बेलौस, बेलगाव (निष्काम) और बेग़रज़ (निस्वार्थ) सेवा में लगा हुआ शरीर छोड़ता है वह रोशनी के रास्ते से चलकर मुक्ति की तरफ़ क़दम बढ़ाता है। (गीता रहस्य २६५ से २६८)

नवां अध्याय

नवें अध्याय के शुरू में कहा गया है कि हक़ीक़त का राज़ (रहस्य) वही आदमी समझ सकता है जो किसी से डाह

न रखता हो (अनसूयवे), ऐसा आदमी ही सच्चे धर्म को पाल सकता है। इसके बाद लिखा है—

परमेश्वर ख़ुद अव्यक्त (अलख़फ़ी) यानी निगाह और ख़याल दोनों से ओझल है। पर यह सारा जगत उसी से रमा हुआ है। सब जानदार (मख़लूक़) उसी के अन्दर हैं। जिस तरह सब जगह जाने वाली हवा हमेशा आकाश के अन्दर रहती है उसी तरह सब जानदार परमेश्वर के अन्दर रहते हैं। (६-४,६)

जो लोग समझ बूझकर परमेश्वर की उपासना करते हैं वे एक में अनेक और अनेक में एक यानी वहदत में कसरत और कसरत में वहदत को देखते हैं। वह जिधर देखते हैं उधर ही उन्हें ईश्वर का मुंह दिखाई देता है। सब धर्मों और फ़िर्क़ों में, सब तरह के यज्ञों और रीत रिवाजों में, वही परमेश्वर मौजूद है। हवन में वही हवन है, वही सामग्री है, वही आग है और वही मन्त्र है। वही अमृत है, वही मौत है। वही इस दुनिया का पिता है, वही माता है, वही संभालने वाला और वही पितामह (सब का मूरिसे आला) है। वही ओंकार है। वही ऋग्वेद, सामवेद और वही यजुर्वेद है। वही हरकत है, वही पालने वाला, वही मालिक, वही देखने वाला, वही सब के रहने की जगह, सबका सहारा, वही सबका भला चाहने वाला, सब का पैदा करने वाला, सब का नाश करने वाला, सब का आधार, सब का आख़ीर और सब का बीज है, ऐसा बीज जो कभी ख़राब नहीं होता। वही सूरज के रूप में तपता है। वही बारिश को रोकता और फ़िर बरसाता है। (६-१५ से १६)

वेदों के मानने वाले हवन और ऐसे ही रीत रिवाजों के ज़रिये

स्वर्ग (बहिश्त) वग़ैरह के सुख भोगने की लालसा करते हैं। पर उनके इन कामों के नतीजे थोड़ी देर तक ही रहते हैं। (६-२०,२१)

जो लोग सच्चाई के साथ दूसरे देवताओं की पूजा करते हैं, वे भी एक तरह एक परमेश्वर ही की पूजा करते हैं। क्योंकि सब ऊपरी रीत रिवाजों को अपनाने वाला एक परमेश्वर ही है। सब रूप उसी के रूप हैं। लेकिन इन लोगों का रास्ता ठीक नहीं। यह लोग परमेश्वर को ठीक ठीक नहीं समझते, इसीलिए गिरते हैं। जो जिस रूप की पूजा करता है वह उसी रूप को पाता है। देवताओं की पूजा करने वाले देवताओं को, पितरों की पूजा करने वाले पितरों को, आदमियों की पूजा करने वाले आदमियों को और एक परमेश्वर की पूजा करने वाले परमेश्वर को पाते हैं। फूल पत्ती फल या जल जो चीज़ भी कोई परमेश्वर को भक्ति के साथ चढ़ाता है, परमेश्वर उसे प्रेम के साथ मंज़ूर करते हैं। इसलिये—

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् । (२७)

ऐ अर्जुन ! खाना पीना, करना धरना, देना लेना जो कुछ भी तू करे सब उसी एक परमेश्वर के लिए कर, अपने लिए नहीं। यही परमेश्वर को पाने का तरीक़ा है। उस परमेश्वर को जो सब जानदारों में एक बराबर मौजूद है (समोऽहं सर्वभूतेषु), और जिसे न किसी से दुशमनी है, न किसी से मोह। जो आदमी इस तरह सब के अन्दर रहने वाले परमेश्वर के साथ अपने दिल को लगाता है वही परमेश्वर को पाता है। वह परमेश्वर में रहता है और परमेश्वर उसमें। (६-२३ से २६, ३४)

इसका मतलब यह है कि तरह तरह के सम्प्रदाय, फ़िर्क़े, पूजा बन्दगी के अलग अलग तरीक़े, रीत रिवाज सब उसी ईश्वर से हैं। आदमियों के सब इष्टदेव यानी माबूद उसी के रूप हैं। इस निगाह से ये सब रास्ते सच्चे हैं। लेकिन ये सब अधूरे हैं। समझदार आदमी को चाहिये कि इन सबको छोड़ कर उसी एक परमेश्वर की पूजा बन्दगी करे जो सब के अन्दर मौजूद है, जो सबकी जान है, अपने अन्दर से दुई और ग़ैरियत के ख़याल को मिटाकर किसी से डाह दुशमनी न रखते हुए, अपनी आत्मा को शुद्ध करे और फिर सबके साथ अपने फ़र्ज़ को पूरा करते हुए सब की आत्मा के अन्दर परमात्मा की आराधना (पूजा) करे।

दसवां अध्याय

दसवें और ग्यारहवें अध्यायों में उस परमेश्वर की जो 'सत्य' (हक़) है, जिसकी सचाई के सामने बाक़ी सब चीज़ें झूठी हैं, जो हर तरह के व्यक्तित्व (शख़्सीयत) से अलग है, जहां न 'मैं' है न 'तू' है, न 'वह' है, जो सब तरह की अलहदगी और दुई से ऊपर है, जिस तक ख़याल की पहुंच नहीं, जो सब में और सब जगह रमा हुआ है, उस परमेश्वर की बेअन्त विभूतियों (ज़हूरों) और उसके विश्वरूप को, उसके हमागीर वजूद को, समझाने की कोशिश की गई है। लिखा है—

वह कभी पैदा नहीं हुआ, उसका कोई शुरू नहीं है, वह सब

दुनियाओं का मालिक है (लोकमहेश्वरम्)। सब देवता और महर्षि उसी से पैदा हुए हैं। इन्सानी क़ौम के सब पुरखे जिनकी नसलों से दुनिया के तमाम लोग पैदा हुए हैं उस एक परमेश्वर ही के मानस पुत्र हैं यानी उसी के ख़याल से पैदा हुए हैं। लोगों के दिलों में जितनी तरंगे उठती हैं, सब उसी से पैदा होती हैं। वही सारी दुनिया का पैदा करने वाला है। वे लोग समझ वाले हैं जो उस परमेश्वर से लौ लगाये हुए एक दूसरे से हमेशा उसका ज़िक्र करते हैं, आपस में समझते समझाते हैं और इस तरह एक दूसरे के साथ मिलकर तसल्ली और आनन्द पाते हैं।

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च।

ऐसे लोग ही सच्चे ज्ञान को हासिल करते हैं। वे ही परमेश्वर को पा सकते हैं।

वह पुरुषोत्तम, अल्लाह, अपने को अपने ही से जानता और पहचानता है। आदमी उसको सिर्फ़ उसकी विभूतियों (ज़हूरों) के ज़रिये ही सोच समझ सकता है। ये ईश्वरी विभूतियां बेअन्त हैं। मिसाल के तौर पर उसकी थोड़ी सी विभूतियां ये हैं—

सब जानदारों में वही जान है। वही सब का शुरू, बीच और आख़ीर है। आदित्यों में (अलग अलग ब्रह्माण्डों के सूर्यों में) वह विष्णु है, चमकती हुई चीज़ों में वह सूरज है,...नक्षत्रों में वह चाँद है, वेदों में वह सामवेद है, देवताओं में इन्द्र है, इन्द्रियों में मन है, ... रुद्रों में शंकर, अनार्य लोगों में यानी यक्ष और राक्षसों में कुबेर,

वसुओं में अग्नि, पर्वतों में मेरु,...पानी की जगहों में सागर, महर्षियों में भृगु...टिकी हुई चीज़ों में हिमालय, दरख़्तों में पीपल, देवर्षियों में नारद...घोड़ों में उच्चैःश्रवा...हाथियों में ऐरावत, आदमियों में राजा, हथियारों में वज्र (बिजली)...पैदा करनेवालों में कामदेव, साँपों में वासुकी, नागों में शेषनाग...हाकिमों में यम, खाजानेवालों में काल (वक्त), जानवरों में शेर, परिन्दों में गरुड़, हथियारबन्दों में राम,... पानी के जानवरों में मगर, नदियों में गंगा,...विद्याओं में अध्यात्म विद्या (रूहानियत)...अक्षरों (हरफ़ों) में अकार (अलिफ़),... सब तरफ़ उसके मुंह हैं...वही सब को ख़त्म करने वाली मौत है, वही सब को पैदा करने वाला है, वही कीर्ति (शुहरत) है...वही मेधा (समझ) है...छन्दों में गायत्री छन्द,...महीनों में अगहन, मौसमों में बसन्त, छलियों में जुआ, तेजस्वियों का तेज, जीत, मेहनत, असलीयत, यादवों में वासुदेव, पाँडवों में अर्जुन, मुनियों में व्यास, कवियों में उशना कवि (शुक्राचार्य), दमन करने वालों में दण्ड, ...जीत चाहने वालों में इन्साफ़, छिपी हुई चीज़ों में मौन (ख़ामोशी), ज्ञानियों का ज्ञान, सब जानदारों का बीज वही है, चराचर में कोई चीज़ नहीं है जो बिना उसके हो, उसकी लीला का कोई ओर छोर नहीं है...

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा

तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसम्भवम् । (४१)

यानी दुनिया में जो चीज़ भी शान वाली, शोभा वाली या तेज वाली है, वह उसी के तेज के एक ज़र्रे (अंश) से पैदा हुई है। (१०-१६ से ४१)

इस निगाह से सब देशों, सब क़ौमों और सब धर्मों के महापुरुष, अवतार, पैग़म्बर, तीर्थङ्कर वग़ैरह, और सब के इष्टदेव (माबूद) उसी परमेश्वर के अंश हैं।

वह अपने सिर्फ़ एक अंश से इस सारे जगत को संभाले हुए है। (१०-४२)

इस सब का मतलब यह है कि परमेश्वर 'अचिंत्य' यानी खयाल की पहुँच से परे और 'अव्यक्त' यानी रंग रूप से दूर है, लेकिन सब में रमा हुआ है, इसलिये सब के साथ अपने एकपन या अपनेपन को महसूस करके ही आदमी सबके अन्दर परमेश्वर के दर्शन कर सकता है।

इसी को ग्यारहवें अध्याय के शुरू में 'अध्यात्म' यानी रूहानियत कहा गया है।

ग्यारहवां अध्याय

इसके बाद योग के मालिक श्रीकृष्ण की कृपा से अर्जुन की ज्ञान की आंखें खुल गईं और उसने ज्ञान की आँखों से परमेश्वर के इस 'विश्वरूप' को देखा। उसने देखा कि—

परमेश्वर के सैकड़ों और हज़ारों तरह तरह के रूप हैं। सारी दुनिया, जानदार और बेजान, उसी के अन्दर है। उसके सब तरफ़ मुंह हैं। हज़ारों सूरज की एक साथ रोशनी से बढ़कर उसकी ज्योति है। आर्य क़ौम के सब ऋषि मुनि और अनार्य क़ौमों के सब बड़े बड़े लोग (उरगाश्च दिव्यान्) उसी परमेश्वर के अन्दर हैं। सब देवता और सब प्राणी उसी के अन्दर हैं। उसके बहुत सी भुजाएं,

बहुत से पेट, बहुत से मुंह, बहुत सी आंखें और बहुत से रूप हैं। यहाँ तक कि सब रूप उसी के रूप हैं। सब तरफ़ वही वह है। उसका न शुरू है, न बीच, न आख़ीर। वह विश्वरूप है और विश्व (सारी दुनिया) का मालिक। उसका प्रकाश (नूर) चारों तरफ़ फैला हुआ है। सूरज और चाँद उसकी आँखें हैं। उसकी शक्ति बेअन्त है। वह आसमान और ज़मीन को और दसों दिशाओं को पार किए हुए है। सब डरने वाले उसी से डरते हैं। सब स्तुति (हम्द) करने वाले उसी की स्तुति करते हैं। सब मज़हबों, क़ौमों और देशों के लोग उसी की तरफ़ टकटकी लगाये हैं। वही हमेशा रहने वाला है, वही हमेशा से धर्म की हिफ़ाज़त करता है। जिस तरह सब नदियाँ समुद्र में जा गिरती हैं, उसी तरह सब दुनिया और सब जानदार आख़ीर में परमेश्वर में ही जा मिलते हैं। वह देश (मकान) और काल (ज़मान) दोनों से परे है। वही काल (मौत) है। बाक़ी सब महज़ एक बहाना हैं। वही अक्षर (लाज़वाल) है। वही व्यक्त (ज़ाहिर) है। वही अव्यक्त (बेनिशान) है। वही दोनों से परे है। वही आदि देव है। वही जानने वाला और वही जानने की चीज़ है। वह अपने बेअन्त रूप से सारे विश्व में रमा हुआ है। वही वायु है। वही यम है। वही अग्नि है। वही वरुण है। वही चन्द्रमा है। वही प्रजापति (ब्रह्मा) है। वही सब का परदादा है। उसे हज़ार बार नमस्कार! फिर फिर नमस्कार! सामने से और पीछे से सब तरफ़ से नमस्कार! वह अनन्त-वीर्य है। वह बेअन्त हिम्मत वाला है। वह सब को अपने अन्दर समाकर फिर भी सब का सब बाक़ी है। सब का पिता, सबका पूज्य और सब से बड़ा है। उसकी कोई दूसरी मिसाल या उस जैसा

कोई नहीं। वह अकेला आप है। वह आदमी की शकल में सब का दोस्त है। वह सबका प्यारा है। (११-८ से ४३ सार)

वह न वेदों के ज़रिये जाना जा सकता है, न यज्ञों के, न पूजा पाठ के, न दान के, न तरह तरह की रस्मों के, न बड़े बड़े तपों के। आदमी उसे सिर्फ़ "आत्मयोग" के ज़रिये यानी अपने नफ़्स को क़ाबू में करके और "अनन्य" भक्ति के ज़रिये ही, वह भक्ति जिसमें किसी दूसरे को उसका शरीक न किया गया हो, उसे जान सकता है, ठीक ठीक देख सकता है और उसी में लय या फ़ना होकर उसी में समा सकता है। (११-४८,५३, ५४)

उसका सब से सुहावना रूप, सब से प्यारा रूप जिससे आदमी को तसल्ली और शान्ति मिल सकती है "मनुष्य रूप" है (११-५१)❀। वह सब रूपों में है।

यह सभी उसका "विश्वरूप" है। इसलिये आदमी को चाहिये कि उसी के लिये सब काम करे, उसी को अपना मक़सद समझे, एक उसी की भक्ति करे, अपने स्वार्थ ख़ुदी और मोह से अलग रहे, और दुनिया के "सब प्राणियों के साथ दोस्ती और मेल रखे (निर्वैरः सर्वभूतेषु)"। बस ऐसा आदमी ही ईश्वर को पा सकता है। (११-५५)

बारहवां अध्याय

बारहवें अध्याय में, जिसका नाम भक्ति योग है, अर्जुन ने

❀ शक्ले इन्सां में ख़ुदा था मुझे मालूम न था,
चाँद बादल में छिपा था मुझे मालूम न था। (सूफ़ी)

फिर यह सवाल उठाया कि परमेश्वर की सगुण रूप में यानी उसकी सिफ़तों का ख़याल करते हुए, पूजा करने वाले, और निर्गुण रूप में, खालिस लामकान का ध्यान करने वाले इन दोनों में से कौन ज्यादह ठीक रास्ते पर है ? गीता का जवाब है कि—

जो लोग पूरी श्रद्धा के साथ भगवान के सगुण रूप की उपासना करते हैं वे भगवान की नज़र में ज़्यादह ठीक हैं। लेकिन जो लोग भगवान के उस परब्रह्म रूप की उपासना करते हैं जो "अक्षर" यानी हमेशा एकरस है, "अनिर्देश्य" है यानी जिसकी बाबत कुछ कहा ही नहीं जा सकता, जो अव्यक्त (बेनिशान) है, जो सब जगह रमा हुआ और अचिन्त्य यानी ख़याल से परे है, जो कूटस्थ, अचल और अटल है, वे भी उसी परमेश्वर को पहुंचते हैं, बशर्ते कि उन्होंने अपनी सब इन्द्रियों पर क़ाबू पा लिया हो, वे सब को एक निगाह से देखते हों और हमेशा "सर्वभूतहिते रताः" यानी सब जानदारों की भलाई के कामों में लगे रहते हों (१२-२,३,४)। लेकिन अव्यक्त की उपासना का रास्ता ज़्यादह मुश्किल है (१२-५)। इसलिये सब कामों का नतीजा ईश्वर पर छोड़ कर और उसी का ध्यान करते हुए, अपने कर्तव्य पालन में लगे रहना चाहिये (१२-६)। जो किसी से बैर नहीं करता, जो सब का दोस्त है, जो सब पर दया करता है, जिसमें 'मेरे तेरे' का ख़याल नहीं है, जिसमें अहंकार यानी ख़ुदी नहीं, जो सुख दुःख में एक सा और सब को माफ़ कर देने वाला है, जो हमेशा सन्तुष्ट (राज़ी) है, जिसने अपने को जीत लिया है, जिसका इरादा पक्का है और जिसने अपने मन और

बुद्धि को ईश्वर में लगा रखा है, ऐसा ईश्वर का भक्त ईश्वर को प्यारा है (१२-१३, १४) । जिससे दुनिया के किसी आदमी को किसी तरह का डर नहीं और न जिसे किसी से किसी तरह का डर है, जो ख़ुशी, रञ्ज और डर से ऊपर उठ गया है, वह ईश्वर को प्यारा है (१२-१५) । जो हर हाल में राज़ी पाक, बिना आलस्य, मेरे तेरे से ऊपर और दुःख से परे है, जो नतीजे की परवाह न कर हमेशा अपने फ़र्ज़ के पूरा करने में लगा रहता है, वही भक्त ईश्वर को प्यारा है (१२-१६) । जो न आनन्द से फूलता है और न दुखों से दुःखी होता है, जिसे न किसी चीज़ के जाने का रञ्ज और न पाने की ख़ुशी, जिसने अपने लिये अच्छे और बुरे दोनों तरह के नतीजों का त्याग कर दिया है, वह भक्त ईश्वर को प्यारा है (१२-१७) । जो आदमी दोस्त और दुश्मन दोनों को एक निगाह से देखता है, जो मान और अपमान दोनों में एक बराबर रहता है, जो सरदी, गरमी, सुख, दुख में एक सा है, जिसे मोह नहीं है, जिसके लिये बदनामी और नेकनामी बराबर है, जो फ़ज़ूल नहीं बोलता, जो हर हाल में राज़ी रहता है, जो किसी घर को अपना घर नहीं मानता, जिसका दिल अडिग है, वह भक्त ईश्वर का प्यारा है (१२-१९) । जो लोग इस "धर्म्मामृत" को श्रद्धा के साथ पालते हैं और उसी पर चलते हैं, जो ईश्वर में लौ लगाए हैं, वे भक्त ईश्वर को बहुत ही प्यारे हैं (१२-२०) ।

तेरहवां अध्याय

तेरहवां अध्याय गीता का सब से ज्यादह दार्शनिक (फ़ल्

सफ़ियाना) अध्याय है। वेदान्त शास्त्र (ब्रह्मसूत्रों) का गीता में सिर्फ़ एक बार नाम आया है और वह इसी अध्याय में। आत्मा के अलावा जानने की चीज़ें क्या हैं, यानी ज्ञान का 'मैदान' क्या है, और आत्मा जो इस सब को जानता है क्या है, सच्चे ज्ञान को पाने का रास्ता क्या है, असली चीज़ जानने की क्या है और सच्चा ज्ञान या ठीक निगाह किसे कहते हैं यह सब इस अध्याय में बताया गया है।

मोटे तौर पर यह शरीर (बदन) जानने की चीज़ है और आत्मा इसे जानने वाला है लेकिन बदन में सिर्फ़ यह जड़ जिस्म ही नहीं है। पांच महाभूत (मिट्टी, पानी, हवा, आग और आकाश), अहंकार (ख़ुदी), बुद्धि (अक़ल), प्रकृति (क़ुदरत) पांच ज्ञानेन्द्रियां (हवास), पांच कर्मेन्द्रियां (हाथ पैर वगैरह) मन और पांचों ज्ञानेन्द्रियों के अलग अलग विषय (मज़मून), ऐसे ही ख़्वाहिश, दुशमनी, सुख, दुःख, टक्कर, होश, धीरज, ये सब जानने की चीज़ें हैं। इन सब में उलट फेर होते रहते हैं। और जो शुद्ध पुरुष, जो जान, इन सब में रमी हुई है उसमें उलट फेर नहीं होते। वही जानने वाला है। वही इस देह का मालिक, वही परमात्मा और परम पुरुष है। वह हमेशा रहने वाला और एक रस है (१३-१,२,५,६,२२)। जानने वाला और जानने की चीज़ें इन दोनों के मेल से ही सारी दुनिया बनी है (१३-२६)।

सच्चे ज्ञान यानी सच्ची जानकारी के हासिल करने का यह रास्ता बताया गया है—

घमंड न करना; किसी से छल न करना: अहिंसा: सबको माफ़ कर देना; ईमानदारी; गुरू के पास बैठना; पाक साफ़ रहना; अडिग रहना: मन को अडोल रखना; अपने ऊपर क़ाबू; इन्द्रिय विषयों यानी शहवत की चीज़ों से दिल को हटाना; अहंकार या ख़ुदी का न होना; जन्म, मौत, बुढ़ापा, बीमारी और दुःख, इनकी बुराई को समझना: किसी से मोह न होना; औरत बच्चों, घर वग़ैरह में अपने को भूल न जाना; चाहे कोई बात अपने मनकी हो या उसके ख़िलाफ़ हो, हर हालत में अपने दिल को एक सा रखना: ईश्वर में भक्ति; कभी कभी अकेले में रहने की आदत; भीड़ से बचने की ख्वाहिश: अध्यात्म (रूहानियत) की तरफ़ लगन; सचाई को जानने की इच्छा; —यह सब सच्चे ज्ञान को पाने का रास्ता है। यही सचा ज्ञान है। इससे उलटा सब अज्ञान (जहालत) है (१३-७-११)। इस सब से बढ़कर जानने की चीज़ क्या है? वह परब्रह्म (अल्लाह) जिसका कोई शुरू नहीं, जिसके बारे में न 'है' कहा जा सकता है, न 'नहीं'। जिसके सब तरफ़ हाथ, पैर, कान, सिर और मुंह हैं, जो सब में रमा हुआ और सब से परे है। जिसमें सब इन्द्रियों (हवास) के गुण मालूम होते हैं, पर जिसके कोई इन्द्रिय नहीं है। जिसे किसी से मोह नहीं, पर जो सब का सहारा है। जो निर्गुण (बेसिफ़ात) है, लेकिन सब गुणों (सिफ़तों) का ख़ज़ाना है। जो सब जानदारों के अन्दर और सब के बाहर है। जो चल भी है और अचल भी। जो इतना सूक्ष्म (लतीफ़) है कि जाना नहीं जा सकता। जो दूर से दूर और पास से पास है। जो सब प्राणियों में एक अटूट रूप से भी मौजूद है और अलग अलग भी है, सब का पालने वाला है, सब का मारने

वाला और फिर उनके रूप में ख़ुद पैदा होने वाला है। अंधेरे से दूर, सब ज्योतियों की ज्योति (नूर का भी नूर)। सब के दिलों में रहने वाला, वही ज्ञान है और वही ज्ञेय यानी जानने की चीज़ (१३-१२ से १७)। ध्यान, ज्ञान और कर्म तीनों उसे जानने के रास्ते हैं (१३-२४)। उसी आदमी की निगाह सच्ची निगाह है जो सब जानदारों में एक बराबर मौजूद एक परमेश्वर को देखता है। जो परमेश्वर को सब जगह रमा हुआ देखकर किसी दूसरे को दुख देकर अपने हाथ से अपनी हिंसा नहीं करता वही परमगति (कमाल) को पाता है। जब आदमी सब अलग अलग जानदारों के अन्दर एक ही परमेश्वर को देखने लगता है, तब वह उस पूर्ण ब्रह्म को, उस परमात्मा को पहचानता है, जो हमेशा एक रस निर्गुण (बेसिफ़ात) और निर्विकार (तबदीलियों से ऊपर) है। जिस तरह आकाश सब जगह रहते हुए भी बेदाग़ रहता है उसी तरह आत्मा सब जिस्मों में रहते हुए भी बेदाग़ रहता है। जिस तरह एक सूरज सारी दुनिया को रोशनी देता है, उसी तरह एक आत्मा इस सारे मैदान को रोशन करती है। (१३-२७ से ३३)

चौदहवां अध्याय

इस अध्याय में सत्व (सकून), रजस (हरकत), और तमस (काहिली) इन तीनों गुणों को बयान किया गया है—

सत्व, रजस और तमस यह तीनों गुण प्रकृति (माद्दे) से पैदा होते हैं। यह तीनों ही जीव (रूह) को जिस्म में बांध कर रखते हैं (गुण शब्द के एक माइने रस्सी भी हैं)। इनमें सत्त्व पाक साफ़ और

रोशन है। वह जीव को सुख और ज्ञान के साथ बाँधता है। रजस मोह रूप है। वह लोभ और ख़्वाहिश से पैदा होता है और जीव को इच्छा और कर्म (कामों) में बाँधे रखता है। तमस अज्ञान (जहालत) और अन्धेरे से पैदा होता है। वह इसे ग़ाफ़िली, काहिली और नींद में फंसाए रखता है। इन तीनों में बराबर खींचातानी होती रहती है। मरते वक़्त जिस गुण का आदमी में ज़ोर होता है वैसा ही उसे आगे को नतीजा मिलता है। आत्मा या परमात्मा इन तीनों गुणों से ऊपर है। इसलिए जो आदमी तीनों गुणों से ऊपर उठ जाता है, यानी 'गुणातीत' हो जाता है, वही इस दुनिया से निजात पाता है। (१४-५ से २०)

तीनों गुणों से ऊपर या 'गुणातीत' उसे समझना चाहिये जो न रोशनी की ख़्वाहिश करता है न तरह तरह के कामों में फंसे रहने की, और न सुस्ती या काहिली में फंसता है, और न इन तीनों हालतों में से किसी से भी घबराता है; उदासीन (बेलौस) की तरह जो सुख दुख को एकसा मानता है और इन हालतों के बदलने से अपने अन्दर बिल्कुल डावाँडोल नहीं होता; जो सुख, दुख, मिट्टी, पत्थर, सोना, चाँदी, मीठा, कड़ुवा, नेकनामी और बदनामी सब में एक सा धीर और अडोल रहता है; जो मान अपमान, दोस्त और दुश्मन इन सब में एक बराबर रहता है; जो सब ख़्वाहिशों से ऊपर है, वही 'गुणातीत' है। जो परमेश्वर से सच्ची लौ लगाता है वह इन गुणों से ऊपर उठकर परमेश्वर के "साधर्म्य" को पाता है, यानी ख़ुद उस जैसा होकर उसी में लीन (फ़ना फ़िल्लाह) हो जाता है, क्योंकि परमेश्वर ही आत्मा यानी जान का, अमृत का और

अखंड सुख का ख़ज़ाना है। (१४-२,२२ से २७)

पन्द्रहवां अध्याय

इस अध्याय में बताया गया है कि यह दुनिया एक बड़े पीपल के दरख़्त की तरह है, जिसकी बाबत लिखा है कि—

उसकी जड़ें ऊपर हैं और शाख़ें नीचे। यह दरख़्त ही सब से बड़ा रहस्य (राज़) है। ('अश्वत्थ' लफ़्ज़ के मायने 'पीपल' भी हैं और 'कल न रहने वाला' यानी फ़ानी भी हैं), वेद (ज्ञान) उसकी पत्तियां हैं। सत्व (सकून), रज (हरकत), और तम (काहिली) उसकी नसें हैं। विषय वासनाएं (नफ़सानी ख़्वाहिशें) उसकी डालियां हैं। उसकी कुछ जड़ें नीचे को भी निकली हुई हैं। ये वे ख़्वाहिशें हैं जो आदमी को दुनिया की हविसों में बाँधे रखती हैं। इस डरावने दरख़्त को एक ही हथियार काट सकता है और वही इसके रहस्य को हल कर सकता है। वह हथियार 'असंग शस्त्र' है, यानी किसी चीज़ के साथ भी लगाव या मोह न रखना। उसी हथियार से इसे काटकर आदमी शान्ति और परमपद (कमाल) पा सकता है और परम पुरुष अल्लाह से मिल सकता है। (१५-१ से ४) वे ज्ञानी लोग ही, जिनमें न अहंकार (.खुदी) है और न मोह, जिनके दिलों में दुनिया से लगाव नहीं रहा, जो अध्यात्म (रूहानियत) में लगे रहते हैं, जिनकी ख़्वाहिशें दूर हो चुकीं, जो दुई से ऊपर उठ गये, जिन पर सुख दुःख असर नहीं करता, वे ही उस परमपद को पाते हैं जहाँ न सूरज चमकता है, न चाँद, न आग, और जहाँ पहुँच कर फिर वहाँ से वापस नहीं आया जाता (१५-५,६)। जीव (रूह) ईश्वर

का ही "अंश" है। मन और इन्द्रियों (हवास) के क़ाबू में आकर वह संसार के चक्कर में पड़ा हुआ है। इच्छा ने उसे यहां बाँध रखा है (१५-७)।

इस सारे रहस्य की असलियत वही ईश्वर है। सूरज में, चांद में और आग में सब तेज उसी का तेज है। वही धरती के अन्दर से सब प्राणियों को सँभाले हुए है। वह चांद के ज़रिये जड़ी बूटियों में रस पहुंचाता है। जानदारों में वह जठराग्नि (हरारते ग़रीज़ी) है। वही अन्न पचाता है। वही सब के दिलों के अन्दर बैठा हुआ है (सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो)। उसी से इल्म, याददाश्त, वग़ैरह पैदा होती हैं। योगी उसे अपने अन्दर घस कर देखते हैं। वही पुरुषोत्तम है। वही सब कुछ जानता है, और जो उसे जान जाय वह भी सब कुछ जानता है। (१५-११ से १५,१८,१६)

सोलहवां अध्याय

इस अध्याय में कहा गया है कि—

इस दुनिया में दो तरह की तबीयतों के आदमी होते हैं। एक दैवी सम्पद यानी फ़रिश्तों की सी तबीयत वाले या अल्लाह वाले, और दूसरे आसुरी सम्पद यानी शैतानी तबीयत वाले या गुमराह। दैवी सम्पद वह है जो आदमी को आज़ादी और निजात (मुक्ति) की तरफ़ ले जाती है। आसुरी सम्पद उसे बन्धनों में जकड़े रखती है। (१६-५)

दैवी सम्पद में ये छब्बीस बातें शामिल हैं—(१) किसी चीज़ से डरना नहीं, (२) दिल की सफ़ाई, (३) ज्ञान हासिल करने की

कोशिश, (४) दान देने की आदत, (५) इन्द्रियों पर क़ाबू, (६) दूसरों की भलाई करना, (७) अच्छी चीज़ें पढ़ना, (८) तप, (९) छल कपट न करना, (१०) अहिंसा, (११) सच्चाई, (१२) ग़ुस्सा न करना, (१३) त्याग, (१४) शान्ति, (१५) किसी की चुग़ली न करना, (१६) सब पर दया करना, (१७) लोभ न करना, (१८) दीनता, (१९) शराफ़त, (२०) गम्भीरता, (२१) तेज, (२२) क्षमा, (२३) धीरज, (२४) पवित्रता, (२५) किसी से दुश्मनी न करना और (२६) घमंड न करना (१६-१ से ३)।

आसुरी सम्पद वाले के स्वभाव में इस तरह की बातें होती हैं—(१) ढोंग, (२) ग़रूर, (३) अपने को बड़ा मानना, (४) ग़ुस्सा, (५) दिल की सख़्ती और (६) अज्ञान (जहालत) (१६-४)।

इसके बाद तेरह श्लोकों में आसुरी सम्पद (शैतानी तबीयत) वाले के रहन सहन और ढङ्ग को बयान किया गया है। आजकल के कुछ लोगों ख़ासकर बढ़ी हुई पच्छिमी क़ौमों के बड़े बड़े नेताओं और उन्हीं के रङ्ग में रंगे हुए लोगों की यह इतनी अच्छी तसवीर है कि इन तेरह श्लोकों का पूरा पूरा तरजुमा नीचे दिया जाता है—

ये लोग नहीं जानते कि किस तरह के कामों में आदमी को लगाना चाहिये और किस तरह के कामों में नहीं। उनमें न पवित्रता होती है, न नेकी और न सच्चाई। वे कहते हैं कि—'इस दुनिया का

कोई ईश्वर नहीं है, न इसमें कहीं सचाई है और न इसका कोई चलाने वाला है। जड़ परमाणुओं यानी ज़र्रों के मिलने से ही यह दुनिया बन गई है। आत्मा या रूह से इसका कोई वास्ता नहीं। मर्द और औरत के बीच की ख़्वाहिश से ही यह सारा संसार पैदा हुआ है। कोई इसका पैदा करने वाला नहीं है।' दुनिया का बुरा करने वाले ये लोग जिनकी आत्माएं बरबाद हो गई हैं, जिनकी बुद्धि बहुत छोटी है, और जिनके काम बहुत तेज़ होते हैं, दुनिया के मिटाने के लिये ही इन ख़यालों को लेकर पैदा होते हैं। ख़ुदी (अहंकार), ढोंग (दम्भ) और ग़रूर (मद) से भरे हुए ये इस तरह की ख़्वाहिशों के पीछे लगे रहते हैं जो कभी पूरी नहीं हो सकतीं। मोह में फंसे हुए, नापाक इरादे करके, और ग़लत ज़िदों में पड़कर वे अपनी कोशिशों में लग जाते हैं। वे इस तरह की लम्बी फ़िकरों में पड़ जाते हैं जो मौत तक उन्हें घेरे रहती हैं। उन्हें इस बात का यक़ीन हो जाता है कि कामोपभोग यानी ऐशपरस्ती से बढ़कर और कोई चीज़ दुनिया में नहीं है। सैकड़ों उम्मीदों के जाल में फंसे हुए, काम (शहवत) और क्रोध (ग़ुस्से) के शिकार वे अपने ऐश आराम के लिए अन्याय से धन इकट्ठा करने में भी लग जाते हैं। वे यही सोचा करते हैं कि आज मैंने अपना यह मनोरथ पूरा कर लिया, कल वह पूरा कर लूंगा, यह धन मेरा हो चुका, कल वह भी मेरा हो जायगा, उस दुशमन को मैंने मार डाला, और दुशमनों को भी मैं मार डालूंगा, मैं इस दुनिया का मालिक हूँ, मैं भोगने वाला हूँ, मैं कामयाब हूँ, मैं ताक़तवर हूँ, मैं सुखी हूँ, मैं धनी हूँ, मैं ऊंची नसल का हूँ, मेरे बराबर और दूसरा कौन है मैं हो

दुनिया का भला करूंगा, मैं जो जिसे चाहूँगा दूंगा, मैं मज़ा उड़ाऊंगा -अज्ञान से अन्धे हुए वे इसी तरह की बातें सोचा करते हैं। उनका मन तरह तरह की ख़्वाहिशों में भटकता रहता है, वे मोह जाल से घिरे रहते हैं और अपनी ऐशपरस्ती में लगे हुए आख़िर को गन्दे नरक में पड़ते हैं। अपने को वे बहुत बड़ा समझते हैं। धन और बड़प्पन के घमण्ड में चूर, अपनी ऐंट में, वे दिखावे और ढोंग के लिए झूठे कर्मकाण्ड, यज्ञ वग़ैरह भी करते हैं। अहंकार, घमण्ड, बल; काम और क्रोध के कारण दूसरों के साथ बैर रखते हुए वे सब के अन्दर एक बराबर रहने वाले परमेश्वर के साथ बैर करते हैं। ये ज़ालिम दुनिया के लोगों में अधम (नीच) होते हैं। (१६-७ से १६)। उनका अन्त बहुत ख़राब होता है। वे सचाई या हक़ से दूर नीचे ही नीचे गिरते चले जाते हैं (१६-२०)।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः,
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्। (२१)

यानी आत्मा को बरबाद करने वाले नरक के ये तीन दरवाज़े हैं—काम, क्रोध और लोभ। इसलिये इन तीनों को छोड़ देना चाहिये। ऐ अर्जुन ! जो आदमी इन तीनों अन्धेरे दरवाज़ों से बच जाता है वही अपना भला करता है और वही आख़ीर में परागति यानी निजात पाता है। इसलिये आदमी को चाहिये कि सदाचार शास्त्र (नेकी के क़ानून) को ही अपना रास्ता दिखाने वाला बनावे, उसी पर चले, .खुद अपनी ख़्वाहिशों के पीछे न पड़े (१६-२१ से २४)।

सतरहवां अध्याय

इस अध्याय में अर्जुन ने फिर पूछा—

जो लोग आपके इन सदाचार के असूलों का ख़याल न करते हुए ख़ुद अपनी श्रद्धा (यक़ीन) से दुनिया में अपना फ़र्ज़ पूरा करते हैं और उसके लिए मुसीबतें झेलते हैं और त्याग करते हैं, उन्हें आप कैसा समझते हैं ? (१७-१)

श्रीकृष्ण ने जवाब दिया—

लोगों की तबीयतें तीन तरह की होती हैं, और तीन ही तरह की उनकी श्रद्धा होती है—सात्विकी, राजसी और तामसी (१७-२)। जैसी जिसकी तबियत वैसी ही उसकी श्रद्धा होती है। आदमी श्रद्धा का बना है। जिसकी जैसी श्रद्धा है वैसा ही वह ख़ुद है (१७-३)। जो लोग ढोंग और अहंकार से, अपनी ख़्वाहिशों और मोह के ज़ोर में, बिना समझे, गहरे तप भी करते हैं, मुसीबतें झेलते हैं और अपने जिस्म को तकलीफ़ पहुंचाते हैं, उनके ये तप और तकलीफ़ें भी शैतानी (आसुरी) हैं। सब के अन्दर रहने वाला परमेश्वर उनके इन तपों से ख़ुश नहीं होता (१७-५,६)। आदमी का खाना,पीना, उसका त्याग, उसका तप और दान सब तीन तीन तरह के हैं—सात्विक, राजस और तामस (१७-७)। जो काम सिर्फ़ फ़र्ज़ समझ कर किए जाते हैं, जिनसे अपने लिए फल की इच्छा बिल्कुल न हो, जो पक्षपात (अपने पराये के ख़याल) से न किए गए हों, जो सोच समझ कर पूरे दिल और श्रद्धा से किए जावें, जिनमें कामयाबी या नाकामयाबी से करने वाले के दिल पर कोई असर न हो, और जिनके बदले में

किसी से अपने लिये फ़ायदे की इच्छा न हो, वे ही काम सात्विक हैं (१७-११,१७ से २०;१८-२३,२६)। जो काम फल की इच्छा से, लोभ से, ढोंग से, या अहंकार से या अपने नाम के लिए, या सत्कार, मान, पूजा पाने के लिए, या दूसरे पर उपकार के बदले में अपने लिए उपकार की उम्मीद से, ज़ोर लगाकर किए जाते हैं, वे राजस हैं (१७-१२,१८,२१;१८-२४,२७)। और जो काम सुस्ती से, बिना श्रद्धा के, बिना नतीजा सोचे, बेतरीक़े, दूसरे के फ़ायदे नुक़सान को न देखते हुए, मूर्खता या ज़िद से, दूसरे को बरबाद करने की ग़रज़ से, या जा बेजा, देश काल, मौक़ा या ठीक आदमी का ख़याल न करते हुए, हिंसा से, या दूसरे की मान मर्यादा इज़्ज़त का ख़याल न करके किया जाय वह तामस है (१७-१३,१९,२२;१८-२५,२८)। अपने से बड़ों की इज़्ज़त, जिस्म की सफ़ाई, सादगी, ब्रह्मचर्य और अहिंसा ये पाँच जिस्म के तप हैं। अपनी बात से किसी का दिल न दुखाना, सच बोलना, प्यारी लगने वाली बात कहना, जो बात दूसरे के लिए फ़ायदे की हो वह कहना, और अच्छी चीज़ें पढ़ना ये पाँच ज़बान के तप हैं। ख़ुश रहना, शान्ति, मौन (ख़ामोशी), इन्द्रियों को क़ाबू में रखना और दिल की सफ़ाई ये पाँच मन के तप हैं (१७-१४ से १६)। ऐ अर्जुन! जो काम बिना श्रद्धा, बेदिली से किया जावे वह न इस दुनिया में किसी काम का है, न दूसरी दुनिया में (१७-२८)।

गीता के इस छोटे से अध्याय में आदमी के सब कामों और उसकी नीयत की बड़ी सुन्दर कसौटी बता दी गई है।

अठारहवां अध्याय

आखिरी अध्याय में 'सन्यास' के दिखावटी रिवाज का खण्डन करते हुए कहा गया है—

अपने सब कामों के अन्दर से ख़ुदग़रज़ी निकाल देने को ही समझदार आदमी असली "सन्यास" कहते हैं, और सब कामों के फल का त्याग यानी अच्छे बुरे नतीजे की परवाह न करना ही सच्चा "त्याग" है। (१८-२)

गीता में जहाँ जहाँ 'फल के त्याग' या 'अच्छे बुरे नतीजे की परवाह न करने' का ज़िक्र है वहां मतलब सिर्फ़ यह है कि अपने फ़र्ज़ के पूरा करने में करनेवाले को चाहे सुख हो चाहे दुःख, नेकनामी हो, चाहे बदनामी, उसे इसकी बिल्कुल परवाह नहीं करना चाहिये, उसके दिल पर भी इसका कोई असर नहीं होना चाहिए। यह मतलब नहीं है कि कोई काम बिना नतीजा सोचे किया जावे। जो काम "बिना नतीजा सोचे...जा बेजा... का ख़याल न करते हुए" किया जाय उसे पिछले ही अध्याय में "तामस" यानी सब से बुरा काम कहा गया है। 'फल त्याग' का मतलब सिर्फ़ अपने स्वार्थ या ख़ुदग़रज़ी का त्याग और 'सब के भले की इच्छा रखते हुए' (चिकीर्षुर्लोक संग्रहम् ३-२५) काम करना है। इसी को इस अध्याय में असली "सन्यास" या "त्याग" कहा गया है—

दूसरों की सेवा करना, दान देना और तप जैसे काम करने ही चाहिएं। इनसे आदमियों की आत्माएं पाक होती हैं। लेकिन ऐसे

कामों को भी मोह छोड़कर, फल की परवाह न करते हुए, सिर्फ़ फ़र्ज़ 'कर्तव्य' समझकर करना चाहिये (१८-५,६)। यही असली 'सात्विक' त्याग है (१८-६,११)। मोह में आकर अपने फ़र्ज़ को छोड़ देना या बदन की तकलीफ़ के डर से फ़र्ज़ से पीछे हट जाना दोनों बुरे हैं (१८-७,८)। ऐसे ही ज्ञान या समझ भी तीन तरह की है। सब जानदारों में अलग अलग रूपों के होते हुए भी एक ही अव्यय (लाज़वाल) और अव्यक्त (बेनिशान) आत्मा को देखना, सात्विक समझ है। सब में अलग अलग आत्माओं को देखना राजस समझ है। वह निखद्द समझ जिससे आदमी बिना मतलब या असलीयत को समझे एक ही काम में अन्धे की तरह लिपटा रहता है और उसे ही सब कुछ समझ लेता है, तामस समझ है। (१८-२० से २२)

ठीक इसी तरह सब धर्मों और सब जातियों को एक समझना सात्विक, सबको अलग अलग समझना राजस और अपने ही धर्म या जाति को ठीक और दूसरों को ग़लत समझ बैठना तामस है।

सुख भी तीन तरह का होता है। जो सुख शुरू में ज़हर की तरह और आख़ीर में अमृत की तरह है, जिससे आत्मा और बुद्धि को शान्ति मिलती है वह सुख सात्विक है। इन्द्रियों का सुख जो शुरू में अमृत की तरह और आख़ीर में ज़हर की तरह है राजस सुख है। जो सुख शुरू से आख़ीर तक आत्मा को सिर्फ़ मोह, नींद, आलस्य और सुस्ती में डाले रखता है, वह सुख तामस है। (१८-३७,३८,३९)

इसी तरह कर्त्ता, कर्म, बुद्धि और धीरज सब तीन तीन तरह के हैं।

सब धर्मों की एकता, सदाचार (नेकी), और सब में एक ही आत्मा को देखने पर ज़ोर देते हुए गीता अलग अलग आदमियों के लिए अलग अलग 'धर्म' भी बताती है। अलग अलग आदमियों में गीता एक ही फ़रक़ मानती है, और वह अलग अलग "स्वभाव" यानी तबीयतों का फ़रक़ है। जन्म, जाति, देश, पन्थ, सम्प्रदाय वग़ैरह के कोई भी फ़रक़ गीता नहीं मानती—

जिस आदमी के स्वभाव में (स्वभाव प्रभवैर्गुणैः) शम (शान्ति), दम (अपने ऊपर क़ाबू), तप, शौच (पाकी), क्षमा (माफ़ करना), आर्जव (कपट न होना), ज्ञान विज्ञान और आस्तिक्य (ईश्वर में यक़ीन), इन चीज़ों की तरफ़ झुकाव हो, वह इन कामों में लगे। जिसमें बहादुरी, तेज, धीरज, होशियारी, लड़ाई में डटे रहना, दान और हकूमत इनकी तरफ़ झुकाव हो वह इस तरह के कामों में लगे। जो अपने 'स्वभाव' से खेती, जानवर पालना और तिजारत वगैरह इनके ज़्यादह क़ाबिल हो वह इन्हें करे। और जो अपनी तबीयत से दूसरों की सेवा ख़िदमत करने के ज़्यादह क़ाबिल हो वह इसमें लगे। (१८-४१ से ४४)

चारों में गीता ने 'स्वभाव' पर ही ज़ोर दिया है। यही गीता की वर्ण व्यवस्था का मतलब है। इसमें छोटे बड़े ऊंचे नीचे या जन्म जाति का कोई सवाल नहीं। क्योंकि—

इस तरह हर आदमी अपने अपने काम में लगा हुआ ही सिद्धि यानी कमाल हासिल कर सकता है, बशर्ते कि वह अपने सब काम

उसी परमेश्वर के लिए करे जिसने सबको पैदा किया है और जो सब के अन्दर रमा हुआ है (१८-४५,४६)। हर आदमी का जो "स्वभाव नियतं" (स्वभाव से तय) काम है वही उसका "स्वधर्म" है। उसके ख़िलाफ़ उसे किसी दूसरे काम या धर्म की तरफ़ नहीं जाना चाहिए। (१८-४७)

यहां हर आदमी के स्वभाव, उसकी तबियत और उसकी क़ाबलीयत के मुताबिक़ दुनिया की यानी दूसरों की तरफ़ उसके फ़र्ज़ की बात कही गई है, किसी तरह की जन्म की जाति या ऊंच नीच का ज़िक्र नहीं है।

आदमी परमेश्वर को कैसे जान सकता है, यह बताते हुए फिर कहा गया है कि—

जिसकी बुद्धि हर तरह बेलौस (निर्मोह) है, जिसने अपने को जीत लिया है, जिसमें कोई ख़्वाहिश नहीं रह गई है, वह उस निर्मल बुद्धि के साथ, धीरज से अपने को संभाले हुए, इन्द्रियों के सुखों से अलग रह कर, न किसी से राग, न किसी से द्वेष, अकेला रहकर, थोड़ा खा कर, अपने मन, बचन और तन को क़ाबू में रखकर, सच्चे वैराग्य के साथ, अपनी आत्मा में ध्यान लगाकर, .खुदी, ज़ोर, घमण्ड, शहवत, .गुस्सा, धन जमा करना और मेरा तेरा, इस सबको छोड़कर, शान्त होकर, .खुद ब्रह्मरूप हो जाता है। फिर वह न किसी बात की फ़िक्र करता है, न ख़्वाहिश, उसका दिल फूल की तरह खिल जाता है, वह सब जानदारों को एक निगाह से देखता है (समः सर्वेषु भूतेषु) और परमेश्वर को ठीक ठीक जानकर उसी में लीन (फ़ना) हो जाता है। (१८-४६ से ५५)

सब काम ईश्वर के लिए ही करने पर बार बार ज़ोर दिया गया है (१८-५७)। परमेश्वर सबके दिलों के अन्दर है, "ईश्वरः सर्व भूतानाम हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति" (१८-६१), यह बात गीता में बार बार आती है।

आखीर में जिस बात को गीता में सबसे बड़े रहस्य (राज़) की बात "सर्वगुह्यतमं" कहा है वह यह है कि—

सिर्फ़ एक परमेश्वर ही में मन को लगाओ, उसी की भक्ति करो, उसी के लिए सब काम करो, उसी के सामने सर को झुकाओ, और—"सर्व धर्मान परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज", सब "धर्मों" यानी रीति रिवाजों, अलग अलग फ़िरक़ों को छोड़कर सिर्फ़ एक परमेश्वर का सहारा लो। यही एक मुक्ति हासिल करने का तरीक़ा है। (१८-६४,६५,६६)

गीता का सार

गीता के १८ अध्यायों में से हरेक का अलग अलग सार (निचोड़) ऊपर दिया जा चुका है। इसमें जैसा हम शुरू में कह चुके हैं, हमने सिर्फ उस 'गीता-धर्म' को दिखाने की कोशिश की है, जो हमारी राय में हर ज़माने और हर मुल्क के लोगों के लिए एक क़ीमती नसीहत है। तरजुमा करने में हमने जहां भरसक इस बात का ध्यान रखा है कि कहीं अर्थ का अनर्थ न हो वहाँ हमने हर जगह, हर श्लोक, हर शब्द और हर वाक्य को ज्यों का त्यों न देकर सार लेने की कोशिश की है।

गीता में यूं तो, जीव और परमेश्वर यानी रूह और खुदा में क्या नाता है ? किस तरह परमेश्वर अव्यक्त यानी बेनिशान भी है और व्यक्त यानी हर चीज़ में मौजूद भी है ? मादा और रूह क्या चीज़ें हैं ? दुनिया कैसे बनी ? वग़ैरह सब दार्शनिक सवालों पर अपने ढङ्ग से बहस की गई है, और गीता का रुझान अद्वैतवाद (वहदतुलवजूद) की तरफ़ है, लेकिन फिर भी गीता कहती है कि सच्ची धार्मिक ज़िन्दगी बसर करने के लिए सिवाय एक ईश्वर के और किसी इस तरह के असूल में यक़ीन करना या न करना ज़रूरी नहीं है।

गीता का धर्म एक करने धरने की चीज़ है। दुनिया में ख़ास तरह से ज़िन्दगी बसर करना ही धर्म है, यह मानना या वह मानना नहीं।

अब हम इन अट्ठारह अध्यायों की तालीम का निचोड़ फिर से थोड़े से शब्दों में दे देना चाहते हैं।

उस ज़माने में बहुत से अलग अलग 'कुल' 'जातियां,' और 'वर्ण' इस देश में मौजूद थे जो सब जन्म से माने जाते थे। किसी पुराने ज़माने से हर कुल और हर जाति के बहुत से अलग अलग रीत रिवाज चले आते थे, जिन्हें "कुल धर्मों" और "जाति धर्मों" का नाम दिया जाता था (१-४०,४३)। इन अलग अलग ख़ानदानी धर्मों और जाति धर्मों का पालना इतना ज़रूरी माना जाता था कि अगर किसी ख़ानदान की इन रीतों का पालना बन्द हो जाय, तो समझा जाता था कि उस घराने के सब स्त्री पुरुष, और उसके मरे हुए 'पितर' तक नरक को जाते हैं (१-४१): पितरों को "पिण्ड" वग़ैरह देने का रिवाज भी था (१-४२), जिसका हक़ सिर्फ़ अपनी औलाद को ही होता था; क़ुदरती तौर पर लोग 'वर्ण संकर' यानी नसलों में गोल माल होजाने से बहुत डरते थे और इसलिए अपने ख़ानदान के किसी आदमी को मारना, चाहे वह "आततायी" ज़ालिम भी क्यों न हो, "बहुत बड़ा पाप" माना जाता था (१-३६,४५)। गीता इन सब रीति रिवाजों का ख़याल करना तक समझदार आदमी के लिए "मोह", "दिल की कमज़ोरी" और "शान के ख़िलाफ़" बताती है। गीता इन

सब को ग़लत मानती है। (२-३ से १०)

तीनों वेदों ऋक्, यजुर और साम पर उन दिनों लोगों को बहुत भरोसा था। वेदों में उन्होंने यज्ञ, हवन, जप, तप वगैरह तरह तरह के काम सीख रखे थे। लोग बहुत से देवी देवताओं की भी पूजा करते थे। देवताओं के नाम पर हवन में तरह तरह की आहुतियां दी जाती थीं। चढ़ावे चढ़ाये जाते थे। देवताओं से अपने इस दुनिया के सुखों के लिए और स्वर्ग के लिए दुआएं मांगी जाती थीं। "स्वर्ग" का ख़याल भी "भोग ऐश्वर्य" और "इन्द्रिय सुखों" का खयाल था। यज्ञों में "सोम" पीने का भी रिवाज था (२-४२,४३,४४,५३.) वगैरह।

गीता इन सब रीत रिवाजों से ऊपर उठने का उपदेश देती है। गीता इस तरह के वहमों में पड़े हुए लोगों को नासमझ कहती है और बताती है कि इनसे लोगों की अक़्ल मारी जाती है (तयापहृत चेतसाम् २-४२ से ४४), वेदों का कर्म काण्ड लोगों को तीनों गुणों में फंसाए रखता है, आदमी को इन तीनों से ऊपर हो जाना चाहिये। समझदार आदमी के लिये वेद वैसे ही फ़ज़ूल हैं जैसे उस जगह कुआं जहां चारों तरफ़ पानी ही पानी हो (२-४५,४६)। वेदों की इस तरह की तालीम से लोगों की मति फिर जाती है (श्रुति विप्रतिपन्ना बुद्धि २-५३)। और जिस आदमी के दिल में सच्चे कर्म योग की यानी दुनिया में अपना ठीक ठीक फ़र्ज़ पूरा करने की इच्छा भी पैदा हो जाती है उसे फिर वेदों की कोई ज़रूरत नहीं रह जाती (६-४४)—"वेदों से, यज्ञों से, जप तप से

और इन तमाम रीत रिवाजों से आदमी को ईश्वर के दर्शन नहीं मिल सकते" (११-४८,५३)।

गीता इस बात को भी अच्छी तरह बताती है कि असली "यज्ञ", असली "तप" वग़ैरह किसे कहते हैं। चौथे अध्याय में अपने ज़माने के तरह तरह के यज्ञों को बयान करने के बाद गीता कहती है कि आदमी को अपने सब काम ही 'यज्ञ के तौर पर' (४-२३) यानी निस्वार्थ भाव से, अपनी ख़ुदग़रज़ी को अलग रखकर, दुई से ऊपर उठकर, किसी से दुश्मनी न रखते हुए, दूसरों के भले के लिए और 'ईश्वरार्पण' ईश्वर के लिए करने चाहियें (४-२२,२३,२४ वग़ैरह)। यही यज्ञ है। सब से बढ़कर यज्ञ वह 'ज्ञान यज्ञ' है, जिससे आदमी 'सब को अपनी आत्मा के अन्दर और सब को ईश्वर के अन्दर देखता है' (४-३५)। इस ज्ञान से बढ़कर आत्मा को पाक करने वाली चीज़ इस दुनिया में दूसरी नहीं है (४-३८)। ऐसे ही गीता ब्रह्मचर्य (अपने नफ़्स पर क़ाबू) और अहिंसा (किसी को तक़लीफ़ न देने) को जिस्म का तप; सच्ची, प्यारी और ऐसी बात कहने को जिससे किसी का दिल न दुखे और जिससे दूसरों का फ़ायदा हो, ज़बान का तप; और अपनी इन्द्रियों पर क़ाबू, दिल को साफ़ और शान्त रखने को मन का तप बताती है। (१७-१४ से १६)

इन्द्रियों के सुखों और स्वर्ग वग़ैरह की लालसा को गीता जगह जगह आत्मा की तरक़्क़ी में रुकावट बताती है और इन्हें छोड़ देने की हिदायत करती है

तरह तरह के मज़हबी रीत रिवाजों के बारे में गीता की एक और राय भी है। वह यह है कि जो कम समझ लोग किसी तरह के रिवाजों को पूरा करते हुए अपने विश्वास (यक़ीन) के सहारे नेक कामों में लगे रहते हैं, अगर उनके विश्वास को हिला देने से डर हो कि वह नेकी से हट जावेंगे तो समझदार आदमी को चाहिये कि उनकी बुद्धि को डावांडोल न करे (३-२६,२६)।

अलग अलग देवताओं या ताक़तों की पूजा और एक ईश्वर की पूजा के अलग अलग तरीक़ों के बारे में गीता का ख़याल और भी ज़्यादह खुला और साफ़ है। गीता ईश्वर की बाबत कहती है कि उसका न कोई शुरू है न आख़ीर, वह सब में रमा हुआ और सब से अलग है, वह सब के दिलों में बैठा हुआ है, पर वह ख़याल की पहुँच से भी परे है, न आदमी का दिमाग़ उसकी कल्पना कर सकता है और न ज़बान उसे बयान कर सकती है, आदमी के लिए इस तरह के निर्गुण ईश्वर का ध्यान कर सकना कठिन है (१२-३,४,५), इसलिए आदमी उसकी पूजा बन्दगी या उपासना सिर्फ़ उसके किसी एक गुण या सिफ़त को सामने रख कर या उसके किसी एक अंश या पहलू या उसकी किसी एक ताक़त को लेकर ही कर सकता है। आम तौर पर अलग अलग देवताओं के नाम परमेश्वर ही की एक एक सिफ़त या ताक़त के नाम हैं। इस तरह सब देवताओं की अलग अलग कल्पना (तख़य्युल) ईश्वर ही की अंश-कल्पना है और दुनिया के सब इष्टदेव यानी माबूद एक

परमेश्वर ही के रूप हैं। इसलिए किसी भी देवता की पूजा एक तरह से ईश्वर ही की पूजा है।

इसलाम सिवाय एक निराकार अल्लाह के किसी भी दूसरे की पूजा बन्दगी को ग़लत मानता है और कड़ाई के साथ रोकता है। पर ऊपर का खयाल कुछ मुसलमान सूफ़ियों की किताबों में भी पाया जाता है। सतरहवीं सदी ईस्वी में शेख़ मुहिबुल्लाह इलाहाबादी एक मशहूर सूफ़ी फ़क़ीर हुए हैं। उनकी और दाराशिकोह की खतकिताबत फ़ारसी में छपी हुई है, जिसमें शेख़ मुहिबुल्लाह ने 'लाइलाहइल-लल्लाह' (नहीं है कोई माबूद सिवाय अल्लाह के) का मतलब बताते हुए लिखा है—"दुनिया के जितने माबूद हैं सब अल्लाह ही हैं।" सूफ़ी मत की मशहूर फ़ारसी किताब "गुलशने राज़" में भी 'लाइलाह इल्लल्लाह' के ठीक यही माइने लिए गए हैं। इस तरह के सूफ़ी विद्वान अद्वैत यानी 'वहदतुलवजूद' के मानने वाले थे। उनकी रायमें अल्लाह एक है, उस जैसा दूसरा कोई नहीं, और दुनिया के सब माबूद (इष्टदेव) उसी एक अल्लाह के रूप हैं. इसलिए किसी भी माबूद की पूजा एक दरजे तक उसी एक अल्लाह की पूजा है। इन सूफ़ी विद्वानों का खयाल गीता के ख़याल से बहुत कुछ मिलता हुआ है।

इसी तरह पूजा के अलग अलग तरीक़ों के बारे में गीता का कहना है कि जो आदमी श्रद्धा और सच्चाई के साथ जिस तरीक़े से भी ईश्वर की पूजा करता है ईश्वर उसी तरीक़े से उसकी पूजा को अपनाते हैं।

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः। (४-११)

इस पर भी दूसरे अलग अलग देवताओं की पूजा को गीता ईश्वर की "बेतरीक़े पूजा" (६-२३) बताती है 'देवताओं के उपासक देवताओं को पहुंचते हैं और ईश्वर के उपासक ईश्वर को' (६-२५)। इसलिए गीता की बार बार और साफ़ शब्दों में तालीम है कि और सब देवताओं वग़ैरह को छोड़कर सिर्फ़ एक ईश्वर ही की पूजा करनी चाहिये (६-२७,३४), और—"और सब धर्मों को छोड़कर सिर्फ़ एक ईश्वर का ही सहारा लेना चाहिए, वही आदमी को पापों से बचा सकता है।" (१८-६६)

इस तरह गीता और .कुरान दोनों सिर्फ़ एक ईश्वर की पूजा की ही तालीम देते हैं।

वर्ण भेद को यानी ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र के फ़रक़ को गीता बजाय जन्म से मानने के आदमी के गुण, काम और तबीयत के मुताबिक़ मानती है और इसमें किसी को ऊँचा या नीचा नहीं मानती। जिस आदमी को अपनी इन्द्रियों पर क़ाबू है, जिसका दिल शान्त है और जिसकी तबीयत ज्ञान और इल्म की तरफ़ जाती है, उसे इसी तरह के कामों में लगना चाहिये और उसे ब्राह्मण कहना चाहिये, जिसमें बहादुरी, हुकूमत करने और इन्तज़ाम करने की ताक़त है उसे क्षत्री कहना चाहिये, किसान और व्यापारी को वैश्य, और सिर्फ़ दूसरों की सेवा चाकरी में लगे हुए लोगों को शूद्र (१८-४२ से ४४)।

न इसका जन्म या खानदान से कोई वास्ता है और न किसी खास मजहब के लोगों से। ये चार तरह के आदमी हर देश और हर मजहब में होते हैं। यानी अगर गीता की बात मानी जावे तो हिन्दुस्तान में लाखों नौकरी और मजदूरी करने वाले ब्राह्मणों को क्षत्री या शूद्र मानना होगा, बम्बई के बोहरे मुसलमानों को वैश्य, और दीनबन्धु एण्ड्रूज़, मौलाना अबुलकलाम जैसे हजारों गैर हिन्दुओं को ब्राह्मण।

दर्शन शास्त्र या फलसफे की निगाह से उन दिनों दो तरह के खयाल वालों का ज्यादह ज़ोर था। एक 'कर्म' के मानने वाले, जो वैदिक कर्मकाण्ड और रीत रिवाज को पूरा करने में मुक्ति (निजात) मानते थे, और दूसरे 'सांख्य' के मानने वाले, जो दुनिया के कामों से अलग रहकर सन्यास और त्याग के ज़रिये मुक्ति मानते थे। गीता ने इन दोनों के ऊपरी रीत रिवाजों को फ़ज़ूल बताते हुए, दोनों की असलीयत का बड़ा अच्छा मेल या समन्वय किया है और दोनों को एक बताया है (५-४,५)। गीता कहती है कि "आग को हाथ न लगाने वाला आदमी या इसी तरह की सन्यास की दूसरी ऊपरी बातों में फँसा हुआ आदमी सच्चा सन्यासी नहीं है, और न अपनी ख्वाहिशों का गुलाम या रस्म रिवाजों में फँसा हुआ आदमी कर्मयोगी है। जो अपने स्वार्थ यानी खुद ग़रज़ी को अलग रखकर, दुई से ऊपर उठकर, किसी से दुश्मनी न करता हुआ दुनिया के लोगों की तरफ़ अपने सब फ़र्ज़ों को पूरा करता है, वही सच्चा सन्यासी है और वही कर्मयोगी है।" (५-३;६-१)

गीता जिस चीज़ को असली धर्म और सब आदमियों के लिये एक बराबर धर्म मानती है और जिस चीज़ पर बार बार और तरह तरह से ज़ोर देती है वह यह है—अपने आप पर क़ाबू पाकर, अपनी इन्द्रियों को जीत कर (१२-४), दुई से ऊपर उठकर (निर्द्वन्द्वो), अपने निजी सुख दुख, नफ़े नुक़सान की बिल्कुल परवाह न करते हुए (२-३८), सब दुनिया का भला चाहते हुए (३-२५), किसी से दुश्मनी या बैर न रखते हुए (११-५५), सब के भले के कामों में लगे हुए (५-२५; १२-४), दूसरों की तरफ़ अपने फ़र्ज़ों को फ़र्ज़ समझ कर पूरा करता है (१८-९) वही धरमात्मा है। गीता कहती है नरक के तीन दरवाज़े हैं—काम, क्रोध और लोभ (१६-२१)। दुनिया के सब आदमियों के लिए यही गीता-धर्म का सार है। इसी को गीता ईश्वर की सच्ची भक्ति बताती है (१२-१३ से २०)। गीता कहती है "ईश्वर को सब से ज्यादह प्यारा वह आदमी है जिससे दुनिया में कोई आदमी न डरता हो और न जिसे ख़ुद किसी से किसी तरह का डर हो (१२-१५)। इसके खिलाफ़ "अपने स्वार्थ के लिए, घमण्ड या ख़ुदी के असर में आदमी अगर मेहनत भी करे, तप करे और तकलीफ़ें उठावे तो उसके ये सब काम भी शैतानी हैं, और ईश्वर ऐसे आदमियों से ख़ुश नहीं होता!" (१६-५,६)। इस तरह "अपनी ख़ुदी को मार कर दूसरों की तरफ़ अपने फ़र्ज़ों के पूरा करने में लगे हुए, सबकी भलाई करते हुए ही आदमी सच्चे ज्ञान को पा सकता है।" सच्चा ज्ञान यही है कि आदमी

"सब को अपनी तरह" (५-७;६-३२) "अपने अन्दर सबको" (६-२९), "सब को ईश्वर के अन्दर" और "सब के अन्दर एक ईश्वर को" (६-३०,३१) देखे। सिर्फ़ इस तरह 'आत्मसंयम', और 'दूसरों की सेवा' के ज़रिये ही आदमी 'अपनी आत्मा को पाक' करते करते, आत्मा की असली तरक्क़ी के रास्ते पर क़दम बढ़ा सकता है, और फिर 'अपने अन्दर' और 'सब के अन्दर' उस परमात्मा का साक्षात करके, उसका दीदार हासिल करके, जो सब ज्योतियों की ज्योति है (१३-१७), और सब के दिलों में बैठा है (१५-१५), मुक्ति हासिल कर सकता है। (३-१९;५-१६,१७,३०)

यही गीता धर्म का निचोड़ है।

"हिन्दुओं में बहुत सी गीताएँ हैं जैसे राम गीता, शिव गीता, अष्टावक्र गीता वगैरह। 'गीता' के मायने हैं कोई चीज़ जो गाकर या लय के साथ कही गई हो। पर गीता लफ्ज़ से आम तौर पर भगवतगीता ही का मतलब लिया जाता है।

"क़ुरान के मायने हैं वह चीज़ जो पढ़ी गई या ऐलान की गई हो। ख़ुद क़ुरान के अन्दर क़ुरान के हर अलग अलग हिस्से को और ऐसे ही क़ुरान से पहले की मज़हबी किताबों को भी 'क़ुरान' कहा गया है। मौलाना रूमी की मशहूर किताब मसनवी 'फ़ारसी जबान में क़ुरान' कही जाती है।

"गीता में भी गीता के हर अलग अलग हिस्से को गीता ही नाम दिया गया है।

"श्री कृष्ण ने अकसर बांसरी की लय से नसीहत की है। मौलाना रूमी ने बांसरी ही के ज़िक्र से मसनवी को शुरू किया है और अपनी किताब को अल्लाह की बांसरी की आवाज़ बताया है।

"हक़ यह है कि एक ही हक़ीक़त की आवाज़ सारी दुनिया में गूंज रही है। गीता हिन्दुस्तान का क़ुरान है और क़ुरान अरब की गीता।"

—ख़ूबुल्लाहशाह क़लन्दर

राम और रहीम

(१)

तुम राम कहो, वह रहीम कहें, दोनों की ग़रज़ अल्लाह से है
तुम दीन कहो, वह धर्म कहें, मंशा तो उसी की राह से है
तुम इश्क़ कहो, वह प्रेम कहें, मतलब तो उसी की चाह से है
वह योगी हों, तुम सालिक हो, मक़सूद दिले आगाह से है
क्यों लड़ता है मूरख, बन्दे! यह तेरी ख़ाम ख़याली है
है पेड़ की जड़ तो एक वही, हर मज़हब एक एक डाली है

(२)

बनवाओ शिवाला या मसजिद, है ईंट वही, चूना है वही
मेमार वही, मज़दूर वही, मिट्टी है वही गारा है वही
तकबीर का जो कुछ मतलब है, नाक़ूस का भी मंशा है वही
तुम जिनको नमाज़ें कहते हो, हिन्दू के लिये पूजा है वही
फिर लड़ने से क्या हासिल है! जो फ़हम हो तुम नादान नहीं
जो भाई पै दौड़ें गुर्रा कर वह हो सकते इनसान नहीं

(३)

क्या क़त्ल व ग़ारत ख़ूँरेज़ी तारीफ़ यही ईमान की है ?
क्या आपस में लड़कर मरना तालीम यही क़ुरआन की है ?
इन्साफ़ करो, तफ़सीर यही क्या वेदों के फ़रमान की है ?
क्या सचमुच यह ख़ूँख़ारी ही आला ख़सलत इनसान की है ?
तुम ऐसे बुरे आमाल पै अपने कुछ तो ख़ुदा से शर्म करो !
पत्थर जो बना रक्खा है 'सईद' इस दिल को ज़रा तो नर्म करो !

क़ुरान

"अल्लाह ही ने यह किताब (क़ुरान) तुम्हारे (मुहम्मद साहब के) घट में उतारी है। इसकी कुछ आयतें "मुहकमात" यानी पक्के और साफ़ साफ़ हुकुम हैं, वे ही इस किताब की जड़ बुनियाद हैं, बाक़ी आयतें "मुतशाबेहात" यानी मिसाल या उपमा के तौर पर हैं। जिन लोगों के दिलों में टेढ़ापन है वे क़ुरान के उसी हिस्से पर चलते हैं जो मिसाल के तौर पर कहा गया है, उसके ज़रिये फ़ितना और झगड़ा खड़ा करना चाहते हैं, और उसका मनगढ़न्त मतलब लगाते हैं, लेकिन उसका मतलब सिवाय अल्लाह के और उन लोगों के और कोई नहीं जानता जो पक्के ज्ञानी हैं, और कहते हैं कि हम इस सब को मानते हैं, यह हमारे रब्ब की देन है। दूर की सोचने वाले ही इस बात की परवाह करते हैं।" (क़ुरान, ३: ६)

कुरान

इसलाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद की आत्मा दुनिया की बड़ी से बड़ी खोजी आत्माओं में से थी। बरसों की तपस्या (रियाज़त), एकान्त (गोशानशीनी) और लम्बे लम्बे उपवासों (रोज़ों) के बाद, अरब की उस ज़माने की गिरी हुई और दर्दनाक हालत में, ईश्वर ने उन्हें उनके देश और तमाम दुनिया के भले का रास्ता दिखाया। अपने धर्म का प्रचार शुरू करने से पहले मुहम्मद साहब की उम्र ४० साल की हो चुकी थी। ६३ बरस की उमर में वे इस दुनिया से कूच कर कर गये। इन २३ बरस के अन्दर जब जब मुहम्मद साहब के सामने कोई खास रूहानी मुश्किल आती थी और रास्ता न सूझता था, तब तब वे आमतौर पर रो रो कर अपने ख़ुदा से रोशनी की प्रार्थना करते थे। उनका बदन अक्सर थर थर काँपने लगता था, कभी कभी वे चादर लपेट कर लेट जाते थे, आँसुओं और पसीने से उनकी चादर तर हो जाती थी, कभी कभी कई कई दिन तक बिना दाने और पानी के वे इसी तरह पड़े रहते थे, आखीर में वे उठते थे। जो शब्द उस वक़्त उनके मुंह से निकलते थे उन्हें वे अपने ईश्वर का हुकुम बताते थे। २२ बरस

के अन्दर इस तरह वक्त वक्त पर और दूसरे खास मौक़ों पर मुहम्मद साहब के मुंह से निकली हुई चीज़ों के मजमूए (संग्रह) का नाम ही '.कुरान' है।

.कुरान शब्द 'क़ेरा' से बना है जिसके माइने हैं एलान करना या पढ़ना। संस्कृत 'क्रन्द', अँग्रेज़ी 'क्राई' और अरबी 'क़ेरा', तीनों असल में एक ही शब्द हैं। '.कुरान' के लफ़्ज़ी माइने हैं—वह चीज़ जो एलान की जावे या जो पढ़ी जावे। रिवाजी माइने हैं—धर्म की किताब।

इसलाम से पहले यहूदी अपनी मज़हबी किताब को 'क़राह' कहा करते थे। यहूदियों की ज़बान इबरानी और अरबों की अरबी दोनों एक दूसरे से बहुत मिलती हैं। '.कुरान' और 'क़राह' के भी एक ही माइने हैं। .खुद .कुरान के अन्दर अपने से पहले की मज़हबी किताबों को भी '.कुरान' नाम दिया गया है (१५-८०,६१)।

मुहम्मद साहब की बाक़ी सब नसीहतें, कहावतें और उनकी वक्त वक्त की और सब रिवायतें 'हदीस' कहलाती हैं और इलहामी यानी ईश्वरीय नहीं मानी जातीं।

इस तरह २३ बरस के अन्दर .कुरान के जो हिस्से अलग अलग वक्तों में उतरते या ज़ाहिर होते रहे उन्हें लोग, उसी वक्त मुहम्मद साहब के हुकुम से, अलग अलग ताड़ के पत्तों, चमड़े के टुकड़ों या लकड़ी या पत्थर की सिल्लियों पर लिखते रहे। कोई कोई उन्हें पढ़ने के लिए ले जाते थे। बहुत सों को वे ज़बानी याद हो गए थे। आखीर में ये ताड़ पत्र, चमड़े के टुकड़े वग़ैरह

लकड़ी के एक बक्स के अन्दर बिना किसी खास तरतीब के रख दिए जाते थे। मजमूआ बढ़ता चला गया। कुछ हिस्से मुहम्मद साहब ही के ज़माने में और उनके हुकुम से अलग अलग सूरों यानी अध्यायों में बँट गए।

.कुरान में इस बात का भी .ज़िक्र है कि "अल्लाह जिस आयत को चाहता है मनसूख़ (रद्द) कर देता है या लोगों की याद से मिटा देता है और उसकी जगह वैसी ही दूसरी आयत या उससे बेहतर आयत क़ायम कर देता है क्योंकि अल्लाह सब चीज़ों पर क़ादिर यानी समर्थ है।" (२-१०६)। एक दूसरी जगह लिखा है कि "अल्लाह एक आयत को दूसरी आयत से बदल देता है और अल्लाह ही सब से अच्छा जानता है कि वह क्या नाज़िल करता है (हुकुम उतारता है)" (१६-१०१)।

इस तरह कहा जाता है कि "साठ आयतें मुहम्मद साहब की ज़िन्दगी में ही मनसूख़ कर दी गई थीं और कुछ और आयतें जिनका अब मौक़ा नहीं रहा था बाद के ज़माने में मनसूख़ समझी जाने लगीं।"*

'आयत' का .कुरान में क़रीब क़रीब वही मतलब है जो वेदों में 'ऋचा' का।

मुहम्मद साहब के बाद पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबुबक्र ने उन सब टुकड़ों को निकाल कर जो उस वक्त मौजूद थे और

---

*'The Wisdom of the Quran', by Mahamud Muhtar Pasha, Introduction, p. 45.

कुछ और हिस्सों की मदद से जो लोगों को ज़बानी याद थे, पहली बार ११४ सूरों में एक बाज़ाब्ता मजमूआ तय्यार कराया, और उसे मुहम्मद साहब की बेवा हज़रत हिफ़सा के पास संभाल कर रखवा दिया।

पर इन अलग अलग हिस्सों की कुछ नक़लें दूसरे लोगों के पास भी मौजूद थीं। जिन लोगों को कुछ हिस्से ज़बानी याद थे उन्होंने भी अपनी याद से वे हिस्से लिख रखे थे। नतीजा यह हुआ कि दस पन्द्रह बरस के अन्दर ही कई अलग अलग क़ुरान मक्के, मदीने, और इराक़ में चल पड़े, जिनमें एक दूसरे से कहीं कहीं काफ़ी फ़रक़ था। आख़ीर में, मुहम्मद साहब के क़रीब बीस बरस बाद, तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उसमान ने क़ुरान की उस कापी को जिसे हज़रत अबु बक्र ने तरतीब दी थी मुस्तनद (प्रामाणिक) एलान किया, उसकी नक़लें कराकर सब सूबों में भिजवादीं, और जितनी दूसरी कापियां या नुसख़े इधर उधर चल पड़े थे उन सब को मंगवा कर जलवा दिया, ताकि एक ही क़ुरान पक्का और ठीक माना जावे, और फिर कभी उसमें कोई हेर फेर न किया जा सके। क़ुरान की ठीक वही तरतीब आज तक दुनिया में चलती है।

इस पर भी आज साढ़े तेरह सौ बरस के बाद सात तरह के क़ुरान मिलते हैं। इनमें फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि किसी में जिसे एक आयत मान लिया गया है उसी को दूसरे में दो हिस्से करके दो आयतें माना गया है, इससे आयतों की कुल तादाद में फ़रक़ हो जाता है। इनमें से एक क़ुरान में कुल आयतों की

तादाद ६,००० है, दो में ६,२१४ है, एक में ६,२१९ है, एक में ६,२३६ है, एक में ६,२२६ और एक में ६,२२५ है। लेकिन मज़मून सब में ठीक वही है। शब्दों की तादाद भी सब में बराबर बताई जाती है।

इस पर भी जिस शक्ल में .कुरान अब हमारे सामने है उसमें एक बहुत बड़ी मुशकिल यह है कि उसके अलग अलग हिस्से उस तरतीब में नहीं हैं जिस तरतीब में वे नाज़िल हुए यानी उतरे। बाद के सूरे शुरू में और शुरू के सूरे बाद में हैं और कभी कभी एक ही सूरत के अन्दर बाद की आयतें पहले और पहले की आयतें बाद में आती है। कौनसी आयत कब किस मौक़े पर और किन हालतों में उतरी यानी कौन हुकुम कब दिया गया इसका पता भी आयतों से लगना बहुत मुशकिल है। ज़्यादहतर आयतों के बारे में यह तै हो चुका है कि कौन सी कब और किस मौक़े पर उतरी। लेकिन बहुत सी आयतों के बारे में तो इस बात में बड़े से बड़े मुसलमान आलिमों की राय में भी फ़र्क है। इस लिए .कुरान की आयतों की आजकल की तरतीब की वजह से .कुरान के मामूली पढ़ने वाले को बड़ी दिक़्क़त उठानी पड़ती है। जो लोग अरबी भाषा जानते हैं और उसका रस ले सकते हैं, या जो बग़ैर मतलब समझने की परवाह किए सिर्फ़ श्रद्धा के साथ .कुरान पढ़ लेते हैं, उनकी बात अलग है। लेकिन जो दूसरे लोग .कुरान के मतलब को ठीक ठीक समझना चाहते हैं उनके पल्ले असल .कुरान से या उसके उसी तरतीब में तर्जुमे से, ज़्यादह नहीं पड़

सकता। अलग अलग मज़मूनों पर क़ुरान की अलग अलग चुनी हुई आयतों से ऐसे लोगों को क़ुरान का मतलब समझने में ज़्यादा आसानी होगी।

क़ुरान की ज़बान

अरबी के देशी और विदेशी सब आलिमों की राय है कि क़ुरान की ज़बान ऊँचे दरजे की, बड़ी सुन्दर, रसीली, और एक तरह की आज़ाद नज़्म या स्वतंत्र कविता (Poetic prose) है। क़ुरान के अंगरेज़ तरजुमा करने वालों में सब से मशहूर और सब से ज़्यादा आलिम जार्ज सेल माने जाते हैं। उनकी राय है कि—

"क़ुरान का तर्ज़ (उसकी शैली) आमतौर पर सुन्दर और दरिया की तरह बहती हुई है...एक एक आयत के अन्दर बहुत सी बात थोड़े से शब्दों में कही गई है, यहाँ तक कि कहीं कहीं मतलब भी इतना साफ़ समझ में नहीं आता। बीच बीच में ज़बान की ख़ूबसूरती को बढ़ाने वाली एशियाई ढंग की ऊंचे दर्जे की तशबीहें यानी उपमाएं हैं, चुभते और चमकते हुए जुम्लों ने ज़बान में और भी जान डाल दी है। बहुत जगह पर, ख़ासतौर से जहाँ अल्लाह की तारीफ़ और उसके गुण बयान किये गये हैं, ज़बान बहुत ही ऊंची, बढ़िया और शानदार है।"*

क़ुरान की 'क़िरअत' यानी पाठ करने के क़रीब क़रीब उसी तरह बहुत से अलग अलग ढंग मुसलिम विद्वानों में जारी हैं, जिस तरह वेद पाठ के हिन्दू पंडितों में।

*Sales Preliminary Discourse, p. 44.

मुहम्मद साहब से पहले के अरब

अलग अलग मजमूनों पर .कुरान की ख़ास ख़ास आयतें आगे जमा कर दी गई हैं। उम्मीद है यह तरीक़ा .कुरान का मतलब समझने की इच्छा रखने वालों के लिए ज्यादा आसान होगा। इन आयतों के अलावा .कुरान के बहुत बड़े हिस्से में बहुत सी पिछली क़ौमों का ज़िक्र है जो अलग अलग ज़मानों में धर्म और नेकचलनी से भटक कर तरह तरह के पापों में पड़ गईं और जिन्हें इसके बुरे नतीजे भोगने पड़े। कुछ और इस तरह के हुक्म या हिदायतें भी हैं जो किसी ख़ास मौक़े पर या ख़ास हालत में उस वक़्त के लोगों को दी गई थीं।

.कुरान को समझने के लिए यह भी ज़रूरी है कि उस वक़्त के अरबों की हालत की एक छोटी सी तसवीर हमारी नज़रों के सामने हो।

मुहम्मद साहब के जन्म के वक़्त अरब क़ौम हज़ारों छोटे बड़े क़बीलों में बँटी हुई थी। इन क़बीलों में आए दिन लड़ाइयाँ होती रहती थीं। हर क़बीला अपनी जगह अपने को पूरी तरह आज़ाद समझता था। हर एक क़बीले का अपना एक देवता था जिसे उस क़बीले के लोग पूजते थे। कोई देवता लकड़ी का, कोई पत्थर का और कोई गूँधे हुए आटे का। कोई देवता मर्द या औरत की शकल का था, कोई किसी जानवर की शकल का, कोई दरख़्त की सूरत का, और कोई बिल्कुल अनगढ़। बहुत से लोग कई कई देवी देवताओं को भी पूजते थे। लेकिन ज्यादातर अरबों में सब के मालिक 'एक .ख़ुदा' का

खयाल तक न था और न उनका कोई एक धर्म था। एक दूसरे के दुश्मन हज़ारों .कबीलों को एक धागे में बांधने वाली कोई ताक़त न थी। नतीजा यह था कि मुल्क के एक बहुत बड़े हिस्से पर बाहर की क़ौमों की हुकूमतें .कायम हो चुकी थीं। उत्तर में रोम के ईसाई शहनशाह की हुकूमत थी, पूरब में ईरान के .खुसरो की और दक्खिन और पच्छिम में इथियोपिया के ईसाई शहनशाह की। इस तरह अरब का आधे से ज़्यादा हिस्सा दूसरों के मातहत था।

बदचलनी की यह हालत थी कि शराब पी पी कर अकसर अरबों की मौतें होती रहती थीं। शराब के साथ साथ जुआ चलता था और इस दरजे बढ़ा हुआ था कि बहुत से अरब अपना सारा माल असबाब जुए में हार कर आख़ीर में अपने तन की बाज़ी लगा देते थे और जब हार जाते तो बाक़ी ज़िन्दगी जीतने वाले के .गुलाम बनकर रहना मंज़ूर कर लेते थे।

.गुलामों के साथ बिल्कुल जानवरों का सा बर्ताव होता था। जानवरों ही की तरह वे बाज़ारों में बेचे और खरीदे जाते थे। यहां तक कि नन्हे नन्हे बच्चे ज़बरदस्ती माओं से अलग करके बेच डाले जाते थे। मां किसी के हाथ और बच्चा किसी के। किसी भी .गुलाम को मार डालने की कोई सज़ा न थी। .गुलाम औरतों के साथ बदचलनी जायज़ समझी जाती थी और कभी कभी उनके मालिक उनसे पेशा कराकर पैसा कमाते थे।

अरब लोग अपनी बदचलनियों का घमण्ड के साथ खुले सबके सामने बखान करते थे।

औरतों के साथ भी आमतौर पर बहुत ही बुरा बर्ताव होता था। उनके कोई किसी तरह के हक़ न माने जाते थे। मर्द जितनी चाहे शादियां कर सकता था, और जब चाहे अपनी जिस औरत को तलाक़ दे सकता यानी छोड़ सकता था। एक औरत के कई कई पति (ख़ाविन्द) का भी रिवाज था। कभी कभी हफ़्ते के सात दिन इस तरह बँटे हुए होते थे कि एक ही औरत के अलग अलग दिनों के लिये अलग अलग पति बँधे हुए थे, इतवार के लिए अलग, सोमवार के लिए अलग और मंगल के लिए अलग। बाप के मरने पर उसकी जितनी बीवियां होती थीं वे सब उसके बड़े बेटे की बीवियां समझी जाने लगती थीं। यानी सिवाय उस एक मां के जिसने अपने पेट से किसी को जन्म दिया हो, या उस औरत के जिसका किसी ने दूध पिया हो और कोई रिश्ता अरबों में पाक न समझा जाता था।

आम तौर पर अरब किसी को अपना दामाद बनाना बड़ी हेठी यानी बेइज़्ज़ती की बात समझते थे। कहीं कहीं तो लड़कियों को पैदा होते ही गढ़े में गाड़ दिया जाता था और कहीं कहीं उनकी उमर ५, ६ बरस की होने पर उन्हें ज़िन्दा दफ़न कर दिया जाता था।

कुछ लोगों में, जो ख़ास कर लेन देन और तिजारत का काम करते थे, सूदख़ोरी का रिवाज भी बहुत बढ़ा हुआ था।

बहादुरी, मेहमाँनवाज़ी, बात का धनी होना, वग़ैरह कई

अच्छी बातें भी उनमें थीं। लेकिन इन गुणों के होते हुए भी ऊपर की शर्मनाक बुराइयों की वजह से उन दिनों अरबों की हालत ख़ासी नाज़ुक और ख़तरनाक थी।

इस तरह के देश और इस तरह के लोगों में हज़रत मुहम्मद और क़ुरान ने जन्म लिया। क़ुरान के उपदेशों को समझने के लिए अरबों की उन दिनों की हालत को अपने सामने रखना ज़रूरी है।

क़ुरान का असर

क़ुरान के उपदेशों ने अरबों की इन ज़हरीली बुराइयों में से बहुत सी बुराइयों को, जैसे शराबख़ोरी, जुआ, सूदख़ोरी, लड़कियों को मार डालना, जड़ से मिटा दिया; सैकड़ों और हज़ारों अलग अलग देवी देवताओं के पूजने वालों को अपने उन अलग अलग देवी देवताओं को छोड़ कर, एक निराकार ईश्वर, एक अल्लाह ताला, की पूजा करना सिखा दिया; एक दूसरे के दुश्मन हज़ारों क़बीलों को एक करके उन सब की एक अरब क़ौम बना दी; सारी क़ौम के चलन और रहन सहन को पाक और ऊँचा कर दिया, उनमें इल्म और ज्ञान की चाह पैदा कर दी, मुल्क के उन सब टुकड़ों को जो अलग अलग विदेशी ताक़तों के मातहत थे आज़ाद करके सारे देश पर एक आज़ाद और ख़ुद मुख़्तार अरब हुकूमत क़ायम कर दी। यह सब काम २३ साल के अन्दर अन्दर पूरा हो गया।

मुहम्मद साहब के मरने के सौ बरस के अन्दर अन्दर

अरब का यह नया मज़हब चीन की दीवार से लेकर अटलांटिक समुद्र तक, एशिया, अफ़रीका और यूरोप, तीनों में फैल गया। तमाम पच्छिमी एशिया, उत्तरी अफ़रीका और आधे यूरोप पर अरबों की हुकूमत क़ायम हो गई, और तरह तरह के इल्मों और हुनरों में उन दिनों के अरब पच्छिमी दुनिया की सब से बढ़ी चढ़ी क़ौम माने जाने लगे।

आज दुनिया में तीस करोड़ से ज़्यादह आदमी क़ुरान के मज़हब के मानने वाले हैं और दुनिया का कोई मुल्क ऐसा नहीं है जहाँ कुछ न कुछ लोग इस किताब से अपनी ज़िन्दगी के लिए सबक़ और धर्म का रास्ता न सीखते हों।

क़ुरान के इस असर और तेरह सौ बरस के उसके नतीजों को मोटे तौर पर बयान करते हुए एक यूरोपियन लेखक लिखता है—

"If a book is to be gauged by its net results—by the effect it has produced on all that is deepest and best in human nature—then the Quran must necessarily take high rank as one of the world's greatest works.*

"अगर किसी किताब की क़ीमत का अन्दाज़ा उसके नक़द नतीजों से लगाया जा सकता है—यानी इस बात से कि आदमी के स्वभाव के गहरे से गहरे और अच्छे से अच्छे पहलुओं पर उसका

* Islam' by Major Arthur Glyn Leonard, pp. 105, 106.

क्या असर पड़ा—तो ज़रूरी है कि क़ुरान को दुनिया की बड़ी से बड़ी और ऊंची से ऊंची किताबों में गिना जावे।"

कुछ साल हुए यूरोप के एक मशहूर माहवारी रिसाले ने पच्छिमी यूनिवर्सिटियों के सैकड़ों बड़े बड़े प्रोफ़ेसरों और विद्वानों से प्रार्थना की थी कि वे अपनी अपनी राय में दुनिया की सौ बड़ी से बड़ी किताबों की फ़हरिस्त नम्बरवार तय्यार करके रिसाले के एडीटर के पास भेज दें। यूरोप के विद्वानों के जो सैकड़ों जवाब आए, उनको देखने से मालूम हुआ कि दुनिया की बड़ी से बड़ी किताबों में उन्होंने पहिली जगह हज़रत ईसा से एक हज़ार साल पहले की लिखी हुई मशहूर यूनानी किताब 'इलियड' को और दूसरी जगह उसके डेढ़ हज़ार साल बाद की लिखी 'क़ुरान मजीद' को दी। और यह उस सूरत में जब कि राय देने वाले यूरोपियन आलिमों में से बहुत ही कम होंगे जिन्होंने क़ुरान को असल अरबी में पढ़ा हो।

़कुरान और उसकी तालीम

अल-फ़ातेहा

़कुरान की सबसे पहली सूरत यानी सबसे पहले अध्याय का नाम 'अल-फ़ातेहा' है। ़कुरान के अन्दर इस सूरत को "़कुरानल अज़ीम" (१५-८७) यानी 'बड़ा ़कुरान' कहा गया है। जिस तरह पूरी किताब को ़कुरान कहा जाता है उसी तरह ़कुरान के हर हिस्से को भी अलग अलग ़कुरान कहा जाता है। खुद मुहम्मद साहब इस सूरत को "उम्मुल ़कुरान" (़कुरान की माँ) कहा करते थे।* इस सूरत को आमतौर पर सारे ़कुरान का निचोड़ या लुब्बेलुबाब माना जाता है और हर मुसलमान अपनी नमाज़ों और दुआओं में इसे बार बार दोहराता है।

'अल फ़ातेहा' के माइने 'खुलना' या 'शुरू' हैं। सूरा अल-फ़ातेहा यह है—

"उस अल्लाह के नाम से जो रहमान और रहीम यानी मेहर करने वाला और दया करने वाला है।

* बुख़ारी

"तारीफ़ उस अल्लाह की जो सारी दुनिया का रब्ब यानी पालने वाला है।

"जो रहमान और रहीम है।

"जो उस दिन का मालिक है जिस दिन सबको अपने किये के फल भोगने होंगे।

"ऐ अल्लाह! हम तेरी ही इबादत (पूजा) करते हैं और तेरा ही सहारा ढूंढते हैं।

"तू हमें सीधे रास्ते पर ले चल।*

"जो उन लोगों का रास्ता है जिन्हें तू ने अपनी निआमतें यानी बरकतें दे रखी हैं।

"उन लोगों का नहीं जिनसे तू नाराज़ है और जो राह से भटके हुए हैं।" (१-१ से ७)

इसलाम के बुनियादी उसूल

"कह दो कि अल्लाह एक है, बाक़ी सब उसी के सहारे हैं। न वह कभी जन्म लेता है और न किसी को जनता है। उसके जैसा कोई दूसरा नहीं है।" (११२-१ से ४)

"यह किताब (क़ुरान) जिसमें कोई शक नहीं, उन लोगों के लिए जो बुराई से बचना चाहते हैं, रास्ता दिखाने वाली है,

"जो ग़ैब यानी परलोक में यक़ीन करते हैं, जो अल्लाह से दुआ मांगते रहते हैं और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें दिया है उसमें से ज़रूरत मन्दों को दान देते रहते हैं,

---

* अग्ने नय सुपथा—ऋग्वेद।

"और जो उस इल्म और हिदायत पर यक़ीन करते हैं जो तुमको अल्लाह से मिली है और जो कुछ मुहम्मद से पहले अल्लाह ने दूसरों को यानी दूसरे पैग़म्बरों और रसूलों को दिया है उस सब पर भी यक़ीन करते हैं और जो आख़िरत यानी मरने के बाद की ज़िन्दगी में यक़ीन रखते हैं।

"ये लोग ही अपने पालनहार की तरफ़ से ठीक रास्ते पर हैं और ये लोग ही फ़लाह यानी कल्याण पायेंगे।" (२-२ से ५)

अल्लाह और उसकी तारीफ़

"क्या तुम नहीं देखते कि आसमानों और ज़मीन के सब रहने वाले, यहाँ तक कि उड़ती हुई चिड़ियाँ भी उसी अल्लाह की तारीफ़ करती हैं? वह सब की दुआ और सब की स्तुति (हम्द) को सुनता है और जो कुछ वे करते हैं सब जानता है।

"अल्लाह ही आसमानों और ज़मीन का मालिक है और आख़ीर में सब को अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है।

"क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह बादलों को उड़ा कर ले जाता है, फिर उन्हें इकट्ठा करता है और जमा करता है, यहाँ तक कि उनसे मेह बरसता हुआ दिखाई देता है? वह पहाड़ जैसे बादलों को भेजता है जिनसे ओले गिरते हैं। जिन्हें वह चाहता है उन्हें उन ओलों से नुक़सान पहुंचता है और जिन्हें चाहता है नहीं पहुंचता। उसकी बिजली की दमक आँख को चकाचौंध कर देती है।

"अल्लाह ही रात से दिन और दिन से रात करता है। सचमुच जो लोग देख सकते हैं उन्हें इससे काफ़ी सबक़ मिल सकता है।

"अल्लाह ने पानी से सब जानदारों को बनाया है, इनमें कुछ पेट के बल रेंगते हैं, कुछ दो पैरों पर चलते हैं, और कुछ चार पैरों पर। अल्लाह जो चाहता है बनाता है, सचमुच वह सब चीज़ों पर समर्थ यानी क़ादिर है।" (२४-४१ से ४५)

'वही आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला है।…उसीने सब चीज़ों को बनाया है, वह सब चीज़ों को जानता है।

"वह अल्लाह ही तुम्हारा रब्ब (पालने वाला) है, उस एक के सिवाय कोई दूसरा अल्लाह नहीं है,* वही सब चीज़ों का बनाने वाला है, इसलिये उसी की पूजा करो। सब चीज़े उसी के बस में हैं।

"आंख उसे नहीं देख सकती पर वह सब आँखों को देखता है। वह बारीक से बारीक चीज़ को जानता है, वह सब कुछ जानता है।" (६-१०२ से १०४)

"अल्लाह वह है जिसके सिवाय कोई दूसरा अल्लाह नहीं है, वह हमेशा रहने वाला और ख़ुद अपने से क़ायम (यानी अनादि, अनन्त और स्वयंम्भू) है, और जितनी चीज़ें हैं उसी से क़ायम हैं, न उसे कभी नींद आती है और न सुस्ती, जो कुछ आसमानों और ज़मीन पर है सब उसी का है। जब तक उसका हुकुम न हो कोई उसके काम में दख़ल नहीं दे सकता, वह हमारे आगे और पीछे की सब चीज़ें जानता है और हम उसके ज्ञान के भंडार से सिर्फ़ उतना ही जान सकते हैं जितना वह चाहे, आसमान और ज़मीन सब उसके ज्ञान के क्षेत्र यानी उसकी मारफ़त के मैदान में शामिल हैं, वह इन

*एकमेवाद्वितीयम्—वह एक ही है दूसरा नहीं। उपनिषद।

सब को संभाले हुए है, वह कभी थकता नहीं. वह सब से ऊपर और सबसे बड़ा है।" (२-२५५)

"अल्लाह कहता है कि जब कभी मेरे बन्दे तुमसे मेरी बाबत पूछें तो कह दो कि मैं सचमुच उनके बहुत ही पास हूं, जब कभी कोई मुझसे किसी तरह की दुआ प्रार्थना करता है मैं उसका जवाब देता हूं, इसलिये लोगों को अल्लाह पर यक़ीन करना चाहिए और अल्लाह ही का हुक्म मानना चाहिए ताकि वह ठीक ठीक रास्ता जान सकें।" (२-१८६)

"सचमुच अल्लाह ही ने इनसान को बनाया है, इनसान के दिल में जो कुछ पैदा होता है अल्लाह सब जानता है, और आदमी की गरदन की रग (रगे जाँ) से भी अल्लाह उसके ज़्यादा नज़दीक है।" (५०-१६)

"आदमी पर जो कुछ मुसीबत आती है वह सब आदमी के अपने ही कामों की वजह से आती है, फिर भी अल्लाह बहुत कुछ माफ़ कर देता है।" (४२-३०)

"कह दो कि, ऐ अल्लाह के बन्दो ! जिन्होंने अपनी आत्माओं के साथ ज़्यादतियां की हैं, अल्लाह के रहम से निराश (मायूस) न हो, सचमुच अल्लाह सब क़सूर माफ़ कर देता है. अल्लाह माफ़ कर देने वाला और दयावान है।" (३९-५३)

"अल्लाह सब दया करने वालों से बढ़ कर दया करने वाला है।" (१२-६२)

' जो लोग भूल से बुराई कर जाते हैं, फिर पछताते हैं और अपने को सुधारते हैं, सचमुच अल्लाह उन्हें माफ़ कर देता है, और उन पर

रहम करता है।" (१६-११६)

"जो कोई बुराई करता है या अपनी आत्मा के साथ ज़ुल्म करता है, लेकिन फिर अल्लाह से माफ़ी माँगता है, वह अल्लाह को माफ़ कर देने वाला और दयावान पायगा।

"जो कोई पाप करता है, अपनी ही आत्मा के ख़िलाफ़ करता है, और अल्लाह सब जानता और समझता है।

"और जो कोई क़ुसूर या गुनाह करता है और फिर किसी दूसरे बेगुनाह पर उसका झूठा इलज़ाम लगाता है, वह ख़ुद अपने ऊपर तोहमत का बोझ लादता है और खुला पाप करता है।" (४-११० से ११२)

"जो कोई बुराई करने के बाद उस पर पछताता है और आगे के लिए अपने को सुधारता है, अल्लाह उस पर सचमुच रहम करेगा। क्योंकि सचमुच अल्लाह माफ़ कर देने वाला और रहम दिल है।" (५-३६)

"और इसमें कोई शक नहीं कि जो कोई अपने पिछले बुरे कामों पर पछताता है, और आइन्दा के लिए बात मान लेता है, और नेक काम करता है, और फिर ठीक रास्ते पर चलता रहता है अल्लाह उसे री तरह माफ़ कर देता है।" (१०-८२)

"और लोग तुमसे कहते हैं कि लोगों के साथ भलाई करने से पहले उन्हें (उनके पापों के बदले) सज़ाएँ दी जावें, और इसमें शक नहीं कि लोगों को अपने पापों की वह वह सज़ाएँ भुगतनी पड़ी हैं जो दूसरों के लिए एक मिसाल हैं, पर इसमें कोई शकनहीं कि तुम्हारा रब्ब इन्सानों को माफ़ कर देने वाला रब्ब है। जो गुनाह करके

अपने ऊपर ज़ुल्म करते हैं उनके लिए भी, वह अल्लाह माफ़ कर देने वाला है, और इसमें शक नहीं कि अल्लाह बदला लेने में भी तेज़ है।" (१३-६)

"और अल्लाह माफ़ कर देने वाला और प्यार करने वाला है।" (८५-१४)

"अल्लाह हक़ यानी सत्य है।" (२२-६२)

"अल्लाह आसमानों और ज़मीन का नूर यानी रोशनी है। उसके नूर की मिसाल एक ऐसे खम्भे की सी है जिस पर एक दिया बल रहा है, दिया एक शीशे के अन्दर है, वह शीशा एक ज़ोरों से चमकते हुए तारे की तरह है, वह एक ऐसे मुबारक ज़ैतून के तेल से बल रहा है, जो न पूरब का है और न पच्छिम का, जिसका तेल बिना आग के रोशनी देता है, अल्लाह नूरों का भी नूर है,* अल्लाह जिसे चाहता है अपने नूर की तरफ़ ले जाता है और अल्लाह लोगों को मिसालों से तालीम देता है। और अल्लाह सब चीज़ों को जानता है।" (२४-३५)

"जिधर भी तुम मुँह करो उधर ही अल्लाह का मुँह है।"† (२-११५)

"धरती के ऊपर जितने दरख़्त हैं उन सब के क़लम बना लिए जावें और सात समुद्र मिलकर स्याही बन जाए, और उनसे लिखा जावे तो भी अल्लाह की बातें ख़त्म नहीं हो सकतीं, सचमुच

---

*ज्योतिषामपि तज्ज्योतिः—वह रोशनियों की भी रोशनी है—गीता

† विश्वतोमुखम्—उसके सब तरफ़ मुँह हैं—गीता

अल्लाह बड़ा और सब कुछ जानने वाला है। (३१-२७)

"नरमी के साथ और डरते हुए, और नीची आवाज़ में सुबह और शाम अपने अन्दर अपने रब्ब को याद करो, और बेख़बर मत हो।" (७-२०५)

"और दिन के दोनों हिस्सों में, (सुबह और शाम) और रात के शुरू के घण्टों में अल्लाह से दुआ माँगो। सचमुच अच्छे कामों से बुरे काम कट जाते हैं। जो लोग ख़याल रखते हैं, उन्हें यह याद दिलाने के लिए है।

"और सब्र करो यानी धीरज रखो, क्योंकि जो लोग दूसरों के साथ नेकी करते हैं उनकी नेकी के फल को सचमुच अल्लाह कभी ज़ाया (नष्ट) होने नहीं देता।" (११-११४, ११५)

सब इनसान एक क़ौम हैं

"सब इनसान एक ही 'वाहिद उम्मत' यानी एक ही क़ौम हैं।" (२-२१३)

"और तमाम इनसान इसके सिवा और कुछ नहीं हैं कि सब एक ही 'वाहिद उम्मत' (एक ही क़ौम) हैं। (१०-१९)

"सचमुच तुम सब इनसानों की यह एकही .क़ौम* है और एक ही अल्लाह तुम सब का रब्ब है। इसलिए सब उसी की पूजा इबादत करो। लोगों ने काट काट कर अपने टुकड़े (अलग अलग गिरोह) बना रखे हैं। पर सब को एक ही अल्लाह के पास जाना है।" (२१-९२, ९३)

***अरबी लफ़्ज़ 'उम्मत' के माइने 'क़ौम' और 'मज़हब' दोनों होते हैं, और यहां दोनों माइने लिये जाते हैं।**

"धरती पर चलने वाले जितने जानवर हैं और हवा में उड़ने वाले जितने पंछी हैं सब आदमी ही की तरह एक एक उम्मत यानी एक एक क़ौम हैं। हमने इस किताब में किसी को भुलाया नहीं है। आख़ीर में सब को उसी एक अल्लाह के पास जाना है।" (६-३८)

सब मज़हब एक हैं

'इसमें कोई शक नहीं कि चाहे वे लोग हों जो ईमान लाए हैं यानी मुसलमान और चाहे वे हों जो यहूदी हैं, या वे हों जो ईसाई हैं, या वे हों जो साबी* हैं, या चाहे कोई भी क्यों न हो, जो कोई भी अल्लाह को मानता है, और आख़रत में यानी अपने कर्मों के फल में यक़ीन करता है और नेक काम करता है, उन सब को अपने रब्ब से फल मिलेगा, उन्हें न किसी बात का डर है और न किसी तरह का अफ़सोस होगा।" (२-६२ ; ५-६६)

"यहूदी कहते हैं कि सिवाय यहूदियों के और कोई जन्नत में नहीं जा सकता, ईसाई कहते हैं कि सिवाय ईसाई के कोई जन्नत में नहीं जा सकता, ये सब इन लोगों के भूठे वहम हैं। इनसे कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो (अपनी ही मज़हबी किताबों से) सबूत निकाल कर दिखाओ।

"नहीं, जिस किसी ने अपने आपको अल्लाह की मरज़ी पर छोड़ दिया है और जो दूसरों के साथ नेकी करता है, उसे अपने रब्ब

*उस ज़माने का एक मज़हब जिसके मानने वाले एक अल्लाह को मानते थे और उस अल्लाह का ज़हूर समझ कर सूरज और चांद की पूजा करते थे।

से फल मिलेगा, उसे न किसी बात का डर है और न किसी तरह का ग़म होगा।" (२-१११,११२)

"और इसमें शक नहीं तुमसे (मुहम्मद साहब से) पहले भी हमने (अल्लाह ने) दुनिया में रसूल भेजे हैं......हर ज़माने के लिए अलग अलग किताबें हैं, अल्लाह जिसे चाहता है मनसूख़ कर देता है और जिसे चाहता है क़ायम कर देता है। और इन सब मज़हबी किताबों की असली माँ—'उम्मुल किताब'—अल्लाह ही के पास है।" (१३-३८, ३९)

"हर नबी जो पैग़ाम (सन्देश) लाकर देता है उस सन्देशे के लिए एक मियाद मुक़र्रर है, जिसका तुम्हे पता लग जावेगा।" (६-६७)

"ऐ आदम की औलाद (आदमियों) ! अगर तुम में से कोई 'रसूल' पैदा हों और तुम्हें अल्लाह का पैग़ाम आकर सुनावें, तो (तुम्हें कोई डर नहीं)। जो कोई भी बुरे कामों से बचेगा और नेक काम करेगा, उसे न किसी बात का डर होगा और न कोई ग़म होगा।" (७-३५)

"और हर उम्मत या हर .कौम में 'रसूल' हुए हैं।" (१०-४७)।

"हर क़ौम में धर्म का रास्ता बताने वाले पैदा हुए हैं।" (१३-७)

ऐ मुहम्मद 'सचमुच अल्लाह ने तुम्हें हक़ (सचाई) के साथ भेजा है ताकि तुम लोगों को अच्छे कामों के बदले में .ख़ुश ख़बरी दो और बुरे कामों के नतीजे से आगाह करो, और कोई क़ौम ऐसी नहीं है जिसमें इसी तरह बुरे कामों के नतीजों से आगाह करने

वाला कोई न कोई रसूल नहीं भेजा गया।" (३५-२४)

"और सचमुच हमने तुमसे पहले सब पुरानी क़ौमों में रसूल भेजे हैं।" (१५-१०)

"और सचमुच हमने हर क़ौम में रसूल पैदा किये हैं, जिन्होंने लोगों को यही नसीहत की है कि अल्लाह की इबादत करो और शैतान (बुराई) से बचे रहो।" (१६-३६)

"इसमें कोई भी शक नहीं कि तुमसे पहले अल्लाह ने सब क़ौमों में रसूल भेजे हैं।" (१६-६३)

"और जो रसूल जिस क़ौम में भेजा गया है, वह उसी क़ौम की ज़बान में पैग़ाम देकर भेजा गया है, ताकि उन्हें साफ़ साफ़ समझा सके।" (१४-४)

"कह दो कि हम अल्लाह को मानते हैं, और जो ज्ञान अल्लाह ने हमें दिया है (यानी क़ुरान) उसे मानते हैं, और उस सब ज्ञान या उन सब किताबों को भी मानते हैं जो अल्लाह ने इब्राहीम की मार्फ़त, इस्माईल की मार्फ़त, इसहाक़ की, याक़ूब की, और क़ौमों की, मूसा की, ईसा की और दूसरे दूसरे नबियों की मार्फ़त दुनिया को दी हैं। इन सब पैग़म्बरों में हम किसी क़िस्म का फ़रक़ नहीं करते, और हमने अपने को अल्लाह ही की मरज़ी पर छोड़ रखा है।" (२-१३६)

"रसूल (मुहम्मद साहब) उसज्ञान को मानता है जो उसके रब्ब ने उस पर उतारा है। जो लोग रसूल को मानते हैं वे सब भी उस ज्ञान को मानते हैं। वे सब एक अल्लाह को मानते हैं, उसके फ़रिश्तों (उसकी अलग अलग ताक़तों) को मानते हैं, सब इलहामी यानी

ईश्वरीय किताबों को मानते हैं और ईश्वर के भेजे हुए सब रसूलों को मानते हैं। इन रसूलों में हम किसी के साथ किसी तरह का फ़रक़ यानी भेद भाव नहीं करते।···ऐ हमारे रब्ब! हम तुझसे ही माफ़ी चाहते हैं, आख़ीर में सब को तेरे ही पास जाना है।" (२-२८५)

"ऐ मुहम्मद! तुम्हें किताब में से (यानी उस पूरे ज्ञान में से जो अल्लाह के पास है) जो कुछ दिया गया है उसे पढ़ो, और दुआ मांगते रहो। सचमुच दुआ आदमी को गन्दी बातों से और बुराई से दूर रखती है। और सचमुच अल्लाह को याद करना बहुत बड़ी बात है, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह जानता है।

"और जिन लोगों के पास दूसरी मज़हबी किताबें हैं उनसे बहस न करो, अगर करो तो बहुत ही मिठास के साथ करो, उन्हें छोड़ो जो ज़ुल्म करते हैं। और उनसे कहो कि हम उस किताब में यक़ीन करते हैं जो हमें दी गई है और उन किताबों में भी यक़ीन करते हैं जो तुम्हें दी जा चुकी हैं, और हमारा और तुम्हारा अल्लाह एक ही है और उसी के हम 'मुसलिम'* हैं, यानी उसी की मरज़ी पर हमने अपने को छोड़ दिया है।" (२९-४५, ४६)

---

*'मुसलिम' और 'इसलाम' दोनों लफ़्ज़ क़ुरान में तरह तरह से और बार बार आते हैं। इसलाम शब्द 'सलम' से है, जिसके माइने 'गर्दन झुकाना' या अपने को किसी की मरज़ी पर छोड़ देना' है। 'इसलाम' के माइने हैं 'अपने को पूरी तरह ईश्वर की मरज़ी पर छोड़ देना'। 'मुसलमान' या 'मुसलिम' के माइने हैं, 'वह जिसने अपने को पूरी तरह ईश्वर की मरज़ी पर छोड़ दिया

अगले पिछले दुनिया भर के सब मुल्कों और सब ज़मानों के रसूलों को सामने रख कर क़ुरान में अल्लाह ने कहा है—

"ऐ रसूलो ! पाक चीज़ें खाओ, और नेक काम करो, सचमुच जो कुछ तुम करते हो अल्लाह सब जानता है।

"सचमुच तुम्हारे ये सब अलग अलग मज़हब या क़ौमें एक ही मज़हब और एक ही क़ौम (उम्मतुं वाहेदह) हैं और तुम्हारा सब का एक ही रब्ब है। इसलिए उसी एक ईश्वर का ख़याल रखो।

"लेकिन लोगों ने आपस में अपने दीन के अलग अलग टुकड़े कर डाले और हर गिरोह जो कुछ उसके अपने पास है उसी में फूला है।

"यह बड़ी भारी नासमझी है ······ ।" (२३-५१ से ५४)

हो'। इन्हीं माइनों में 'इसलाम' और 'मुसलिम' शब्द बार बार क़ुरान में आए हैं (३-१९वग़ैरह)। इन्हीं माइनों में क़ुरान ने जगह जगह हज़रत मुहम्मद से पहले के सब दूसरे पैग़म्बरों के धर्मों को 'इसलाम' और उनके मानने वालों को 'मुसलिम' या 'मुसलमान' कह कर पुकारा है (२२-७८ वग़ैरह)।

कुछ लोग 'इसलाम' लफ़्ज़ को 'सलाम' से भी जोड़ते हैं, जिसके माइने 'शान्ति' या 'अमन' हैं। क़ुरान में 'सलाम' शब्द इन माइनों में एक जगह आया है (१०-२५)। लेकिन इसलाम मज़हब के माइने क़ुरान के मुताबिक़ अल्लाह के हुकुम के सामने सर झुकाना, अपने को ईश्वर के अर्पण कर देना यानी उसकी मरज़ी पर छोड़ देना ही है।

"सचमुच जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों को नहीं मानते, और जो अल्लाह और उसके रसूलों में फ़रक़ करना चाहते हैं, और कहते हैं कि हम कुछ रसूलों को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते, और इनके बीच से अपना एक अलग ही रास्ता बना लेना चाहते हैं, सचमुच ये लोग ही सच्चे 'काफ़िर' (नाशुकरे, काफ़िरूने हक़्क़ा) हैं और अल्लाह ने इन क़ाफ़िरों के लिए ज़िल्लत की सज़ा तय कर रखी है।" (४-१५०,१५१)

"ऐ मुहम्मद ! सचमुच अल्लाह ने उसी तरह तुम्हें वही (ईश्वर प्रेरणा) के ज़रिये ज्ञान दिया है जिस तरह नूह को और उनके बाद के दूसरे नबियों को दिया था। उसी तरह अल्लाह ने इब्राहीम, इस्माईल, इसाक़, याक़ूब और 'क़ौमों' और ईसा और अयूब और यूनिस और हारून और सुलेमान को ज्ञान दिया था, और उसी तरह दाऊद को ज़बूर* दी थी।

"और अल्लाह ने दुनिया में जो बहुत से रसूल भेजे हैं उनमें से कुछ का ऊपर .कुरान में तुम्हें हाल सुनाया है और कुछ का नहीं सुनाया।" (४-१६३, १६४)

"और इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह ने तुमसे (मुहम्मद साहब से) पहले भी सब क़ौमों में रसूल भेजे हैं।" (६-४२)

"और अल्लाह ने जो भी रसूल भेजे वह इसीलिए भेजे कि लोगों को अच्छे कामों के बदले में अच्छे फल की .खुशख़बरी दें और बुरे कामों के बुरे नतीजों से आगाह करें। फिर जो कोई बात मान ले और नेक काम करे उसे न कोई डर है और न कोई ग़म।" (६-४८)

*एक मज़हबी किताब का नाम।

"और सचमुच तुमसे पहले भी अल्लाह ने रसूल भेजे हैं। उनमें से कुछ का तुमसे (क़ुरान में) ज़िक्र किया गया है और कुछ का तुमसे ज़िक्र नहीं आया।" (४०-७८)

"सचमुच जिन लोगों ने दीन के टुकड़े टुकड़े कर डाले और जो अपने अपने अलग अलग मज़हब या गिरोह बनाकर बैठ गए हैं उनसे तुम्हारा कोई सरोकार नहीं, अल्लाह ही उनका फ़ैसला करेगा, वही उन्हे बताएगा कि उन्होंने क्या किया।" (६-१६०)

"यह (क़ुरान) वह हक़ (सचाई) है जो अपने से पहले की मज़हबी किताबों की तसदीक़ करता है, यानी उन सब को सच बताता है।" (२-९१)

"क़ुरान अपने से पहले की मज़हबी किताबों की तसदीक़ करता है।" (२-९७)

"अल्लाह ने किताब (अपने पास के असल ज्ञान) में से जो कुछ ज्ञान तुम्हें (मुहम्मद साहब को) वही (ईश्वर प्रेरणा) के ज़रिये दिया है वह वह हक़ है जो अपने से पहले की धर्म पुस्तकों की तसदीक़* करता है।" (३५-३१)

---

*ठीक जिस तरह क़ुरान में अपने से पहले के सब धर्मों को 'इसलाम' और उनके मानने वालों को 'मुसलमान' कहा गया है, उसी तरह क़ुरान में क़ुरान से पहले की मज़हबी यानी ईश्वरी किताबों को भी 'क़ुरान' नाम दिया गया है और उन लोगों को, जिन्होंने इन सब ईश्वरी किताबों को अलग अलग करके ईश्वरी ज्ञान के 'टुकड़े टुकड़े कर डाले', 'मुक़्तसेमीन' यानी 'फूट डालने वाले' कहा गया है। (१५-९०, ९१)

"मुहम्मद सचाई को लेकर आया है और उसने अपने से पहले के सब रसूलों की तसदीक़ की है (उन्हें सच्चा ठहराया है) ।" (३७-३७)

"और तुम्हें (मुहम्मद साहब को) कोई ऐसी बात नहीं कही गई जो सचमुच तुमसे पहले के रसूलों को न कही गई हो ।" (४१-४३)

"और यह किताब (.कुरान) जो अपने से पहले की किताबों को सच बताती है, अरबी ज़बान में है, इसलिए ताकि ये (अरब) लोग जो .ज़ुल्म करते हैं उन्हें (इसके बुरे नतीजे से) आगाह कर दे और जो नेकी करते हैं उन्हें .ख़ुश ख़बरी दे। सचमुच जो लोग भी कहते हैं कि अल्लाह हमारा रब्ब है और नेकी पर क़ायम रहते हैं, उन्हें न कोई डर है और न कोई ग़म ।" (४६-१२, १३)

"और अगर हमने यह .कुरान किसी दूसरी ज़बान में कर दी होती तो ये लोग ज़रूर कहते कि इसकी आयतें हमारे लिए साफ़ क्यों नहीं की गईं, यह क्या बात है, हम अरब आदमी और दूसरे मुल्क की ज़बान ? कहदो, कि जो लोग मान लें उनके लिए यह किताब रास्ता दिखाने वाली और उनके रोगों का इलाज है ।" (५१-४४)

"अल्लाह ने तुम्हें (रसूलुल्लाह को) .कुरान अरबी ज़बान में इसलिए दिया है ता कि तुम ख़ास शहर मक्का और उसके आस पास के लोगों को आगाह कर सको ।" (४२-७)

"सचमुच हमने (अल्लाह ने) इस .कुरान को अरबी में इसलिए उतारा है ताकि तुम लोग (अरब) इसे अच्छी तरह समझ सको ।" (४३-३)

"अल्लाह ने तुम्हारी ज़बान में इसे आसान कर दिया है ताकि ये अरब लोग ख़याल रखें।" (४४-५८)

"सचमुच यह (.कुरान) 'रसूल-ए-करीम' (एक बुज़ुर्ग रसूल) का कहा हुआ है।

"यह किसी शायर (कवि) के शब्द नहीं हैं, तुम नहीं मानते !

"और न यह किसी जादूगर के शब्द हैं, तुम परवाह नहीं करते !

"यह ज्ञान उस अल्लाह की तरफ़ से आया है जो सब दुनियाओं का मालिक है।" (६९-४० से ४३)

"इसमें कोई शक नहीं यह .कुरान उस रसूल-ए-करीम का क़ौल है।

"जो ताक़त वाला है, जिसके लिए आसमान के मालिक अल्लाह के यहां इज़्ज़त की जगह है।

"जिसका कहना मानना चाहिए, जो 'अमीन' (भरोसे वाला) है।

"और ऐ लोगो ! तुम्हारा साथी (रसूलुल्लाह) पागल नहीं है।" (८१-१९ से २२)

"इसलिए ऐ मुहम्मद ! सब्र करो, इसमें शक नहीं अल्लाह का वादा सच्चा साबित होगा। अपनी ग़लती के लिए अल्लाह से माफ़ी मांगो और सुबह और शाम अपने रब्ब की 'हम्द' (तारीफ़ यानी स्तुति) करो।" (४०-५५)

"इसलिए ऐ मुहम्मद ! जानो कि सिवाय उस एक के और कोई अल्लाह नहीं है; और उससे अपनी ग़लती के लिए और जो मर्द और औरत तुम्हारी बात पर चलते हैं उन सब की ग़लतियों के लिए

माफ़ी मांगो और अल्लाह जानता है कि तुम कहाँ रहते हो और कहाँ जाते हो।" (४७-१९)

"सचमुच अल्लाह ने तुम्हें (मुहम्मद साहब को) साफ़ फ़तह दी है, ताकि अल्लाह तुम्हारी अगली और पिछली सब ग़लतियों को माफ़ कर दे और तुम पर अपनी निआमतों और बरकतों को पूरा करे और तुम्हें सीधे रास्ते पर ले चले और तुम्हें बहुत बड़ी मदद दे।" (४८-१ से ३)

"ऐ ईमान वालो! रोज़े रखना तुम्हारा फ़र्ज़ बताया गया है, जिस तरह तुमसे पहले के लोगों को भी बताया गया था। यह इसलिए है ताकि तुम बुराई से बचे रहो।

"कुछ दिन तक (जो मुक़र्रर हैं रोज़े रखो), लेकिन तुममें से जो कोई बीमार हो या सफ़र में हो, वह उन दिनों की जगह उतने ही दिन कभी और रोज़े रख ले, और जो कोई कर सके, वह रोज़ा रखने की जगह किसी ग़रीब आदमी को खाना खिला कर रोज़े से छुटकारा पा सकता है। इसलिए अगर कोई अपने आप दूसरों की भलाई का काम करे तो उसके लिए ज़्यादा अच्छा है और अगर तुम समझो तो तुम्हारे लिये रोज़े रखना ज़्यादा अच्छा है।" (२-१८३, १८४)

"अल्लाह ने तुम पर (मुहम्मद साहब पर) यह किताब (.कुरान) उतारी है जो सच्ची है। यह उन किताबों को सच्चा ठहराती है जो इस से पहले आ चुकी हैं और जो सब उस असली किताब (ज्ञान) में से ली गई हैं (जो अल्लाह ही के पास है)। यह किताब (.कुरान) उन सब अपने से पहले की किताबों की हिफ़ाज़त करती है। इसलिए अल्लाह ने जो कुछ ज्ञान तुम्हें दिया है उसी से उनके बीच .फ़ैसला

करो और लोगों के वहमों में पड़कर उस सचाई से न फिरो जो तुम पर उतरी है। अल्लाह ने हरेक के लिए अलग अलग शरअ और मिनहाज (रीत रिवाज और पूजा के तरीक़े) बना दिये हैं। अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही फ़िरक़ा (एक ही रस्म रिवाज के मानने वाले) बना देता। लेकिन अल्लाह चाहता था कि जिसको जो तरीक़ा बता दिया है उसी में उसको परखे। इसलिए (इन फ़रक़ों में न पड़कर) दूसरों की भलाई के कामों में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करो। सब को अल्लाह ही के पास लौट कर जाना है। तब जिन बातों में तुममें फ़रक़ है वह अल्लाह तुम्हें समझा देगा।" (५-४८)

"और अल्लाह यह नहीं करता कि जब तक कोई लोग नेक काम करते रहें तब तक सिर्फ़ उनके ग़लत अक़ीदों यानी ग़लत विश्वासों या मानताओं की वजह से उन्हें बरबाद करे, अगर अल्लाह चाहता तो सब लोगों को एक ही से मज़हबी अक़ीदे के मानने वाले बना देता, लेकिन इन बातों में लोगों में फ़रक़ रहेगा।" (११-११७, ११८)

धर्म में ज़बरदस्ती की मनाही

"मज़हब के मामले में कोई ज़बरदस्ती नहीं होनी चाहिये।" (२-२५६)

"तुम्हारा रब्ब अगर चाहता तो सचमुच दुनिया भर के सब आदमी तुम्हारी बात मान लेते। तो क्या तुम लोगों के साथ ज़बरदस्ती करोगे कि वह तुम्हारी बात मान लें!" (१०-९९)

"ऐ मुहम्मद ! तुम्हारे रब्ब ने तुमपर जो ज्ञान उतारा है तुम उसी पर चलो, यह कि सिवाय उस एक अल्लाह के दूसरा कोई अल्लाह नहीं है और जो लोग किसी दूसरे (देवी देवताओं या मूर्तियों) की पूजा करते हैं उन्हें छोड़ो।

"अगर अल्लाह चाहता तो वे भी सिवा एक अल्लाह के किसी दूसरे की पूजा न करते। हम (अल्लाह) ने, तुम्हें उनके ऊपर 'हफ़ीज़' या 'वकील' 'चौकीदार या ठेकेदार', बना कर नहीं भेजा है।

"और अल्लाह के सिवा जिन (देवी देवताओं मूर्तियों वग़ैरह) की, वे पूजा करते हैं उन्हें बुरा मत कहो, ताकि हद से बढ़कर कहीं वे भी नादानी की वजह से अल्लाह को बुरा न कहने लगें। अल्लाह ने ऐसा कर दिया है कि सब लोगों को अपने ही काम अच्छे लगते हैं। आख़ीर में सब अपने उसी रब्ब के पास लौटकर जायँगे और अल्लाह उन सब को समझा देगा कि उन्होंने क्या क्या किया।" (६-१०७ से १०९)

"उस अल्लाह के नाम पर जो रहमान और रहीम है।

"ऐ मुहम्मद ! काफ़िरों* से (उन लोगों से जो तुम्हारी बात नहीं मानते) कह दो कि—

---

*'काफ़िर' शब्द अरबी कुफ़्र से बना है, जिसके माइने हैं—(१) ढकना, (२) झूठ समझना या न मानना, और (३) नाशुकरी करना यानी बेक़दरी करना। काफ़िर के माइने हैं—(१) वह आदमी जो किसी की बात मानने से इनकार करे, (२) वह जो ईश्वर की दया और उसकी देन के लिए शुक्रगुज़ार न हो, और

"मैं उसकी पूजा नहीं करता जिसकी तुम करते हो।
"न तुम उसकी पूजा करते हो जिसकी मैं करता हूँ।
"न मैं उसकी पूजा करूँगा जिसकी तुम करते हो।
"न तुम उसकी पूजा करोगे जिसकी मैं करता हूँ।

---

(२) काफ़िर अरबी में किसान यानी खेती करने वाले को भी कहते हैं क्यों कि किसान बीज को मट्टी से 'ढकता' है। ('ग़रीबुल क़ुरान'—मिरज़ा अबुल फ़ज़्ल; 'लुग़ातुल क़ुरान' —मौलवी मुहम्मद ख़लील)।

क़ुरान में यह शब्द कहीं न कहीं इन सब माइनों में इस्तेमाल किया गया है। आम तौर पर यह अरब के उन लोगों के लिए आया है, जो मुहम्मद साहब की "बात न मानते थे।"

एक जगह क़ुरान में तमाम इन्सानी क़ौम की तरफ़ इशारा करते हुए कहा गया है—

"अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को बनाया और बादलों से पानी बरसाया, फिर उसी से तुम्हारे खाने के लिए ज़मीन पर फल पैदा किये, और तुम्हें जहाज़ दिये ताकि वे समन्दर में अल्लाह के हुकुम से चलें, और नदियों को आदमियों के लिए काम का बनाया, और सूरज और चाँद को जो अपने अपने रास्ते पर चलते रहते हैं और रात और दिन को, सब को, तुम्हारे लिए फ़ायदे का बनाया। तुम जो माँगते हो वह सब अल्लाह देता है। तुम अगर अल्लाह की दी हुई नियामतों को गिनना चाहो तो गिन नहीं सकते, पर इसमें शक नहीं कि इनसान बड़ा 'ज़ुल्म' (बेइन्साफ़ी) करने वाला और बड़ा 'काफ़िर' (नाशुकरा) है।" (१४-३२ ३३, ३४)

"इसलिए तुम्हारा दीन तुम्हारे लिए और मेरा दीन मेरे लिए।" (१०९-१ से ६)

इन आयतों में और इसी तरह कुछ और आयतों में भी (१७-६७) तमाम इन्सानों को आमतौर पर 'काफ़िर' कहा गया है। काफ़िर के माइने यहाँ पर 'नाशुकरा' यानी 'अल्लाह की दी हुई नियामतों की क़द्र न करने वाला' हैं।

कहीं कहीं उन यहूदियों के लिए भी जो एक अल्लाह को और अपनी धर्म की किताब 'तौरेत' को मानते थे, पर जो अपने मज़हब की असली तालीम से भटक गए थे, इन्हीं माइनों में 'काफ़िर' शब्द इस्तेमाल किया गया है। (१७-८)

एक जगह पर अल्लाह अपने बारे में कहता है कि—

"जो कोई भी नेक काम करेगा और ईमान लायगा उसकी कोशिशों के साथ हम 'कुफ़्र' नहीं करेंगे यानी उसकी नेकी की कोशिशों को ढकेंगे या भुलावेंगे नहीं। और सचमुच जितनी भी कोशिश वह करेगा वह उसके नेक कामों में लिख ली जावेगी।" (२१-९४)

ठीक इन्हीं माइनों में गीता में कहा गया है कि—"नेकी के इस रास्ते पर आदमी की थोड़ी से थोड़ी कोशिश भी फ़ज़ूल नहीं जा सकती" २-४०)।

.कुरान में एक दूसरी जगह अल्लाह कहता है कि—

"जो लोग ईमान (यक़ीन) लायेंगे और नेक काम करेंगे हम सचमुच उनके पिछले बुरे कामों के साथ 'कुफ़्र' करेंगे (यानी उनकी

नीचे की दो आयतें उस ज़माने की हैं जब कि अरब में मुसलमानों और ग़ैर-मुसलमानों के बीच दुश्मनी हद को पहुँची हुई थी और बराबर लड़ाइयां जारी थीं—

पिछली ग़लतियों को ढक देंगे, यानी माफ़ कर देंगे)……।" (२६-७)

यहां पर भी 'कुफ़्र' के माइने ढक देने (अंगरेज़ी-Cover) भुला देने या माफ़ कर देने के हैं। और यह शब्द ईश्वर के लिए इस्तेमाल किया गया है।

कहीं कहीं ख़ुद उन लोगों के मुंह से जो मुहम्मद साहब या दूसरे रसूलों की बात न मानते थे यह कहलाया गया है कि "जो कुछ तुम (रसूल) कहते हो उसकी तरफ़ से हम 'काफ़िर' हैं (यानी हम उसे नहीं मानते)।" (३४—३४)

एक जगह पर उन लोगों को "जो अल्लाह के पैग़म्बरों में से किसी को मानते हैं और किसी को नहीं मानते यानी उनमें फ़रक़ करते हैं "काफ़ेरून हक्क़ा" यानी 'सचमुच काफ़िर' कहा गया है। (४—१५०, १५१)

एक जगह क़ुरान में 'काफ़िर' लफ़्ज़ किसान के माइनों मे भी आया है। (५७—२०)

आमतौर पर 'काफ़िर' शब्द से क़ुरान में उन अरबों से मतलब है जो मुहम्मद साहब की बातें मानने से इनकार करते थे, या उन लोगों से 'जो अल्लाह की देन यानी बरकतों से इनकार करते थे।'

"अल्लाह तुम से यह नहीं कहता कि जो ग़ैर-मुसलमान तुम्हारे मज़हब की वजह से तुम से लड़ते नहीं हैं और जिन्होंने तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला, उनके साथ तुम मुहब्बत का बर्ताव न करो या इनसाफ़ न करो। सचमुच अल्लाह उन्हें ही प्यार करता है जो सबके साथ इनसाफ़ करते हैं।

"अल्लाह का सिर्फ़ यह हुकुम है कि जिन लोगों ने तुम्हारे मज़हब की वजह से तुमसे लड़ाई शुरू कर दी है, और जिन्होंने तुम्हें ज़बरदस्ती तुम्हारे घरों से निकाल दिया है, या दूसरों को तुम्हें निकाल देने में मदद दी है, उनसे जाकर न मिल जाओ, जो उनसे जाकर मिल जाता है, वह ज़ुल्म करता है।" (६०-८, ९)

"जिन लोगों ने तुम्हारी (मुहम्मद साहब की) बात मान ली है, उनसे कहो कि वे उन लोगों को माफ़ कर दें, जिन्हें उस दिन का डर नहीं है जिस दिन वे अल्लाह के सामने जावेंगे। अल्लाह सब को उनके कामों का फल देगा।

"जो नेकी करेगा सो अपने लिए और जो बुराई करेगा सो भी अपने लिए, आख़ीर तुम सब को अपने रब्ब ही के पास जाना है।" (४५-१४, १५)

सब तरफ़ अल्लाह है

"पूरब और पच्छिम दोनों अल्लाह के हैं, इसलिए जिधर भी तुम मुड़ो उधर ही अल्लाह का मुँह है, सचमुच अल्लाह ख़ूब देने वाला और सब कुछ जानने वाला है।" (२-११५)

पैग़म्बर होने के बाद मुहम्मद साहब १३ बरस मक्के में

रहे और उपदेश देते रहे। जब तक वे मक्के में थे तब तक नमाज़ में मुँह करने की कोई ख़ास सिम्त मुक़र्रर न थी। मदीने में पहुँचने के बाद बहुत दिनों तक वह उत्तर की तरफ़, जिधर यहूदियों और ईसाइयों का पाक शहर यरुसलम था, मुँह करके नमाज़ पढ़ाते रहे। क़रीब १६ महीने बाद उन्होंने उत्तर की जगह दक्खिन की तरफ़ यानी जिधर मक्का और काबा था मुँह करके नमाज़ पढ़ाना शुरू कर दिया। कुछ लोगों ने इस तबदीली पर एतराज़ किया। इसपर क़ुरान की यह आयत उतरी—

"नासमझ लोग पूछेंगे कि ये लोग जिस तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ा करते थे, उसे इन्होंने क्यों बदल दिया। इनसे कह दो कि पूरब और पच्छिम सब अल्लाह ही के हैं। वह जिसको चाहता है उसे सीधे रास्ते पर ले चलता है।" (२-१४२)

"धर्म या नेकी इसमें नहीं है कि तुमने अपने मुँह (नमाज़ के वक्त) पूरब की तरफ़ कर लिये या पच्छिम की तरफ़। धर्म यह है कि आदमी अल्लाह को माने, आख़िरत यानी कर्मों के फल को माने, फ़रिश्तों* को माने, सब मज़हबी किताबों और सब नबियों या रसूलों

---

* 'मलक' यानी फ़रिश्तों और 'शैतान' दोनों का क़ुरान में कई जगह ज़िक्र आता है। अकसर लोग यह भी मानते हैं कि फ़रिश्ते और शैतान अलग योनियां या हस्तियां हैं। कई जगह क़ुरान में 'शैतान' लफ़्ज़ मामूली बुरे आदमियों के माइनों में आया है (२१-८२; २२-३)। क़ुरान की तफ़सीर (टीका) लिखने वाले कई आलिम मुसलमानों की राय है कि फ़रिश्तों से

को माने, अल्लाह के प्रेम के नाते यानी उसके नाम पर अपने माल और दौलत में से अपने नातेदारों को, यतीमों को, ज़रूरतमन्दों को, रास्ते चलतों को और मांगने वालों को दान दे, और ग़ुलामों को आज़ाद कराने में अपनी दौलत ख़र्च करे, अल्लाह से दुआ मांगता रहे, ज़कात (अपने कुल माल का कम से कम ४० वां हिस्सा हर साल अल्लाह के नाम पर ग़रीबों को ख़ैरात) देता रहे, जब कभी किसी से वादा करे तो उसे पूरा करे, और मुसीबतों में, तकलीफ़ में, और सख़्ती के दिनों में सब्र करे—जो लोग ऐसा करते हैं वे ही सच्चे हैं और वे ही मुत्तक़ी यानी परहेज़गार हैं।" (२-१७७)

मतलब आदमी के दिल के अन्दर के नेक रुझानों (अच्छी प्रवृत्तियों) से और शैतानों से मतलब आदमी के अन्दर के बुरे रुझानों से है। मिसाल के तौर पर मशहूर तुर्क विद्वान महमूद मुहतार पाशा लिखता है—

"क़ुरान में फ़रिश्तों से मतलब आदमी के दिल के अन्दर के ऊंचे भावों (जज़बों) और इख़लाक़ी रुझानों से है। ये रुझान असलीयत में अल्लाह ही से हैं, क्यों कि क़ुरान के मुताबिक़ हर तरह की ताक़त ईश्वर ही में है और उसी से पैदा होती है। लिखा है कि आदमी के अन्दर जब रूहानी ताक़त जाग जाती है और काम करने लगती है तो फ़रिश्ते भी आदमी को सिजदा करने लगते हैं। इसका मतलब यह है कि आदमी की रूहानी यानी ऊंचे दरजे की ताक़त के सामने उसके ये सारे नेक रुझान झुक जाते हैं और आदमी जिस तरह चाहता है ये चलने लगते हैं। शैतान की बाबत क़ुरान में कहा

मदीने के पास एक पहाड़ी जगह क़ुबा है। मक्के से मदीने जाते हुए मुहम्मद साहब और उनके साथी कुछ दिन वहां ठहरे थे। क़ुबा में थोड़े ही दिनों के अंदर वहां के मुसलमानों के नमाज़ पढ़ने के लिए एक छोटी सी मसजिद बन गई। चन्द माह के बाद कुछ मुसलमानों ने उसी शहर में एक दूसरी मसजिद तामीर कर ली। इस दूसरी मसजिद के बनाने वालों

गया है कि वह बिना धुएं की आग से पैदा हुआ।' इंजोल में उसकी मिसाल साँप से दी गई है। यानी शैतान उस मोटी दुनियावी ख़्वाहिश का नाम है जो ज़मीन के ऊपर बेलगाम काम करती है। वह आदमी के अन्दर जिस्मानी ख़्वाहिशों (इन्द्रिय सुखों) की वह आग है जिससे आदमी अगर एतक़ाद यानी श्रद्धा और विश्वास की मदद से अपने को आज़ाद न कर सके तो वह आग सचमुच उसे जलाकर ख़त्म कर देगी। जिस फल को खाने से आदमी को रोका गया था वह 'ख़ुदी' बल्कि 'दुई' यानी दूसरों से अपनी अलहदगी का खयाल है। आदमी के गुनाहों की जड़ उस दुई में है जो उसे सारी दुनिया की आत्मा के साथ मिलाकर एक कर देने की जगह उसे उससे दूर ले जाती है। इस तरह फ़रिश्ते और शैतान इन्सान के अन्दर की वे दो ताक़तें हैं जिनमें से एक आदमी की दोस्त और दूसरी उसकी दुश्मन है। इनमें से इन्सान को एक में यक़ीन करना चाहिये और दूसरी से बचने के लिए अल्लाह की मदद और उसकी पनाह लेनी चाहिए।" क़ुरान (सूरा ११४)—The Wisdom of the Quran, by Mahmud Muhtar Pasha, Introduction, pp. 39 to 41.

ने मुहम्मद साहब से जाकर प्रार्थना की कि आप .कुबा पहुँच कर एक मर्तबा नई मसजिद में नमाज़ पढ़ें और इज्ज़त बख़्शें। इन दो अलग अलग मसजिदों से शहर के मुसलमानों में फूट पैदा हो जाने का डर था। इस पर क़ुरान में आयत उतरी कि "जिस मसजिद से ईमान वालों में तफ़रीक़ यानी फूट पैदा होती है उसमें जाकर खड़ा नहीं होना चाहिए" (९-१०७,१०८) मुहम्मद साहब ने वहाँ जाने से इनकार कर दिया और उनके हुक्म से .कुबा की वह दूसरी मसजिद गिरवा दी गई।*

"हरेक की अपनी अपनी तरफ़ (दिशा) है जिस तरफ़ इबादत के वक्त वह अपना मुँह कर लेता है। इसलिए (इस बहस में न पड़ कर) भलाई के कामों मे एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करो। तुम जहाँ कहीं भी होगे अल्लाह तुम सब को मिला देगा। सचमुच अल्लाह सब चीज़ों पर क़ादिर है यानी सब कुछ कर सकता है।" (२-१४८)

मुहम्मद साहब और करामात

"कह दो कि मैं (मुहम्मद) कोई अनोखा रसूल नहीं हूँ, [यानी मै कोई ऐसी बात नहीं सिखाता जो मुझसे पहले के रसूलों और पैग़म्बरों ने न सिखाई हो, न मै कोई ऐसा काम कर सकता हूँ जो वे न कर सकते थे, न कोई मोजज़ा या करामात दिखा सकता हूं—अलबैज़ावी], मुझे यह नहीं मालूम कि मेरे साथ क्या होने वाला है या तुम्हारे साथ क्या होने वाला है। मैं सिर्फ़ उसी पर अमल करता

---

*बहरुलमुहीत · इमाम असीरुद्दीन अबु हय्यान

हूँ जो अल्लाह मुझे हुकुम देता है। मेरा काम इसके सिवाय और कुछ नहीं कि लोगों को बुरे कामों के नतीजों से आगाह करूँ।" (४६-६)

"और मुहम्मद सिवाय एक रसूल के और कुछ नहीं है, उससे पहले के रसूल भी मरते आए हैं, इसलिए अगर मुहम्मद मर जाय या मार डाला जाय तो क्या तुम लोग (अपने धर्म से) फिर जाओगे?" (३-१४३)

हज़रत मुहम्मद के मरने के बाद हज़रत अबुबक्र ने लोगों को यही ऊपर की आयत पढ़कर सुनाई थी।

"कह दो कि मैं (मुहम्मद) तुम (लोगों) से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, न मुझे ग़ैब का इल्म (बिन देखी चीज़ों की जानकारी) है और न मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, मैं सिर्फ़ उसी पर चलता हूं जो ईश्वर ने मेरे घट में बैठा दिया है।" (६-५०)

"ये लोग ज़ोरों के साथ अल्लाह की क़समें खाकर कहते हैं कि अगर हमें कोई करामात दिखा दी जाय तो हम ज़रूर मान लेंगे। कह दो कि करामात सिर्फ़ अल्लाह कर सकता है।" (६-११०)

"लोग कहते हैं कि हम उस वक्त तक तुम्हारी बात हरगिज़ नहीं मानेंगे जब तक तुम हमारे लिए ज़मीन से पानी का एक चश्मा फोड़कर न निकाल दो, या खजूरों और अंगूरों का एक ऐसा बाग़ न खड़ा कर दो जिसके बीच से अपने आप फूट कर दरिया बह रहे हों, या अपने ज़ोर से आसमान के टुकड़े टुकड़े करके हमारे ऊपर न गिरा दो, या अल्लाह और फ़रिश्तों को हमारे सामने लाकर खड़ा न करदो, या अपने लिए एक सोने का मकान खड़ा न कर लो, या

आसमान में न चढ़ जाओ और वहाँ से एक ऐसी किताब न ले आओ जिसे हम पढ़ सकें। इस सब के जवाब में इनसे कह दो कि मेरे रब्ब को याद करो, मैं सिवाय एक इनसान और एक रसूल के और कुछ नहीं हूं।" (१७-९० से ९३)

"लोग कहते हैं कि मुहम्मद को उसके रब्ब की तरफ़ से करामात दिखाने को क्यों नहीं मिलतीं? उनसे कह दो कि करामात सिर्फ़ अल्लाह के पास है, मैं तो सिर्फ़ बुरे कामों के नतीजों से खुले तौर पर आगाह करने वाला हूं।" (२९-५०)

"इसमें क्या अजीब बात है कि तुम्हारे रब्ब ने तुम्हीं में से एक आदमी के ज़रिये तुम्हें दीन की याद दिलादी, ताकि वह आदमी तुम्हें आगाह कर दे, और तुम बुराई से बचे रहो, जिससे कि अल्लाह तुम पर रहम करे।" (७-६३)

"लोगों से कह दो कि—मैं (मुहम्मद) अल्लाह की मरज़ी के ख़िलाफ़ अपने आपको भी न कुछ फ़ायदा पहुंचा सकता हूं और न नुक़सान। अगर मुझे ग़ैब का इल्म (अदृष्ट की जानकारी) होता तो मेरे पास बहुत सी अच्छी चीज़ें होतीं और कोई बुराई मुझे छू भी न सकती, लेकिन मेरा काम सिवाय इसके और कुछ नहीं है कि लोगों को बुरे कामों के नतीजे से आगाह कर दूं और जो मेरी बात मान लें उन्हें अच्छे नतीजे की ख़ुश ख़बरी दूँ।" (७-१८८)

"कह दो कि ग़ैब का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है, इसलिए इन्तज़ार करो, मैं भी तुम्हारी ही तरह इन्तज़ार करने वालों में से हूं।" (१०-२०)

"मैं सिर्फ़ तुम्हारी ही तरह एक आदमी हूँ, हाँ! अल्लाह ने मुझे

यह ज्ञान दिया है कि तुम सब का एक ही अल्लाह है। इसलिए जो कोई अपने रब्ब से मिलने की आस लगाए है उसे चाहिये कि नेक काम करे और सिवाय एक रब्ब के दूसरे किसी की पूजा न करे।" (१८-११०)

"मैं सिर्फ़ तुम्हारी ही तरह एक इनसान हूं। अल्लाह ने मुझे यह ज्ञानदिया है कि तुम्हारा सब का एक ही अल्लाह है। इसलिए नेकी के रास्ते पर चलो वही अल्लाह तक पहुंचने का रास्ता है। उसी अल्लाह से (अपनी ग़लतियों के लिए) माफ़ी चाहो।" (४१-६)

"मुझे इसके सिवाय और कुछ वही (ईश्वर प्रेरणा) नहीं हुई कि मैं लोगों को बुराई के नतीजे से खुले तौर पर आगाह कर दूं।" (३८-७०)

जंग की इजाज़त

इसलाम धर्म का उपदेश देना शुरू करने के बाद मुहम्मद साहब के पहले तेरह साल मक्के के अन्दर बड़ी मुसीबतों में कटे, जिसमें मक्के वालों ने उन्हे और उनके साथियों को बेहद तकलीफ़ें पहुँचाई। उन तेरह बरस के अन्दर इस बारे में जितनी आयतें क़ुरान में उतरीं उन सब में बुराई का बदला भलाई से देने और सब्र और सच्चाई के साथ दूसरों के सब ज़ुल्मों को सह लेने की हिदायत दी गई है। इसके बाद मुहम्मद साहब अपने कुछ साथियों को लेकर मदीने पहुंचे। मक्के वालों ने वहां भी चढ़ाई करके उन पर हमले शुरू किये। इसपर क़ुरान में पहली बार नीचे लिखी आयतों के ज़रिये मुहम्मद साहब और उनके साथियों को, अपने बचाव के लिये, हमला करने

वालों से लड़ने की इजाज़त दी गई—

"जिन लोगों पर लड़ाई की गरज़ से चढ़ाई की जा रही है, उन्हें भी (अपने बचाव के लिए) लड़ने की इजाज़त दी जाती है, क्योंकि उन पर यह ज़ुल्म हो रहा है, और इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह उनकी मदद के लिए काफ़ी है।

"यह इजाज़त उन लोगों को है जिन्हें नाहक़ (इन्साफ़ के ख़िलाफ़) और सिर्फ़ इसलिए उनके घरों से निकाल दिया गया है, क्योंकि वे कहते हैं कि 'अल्लाह हमारा रब्ब है।' और अगर अल्लाह इस तरह कुछ लोगों को कुछ लोगों से न हटवाता तो इसमें कोई शक नहीं कि वे सब मकान जैसे साधुओं के मठ, ईसाइयों के गिरजे, यहूदियों के इबादतख़ाने और मसजिदें, जहाँ लोग अल्लाह का नाम कसरत से लेते हैं, गिरा दिये गए होते। इसमें शक नहीं जो कोई अल्लाह के काम में मदद करेगा अल्लाह उसकी मदद करेगा। सचमुच अल्लाह बलवान और बड़ा है।

"यह (इजाज़त) उनके लिए है, जिन्हें अगर अल्लाह धरती पर क़ायम करदे, तो वे अल्लाह से दुआ मांगते रहेंगे, ग़रीबों को दान देते रहेंगे, और सब को भले कामों के करने और बुरे कामों से बचने की सलाह देते रहेंगे। आख़ीर में सब कामों का नतीजा अल्लाह के हाथ में है।" (२२-३६ से ४१)

इस इजाज़त के मिल जाने पर भी मालूम होता है मुसलमानों का दिल लड़ने के लिए पूरी तरह तय्यार न होता था, क्योंकि चढ़ाई करने वाली फ़ौज में उनके अपने भाई, चाचा, ताया, मामा और दूसरे पास से पास के रिश्तेदार मौजूद थे।

इस पर नीचे की आयतें उतरीं—

"तुम्हें जंग की इजाज़त दे दी गई है, और तुम्हें यह अच्छा नहीं लगता। मुमकिन है कि जो चीज़ तुम्हें अच्छी नहीं लगती वह तुम्हारे भले की हो, और हो सकता है कि जो चीज़ तुम्हें प्यारी लगती है वह तुम्हारे लिए बुरी हो। और अल्लाह सब जानता है, तुम नहीं जानते।" (२-२१६)

"अल्लाह की राह में वे लोग लड़ें जो इस दुनिया की ज़िन्दगी को आख़रत यानी परलोक के लिए दे डालने को तय्यार हैं। और जो कोई अल्लाह की राह में लड़ता है वह चाहे मारा जाय और चाहे जीते अल्लाह से उसे बहुत बड़ा फल मिलेगा।

"और क्या बात है कि तुम अल्लाह की राह में, उन कमज़ोरों, औरतों और बच्चों के बचाव के लिए नहीं लड़ते जो यह कह रहे हैं कि 'ऐ हमारे रब्ब! हमें इस शहर (मक्के) से निकाल जिसके लोग हम पर ज़ुल्म करते हैं, और हमें कोई बचाने वाला और हमारी मदद करने वाला भेज।

"जो लोग ईमान वाले हैं वह अल्लाह की राह में लड़ते हैं, और जो ईमान वाले नहीं हैं वे सरकशों यानी ज़ुल्म करने वालों की तरफ़ से लड़ते हैं। ज़ुल्म करने वाले शैतान के दोस्त हैं, इसलिए शैतान के दोस्तों के ख़िलाफ़ लड़ो। सचमुच शैतान का पल्ला कमज़ोर है।" (४-७४ से ७६)

"इसलिए अल्लाह की राह में लड़ो, इस मामले में तुम (हज़रत मोहम्मद) सिर्फ़ अपने लिए जिम्मेवार हो, दूसरों के लिए नहीं, और दूसरे ईमान वालों का हौसला बढ़ाओ। मुमकिन है कि अल्लाह

(दूसरी तरफ़ से) उन लोगों का, जो ईश्वर की निआमतों का शुक्र नहीं करते हाथ रोक दे। अल्लाह ही सब से ज़्यादा ताक़तवर और सज़ा देने में भी सब से बलवान है।

"जो कोई किसी अच्छे काम में किसी का साथ देता है उसे उसका हिस्सा मिलेगा, और जो कोई किसी बुरे काम में किसी का साथ देता है उस पर उसकी ज़िम्मेवारी आ जाती है, और अल्लाह सब चीज़ों को देखता है।

"और जब कभी (तुम्हारे दुशमनों में से) कोई तुम्हें दुआ दे (या सलाम करे) तो तुम उसे उससे भी बढ़कर दुआ दो, और सलाम का जवाब सलाम से दो। सचमुच अल्लाह सब चीज़ों का हिसाब रखता है।

"अल्लाह है, सिवाय उस एक के कोई दूसरा अल्लाह नहीं है। इसमें कोई शक नहीं कि आख़ीर में अल्लाह तुम सबको एक दिन मिला देगा। अल्लाह से बढ़कर अपनी बात पूरी करने वाला और कौन है? (४-८४ से ८७)

"और अगर मुनाफ़िक़ों (निफ़ाक़ यानी फूट डालने वालों) में से भी कोई किसी ऐसे गिरोह के पास पहुँच जावे जिससे तुम्हारी सुलह है, या ख़ुद तुम्हारे पास आवें और उनके दिल तुम्हारे साथ यानी अपनी ही क़ौम वालों के साथ लड़ने से बचना चाहें·· अगर वे हट जावें, ख़ुद तुम से न लड़ें, और सुलह करना चाहें, तो फिर अल्लाह तुम्हें उनसे लड़ने की इजाज़त नहीं देता।" (४-९०)

"ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह की राह में लड़ने जाओ, तो अच्छी तरह देख भाल लो, अगर कोई तुमसे सुलह करना चाहे

तो उससे यह न कहो कि 'तुम मुसलमान नहीं हो* (इसलिए तुमसे हमारी सुलह नहीं हो सकती) ।' क्या तुम इस दुनिया के माल असबाब के पीछे पड़े हुए हो ? लेकिन अल्लाह के पास इस दुनिया की चीज़ों से कहीं ज़्यादह भलाई की चीज़ें हैं। पहले तुम भी इन्हीं लोगों की तरह थे फिर अल्लाह ने तुम पर रहम किया। इसलिए देख भाल लो। सचमुच जो कुछ तुम करते हो अल्लाह सब जानता है।" (४-९४)

"जो लोग अल्लाह की निआमतों का शुक्र नहीं करते, उनसे कह दो कि अगर वे तुमसे लड़ना बन्द कर दें तो अब तक जो कुछ उन्होंने किया है सब माफ़ कर दिया जावेगा। और अगर वे फिर लड़ना शुरू कर देंगे तो जो पिछलों के साथ हो चुका है वही उनके साथ होगा।

"और उनके साथ उस वक़्त तक ही लड़ो जब तक कि 'फ़ितना' यानी झगड़ा बन्द न हो जावे, और दीन का मामला अल्लाह ही के हाथ में रहे (यानी इस मामले में कोई किसी के साथ ज़बर्दस्ती न करे), लेकिन अगर वे अपनी तरफ़ से लड़ना बन्द कर दें तो (तुम भी लड़ना बन्द कर दो), सचमुच जो कुछ वह करते हैं अल्लाह सब देखता है।

* क़ुरान में इस बात पर बारबार ज़ोर दिया गया है कि अगर मुसलमानों और ग़ैर मुसलमानों में कोई ऐसा समझौता हो जावे जो किसी दूसरे मुसलमान के खिलाफ़ जाता हो तब भी सुलह करने वाले मुसलमानों का फ़र्ज़ है कि सचाई से उस समझौते पर अमल करें। (८-७२;९-१,४,७ वग़ैरह)

"और अगर वे फिर लड़ने लगें, तो यक़ीन रखो कि अल्लाह तुम्हारा मालिक है और वह बहुत अच्छा मालिक और बहुत अच्छा मददगार है।" (८-३८ से ४०)

"और अगर वे सुलह की तरफ़ झुकें तो तुम भी सुलह की तरफ़ झुको और अल्लाह पर भरोसा करो। सचमुच वह सब सुनता और जानता है।

"और फिर अगर वे तुम्हें (मोहम्मद साहब को) धोखा देना चाहेंगे तो सचमुच तुम्हारे लिए अल्लाह काफ़ी है। उसी ने अपनी मदद से तुम्हें (मुहम्मद साहब को) बल पहुंचाया था। उसी ने इतने आदमी तुम्हारी बात मानने वाले कर दिये।

"उसी अल्लाह ने इन सब लोगों के दिलों को मिलाया,* अगर तुम दुनिया का सारा माल भी ख़र्च कर डालते तो तुम इन सब के दिलों को एक न कर सकते। लेकिन अल्लाह ने इन्हें मिला कर एक कर दिया। सचमुच अल्लाह बड़ा और सब कुछ जानने वाला है।

"ऐ नबी! अल्लाह तुम्हारे लिए और उन सब ईमान वालों के लिए, जो तुम्हारे कहने पर चलते हैं, काफ़ी है।" (८-६१ से ६४)

"ऐ ईमान वालो! जो लोग अल्लाह की निआमतों से 'कुफ़्र' करते हैं वे जब सामने से तुम से लड़ने के लिए आवें, तो तुम पीठ मत मोड़ो।"

---

*इशारा इसलाम से पहले की अरब की उस आपसी फूट की तरफ़ है, जिसमें हज़ारों क़बीले क़रीब क़रीब सब एक दूसरे के ख़ून के प्यासे थे।

"और जब तुमने उन्हें मारा तो तुमने नहीं मारा, अल्लाह ने मारा और जब तुमने हथियार चलाया तो तुमने नहीं चलाया अल्लाह ने चलाया।* (८-१५,१७)

"और जो लोग तुम से लड़ें उनसे तुम भी अल्लाह की राह में लड़ो. लेकिन (इन्साफ़ की) हद से न बढ़ो, सचमुच अल्लाह उन्हें प्यार नही करता जो हद से बढ़ते हैं।

"जहां कहीं उनसे सामना हो लड़ो, और तुम्हारे जिन घरों से उन्होंने तुम्हें निकाल दिया है उनसे तुम उन्हें निकाल दो। फ़ितना फ़िसाद करना (किसी के मज़हब की वजह से उसे सताना) (जो वे करते हैं) लड़ने से ज़्यादह बुरा है और काबे के अन्दर जब तक वे तुमसे न लड़ें तुम उनसे न लड़ो। लेकिन अगर वे लड़ें तो लड़ो। जो अल्लाह की निआमतों की तरफ़ से नाशुकरे हैं उनका यही बदला है।

"लेकिन अगर वे अपनी तरफ़ से लड़ने से रुक जावें तो सचमुच अल्लाह माफ़ कर देने वाला और दयावान है।

"उनसे उस वक्त तक लड़ो जब तक कि उनका उठाया हुआ फ़ितना बन्द न हो जावे, और धर्म का मामला अल्लाह ही के हाथ में न रह जावे (यानी धर्म के मामले में कोई किसी के साथ

---

*मयैवेते निहताः पूर्वमेव
निमित्तमात्रम भव सव्य साचिन (गीता)
यानी मैंने (ईश्वर ने) पहले ही से इन्हें मार रखा है। तू सिर्फ़ एक बायें हाथ का बहाना बन जा—गीता

ज़बरदस्ती न करे)' लेकिन अगर वे लड़ना बन्द कर दें तो तुम्हें सिवाय उन लोगों के साथ जो दूसरों पर ज़ुल्म करते रहें फिर किसी से दुशमनी नहीं रखनी चाहिये।

"पाक महीना पाक महीने के लिए है, और सब पाक चीज़ों में बदले की इजाज़त है। इसलिए जो कोई पहले तुम पर हमला करे वह जितना नुक़सान तुम्हें पहुंचावे उतना ही तुम उसे पहुंचा सकते हो। और अल्लाह से डरो। समझ लो कि अल्लाह उन्हीं के साथ है जो बुराई से बचते हैं।

"और अल्लाह की राह में ख़र्च करो। और अपने ही हाथों से अपने को हिलाक (बरबाद) मत करो। और दूसरों का भला करो। सचमुच अल्लाह उन्हीं को प्यार करता है जो दूसरों का भला करते हैं (और दूसरों पर अहसान करते हैं)।" (२-१९० से १९५)

"और अगर मुसलमानों में से भी दो गिरोह आपस में लड़ने लगें, तो उनमें सुलह करा दो, लेकिन अगर उनमें से एक गिरोह दूसरे गिरोह के साथ ज़्यादती करता रहे तो जो गिरोह ज़्यादती करता है उससे लड़ो, जब तक कि वह अल्लाह के हुकुम को फिर से न मानने लगे। फिर अगर वह मान जाय तो दोनों में इनसाफ़ के साथ सुलह करा दो। और इनसाफ़ से काम लो। सचमुच अल्लाह उन्हीं को प्यार करता है जो इन्साफ़ से काम करते हैं।" (४९-९)

ग़ैर मुसलमानों और मुसलमानों दोनों के साथ जंग की इजाज़त की क़ुरान में ये ही आयतें हैं।

इसलाम से पहले अरब और आस पास के मुल्कों में यह रिवाज था कि दुशमन के जो आदमी जंग में क़ैद कर लिए

जाते थे उन्हें आमतौर पर या तो मार डाला जाता था और या ग़ुलाम बना लिया जाता था। क़ुरान ने इस रिवाज को बदल कर आगे के लिए यह हुकुम दिया कि—

"जंग में जो लोग पकड़े जावें उन्हें या तो (दुशमन पर) एक अहसान के तौर पर आज़ाद कर दिया जावे, और या हर आदमी के बदले में उस वक़्त तक के लिए जब तक कि लड़ाई जारी रहे कुछ ज़मानत या हरजाना लेकर छोड़ दिया जावे।" (४७-४)

जंग खतम होने के बाद किसी क़ैदी को अपने पास रोकने की इजाज़त नहीं थी।

"यह हुकुम इसलिए है कि अगर अल्लाह चाहता तो उनसे सचमुच बदला ले सकता था, लेकिन अल्लाह यही चाहता है कि कुछ आदमियों से दूसरे आदमियों पर अहसान करावे। और जो अल्लाह की राह में मारे जावेंगे अल्लाह उनके कामों को ज़ाया नहीं होने देगा। वह उन्हें सच्चा रास्ता दिखायगा और उनकी हालत को सुधारेगा।" (४७-४,५)

इसी उसूल पर चलकर मुहम्मद साहब लड़ाइयों में पकड़े हुए क़ैदियों को बिना कुछ भी मुआवज़ा या हरजाना लिए अहसान के तौर पर आज़ाद कर देते थे, और कहीं कहीं कुछ हरजाना लेकर छोड़ देते थे। बद्र की मशहूर लड़ाई में उन्होंने सत्तर क़ैदियों को कुछ लेकर छोड़ दिया था। कुछ क़ैदियों से जो पढ़े लिखे और ग़रीब थे यह कहा कि इनमें से हर एक क़ैदी मदीने के दस दस आदमियों को लिखना पढ़ना सिखाकर आज़ाद हो जाय और अपने घर चला जावे। एक बार उन्होंने

बनी मुस्तलिक़ क़बीले के सौ खानदानों को बिना कुछ लिए और दूसरी बार हवाज़िन क़बीले के छै हज़ार .कैदियों को बिना कुछ लिये छोड़ दिया था।

.गुलामी के पुराने रिवाज में यानी आदमियों के बेचे जाने के रिवाज में इससे बहुत बड़ी कमी हुई।

धरम फैलाने का तरीक़ा

"और ऐ मुहम्मद! जब तुम लोगों को ठीक रास्ते पर चलने के लिए बुलाते हो और वे नहीं सुनते, तुम देखते हो कि वे तुम्हारी तरफ़ देख रहे हैं, लेकिन वे नहीं देखते,

"तो उन्हें माफ़ कर दो, और उनसे नेक काम करने को कहो, और जो नहीं समझते उनसे हट जाओ,

"और अगर शैतान तुम्हें .गुस्सा दिलाने लगे तो अल्लाह की पनाह लो, सचमुच अल्लाह सब सुनता और जानता है,

"जो लोग, जब जब शैतान उनके अन्दर .गुस्सा करने या बदला लेने की गुदगुदी पैदा करता है, तब तब उस बुराई से बचते हैं, और ख़याल रखते हैं, वही सचमुच देख सकते हैं।" (७-१९८ से २०१)

"और अगर, जंग के दिनों में भी, उन लोगों में से जो एक अल्लाह के साथ दूसरों को जोड़ते हैं, कोई तुम्हारी पनाह में आना चाहे, तो उसे अपनी हिफ़ाज़त में ले लो, और उसे अल्लाह की बातें सुनाओ, फिर भी अगर वह न माने, तो उसे उसकी हिफ़ाज़त की जगह तक पहुंचा दो, यह इसलिये क्योंकि वे लोग नासमझ हैं।" (९-६)

"और (ऐ मोहम्मद !) अगर वे तुम्हें झूठा कहें तो उनसे कह दो—'तुम्हें तुम्हारे कामों का फल मिलेगा और मुझे मेरे कामों का, न तुम मेरे कामों के लिए ज़िम्मेदार हो और न मैं तुम्हारे कामों के लिए'।

"उनमें से कुछ तुम्हारी बात सुनते हैं; पर क्या तुम उन्हें सुना सकते हो जो बहरे हैं, या जो सुनना नहीं चाहते ?

"कुछ तुम्हारी तरफ़ देखते हैं, पर क्या तुम उन्हें रास्ता दिखा सकते हो जो अन्धे हैं, या जो देखना नहीं चाहते ?

"सचमुच अल्लाह इन्सानों पर किसी तरह का .जुल्म नहीं करता, आदमी अपने ऊपर .खुद .जुल्म करता है।" (१०-४१ से ४४)

"लोगों को अक़्लमन्दी के साथ और मीठे शब्दों में समझा कर अपने रब्ब के रास्ते पर बुलाओ। और उनसे बहस करो तो मिठास के साथ करो। सचमुच जो लोग अल्लाह की राह से भटके हुए हैं, उन्हें और जो ठीक रास्ते पर हैं उन्हें दोनों को तुम्हारा रब्ब अच्छी तरह जानता है।

"और अगर तुम उनकी किसी कड़ी बात का जवाब दो तो ज़्यादा से ज़्यादा उसी तरह के शब्दों में दो जिस तरह के उन्होंने कहे हों, लेकिन अगर तुम (उनके कड़े शब्दों को भी) सब्र के साथ बरदाश्त कर जाओ तो सचमुच सब्र करने वालों के लिए सब से अच्छा फल है।

"इसलिए सब्र ही करो और तुम अल्लाह की मदद से ही सब्र कर सकते हो, और न उनके लिए रंज करो, और न वे जो तरकीबें (तुम्हारे ख़िलाफ़) सोचते हैं उन पर अपने को दुखी करो।

"सचमुच अल्लाह उन्हीं के साथ है जो बुराई से बचते हैं और जो दूसरों के साथ नेकी करते हैं" (१६-१२५ से १२८)

नेकी यानी सदाचार

१ "और तुम्हारे रब्ब का हुकुम है कि तुम सिवाय उसके किसी दूसर की पूजा न करो, और अपने माँ-बाप के साथ नेकी का बर्ताव करो। अगर उनमें से कोई एक या दोनों बूढ़े हो जावें तो उन्हें "उफ़" तक मत कहो. और न कोई कड़ी बात कहो, उनसे जब बात करो तो मुहब्बत और नरमी से करो, उनसे दब कर रहो, उन पर रहम करो और अल्लाह से यह दुआ मांगो—'ऐ अल्लाह ! इन पर अपनी दया कर, इन्होंने मुझे छोटे से बड़ा किया है'।

"तुम्हारा रब्ब अच्छी तरह जानता है कि तुम्हारे मन में क्या है, अगर तुम नेकी करोगे तो सचमुच अल्लाह उन लोगों के (पिछले) क़ूसूर माफ़ कर देता है जो उसकी तरफ़ मुड़ते हैं।

"अपने नातेदारों का हक़ अदा करो ज़रूरतमन्दों ग़रीबों, और परदेसियों को दान दो और अपने माल को बरबाद मत करो।" (१७-२३ से २६)

'और ग़रीबी के डर से अपनी औलाद को मत मारो। अल्लाह इन्हें और तुम्हें दोनों को खाना देता है। सचमुच अपनी औलाद को मार डालना बहुत बड़ा पाप है।

"ज़िना यानी बदचलनी के नज़दीक मत जाओ, सचमुच यह बड़ी गन्दी बात है और बड़ा बुरा रास्ता है।"

"किसी यतीम के माल के नज़दीक भी मत जाओ, सिवाय इसके

कि वह नाबालिग़ हो और तुम उसकी भलाई के लिए उसके माल की हिफ़ाज़त करना चाहते हो, अपने वादों को हमेशा पूरा करो, सचमुच हर वादे की बाबत तुम से सवाल किया जायगा (कि तुमने उसे पूरा किया या नहीं)।

"जब किसी को कोई चीज़ नाप कर दो तो ठीक ठीक और पूरा नाप कर दो, और जब कोई चीज़ तोलो तो सच्ची तराज़ू और ठीक ठीक बाँटों से तोलो, यही नेकी है और इसी में आख़ीर में तुम्हारा भला है।

"जिस बात को तुम नहीं जानते उसके पीछे मत पड़ो (यानी किसी पर ऐसा इलज़ाम मत लगाओ जो तुम नहीं जानते), सचमुच तुम्हारे कानों, तुम्हारी आँखों और तुम्हारे दिल, इन सब से सवाल किये जावेंगे कि इनमें से किस किस ने क्या क्या नेकी की और क्या क्या बदी की।

"इस दुनिया में अकड़ कर मत चलो, क्योंकि न तुम ज़मीन को फाड़ सकते हो और न पहाड़ जितने ऊंचे हो सकते हो। यह सब बुरी बात है और अल्लाह की नज़रों में गुनाह है। यही वह हिकमत (ज्ञान) है जो तुम्हारे अल्लाह ने (तुम्हारे भले के लिए) तुम पर उतारी है।" (१७-३१,३२,३४ से ३६)

"सिवाय आदमी के क़त्ल के लिए या धरती पर फ़साद खड़ा करने की सज़ा में और किसी भी वजह से जो कोई भी किसी एक आदमी की जान लेगा वह सब इन्सानों के क़त्ल का गुनहगार होगा, और जो कोई किसी एक की जान बचावेगा उसने मानो सब आदमियों की जान बचाई × × ×" (५-३२)

"लोगों से कहो कि आओ, मैं तुम्हें बताऊं कि अल्लाह ने तुम्हें किन किन चीज़ों से मना किया है— अल्लाह के साथ किसी दूसरे को शरीक मत करो (किसी और चीज़ की पूजा न करो), अपने माँ बाप की सेवा करो. ग़रीबी के डर से अपनी औलाद को मत मारो, अल्लाह तुम्हें और उन्हें दोनों को रोज़ी देता है, ज़िना या बदचलनी के नज़दीक मत जाओ चाहे ज़ाहिरा खुली बदचलनी हो और चाहे ख़याल या मन के अन्दर की बदचलनी हो, और सिवाय इन्साफ़ की ज़रूरतों के किसी की जान मत लो, यह सब अल्लाह के हुकुम हैं ताकि तुम समझो।

''और किसी अनाथ यतीम के माल को हाथ मत लगाओ, सिवाय इसके कि तुम उसकी भलाई के लिये, जब तक कि वह बालिग़ न हो, उसके माल की देख भाल करना चाहते हो। जो चीज़ नापो पूरी पूरी नापो और जो तोलो ठीक ठीक तोलो। ईश्वर ने किसी के कोई ऐसा काम सुपुर्द नहीं किया जिसे वह पूरा न कर सके। और जब बोलो सच बोलो चाहे वह बात तुम्हारे किसी रिश्तेदार ही के ख़िलाफ़ क्यों न हो. और अल्लाह का हुकुम मानो, यही उसका हुकुम है, इसका ख़याल रक्खो।

"यही अल्लाह का बताया हुआ रास्ता है, यही 'सिराते मुस्तक़ीम' यानी सीधा रास्ता है, इसी पर चलो, इसके ख़िलाफ़ दूसरे दूसरे रास्तों पर मत चलो, क्योंकि वे तुम्हें अल्लाह के रास्ते से दूर ले जायंगे, यही अल्लाह का हुकुम है, ताकि तुम बुराई से बच सको।" (६-१५२ से १५४)

"सच्चाई को झूठ से मत ढको, और न जो बात तुम्हें सच सच मालूम है उसे छिपाओ।

"अल्लाह से दुआ मांगते रहो, ग़रीबों को दान देते रहो, अल्लाह के सामने झुकने वालों के साथ झुको।

"क्या तुम दूसरों को नेक बनने की तालीम दोगे, .क़ुरान पढ़ोगे और फिर भी .खुद अपने को नहीं देखोगे, क्या तुम्हें समझ नहीं है ?

"सब्र और दुआ के ज़रिये अल्लाह से मदद मांगो। सचमुच सिवाय उन लोगों के जो दीनता और नरमी से चलते हैं और यह जानते हैं कि उन्हें अल्लाह के पास लौट कर जाना है, औरों के लिए बड़ी मुशकिल होगी।" (१-४२ से ४६)

"बेइन्साफ़ी से एक दूसरे का माल मत हड़प जाओ और (कचहरियों में) अपनी दौलत के ज़रिये हाकिम के पास पहुंचने की कोशिश मत करो इस मतलब से कि तुम जानते हुए भी बेईमानी से दूसरों के माल का कोई हिस्सा ले लो।" (२-१८८)

"अल्लाह के रास्ते में अपनी दौलत ख़र्च करो, अपने हाथों से अपने को बरबाद न करो, और दूसरों की भलाई करो, सचमुच अल्लाह उन्हीं को प्यार करता है जो दूसरों पर अहसान करते हैं।" (२-१६५)

"लोग तुमसे नशे की चीज़ों की बाबत और तरह तरह के जुए की बाबत पूछेंगे। उनसे कह दो कि इन दोनों चीज़ों में बड़ा गुनाह है, कुछ लोगों को इनसे नफ़ा भी होता है, लेकिन गुनाह नफ़े से कहीं ज़्यादह है। × ×" (२-२१९)

"शैतान नशे की चीज़ों और जुए के ज़रिये तुम्हें एक दूसरे से लड़ाना और तुममें नफ़रत फैलाना चाहता है, और तुम्हें अल्लाह

की याद से और दुआ माँगने से दूर रखना चाहता है, इसलिये इनसे बचो।" (५-६१)

"लोगों से प्रेम के साथ बोलना और उनकी ग़लतियों को माफ़ कर देना .ज्यादह अच्छा है इसकी निस्बत कि तुम किसी को दान दो और फिर उसे तकलीफ़ पहुंचाओ। अल्लाह सब के लिए बस है और रहमदिल है। ऐ ईमान वालो, जिसको दान दो उसकी बुराई करके या उसे तकलीफ़ पहुंचा कर अपने दान को निकम्मा न कर लो, उस आदमी की तरह जो दूसरों को दिखाने के लिये दान देता है और अल्लाह पर और उस दिन पर जिसदिन सब को अपने कामों का नतीजा भुगतना पड़ेगा यक़ीन नही रखता।" (२-२६३,२६४)

"ऐ ईमान वालो ! अपनी कमाई की अच्छी चीज़ों में से दान दो और उन चीज़ों में से जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन में से पैदा की हैं, बुरी चीज़ों (नाजायज़ कमाई) की तरफ़ इस ख़याल से निगाह मत लेजाओ, कि फिर तुम उनमें से दान दे सकोगे × × ×"(२-२६७)

"अगर तुम खुले तौर पर दान दो तो अच्छा है, लेकिन अगर तुम छिपा कर ग़रीबों को दान दो तो यह तुम्हारे लिये .ज्यादह अच्छा है, इससे तुम्हारे कुछ न कुछ बुरे काम कटेंगे, जो कुछ तुम करते हो अल्लाह सब जानता है।" (२-२७१)

"अल्लाह सूद खाने वाले को बरकत नहीं देता × × ×"(२-२७६)

"ऐ ईमान वालो, सूद मत खाओ, दौलत पर दौलत मत बढ़ाते जाओ, अल्लाह के हुकुम का ख़याल रक्खो, ताकि तुम्हारा भला हो।" (३-१२६)

"(किसी से) डाह (हसद) करना बुरी चीज़ है, अल्लाह तुम्हें इस बुराई से बचावे।" (११३-५)

"तुम किसी तरह भी नेक नहीं हो सकते जब तक कि तुम उन चीज़ों में से खुले दिल से दान न दो जो तुम्हें प्यारी हैं। जो कुछ तुम दान देते हो सचमुच अल्लाह सब जानता है।" (३-९१)

"जन्नत उन लोगों के लिए है जो अमीरी में और ग़रीबी में, दोनों में, खुले दिल से दान देते हैं, जो अपने ग़ुस्से को क़ाबू में रखते हैं, और जो दूसरों के क़सूरों को माफ़ कर देते हैं। अल्लाह उन्हीं को प्यार करता है जो दूसरों के साथ नेकी करते हैं।" (३-१३३)

"जो लोग बेइन्साफ़ी से अनाथों का माल खा जाते हैं, वे सचमुच अपने पेट में आग डालते हैं और जलती हुई आग में ही उन्हें पड़ना पड़ेगा।" (४-१०)

"अल्लाह चाहता है कि तुम पर दया करे, लेकिन जो लोग अपनी शहवतों (वासनाओं) के पीछे चलते हैं वे चाहते हैं कि तुम अल्लाह से बिल्कुल फिरे रहो।" (४-२७)

"अल्लाह ने तुम में से किसी को दूसरों से ज़्यादह माल दिया है तो तुम उसके माल का लालच मत करो, हर आदमी और हर औरत को उसकी (ईमानदारी की) कमाई ज़रूर मिलेगी, अल्लाह से दुआ करो कि वह तुम्हें बरकत दे, सचमुच अल्लाह सब चीज़ों को जानता है।" (४-३२)

"अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी दूसरे को मत जोड़ो। अपने माँ बाप के साथ, अपने रिश्तेदारों के साथ, यतीमों के

साथ, ज़रूरतमन्दों के साथ, अपने नातेदार पड़ौसी के साथ, अपने गैर नातेदार पड़ोसी के साथ, सफ़र में जिसका भी साथ हो जाय उसके साथ, राह चलतों के साथ, और जो तुम्हारे मातहत हैं उनके साथ, सब के साथ, नेकी करो, और नरमी से बरतो। सचमुच अल्लाह घमण्ड करने वालों और अपनी बड़ाई हाँकने वालों को प्यार नहीं करता।" (४-३६)

"ऐ ईमान वालो! हमेशा इन्साफ़ पर रहो, और अल्लाह के लिए हमेशा सच्ची गवाही दो, चाहे तुम्हारे अपने ख़िलाफ़ हो, चाहे तुम्हारे मां बाप या तुम्हारे क़रीबी रिश्तेदारों के ख़िलाफ़ हो, और न इसमें अमीर या ग़रीब का कोई ख़याल करो × × ×" (४-१३५)

"ऐ ईमान वालो! ईश्वर के लिए हमेशा सचाई पर रहो, हमेशा इन्साफ़ से गवाही दो, तुम्हें अगर किसी से नफ़रत भी है तो उसकी वजह से किसी के साथ बेइन्साफ़ी न करो, हमेशा सब के साथ इन्साफ़ करो, यह 'तक़वा' (परहेज़गारी यानी पाक ज़िन्दगी) के ज़्यादह नज़दीक है, अल्लाह का ख़याल रखो, सचमुच अल्लाह सब जानता है कि तुम क्या करते हो।" (५-८)

"ऐ ईमान वालो! जब तक तुम काबे की ज़ियारत (यात्रा) में हो तब तक किसी जानवर का शिकार मत करो × × ×" (५-९५)

"और जब कभी इन लोगों (अरबों) में से किसी के लड़की पैदा हो जाती है तो उसका मुँह काला पड़ जाता है, उसे ग़ुस्सा आता है, वह इसे इतना बुरा समझता है कि लोगों से अपना मुँह छिपाने लगता है, वह सोचने लगता है कि इस लड़की को रखने की बेइज़्ज़ती सहूं या इसे ज़िन्दा मिट्टी में गाड़ दूँ। सचमुच इस तरह

के ख़याल बहुत ही बुरे हैं।" (१६-५८, ५९)

"सचमुच अल्लाह की रहमत (दया) उन लोगों के बहुत पास है जो दूसरों के साथ नेकी करते हैं।" (७-५६)

"ऐ ईमान वालो! इसमें कोई शक नहीं कि बहुत से मज़हबी गुरु और महन्त लोग झूठ मूठ लोगों का माल खा जाते हैं और लोगों को ईश्वर के सच्चे रास्ते से भटकाते हैं। जो लोग भी सोना चाँदी जमा करेंगे और उसे अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं कर डालेंगे उन्हें बहुत बड़ी सज़ा मिलेगी।" (९-३४)

"जो लोग सब्र करेंगे और नेक काम करेंगे उन्हें अल्लाह से माफ़ी मिलेगी और बहुत बड़ा बदला मिलेगा।" (११-११)

"सचमुच अल्लाह का हुकुम है कि दूसरों के साथ इन्साफ़ करो, और उनके साथ भलाई करो, और अपने पड़ोसियों को दान दो, और गन्दे काम न करो, बुरे काम न करो, और एक दूसरे से फ़िसाद न करो। इन बातों का ख़याल रक्खो × × × उस औरत की तरह काम मत करो जो मज़बूत सूत कातती है और फिर उसे उलझा देती है और उसके टुकड़े टुकड़े कर डालती है। लोग अपनी क़समों को एक दूसरे को धोका देने का ज़रिया बना लेते हैं चूंकि एक गिरोह दूसरे गिरोह से तादाद में ज़्यादह है। अल्लाह तुम्हें इसी से आज़माता है × × × अपनी क़समों को एक दूसरे को धोका देने का ज़रिया मत बनाओ × × × इसकी सज़ा तुम्हें ज़बरदस्त मिलेगी।" (१६-९० से ९४)

"धन, दौलत और बाल बच्चे सिर्फ़ इस दुनिया की ज़िन्दगी की सजावट हैं, लेकिन नेक काम हमेशा रहने वाले हैं और तुम्हें अपने

रब्ब से नेक कामों ही का फल ज़्यादा अच्छा मिलेगा, नेक कामों ही से तुम्हें (अपने भले की) ज़्यादह उम्मीद रखनी चाहिये ।" (१८-४६)

"जो जानवर क़ुरबान किये जाते हैं उनका गोश्त या उनका ख़ून अल्लाह को नहीं पहुंचता, अल्लाह तुम से सिर्फ़ तुम्हारा 'तक़वा' (बुराई से बचे रहना) क़बूल करता है × × ×" (२२-३७)

"ज़िना (व्यभिचार) करने वाले मर्द या औरत हर एक को सौ कोड़ों की सज़ा देनी चाहिए, इस बात में उन पर रहम खाकर अल्लाह के हुकुम को नहीं तोड़ना चाहिए × × ×"* (२४-२)

"उस रहमान (दयालु ईश्वर) के सच्चे बन्दे वे हैं जो आजज़ी (दीनता) के साथ झुक कर धरती पर चलते हैं, और जब जाहिल लोग उनसे कुछ उलटी सीधी बात कहते हैं तो वे जवाब देते हैं— 'सलाम' ।" (२५-६३)

"लुक़मान ने अपने बेटे से कहा— ऐ बेटा ! अल्लाह से दुआ

---

* ज़िना के माइने हैं अपनी ब्याहता (मनकूहा) बीवी के सिवा किसी दूसरी औरत को बुरी निगाह से देखना । हदीसों में लिखा है कि मुहम्मद साहब के बाद दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर के ज़माने में हज़रत उमर के एक बेटे पर ज़िना का जुर्म साबित हुआ । हज़रत उमर ने ऊपर की आयत के मुताबिक़ उसे सौ कोड़े लगाने का हुक्म दिया । सौ कोड़े पूरे होने के पहले लड़का मर गया । उसे दफ़न कर दिया गया और बाक़ी कोड़े उसके बाप हज़रत उमर के हुक्म से उसकी क़ब्र पर लगाये गये, ताकि आयत का कहना पूरा हो जावे ।

मांगते रहो, नेक कामों की तरफ़ लोगों को लगाते रहो, और बुरे कामों से मना करते रहो, और जो कुछ तुम पर मुसीबत पड़े सब्र के साथ झेलते रहो, सचमुच यह अल्लाह का बड़ा पक्का हुकुम है।

"किसी को छोटा समझकर उसकी तरफ़ से अपना मुँह मत फेर लो, और न ज़मीन पर बहुत अकड़ कर चलो, सचमुच अल्लाह किसी घमण्ड करने वाले और डींग हाँकने वाले को प्यार नहीं करता।

"दुनिया में चलो फिरो तो नेकी और सचाई से रहो और जब बोलो तो धीमी आवाज़ से बोलो, सचमुच गधे की तरह रेंकना अल्लाह को सब से ज़्यादह नापसन्द है।" (३१-१७ से १६)

"क्या लोग समझते हैं कि वे यह कहने से छोड़ दिए जावेंगे कि हम ईमान लाए हैं' और उनके कामों की जांच पड़ताल नहीं की जायगी ?...क्या जो लोग बुरे काम करते हैं वह समझते हैं कि वह .खुदा से बच जांयगे ? वह ग़लत सोचते हैं !...जो लोग बात मानेंगे और नेक काम करेंगे. सचमुच हम उन्हीं को नेक लोगों में शामिल करेंगे।" (२६-२,४,६)

"आदमी को हमारा (अल्लाह का) हुकुम है कि वह अपने माँ बाप के साथ नेकी करे। कितनी तकलीफ़ के साथ उसकी माँ उसे पेट में रखती है, फिर कितनी तकलीफ़ उठाकर उसे पैदा करती है, उसे दूध पिलाती और पालती है। ढाई बरस इस तरह लग जाते हैं। होते होते जब आदमी बड़ा होता है और चालीस बरस का होता है तो .खुदा से दुआ माँगता है—'ऐ खुदा ! मुझे इस क़ाबिल बना कि मैं तेरी नेमतों (देन) के लिये, जो तू ने मुझे और मेरे माँ बाप को दी

है, तेरा शुक्र अदा कर सकूं, और मैं नेक काम कर सकूं जिनसे तू .खुश हो, और मेरी औलाद का भला कर, सचमुच मैं तेरा सहारा चाहता हूँ और मैं तेरे हुक्मों के सामने सर झुकाता हूँ।" (४६-१५)

"ऐ ईमान वालो! कोई आदमी किसी दूसरे पर न हँसे, मुमकिन है जिस पर वह हँसता है वह उससे अच्छा हो, और न कोई औरत दूसरी औरत पर हँसे, मुमकिन है जिस पर वह हँसती है वह उससे अच्छी हो। एक दूसरे के दोष यानी नुक़्स मत निकालो और न एक दूसरे को नाम धरो। ईमान वालों के लिये किसी को भी नाम रखना बुरा है, जो कोई नहीं मानेगा वह अपने ऊपर .ज़ुल्म करेगा।

"ऐ ईमान वालो! दूसरों पर बहुत शक मत करो, सचमुच कभी कभी शक करना गुनाह होता है। दूसरों के नुक़्स ढूंढ़ते मत फिरो, और न पीठ पीछे किसी की बुराई करो। पीठ पीछे बुराई करना ऐसा ही है जैसा अपने मुरदा भाई का माँस खाना। क्या तुममें से कोई इसे पसन्द करेगा? नहीं, तुम इसे बुरा समझते हो, इसलिए अल्लाह का ख़याल रखो सचमुच अल्लाह बार बार तुम्हारी तरफ़ मुड़नेवाला और दया करनेवाला है।

"ऐ लोगो! सचमुच अल्लाह ने तुम्हें औरत और मर्द से पैदा किया है, और तुम्हें ख़ानदानों और क़बीलों में इसलिये बाँट दिया है ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको। सचमुच अल्लाह की नज़रों में तुममें सब से ज़्यादह इज़्ज़त वाला वही है जो सब से ज़्यादा बुराई से बचता है, सचमुच अल्लाह सब कुछ जानता समझता है।" (४६-११ से १३)

"ताकि जो तुम्हें नहीं मिला उस पर तुम रंज न करो, और जो कुछ तुम्हें मिला है उस पर फूलो नहीं[1], अल्लाह किसी घमण्ड करने वाले और डींग हाँकने वाले को प्यार नहीं करता।" (५७-२३)

"जो बुरा काम करता है उसकी अपनी आत्मा (नफ़्सिल्लव्वामह) उसे बुरा कहती है × × ×" (७५-२)

"जन्नत उन लोगों के लिए है जो अपने रब्ब से डरते हैं और अपने आपको ख़्वाहिशों से रोक कर रखते हैं।"[2] (७९-४०,४१)

एक बार अब्दुल्लाह नामी एक ग़रीब अन्धा मुहम्मद साहब के पास आया और कुछ पूँछने लगा। मुहम्मद साहब उस वक़्त कुछ क़ुरैश के सरदारों से बातचीत कर रहे थे। उन्हें बुरा लगा। उन्होंने उस अन्धे की तरफ़ से मुँह फेर लिया। इस पर क़ुरान की नीचे लिखी आयतें उतरीं—

"तुमने (मुहम्मद साहब ने) नाराज़ होकर पीठ मोड़ ली क्योंकि तुम्हारे पास एक अन्धा आया था। तुम्हें कैसे मालूम हो कि वह अन्धा अपने आप को पाक करेगा, तुम्हारी बात सुनेगा और उससे फ़ायदा उठायगा? और जो लोग अपने लिए तुम्हारी ज़रूरत नहीं समझते, उनसे तुम बात करते हो। अगर वे अपने को पाक न करें तो तुम्हारा कोई क़ुसूर नहीं। लेकिन जो आदमी मेहनत करके

१—न अच्छी चीज़ पाकर बहुत खुश हो और न बुरी चीज़ पाकर बहुत दुखी हो (गीता, ५-२०)

२—इच्छा को रोकना ही तप है – जैन तत्त्वार्थ सूत्र

तुम्हारे पास आता है और अल्लाह से डरता है, क्या तुम उससे मुंह मोड़ लोगे ? नहीं ! असली बड़प्पन उसी को मिलना चाहिये।" (८०-१ से ११)

"ज़्यादह धन दौलत तुम्हारे दिल को अल्लाह की राह से हटाती है,* यहाँ तक कि मौत तुम्हें आ घेरती है, नहीं, तुम्हें जल्दी ही पता चल जावेगा, नहीं, नहीं, तुम्हें जल्दी ही पता चल जावेगा। नहीं, तुम्हें पक्की समझ होती तो तुम्हें अपने कामों का नतीजा नरक दिखाई देता, और तुम्हें उसका यक़ीन हो जाता, आख़ीर में दिन आयगा जब तुमसे ज़रूर पूछा जायगा कि तुमने अल्लाह की दी हुई नेमतों का क्या किया।" (१०२-१ से ८)

"वे लोग बरबाद हो जायगे जो बेईमानी करते हैं। जो जब दूसरों से चीज़ लेते हैं तो पूरा नाप कर लेते हैं, लेकिन जब दूसरों को देते हैं या उनके लिये तौलते हैं तो कम देते हैं।" (८३—१ से ३)

"अल्लाह ने तराज़ू और नाप तोल इसलिये बनाये हैं कि तुम किसी के साथ बेइन्साफ़ी न करो, सब के साथ इन्साफ़ करो और किसी का हक़ न मारो।" (५५-७ से ६)

"अल्लाह ने आदमी के लिए दो साफ़ साफ़ रास्ते बता दिये हैं। एक रास्ता दाहने हाथ का है, जो पहाड़ की चढ़ाई की तरह मुशकिल है और दूसरा रास्ता बाएं हाथ का है, जो पहाड़ के उतार की तरह आसान है। लेकिन आदमी चढ़ाई के रास्ते से बचता है। तुम कैसे समझोगे कि यह पहाड़ की चढ़ाई का रास्ता क्या है ! वह रास्ता यह

---

*सचाई यानी हक़ का मुंह सोने के ढक्कन से ढका हुआ है—उपनिषद्

है—.ग़ुलामों को आज़ाद करना* और भूख के दिनों में अपने रिश्तेदारों को, यतीमों को और मिट्टी में लोटते हुए ग़रीब आदमी को खाना देना। जो आदमी ऐसा करता है वही सच्चा मोमिन यानी ईमान वाला है। ऐसे लोग ही एक दूसरे को सब्र करने और दूसरों पर दया करने की सलाह देते हैं। यह लोग ही दाहने हाथ के रास्ते पर चलने वाले हैं। इसके ख़िलाफ़ जो लोग हमारी बात नहीं मानते वह बाएं हाथ वाले रास्ते पर चलने वाले हैं उनके ऊपर आग पड़ी है।" (९०—१० से २०)

---

* .ग़ुलामी का रिवाज क़रीब क़रीब सब पुराने मुल्कों में था। रोम में यह रिवाज सब से ज़्यादा बढ़ा और इसने सब से भयानक शकल ली। जितना .ज़ुल्म .ग़ुलामों पर रोम में होता था, उतना दुनिया में कहीं नहीं हुआ। यूरोप और अमरीका में यह जङ्गलीपन का रिवाज १८ वीं सदी तक जारी था। .क़ुरान ने इस पुराने रिवाज को बहुत कम कर दिया। जंग के .क़ैदियों का जंग के बाद रखा जाना .क़ुरान ने बिल्कुल बन्द कर दिया (४७-४)। और ".ग़ुलामों को आज़ाद करना" बहुत सी आयतों में सब से बड़े सवाब यानी पुण्य का काम बताया गया है। (९०—१३ वग़ैरह)

मुहम्मद साहब को अपनी ज़िन्दगी में जितने .ग़ुलाम मिले, .क़ुरान के इसी हुक्म के मुताबिक़, उन्होंने सबको उसी वक़्त आज़ाद कर दिया—The Holy Quran by Mohammad Ali, p. 1192

"किसी अनाथ पर ज़ुल्म न करो, किसी मांगने वाले पर नाराज़ मत हो और सब को अल्लाह की नेमत (देन) की ख़ुशख़बरी दो।" (९३-९ से ११)

"ज़माने का हाल देखो ! सचमुच सिवा उन लोगों के जो बात मान लें, और नेक काम करें और एक दूसरे को सचाई पर रहने और सब्र करने की सलाह दें बाक़ी सब आदमी घाटे में रहेंगे।" (१०३-१ से ३)

"लोगों को सिवा इसके और कुछ हुकुम नहीं दिया गया कि वे पाक दिल से अल्लाह की इबादत करें सच्चे और ईमानदार रहें, अल्लाह से दुआ मागते रहें, और ग़रीबों को दान दें, यही 'दीनुलक़य्यमह' यानी असली और पक्का दीन है।" (९८-५)

"क्या तुमने सोचा है कि दीन को झूटा ठहराने वाला आदमी कौन है ? दीन को झूटा ठहराने वाला आदमी वह है जो किसी यतीम को सताता है और जो ग़रीबों को खाना देने पर ज़ोर नहीं देता। ऐसे आदमी जब नमाज़ पढ़ते हैं तो उन पर अफ़सोस है, क्योंकि वह नमाज़ के असली मतलब की तरफ़ ध्यान नहीं देते। वह सिर्फ़ दिखावा करते हैं और ख़ैरात से हाथ रोकते हैं (१०७-१ से ७)

बुराई का बदला भलाई से दो

"लोगों को आदम के दोनों बेटों का क़िस्सा सच सच सुना दो।

इन दोनों लड़कों ने अल्लाह के लिए .कुरबानी* (उपासना) की। पर अल्लाह ने एक की .कुरबानी मंज़ूर की और दूसरे की नहीं की । (बात यह थी)—उनमें से एक ने दूसरे से कहा था 'मैं सचमुच तुम्हें मार डालूंगा।' दूसरे ने जवाब दिया,—अल्लाह सिर्फ़ उनकी क़ुरबानी मंज़ूर करता है जो बुराई से बचते हैं। अगर तुम मुझे क़त्ल करने के लिये हाथ बढ़ाओगे तब भी मैं तुम्हें क़त्ल करने के लिये तुम्हारी तरफ़ हाथ नहीं बढ़ाऊंगा। सचमुच मैं उस अल्लाह से डरता हूँ जो सब दुनियाओं का रब्ब यानी पालने वाला है।' (अल्लाह ने आदम के इसी दूसरे बेटे की .कुरबानी मंज़ूर की पहले की नहीं)।" (५-२७,२८)

"(यहूदियों की किताब) तौरेत में हम (अल्लाह) ने हुकुम दिया है कि तुम जान के बदले में जान ले सकते हो, आँख के बदले में आँख, नाक के बदले में नाक, कान के बदले में कान, और दाँत के बदले में दाँत; ऐसे ही अगर कोई तुम्हें घायल कर दे तो तुम उसका भी उतना ही बदला ले सकते हो। लेकिन अगर कोई माफ़ करदे और बदला न ले तो और भी अच्छा है, इससे माफ़ कर देने वाले के पापों का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित्त) हो जायगा†।" (५-४५)

---

*कुरबानी शब्द 'क़ुर्ब' से बना है जिसके माइने 'क़रीब होना' या 'पास आना' है। संस्कृत 'यज्ञ' शब्द के भी लफ़्ज़ी माइने 'मिलना' है। क़ुरबानी या यज्ञ उन कामों को कहते थे, जिनसे समझा जाता था कि आदमी ईश्वर के ज्यादा नजदीक पहुँचता है या उससे जा मिलता है। इस तरह क़ुरबानी, उपासना और यज्ञ तीनों के लफ़्ज़ी माइने एक हैं।

† ठीक यही बात हज़रत ईसा ने इन्हीं शब्दों में इंजील में कही है।

"× × × अगर तुम कुछ लोगों से इसलिये दुशमनी रखते हो क्योंकि उन्होंने तुम्हें अल्लाह की पाक मसजिद में जाने से रोका,* तो भी उस दुशमनी की वजह से तुम हद से न बढ़ो। एक दूसरे को नेकी करने और बुराई से बचने में ही मदद दो, बुराई करने में और दूसरे को तकलीफ़ पहुंचाने में किसी को मदद न दो, और अल्लाह से डरो × × ×" (५-२)

"ऐ मुहम्मद ! इन लोगों में से कुछ से तुम्हें हमेशा दग़ा मिलेगी (यानी एक मर्तबा तुम्हारी बात मानकर भी वे फिर जावेंगे) उन्हें माफ़ कर देना और जाने देना। सचमुच अल्लाह उन्हीं को प्यार करता है जो दूसरों के साथ नेकी और अहसान करते हैं।" (५-१३)

"जो लोग सब्र करते हैं, अपने अल्लाह को ख़ुश रखना चाहते हैं, दुआएं मांगते हैं, और जो कुछ ईश्वर ने उन्हें दिया है उसमें से छिपा कर और खुले दान देते हैं, और जो कोई उनके साथ बुराई करता है उसके साथ भलाई करते हैं, उन्हें उस दुनिया में अच्छा घर रहने को मिलेगा।" (१३-२२)

"अगर तुम्हें कोई दुख पहुंचावे तो तुम उससे उतना ही बदला ले सकते हो, जितना उसने तुम्हारे साथ किया। लेकिन अगर तुम सब्र कर जाओ तो सचमुच सब्र करने वालों को सब से अच्छा फल मिलेगा। इसलिए सब्र ही करो। बिना अल्लाह की मदद के तुम

---

* मक्के के उन लोगों की तरफ़ इशारा है, जिन्होंने मुसलमानों को ज़बरदस्ती उनके घरों से निकाल दिया था और जिनसे मुसलमानों की जंग जारी थी।

सब्र नहीं कर सकोगे, दूसरों की फ़िक्र मत करो तुम इस फ़िक्र में मत पड़ो कि दूसरे क्या सोच रहे हैं। सचमुच अल्लाह उन्हीं के साथ है जो बुराई से बचते हैं, और दूसरों के साथ भलाई करते हैं।" (१६-१२६ से १२८)।

"बुराई और भलाई बराबर नहीं हो सकतीं। बुराई का बदला भलाई से दो और तुम देखोगे कि जिसे तुमसे दुशमनी थी वह भी तुम्हारा गहरा दोस्त हो जायगा।

"और अगर किसी शैतान या बुरे आदमी की तरफ़ से तुम्हें कोई नुक़सान पहुंचे तो अल्लाह की पनाह लो, सचमुच अल्लाह सब कुछ सुनता और जानता है।" (४१-३४, ३६)

"कोई तुम्हारे साथ बुराई करे तो उसे उतनी ही सज़ा दे सकते हो जितनी उसने बुराई की, लेकिन जो कोई माफ़ कर देता है और इस तरह माफ़ करके बुराई करने वाले का सुधार करता है उसे अल्लाह से इनाम मिलता है। सचमुच अल्लाह ज़ुल्म करने वालों को प्यार नहीं करता। जिस किसी पर ज़ुल्म किया जावे वह अगर अपना बचाव करे तो उसका कोई क़ुसूर नहीं। क़ुसूर उनका है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और धरती पर हक़ (इन्साफ़) के ख़िलाफ़ झगड़े खड़े करते हैं। इस तरह के लोगों को अल्लाह से बड़ी सज़ा भुगतनी पड़ेगी। लेकिन जिस पर ज़ुल्म किया गया वह अगर सब्र कर ले और माफ़ करदे तो सचमुच यह काम वह है जो करने के क़ाबिल है यही इरादा करना चाहिए।" (४२-४० से ४३)

"बुराई का बदला भलाई से दो। अल्लाह ख़ूब जानता है लोग क्या चाहते हैं।" (२३-९६)

कुछ और आयतें

"तुम अल्लाह से कैसे इनकार कर सकते हो ? तुम मर चुके थे और उसने तुम्हें ज़िन्दा किया, वह फिर तुम्हें मुर्दा कर देगा और फिर ज़िन्दा कर देगा, और फिर तुम (आख़ीर में) उसी के पास जाओगे।"(२-२८)

"सचमुच अल्लाह दाने में से और गुठली में से अकुआ फोड़ निकालता है। वह मुर्दा से ज़िन्दा और ज़िन्दा से मुर्दा करता है। ये अल्लाह ही के काम हैं। फिर तुम उससे क्यों फिरे हुए हो ?" (६-९६)

"अल्लाह ही ने तुम्हें ज़िन्दगी दी है। वही तुम्हें मात देगा। फिर वही तुम्हें फिर ज़िन्दा करेगा। सचमुच आदमी नाशुकरा है।" (२२-६६)

"ऐ ईमान वालो ! सब्र करो और अल्लाह से दुआ मांगो, इस तरह अल्लाह से मदद चाहो। सचमुच अल्लाह उन्हीं के साथ है जो सब्र करते हैं।

"जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए उन्हें मरा हुआ मत कहो। नहीं, वह ज़िन्दा हैं, पर तुम उन्हें देख नहीं पाते।

"और इसमें कोई शक नहीं, अल्लाह तुम्हें डर, भूख, प्यास, और जान, माल और फलों के नुक़सान, सबके ज़रिये थोड़ा थोड़ा आज़मायगा। लेकिन जो लोग सब्र से काम लेंगे उन्हें ख़ुशख़बरी दो।

"उन्हें ख़ुशख़बरी दो जिन पर जब भी कोई मुसीबत पड़ती है तो वे कहते हैं...सचमुच हम अल्लाह ही के हैं और इसमें कोई शक

नहीं हमें अल्लाह ही के पास जाना है।

"ये ही लोग हैं जिनके लिए अल्लाह की बरकतें और उसकी रहमत है। ये ही ठीक रास्ते पर चलने वाले हैं।" (२-१५३ से १५७)

"जो लोग ईमान रखते हैं, उनका रखने वाला अल्लाह है, वही उन्हें अंधेरे से निकाल कर उजाले में ले जाता है।*" (२-२५७)

"इस खुली किताब (क़ुरान) के ज़रिये अल्लाह उन लोगों को शान्ति का रास्ता दिखाता है जो अल्लाह की मरज़ी पर चलते हैं, अल्लाह अपनी मरज़ी से उन्हें अँधेरे से निकाल कर उजाले में ले जाता है, और उन्हें सीधे रास्ते पर ले चलता है।" (५-१६)

"अल्लाह ही ने यह किताब (क़ुरान) तुम्हारे (मुहम्मद साहब के) घट में उतारी है। इसकी कुछ आयतें "मुहकमात" यानी पक्के और साफ़ साफ़ हुकुम हैं, वे ही इस किताब की जड़ बुनियाद हैं, बाक़ी आयतें "मुतशाबेहात" यानी तशबीह या मिसाल के तौर पर हैं। जिन लोगों के दिलों में टेढ़ापन है वे क़ुरान के उसी हिस्से पर चलते हैं जो तशबीह यानी मिसाल के तौर पर कहा गया है। वह उसके ज़रिये फ़ितना (झगड़ा या फूट) खड़ा करना चाहते हैं, और उसका अपना ही मतलब लगाते हैं, लेकिन उसका मतलब सिवा अल्लाह के और कोई नहीं जानता और जो पक्के ज्ञानी हैं वे कहते हैं कि हम इसे मानते हैं, यह सब हमारे रब्ब की देन है, दूर की सोचने वाले ही इसकी परवाह करते हैं।" (३-६)

"सचमुच अल्लाह किसी मच्छर तक की या उससे भी छोटी चीज़ की मिसाल देने में नहीं शरमाता, फिर जो लोग मानते हैं वह

---

*हमें अंधेरे से उजाले में ले चल—उपनिषद्

समझाते हैं कि यह उनके रब्ब की तरफ़ से सच्चाई है, और जो नहीं मानते वह कहते हैं—'अल्लाह का इस मिसाल से क्या मतलब है? इससे बहुत से ग़लत रास्ते पर पड़ जायंगे और बहुत से ठीक रास्ते पर।' लेकिन सिवाय बदी करनेवालों के कोई इससे ग़लत रास्ते पर नहीं पड़ सकता।" (२-२६)

"और 'अहले किताब' में से यानी उन लोगों में से जिनके पास मज़हबी किताबें हैं कुछ तो ऐसे हैं कि अगर तुम दौलत का एक ढेर भी उनमें से किसी के सुपुर्द कर दो तो वह तुम्हें वापिस कर देंगे। और उन्हींमें से कुछ ऐसे भी हैं कि अगर तुम उनमें से किसी के एक दीनार (एक सिक्का) सुपुर्द कर दो तो जब तक तुम वापिस लेने पर डट ही न जाओ वह कभी वापिस न करेंगे, इस तरह के लोग कहते हैं कि उन लोगों के साथ जिनके पास इलहामी किताबें नहीं हैं हम अगर वादा करके पूरा न करें तो हम पर (अल्लाह की तरफ़ से) कोई इलज़ाम नहीं।' ऐसा कहने वाले जान बूझ कर अल्लाह के ख़िलाफ़ झूठ बोलते हैं।

"नहीं, जो कोई अपने वादे को पूरा करता है और बुराई से बचता है, अल्लाह सचमुच उसीको प्यार करता है।" (३-७४,७५)

"जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाते हैं, उन्हें मरा मत समझो। नहीं ,वह ज़िन्दा हैं, और उनका रब्ब उन्हें रोज़ी देता है।" (३-१६८)

"······और इस दुनिया की ज़िन्दगी सिवाय झूठे धन (मताउल ग़रूर' यानी माया) के और कुछ नहीं है।" (३-१८४)

"अफ़सोस है हर ऐसे आदमी पर जो किसी दूसरे की बुराई करता

है, किसी को बदनाम करता है,

"जो दौलत जमा करता है और समझता है कि वह उसके काम आयगी,

"वह समझता है कि उसकी दौलत उसे क़ायम रखेगी,

"नहीं, वह सचमुच बहुत बड़ी आफ़त में पड़ेगा,

"और तुम कैसे समझोगे कि वह बड़ी आफ़त क्या है ?

"वह अल्लाह की सुलगाई हुई आग है,

"जो (पछतावे की शक्ल में) आदमियों के दिलों के ऊपर जलती है,

"सचमुच यह आग बड़े बड़े खम्भों की शक्ल में (यानी ऐसी ऐसी बेचैन कर देने वाली ख़्वाहिशों की शक्ल में जो कभी पूरी नहीं हो सकतीं उन्हें घेर लेगी।" (१०४-१ से १)

"कह दो कि मेरे रब्ब ने सिर्फ़ गन्दी बातों (बदचलनी) को मना किया है, खुली हुई गन्दी बातों को भी और छिपी हुई गन्दी बातों को भी, और पाप करने को मना किया है, और हक़ या इनसाफ़ के ख़िलाफ़ बग़ावत करने को मना किया है, और इसबात को मना किया है कि तुम अल्लाह के साथ किसी दूसरे को जोड़ो जिसका तुम्हें कोई हक़ नहीं दिया गया, और अल्लाह की बाबत ऐसी बात कहो जिसे तुम नहीं जानते।" (७-३३)

"सचमुच अल्लाह की रहमत (उसकी दया) उन लोगों के नज़दीक है जो दूसरों के साथ नेकी करते हैं।" (७-५६)

"अल्लाह ने अपनी नियामतें यानी दुनिया की अच्छी चीज़ें कभी किसी क़ौम से नहीं छीनीं, जब तक कि उस क़ौम ने आप अपनी

हालत को नहीं बदल दिया, क्योंकि अल्लाह सब सुनता जानता है।" (८-३५)

"अल्लाह किसी क़ौम का हालत को नहीं बदलता, जब तक कि वह क़ौम ख़ुद अपनी हालत को नहीं बदलती।" (१३-११)

"और जब कभी ईश्वर ने किसी बसती के लोगों को उनके पापों से आगाह करने के लिए उनमें कोई रसूल भेजा है तो वहाँ के ऐश में डूबे हुए लोग यही कहते हैं कि हम तुम्हारी बात हरगिज़ नहीं मानते।

"वह कहते हैं, हमारे पास बहुत दौलत और बाल बच्चे हैं हमें कोई सज़ा नहीं देगा।

"कह दो, मेरा रब्ब जिसे चाहता है बहुत देता है और जिसे चाहता है कम कर देता है, लेकिन बहुत से लोग नहीं समझते।

"न तुम्हारी दौलत तुम्हें अल्लाह के नज़दीक ला सकती है और न तुम्हारे बाल बच्चे। अल्लाह के नज़दीक वही जा सकता है जो बात मान ले और नेक काम करे।" (३४-३४ से ३७)

"जो कोई दूसरी दुनिया (परलोक, में भलाई चाहता है, अल्लाह उसे वही ज़्यादा देता है, और जो कोई इस दुनिया का सुख चाहता है उसे वही मिलता है, उसे फिर दूसरी दुनिया का सुख नसीब नहीं होता।" (४२-२०)

"लेकिन ऐ मुहम्मद! अगर लोग तुमसे मुंह फेर लें तो हमने (अल्लाह ने) तुम्हें उनके ऊपर चौकीदार (हफ़ीज़) बनाकर नहीं भेजा है। तुम्हारा काम सिर्फ़ अपना पैग़ाम (संदेशा) सुना देना है।" (४२-४८)

"समझो कि इस दुनिया की ज़िन्दगी क्या है—खेल, कूद, तमाशा,

दूसरों के सामने बड़ हांकना और धन दौलत और बाल बच्चों के बढ़ाने में एक दूसरे से बाज़ी ले जाने की कोशिश करना, यही बस इस दुनिया की ज़िन्दगी है। यह उस बारिश की तरह (थोड़ी देर की) है जिससे हरियाली उगी, किसान .खुश हुआ, फिर वह हरियाली मुरझाई पीली पड़ी, सूखी और टूट गई। और दूसरी दुनिया (परलोक) में (बुरे कामों की) सज़ा भी है, और अल्लाह से माफ़ी भी है और अललाह की .खुशी भी और इस दुनिया की ज़िन्दगी, सिवा धोखे (माया) के और कुछ नहीं।" (५७-२०)

"ऐ ईमान वालो! सचमुच तुम में से कुछ के लिए बीवी और बच्चे तुम्हारे दुशमन हैं, इसलिए ख़बरदार रहो, और अगर तुम दूसरों को माफ़ कर दो, और बरदाश्त कर लो, और जाने दो तो सचमुच अल्लाह भी माफ़ कर देने वाला और दयावान है।

"तुम्हारा माल असबाब और बाल बच्चे सिर्फ़ तुम्हें परखने की चीज़ें हैं, और अल्लाह के पास बहुत बड़ा इनाम है।" (६४-१४, १५)

"सचमुच हर मुशकिल के साथ आसानी है।" (६४-५)

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह का ख़्याल रखो, और उसके रसूल का कहना मानो। अल्लाह तुम पर दो तरह की दया करेगा। एक तुम्हारे अन्दर रोशनी (नूर) देगा जिसके उजाले में तुम चल सको,* और दूसरे तुम्हें माफ़ कर देगा। अल्लाह माफ़ कर देने वाला और दयावान है।" (५७-२८)

---

* रँग महल में दीप बरता है, आसन से मत डोल, री, तोहे राम मिलेंगे—कबीर।

"सचमुच उसी आदमी का भला होगा जो अपनी आत्मा को पाक करेगा।

' जो अपने रब्ब को याद करेगा और उससे दुआ मांगेगा,

"नहीं, तुम इस दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द करते हो!

'पर उस दुनिया की ज़िन्दगी ज़्यादह अच्छी और ज़्यादह टिकाऊ है।

सचमुच यही बात इससे पहले की किताबों में कही गई है।" (८७-१४ से १८)

"ऐ नफ़्सेमुतमइन्ना! यानी ऐ शान्त और सन्तुष्ट आत्मा वालो!

"अपने रब्ब से .खुश और रब्ब तुम से .खुश, उस अपने रब्ब ही के पास लौट जाओ।" (८९-२७, २८)

"उस अल्लाह के नाम से जो रहमान और रहीम है,

"सूरज और उसकी रोशनी का ख़्याल करो,

"और चाँद का जो सूरज से रोशनी लेता है,

"और दिन का जब वह दुनिया को नज़र के सामने खोल देता है,

"और रात का जब वह दुनिया पर परदा डाल देती है,

"और आसमान और उसकी बनावट का,

"और ज़मीन और उसके फैलाव का,

"और नफ़्स (आत्मा) और उसके कमाल (पूर्णता) का,

"उसी अल्लाह ने हर आत्मा के अन्दर यह बात पैदा की कि वह समझे बुराई क्या है और बुराई से बचना क्या है,

"सचमुच उसी आदमी का भला होगा जो अपनी आत्मा को पाक करेगा,

'और वह सचमुच घाटे में रहेगा जो अपनी आत्मा को गंदा करेगा।" (६१-१ से १०)

निचोड़

आख़िर में हम थोड़े से में .क़ुरान के बुनियादी उसूल और उसकी तालीम का निचोड़ दे देना चाहते हैं। .क़ुरान के बुनियादी उसूल ये हैं—

(१) "अल्लाह एक है।" उसकी कोई शकल सूरत नहीं है। "वह सब दुनियाओं का मालिक" और "सब को उनके कामों का फल देनेवाला" है। उस एक अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे की पूजा नहीं करनी चाहिए।

(२) सब आदमी उसी एक ईश्वर के बन्दे और आपस में भाई भाई हैं। "आदमियों में सबसे बढ़कर इज्ज़त के क़ाबिल वह है जो बुराई से बचे और नेकी के कामों में लगा रहे।"

(३) दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों का निकास उसी एक अल्लाह से है। इन सब मज़हबों के क़ायम करने वालों को एक तरह ही उसी अल्लाह से रोशनी मिली है। इसलिए ये सब धर्म सच्चे हैं और जड़ में "सब धर्म एक हैं।"

(४) अलग अलग मज़हबों में सिर्फ़ अपने अपने ज़माने मुल्क और हालत के फ़रक़ से रीत रिवाज और पूजा इबादत के तरीक़ों में फ़रक़ है, बुनियादी उसूलों में फ़रक़ नहीं। झगड़े की वजह यह हो जाती है कि लोग अपने अपने मज़हबों के इन बुनियादी उसूलों से हट जाते हैं और नेकी और भलाई के कामों

की जगह "शरअ और मिनहाज को यानी रीत रिवाज और पूजा के तरीक़ों को ज्यादा ज़रूरी समझने लगते हैं।

(५) "असली चीज़ यह नहीं है कि आदमी पूजा इबादत के वक्त पूरब को मुँह करे या पच्छिम को। असली चीज़ यह है कि आदमी एक अल्लाह को माने और नेक काम करे।" क़ुरान में नमाज़ और रोज़े दोनों का हुक्म है। लेकिन न नमाज़ का कोई एक ख़ास ढंग मुक़र्रर किया गया और न रोज़े का कोई ख़ास कड़ा क़ानून। नमाज़ और रोज़े, दोनों की ग़रज़ यही बताई गई है कि 'आदमी बुराई से बचा रहे और नेक काम करे।" "जो आदमी भी एक अल्लाह को माने और नेक काम करे, वह चाहे किसी भी ख़ास धर्म का मानने वाला हो, उसे न कोई डर है न कोई ग़म।"

(६) किसी भी क़ौम या मुल्क में जब लोग मज़हब के बुनियादी उसूलों से हट जाते हैं तो अल्लाह उनमें कोई न कोई रसूल या पैग़म्बर भेजकर उसके ज़रिये उनमें "सच्चे दीन को फिर से क़ायम" करता है और लोगों को ठीक राह पर लाता है। इस तरह के पैग़म्बर" सब क़ौमों, सब ज़मानों और सब मुल्कों में होते रहे हैं।

(७) अलग अलग मज़हबों के क़ायम करने वालों या "अलग अलग मुल्कों और क़ौमों के पैग़म्बरों में फ़रक़ करना यानी उनमें से किसी को मानना और किसी को न मानना गुनाह है।"

(८) "क़ुरान अपने से पहिले की सब इलहामी यानी

ईश्वरी किताबों की तसदीक़ करता है" यानी उन्हें सच्चा ठहराता है, और मुहम्मद साहब अपने से पहिले के "सब पैग़म्बरों की मुहर" यानी उन सब की तसदीक़ करने वाले हैं।

(६) गीता की तरह .कुरान भी ख़ास ख़ास हालतों में अगर दूसरे हमला करें तो अपने धर्म के बचाव के लिए हथियार उठाने की इजाज़त देता है, लेकिन अगर दुश्मन "हट जावे और तुम से न लड़े या सुलह करना चाहे तो फिर अल्लाह तुम्हे उनसे लड़ने की इजाज़त नहीं देता।" .कुरान का उसूल है कि "मज़हब के मामले में किसी के साथ किसी तरह की भी ज़बरदस्ती नहीं होनी चाहिए।" हर मामले में कुरान का यह भी साफ़ हुकुम है कि "अगर आदमी दूसरों के सब क़ुसूरों को माफ़ कर दे, सब्र के साथ बर्दाश्त करले और बुराई का बदला भलाई से दे, तो उसके लिए ज़्यादह अच्छा है।" "क्योंकि अल्लाह भी सब को माफ़ कर देने वाला और सब पर दया करने वाला है," "सचमुच अल्लाह उन्हें ही प्यार करता है जो दूसरों के साथ नेकी करते हैं।"

दूसरे शब्दों में .कुरान के अन्दर बार बार दो बातें बताई गई हैं। एक "ईमान" यानी विश्वास और दूसरे "नेक अमल" यानी नेक काम। ईमान का मतलब यह है कि हर आदमी "एक अल्लाह पर और उसके भेजे हुए सब मुल्कों और क़ौमों के सब पैग़म्बरों या रसूलों पर, सब ईश्वरी किताबों पर, अपने अन्दर के नेक रूझानों (अच्छी प्रवृत्तियों) और मरने के बाद की ज़िन्दगी"—इन सब पर यक़ीन करे। नेक अमल का मतलब

यह बताया गया है कि आदमी अपने "नफ़्स" को क़ाबू में रखे और अपने "जिस्म से, माल से और दिल से सब के साथ नेकी करे।"

सच यह है कि जहां तक क़ुरान के बुनियादी उसूलों की बात है, दुनिया की और सब बड़ी बड़ी मज़हबी किताबों की तरह भी क़ुरान सब मुल्कों, सब क़ौमों, और सब आदमियों की एक बराबर बपौती है, और किसी भी सच्चे खोजी को धर्म और रूहानी तरक़्क़ी का ठीक ठीक रास्ता दिखाने के लिए काफ़ी है। प्रेम और ध्यान से देखने से मालूम होता है कि क़ुरान उसी मज़हबे इन्सानियत, उसी मानव धर्म, की तालीम देता है जो सारी दुनिया के लिये बराबर है और जो सब मज़हबों का जौहर है। उस ही हिन्दू सन्तों ने "प्रेम धर्म," और मुसलमान सूफ़ियों ने "मज़हबे इश्क़" कहा है।

——

कुछ और

औरतों के बारे में

औरतों और मरदों के एक दूसरे के साथ बर्ताव के बारे में .कुरान में जगह जगह तरह तरह की हिदायतें हैं। इन हिदायतों से उस ज़माने के अरबों के रिवाजों और आदतों में बहुत बड़ा सुधार हुआ और वह अपने को बुराइयों से बचाकर पाक ज़िन्दगी बसर करने की तरफ़ चलने लगे। जिस तरह हिन्दुओं की 'नारद स्मृति' में लिखा है—"स्त्रियाः क्षेत्रंवीजिनो नरा", यानी औरतें खेत हैं और मर्द उनमें बीज डालने वाले हैं, उसी तरह .कुरान में औरतों की मिसाल खेती की ज़मीन के साथ दी गई है (२-२२३)। मुराद यह है कि औरत का काम आदमी की ख़्वाहिश (वासना) को पूरा करना नहीं है बल्कि उसकी नसल को चलाना और बच्चों को पालना है।

मुहम्मद साहब से पहले अरब में औरतों के किसी तरह के कोई हक़ नहीं थे, न उन्हें बाप दादा की जायदाद का कोई हिस्सा मिलता था। उनका दरजा कुछ कुछ जानवरों या माल असबाब का सा माना जाता था।* .कुरान ने हुक्म दिया कि "जिस तरह मर्द के औरत पर हक़ हैं उसी तरह

---

*.कुरान अङ्गरेज़ी तरज़मा—मौलवी मुहम्मद अली सफ़ा, १०५।

औरत के मर्द पर हक़ है।" (२-२२८) "औरतें मर्दों के लिये और मर्द औरतों के लिये, दोनों एक दूसरे के लिए लिबास यानी एक दूसरे की शोभा हैं।" (२-१८७)

.कुरान में बार बार औरतों के साथ अच्छा बरताव करने का, इनसाफ़ करने का और उनके माल-धन की हिफ़ाज़त करने का हुकुम है। मर्द को कोई हक़ नहीं कि औरत का जो अलग धन हो उसे उससे ले या "जो मर्द उसे दे चुका हो उसे फिर उससे वापस ले" (२-२२९)।

.कुरान से पहले औरत को अपने बाप, भाई, ख़ाविन्द या किसी के भी मरने पर उसकी जायदाद से किसी तरह का हिस्सा न मिलता था ; .कुरान ने हुकुम दिया—

"माँ बाप या पास के रिश्तेदार जो कुछ छोड़ जावें उसमें से एक हिस्सा मरदों को मिलेगा और एक हिस्सा औरतों को, चाहे कुल जायदाद कम हो या ज़्यादह। सब का हिस्सा तय है।" (४-७)

छोटे बच्चों को भी माँ बाप या किसी रिश्तेदार के मरने पर पहले कुछ न मिलता था। अरबों का पुराना क़ानून था—"किसी भी ऐसे आदमी को जो दूसरे पर हमला करने में भाले को अच्छी तरह काम में लाना न जानता हो किसी जायदाद से कोई हिस्सा न मिलेगा।"* जिन लोगों को रात दिन एक दूसरे से लड़ना पड़ता था उनमें इस तरह का क़ानून .कुदरती था। .कुरान ने आगे के लिए मर्दों, औरतों और बच्चों, सब के अलग अलग हिस्से तय कर दिये। (४-११;४-१७७)

---

* .कुरान—मुहम्मद अली सफ़ा २०१।

शादी के लिए अरबों में इससे पहले कोई ख़ास रिश्ता मना न था। यहाँ तक कि बाप के मरने पर उसकी बीवियां उसके बेटे की मिल्कीयत समझी जाती थीं। क़ुरान ने इस पुराने गन्दे रिवाज को हमेशा के लिए बन्द करके तय कर दिया कि किन किन रिश्तेदारियों में शादी करना मना है। (४-१९,२३)

सिवा अपनी ब्याहता औरत के किसी दूसरी औरत के साथ चाहे वह ग़ुलाम हो या कोई भी हो औरत-मर्द का बर्ताव क़ुरान ने हमेशा के लिए नाजायज़ और पाप ठहरा दिया (४-२५ वग़ैरह)।

"ईश्वर चाहता है कि तुम पर दया करे, पर जो लोग अपनी ख़्वाहिशों और वासनाओं के पीछे चलते हैं वे चाहते हैं कि तुम ईश्वर से बिलकुल फिरे रहो।" (४-२७)

हर औरत को जायज़ तरीक़ों से धन कमाने का और अपने धन की ख़ुद मालिक होने का पूरा हक़ दिया गया।

"अल्लाह ने अगर तुम में से किसी को दूसरे से ज़्यादह दिया है तो उसका लालच मत करो। जो कोई आदमी जो कुछ कमायगा वह उसी का माल होगा और जो कोई औरत जो कुछ कमायगी वह उसी का होगा। अल्लाह से दुआ मांगो कि वह तुम्हें अपनी नियामतें दे। सचमुच अल्लाह सब जानता है।" (४-३२)

फिर भी औरतों और बच्चों के रहने खाने पीने का बन्दोबस्त करना मर्द का फ़र्ज़ बताया गया है। और मां का फ़र्ज़ बताया गया है कि पूरे दो साल तक बच्चे को दूध पिलावे। (२-२३३;४-२४)

अगर मर्द औरत में कोई झगड़ा हो तो .कुरान का हुकुम है कि "एक पंच मर्द की तरफ़ से और एक पञ्च बीबी की तरफ़ से बैठकर दोनों में सुलह करा दें, क्योंकि अल्लाह मेल में मदद देता है।" (४-३५)। और "फिर से मेल कर लेना बहुत अच्छी बात है।" (४- २८)। इस पर भी अगर किसी तरह दोनों में न बने तो .कुरान ख़ास हालतों में और कड़ी शर्तों के साथ तलाक़ की यानी छोड़-छुट्टी की भी इजाज़त देता है। लेकिन किसी ऐसी औरत को तलाक़ नहीं दिया जा सकता जिसके पेट में बच्चा हो (६५-४)। तलाक़ दी हुई औरत के लिए उसके गुज़र बसर का ठीक ठाक कर देना तलाक़ देने वाले आदमी का फ़र्ज़ है (२-२४१)। "मर्द का फ़र्ज़ है कि औरत को इनसाफ़ और नेकी के साथ रखे और जब किसी तरह न बन सके तो प्रेम के साथ और खुले दिल से अलग करे।" (२-२२१ वैगरह)। साथ ही औरत को तलाक़ माँगने का उतना ही हक़ है जितना मर्द को। लेकिन तलाक़ की इजाज़त होते हुए भी मुहम्मद साहब की एक बड़ी मशहूर हदीस है—

"जितनी बातों की आदमी को इजाज़त दी गई है, उन सबमें अल्लाह को सबसे ज़्यादह नफ़रत तलाक़ से है।" (अबु दाऊद)

दोनों में से किसी एक के मर जाने पर मर्द या औरत दोनों को दूसरी शादी करने की एक बराबर इजाज़त .कुरान में है। (२-२३४)।

.कुरान में मर्द को एक से ज़्यादह, और बहुत से बहुत चार तक शादी करने की भी इजाज़त है। लेकिन जिस आयत में यह

इजाज़त दी गई है वह ओहद की मशहूर लड़ाई के ठीक बाद की है। उस वक्त बहुत से मुसलमान मर्द लड़ाई में मर चुके थे। बेवाओं और यतीमों की तादाद बढ़ी हुई थी। बेवाओं के लिए अपने यतीम बच्चों को पाल सकना बहुत मुशकिल हो रहा था; उन सब के गुज़र बसर का कोई न कोई ठीक बन्दोबस्त करना ज़रूरी था। देश में औरतें ज़्यादह थीं और मर्द कम। आगे भी इसी तरह की लड़ाइयां होने वाली थीं। इन हालतों में जो आयत उतरी वह यह है—

"और अगर तुम्हें यह डर है कि तुम इसके बिना यतीमों के साथ इनसाफ़ (यानी उनकी परवरिश) नहीं कर सकते, तो जो औरतें तुम्हें ठीक जंचें उनमें से दो के साथ या तीन के साथ या चार के साथ शादी कर सकते हो। लेकिन अगर तुम्हें यह डर है कि तुम अपनी उन सब बीवियों के साथ एक सा इनसाफ़ का बरताव नहीं कर सकोगे तो सिर्फ़ एक के साथ शादी करो, या जिनसे अब तक कर चुके सिर्फ़ एक से शादी करना तुम्हारे लिये ज़्यादह ठीक है. ताकि तुम दीन यानी धर्म के सीधे रास्ते से न डिगो।" (४-३)

एक और जगह लिखा है—

"और अगर तुम चाहो भी तो यह तुम्हारी ताक़त से बाहर है कि कई बीवियों के साथ एक सा इनसाफ का बरताव कर सको।" (४-१२६)

इस तरह अरब की एक ख़ास हालत में ज़्यादह से ज़्यादह चार शादियों की इजाज़त देते हुए भी क़ुरान एक मर्द के लिये एक औरत के रिवाज को ही ठीक कहता है।

.कुरान में बद्चलनी को मर्द और औरत दोनों के लिए सख्त गुनाह बताया गया है। बद्चलनी की सज़ा यह है कि .कुसूरवार को सबके सामने १०० कोड़े लगाये जावें। पाक मुसलमानों के लिये बद्चलनी करने वाले मर्द या औरत से शादी करना मना किया गया है। साथ ही किसी औरत पर बद्चलनी का झूठा इलज़ाम लगाने की सज़ा ८० कोड़े लिखी है (२४-१ से ४) ईश्वर से यह दुआ मांगने का हुकुम दिया गया है कि वह आदमी को शैतान के फन्दे, गन्दी बातों और बद्चलनी से बचावे और उसकी ज़िन्दगी को पाक रखे (२४-२१ वग़ैरह)। पाक जीवन यानी नेक चलनी को कुंआरे और शादी हुये लोगों, मालिकों और .गुलामों सबके लिये ज़रूरी बताया गया है (२९-३१, ३३)

क़ुरान की जिन आयतों से परदे की बाबत हां या नहीं का कोई हुकुम निकल सकता है, वे ये हैं—

"ऐ नबी! अपनी बीवियों और अपनी लड़कियों और मुसलमान औरतों से कह दो कि चादरें ओढ़ लिया करें। यह .ज्यादह मुनासिब होगा। ताकि वे पहचानी जा सकें और कोई उन्हें तकलीफ़ न दे, और अल्लाह माफ़ कर देने वाला और दयावान है।" (३३-५९)

"ऐ मुहम्मद! जो मर्द तुम्हारी बात पर ईमान ले आए हैं उनसे (यानी मुसलमान मर्दों से) कह दो कि (आते जाते) अपनी आँखों को नीची रखें और शर्म से काम लें, इससे उनका जीवन ज़्यादह पाक रह सकेगा। सचमुच जो कुछ वे करते हैं ईश्वर सब जानता है।

"और जो औरतें तुम्हारी बात पर ईमान ले आई हैं उनसे कह दो (कि आते जाते) अपनी आँखों को नीची रखें, और शर्म से

काम लें, और अपनी सजावट (गहने वग़ैरह) का दिखावा न करें, सिवा उन सजावटों के जो ऊपर दिखाई देती हैं, और अपनी छातियों पर ओढ़नी डाल लिया करें, और सिवा अपने ख़ाविन्द, बाप, ख़ाविन्द के ाप, बेटों, ख़ाविन्द के बेटों, भाइयों, भाई के बेटों, बहन के बेटों, या औरतों, या नौकरों या ख़ोजा मर्द नौकरों, या छोटे मासूम बच्चों के और किसी के सामने अपनी सजावटों का दिखावा न करें। और पैर को इस तरह धरती पर पटक कर न चलें कि जो गहने वग़ैरह उन्होंने छिपाए हैं वह ज़ाहिर हो जावें, और ऐ ईमान वालो तुम सब अल्लाह की पनाह लो, ताकि तुम्हारा भला हो।" (२४-३०, ३१)

इस तरह .कुरान में निगाह नीची रखने और शर्म से काम लेने का मर्द और औरत दोनों को एक सा हुकुम है। औरतों को यह भी हुकुम है कि अपनी सजावट की चीज़ों का दिखावा न करें। लेकिन .कुरान के मुताबिक़ न औरतों का घरों की चार-दीवारी में बन्द रहना जरूरी है और न मुँह और हाथ यानी उन हिस्सों को ढकना जरूरी है जो मामूली काम काज, चलने फिरने में "ऊपर दिखाई देते हैं।"

अच्छे कामों के बदले में जन्नत और निजात (मोक्ष) का वादा .कुरान में औरतों और मर्दों दोनों के लिए बारबार किया गया है। (३-१९४;४-१२४;९-७२;१६-९७)

"सचमुच जिन मर्दों ने अपने को अल्लाह की मरज़ी पर छोड़ दिया है और जिन औरतों ने अपने को अल्लाह की मरज़ी पर छोड़ दिया है, जो मर्द ईमान लाए हैं और जो औरतें ईमान लाई हैं, जो

मर्द अल्लाह का हुक्म मानते हैं और जो औरतें अल्लाह का हुक्म मानती हैं, जो मर्द सच्चे हैं और जो औरतें सच्ची हैं, जो मर्द सब्र करते हैं और जो औरतें सब्र करती हैं, जो मर्द आजज़ी (दीनता) से काम करते हैं और जो औरतें दीनता से काम करती हैं, जो मर्द दान देते हैं और जो औरतें देती हैं, जो मर्द रोज़े रखते हैं और जो औरतें रोज़े रखती हैं, जो मर्द अपनी ख़्वाहिश (काम वासना) को क़ाबू में रखते हैं और जो औरतें अपनी ख़्वाहिश को क़ाबू में रखती हैं, जो मर्द अल्लाह को बहुत बहुत याद करते हैं और जो औरतें अल्लाह को बहुत बहुत याद करती हैं,—अल्लाह ने उन सब के लिए माफ़ी और बहुत बड़ा इनाम तय्यार कर रखा है।" (३३-३५)

जिहाद

'जिहाद' शब्द क़ुरान में अलग अलग शक्लों में जगह जगह आया है। 'जिहाद' के आमतौर पर माइने यह हैं—"किसी ऐसी चीज़ के साथ जो ठीक न हो अपनी हद दर्जे की ताक़त लगाकर उसे ठीक करने की कोशिश करना,"[1] यानी किसी भी काम में "जहद जेहद करना यानी सख़्त कोशिश करना।"[2]

क़ुरान में जगह जगह 'जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह' आया है, जिसके माइने हैं 'अल्लाह की राह में कोशिश करना।' इसलाम के शुरू के दिनों में क़ुरैश के ज़ुल्मों से अपनी जान और अपने

१—मुफ़रदात इमाम राग़िब, ताज-उल-अरूस।

२—ग़रीब ल क़ुरान—मिर्ज़ा अब ल फ़ज़्ल।

धर्म को बचाने के लिए जो मुसलमान अपने वतन मक्के से भाग कर हबशा यानी इथियोपिया चले गये थे, उनके इस काम को .कुरान में 'अल्लाह की राह में अपनी जान और अपने माल से जेहाद करना' कहा गया है (८-७२,७४,७५)।

इस जिहाद का किसी क़िस्म के भी हथियारों या लड़ाई से कोई वास्ता नहीं। उस वक्त तक मुसलमानों को जंग की इजाज़त भी नहीं दी गई थी। बल्कि मुसलमानों को हुकुम था कि वह अपने दुशमनों के .जुल्मों को बिना किसी क़िस्म का बदला लिये शान्ति और सब्र के साथ बर्दाश्त करें और जहां तक बन पड़े "बुराई का बदला भलाई से दें।"

.कुरान में .खुद मुहम्मद साहब को अल्लाह ने कई जगह हुकुम दिया है कि जिन लोगों ने अभी तक तुम्हारी बात नहीं मानी या जो मुसलमान हो चुके थे और फिर भी सच्चे और साफ़ दिल से तुम्हारा साथ नहीं दे रहे हैं, उन सबके साथ 'जिहाद' जारी रखो यानी प्रेम के साथ उन्हें समझाने बुझाने की कोशिश में ढील न आने दो (९-७३;६६-९)। यहाँ भी जिहाद शब्द से किसी क़िस्म का कोई वास्ता हथियार बन्द लड़ाई से नहीं है। खास कर उन मुसलमानों के खिलाफ़ जिनका इन आयतों में ज़िकर है, न कभी किसी को हथियार उठाने की इजाज़त दी गई और न कभी किसी ने हथियार उठाए।

इन आयतों के बारे में मौलवी मुहम्मदअली ने .कुरान के अंगरेज़ी तरजुमे The Holy Quran में लिखा है—

"यहाँ 'जिहाद' के माइने 'तलवार की लड़ाई' करना अरबी

ज़बान से बिलकुल नावाक़फ़ियत ज़ाहिर करना है।'

ऐसे ही २५ वीं सूरत की ५२ वीं आयत में मुहम्मद साहब से कहा गया है कि—"लोगों के साथ क़ुरान के ज़रिये 'जिहाद कबीर' यानी ज़बर्दस्त जिहाद करो," जिसका मतलब यह है कि 'अपनी पूरी ताक़त के साथ उनमें क़ुरान की तालीम फैलाओ और उन्हें समझाओ। इस पर मौलवी मुहम्मद अली ने लिखा है कि—

"इस आयत से साफ़ साबित हो जाता है कि जिहाद शब्द क़ुरान पाक में किन मानों में इस्तेमाल किया गया है। यह मानी हुई बात है कि यह सूरत मक्के के ज़माने की है और इसका जंग से कोई वास्ता नहीं है। इस आयत के मुताबिक़ सच्चाई का प्रचार करने की जो भी कोशिश की जाय वह सिर्फ़ जिहाद ही नहीं बल्कि 'कबीर' यानी 'बड़ा जिहाद' है।···क़ुरान के सब टीका करने वाले जैसे बैज़ावी, इमाम असीरुद्दीन, अबु हय्यान वग़ैरह इस आयत में जिहाद शब्द के यही माने करते हैं।"[1]

जो लोग अपने दुशमनों के ज़ुल्म से बचने के लिए भाग कर किसी दूसरी जगह चले जावें पर सच्चाई को न छोड़ें और सब्र के साथ अपने धर्म पर जमे रहें, उनके इस काम को भी क़ुरान में बार बार जिहाद कहा गया है (१६-११०)। इसी तरह दान देना, ग़रीबों और यतीमों को पालना, दूसरों की मदद करना, मुसीबतें सहना इन सब को 'अल्लाह की राह में जिहाद' बताया गया है। मुहम्मद साहब की एक मशहूर हदीस

---

१ क़ुरान—मौलवी मुहम्मद अली, सफ़ा—७२१

है कि "सब से बड़ा जिहाद अपने नफ़्स पर क़ाबू पाना यानी अपने ग़ुस्से और अपनी ख़्वाहिशों (वासनाओं) को जीतना है।" इसीको यानी अपने नफ़्स पर क़ाबू रखने को ही, अरबी ज़बान में और आमतौर पर मुसलिम किताबों में 'जिहाद अकबर' यानी सब से बड़ा जिहाद माना गया है।

मुसलमानों में आज तक धर्म के इस तरह के कामों, जैसे नमाज़ पढ़ना, रोज़े रखना, दान देना वग़ैरह, में बहुत ज़्यादह वक़्त और मेहनत ख़र्च करने को 'मुजाहदा' कहा जाता है।

जहां तक जिहाद शब्द का क़ुरान के साथ ताल्लुक़ है नीचे लिखी तीन बातें पूरे यक़ीन के साथ कही जा सकती हैं—

(१) क़ुरान में जिहाद शब्द जगह जगह ऐसे मौक़ों पर आया है जहां हथियार उठाने या लड़ने से किसी तरह का कोई वास्ता नहीं है, और धर्म के मामले में हर जायज़ कोशिश को जिहाद कहा गया है।

(२) सारे क़ुरान में किसी एक ऐसी जगह भी जहां साफ़ साफ़ मतलब सिर्फ़ लड़ने या हथियार उठाने से हो 'जिहाद' शब्द को इस्तेमाल नहीं किया गया।

(३) ख़ास हालतों में क़ुरान के अन्दर अपने धर्म की हिफ़ाज़त के लिये हथियार उठाने या लड़ने की इजाज़त भी दी गई है। लेकिन जहाँ कहीं इसका ज़िक्र आया है वहां 'जिहाद' शब्द इस्तेमाल नहीं किया गया, बल्कि सिर्फ़ 'क़िताल' शब्द

इस्तेमाल किया गया है (२-१६० से १६५, २१६; ४-७४, ७५, ८४, ६०,६४;६१-४)* ।

आक़ेबत, आख़ेरत, जन्नत और जहन्नम

आक़ेबत और आख़ेरत—यह दोनों शब्द क़ुरान में जगह जगह मरने के बाद की ज़िन्दगी यानी परलोक के मानों में भी आए हैं और आदमी के अच्छे बुरे कामों के नतीजों के माने में भी आए हैं। कई जगह 'आक़ेबत' शब्द इसी ज़िन्दगी के अन्दर आदमी के अच्छे और बुरे कामों के अच्छे और बुरे नतीजों के माने में भी आया है (१०-७३)।

जन्नत (स्वर्ग) और जहन्नम (दोज़ख़ या नरक) इन दोनों का भी क़ुरान में बहुत जगह ज़िक्र आता है। मुसलमान आलिमों की राय इस बारे में अलग अलग है कि जन्नत में या जहन्नम में रूह हमेशा के लिए रहती है या सिर्फ़ कुछ ख़ास वक़्त के लिए। लेकिन बहुत से बड़े बड़े आलिम यही कहते हैं कि—

"किसी रूह के हमेशा तक दोज़ख़ में रहने का ख़याल क़ुरान के ख़िलाफ़ है[1] ।"

मुहम्मद साहब की इस तरह की हदीसें भी हैं जैसे—

---

* इस मज़मून पर मौलवी चिराग़ अली की किताब "जिहाद" और मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की किताब "अल जिहाद फ़िल इसलाम" ख़ासतौर पर देखने के क़ाबिल हैं।

1—The Holy Quran by Mohammad Ali, p. 472-73.

"सचमुच एक दिन आवेगा जब कोई आदमी दोज़ख़ के अन्दर न रह जावेगा।"[2]

.कुरान की कुछ आयतों से यह भी मालूम होता है कि .कुरान के अन्दर जन्नत और जहन्नम के ख़याल आदमियों के अच्छे और बुरे कामों के नतीजों को साफ़ साफ़ दिखाने के लिए सिर्फ़ एक 'तशबीह', मिसाल या अलंकार के तौर पर हैं। (१४-२४,२५,२६)

ऊपर की इन आयतों का ज़िक्र करते हुए मौलवी मुहम्मद अली ने लिखा है कि—

"इससे हमें इसलामी जन्नत की असलीयत का पता चलता है। हर नेक बात या हर नेक काम एक अच्छे दरख़्त की तरह है जो हर मौसम में फल देता रहता है। यानी जन्नत में आदमी को जो फल मिलेंगे और जो हर व.क्त उसकी पहुँच में रहेंगे, वह आदमी के अपने नेक कामों के नतीजों के सिवा और कोई चीज़ नहीं हैं। जन्नत के दरख़्त असल में आदमी के अपने नेक काम हैं जो दरख़्तों की तरह इस ज़िन्दगी के नेक कामों के रूहानी नतीजों की शकल में फल देते रहते हैं। यह भी ख़याल रखना चाहिये कि .कुरान पाक में जब कि नेक कामों की मिसाल फलदार दरख़्तों से दी गई है, ईमान यानी धार्मिक विश्वास की मिसाल बार बार पानी या नहरों से दी गई है। हमारी जिस्मानी ज़िन्दगी पानी ही से निकली है और उसी से क़ायम है। इसलिए .कुरान में जब कि नेक आदमियों के लिए हमेशा यह

२—कंज़, उल-उम्माल, जिल्द ७, सफ़ा २४६

कहा गया है कि वे ईमान लाते हैं और नेकी करते हैं, जन्नत को हमेशा इस तरह बयान किया गया है कि वह 'एक बाग़ है जिसमें नहरें बहती हैं।' यहाँ नहरों से मतलब ईमान यानी विश्वास से है और बाग़ के दरख़्तों से मतलब आदमी के नेक कामों से।"*

क़ुरान की ४७वीं सूरत यानी सूरत 'मुहम्मद' में जहां जन्नत के अन्दर तरह तरह की नहरों और हर तरह के फलों का और जहन्नम के अन्दर खौलते हुए पानी का ज़िक्र किया गया है, वहाँ भी इस सब को सिर्फ़ "मसल" यानी मिसाल बताया गया है। (४७-१५)

कहीं कहीं उन दुखों को जिन्हें लोग इस दुनिया के अन्दर बुरे कामों के फल की शकलों में भोग चुके हैं जहन्नम की आग बताया गया है (४०-६)।

कई जगह नेक कामों के बदले में इसी दुनिया के बाग़ों वग़ैरह को 'जन्नत' नाम दिया गया है (५५-४६)। मुहम्मद साहब की एक मशहूर हदीस है जिसमें उन्होंने मिस्र, इराक़ और ईरान के दरियाओं को 'जन्नत की नहरें' कहा है।†

जन्नत के साथ 'हूर' का लफ़ज़ भी क़ुरान में कम से कम चार जगह आया है। हूर शब्द 'अहवर' पुल्लिङ्ग यानी मुज़क्कर और 'हौरा' स्त्रीलिङ्ग यानी मुअन्नस दोनों की जमा (बहुवचन) है, और मर्द और औरत दोनों के लिए आता है। जन्नत का

---

* The Holy Quran, p. 517, Note.

† मुसलिम, जिल्द २, सफ़ा ३४१

वादा भी क़ुरान में नेक मर्दों और नेक औरतों दोनों के लिए एक ही तरह किया गया है। जिन शब्दों में कई जगह हूरों का बयान है उनसे मालूम होता है कि दुनियावी ख्वाहिशों या वासनाओं के साथ हूर लफ़्ज़ का कोई वास्ता नहीं है। (५४-५४; ३७-४८, ५६-३६)

"ज़ाहिरा देखने में हूर शब्द से जो एक औरत का बयान मालूम होता है, वह असल में इस ज़िन्दगी के कामों के नतीजों का बयान है। जो लफ़्ज़ काम में लाए गये हैं वे दोनों तरफ़ लग सकते हैं। ये रूहानी बरकतें हैं जिन्हें मोटे जिस्मानी ढंग से दिखाया गया है। क़ुरान में कहीं भी यह नहीं लिखा कि मौत के बाद की ज़िन्दगी यानी परलोक में मर्द औरत का इसी तरह ताल्लुक़ रहता है। जिन बरकतों (अच्छी चीज़ों का वादा किया गया है, वह और चाहे कुछ भी हों या न हों मर्दों और औरतों दोनों के लिए एक बराबर हैं। उनकी बाबत पक्की बात सिर्फ़ यही कही जा सकती है कि इस ज़िन्दगी के जिस्मानी सुखों से उनका कोई वास्ता नहीं, दोनों चीज़ें दो बिलकुल अलग अलग तरह की चीज़ें हैं।"*

मुहम्मद साहब की एक हदीस है—

"अल्लाह कहता है कि अपने नेक बन्दों के लिए अल्लाह ने जो नेक फल तय्यार कर रखे हैं उनका न इन आंखों के देखने से कोई ताल्लुक़ है, न इन कानों के सुनने से, और न इनसानी दिल या दिमाग़ के किसी अहसास, अनुभव या कल्पना से।" (बुख़ारी)

---

*Holi Quran dy Mohmmad Ali p. 870 note

क़ुरान को ग़ौरसे पढ़ने पर कम से कम एक राय यह ज़रूर हो सकती है और इसके लिए काफ़ी गुंजाइश है कि क़ुरान के अन्दर जन्नत और जहन्नम के ख़याल सिर्फ़ मिसाल के तौर पर हैं और जिस्मानी सुख दुःख के साथ उनका कोई वास्ता नहीं है।

जन्नत के माइने अरबी में 'बाग़' यानी 'आराम का जगह' हैं और 'जहन्नम' यरुसलम के पास का वह मोहल्ला था जहां किसी ज़माने में आग की पूजा करने वाले रहा करते थे। 'जहन्नम' का मतलब 'आग' या 'तकलीफ़ की जगह' है। 'दोज़ख़' फ़ारसी शब्द है जिसका वही निकास है जो संस्कृत 'दुःख का' फ़ारसी शब्द 'फ़िरदौस' अंगरेज़ी 'पैरेडाइज़' और संस्कृत 'प्रादेश्य' एक ही शब्द हैं। पुराने ईरानी अपने शहर से बाहर के बाग़ों को 'प्रादेश्य' या 'परदौस' कहा करते थे। उसी से 'फ़िरदौस' और 'पैरेडाइज़' बने।

कोई नहीं है ग़ैर

कोई नहीं है ग़ैर
बाबा ! कोई नहीं है ग़ैर
हिन्दू मुसलिम सिख ईसाई
देख सभी हैं भाई भाई
भारत माता सब की माता
यह धरती ही सब की माई
मत रख मन में बैर
बाबा ! कोई नहीं है ग़ैर
कोई नहीं है ग़ैर
बाबा ! कोई नहीं है ग़ैर

भारत के सब रहने वाले
कैसे गोरे कैसे काले
छूत अछूत के झगड़े पाले
पड़ गये जिससे जान के लाले
काहे का यह बैर
बाबा ! कोई नहीं है ग़ैर
कोई नहीं है ग़ैर
बाबा ! कोई नहीं है ग़ैर

राम समझ रहमान समझ ले
धर्म समझ ईमान समझ ले
मसजिद कैसी मन्दिर कैसा
ईश्वर का अस्थान समझ ले
कर दोनों की सैर
बाबा ! कोई नहीं है ग़ैर

कोई नहीं है ग़ैर
बाबा ! कोई नहीं है ग़ैर

सोचेगा किसपन में बाबा ?
क्यों बैठा है बन में बाबा ?
खाक मत्ती क्यों तन में बाबा ?
ढूँढ ले उसको मन में बाबा !
माँग सभों की ख़ैर !
बाबा ! कोई नहीं है ग़ैर
कोई नहीं है ग़ैर
बाबा ! कोई नहीं है ग़ैर